CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हि०
८३२

# Хрестоматия по советской литературе

## हिन्दी-टिप्पणियों सहित प्रवेशिका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

# ХРЕСТОМАТИЯ ПО СОВЕТСКОЙ ЛИТЕРАТУРЕ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

# सोवियत साहित्य-संकलनिका

## हिन्दी-टिप्पणियों सहित प्रवेशिका

मास्को
«रूसी भाषा» प्रकाशन-गृह
१९८६

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

# Хрестоматия по советской литературе

Книга для чтения
с комментарием
на хинди

Начальный этап

Москва
«Русский язык»
1986

ББК 81.2Р-93
Х91
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Составитель, автор предисловия
и статей о писателях А. А. Кубарева
Адаптация и комментарий Е. В. Нечаевой
Переводчик О. Г. Ульциферов
Художник Б. С. Вехтер

Рецензенты: канд. педаг. наук Л. Г. Вишнякова
и канд. филол. наук И. А. Ревякина

© Издательство «Русский язык», состав, предисловие, комментарий, оформление 1983 г., перевод на хинди 1986 г.

Х $\frac{4306020100-140}{015(01)-86}$ 120—86

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

## प्रस्तावना

«सभी की भलाई के लिए सेवा करने की इच्छा आत्मा की पुकार व व्यक्तिगत सुख की शर्त होनी चाहिये।»

अन्तोन चेख़ोव

सुख क्या है? आनंद? जीवन? इसका क्या लक्ष्यहै? आदि काल से लेखक और दार्शनिक इन प्रश्नों पर विचार करते आये हैं। सदियों तक लोग इन पर सोचते रहे हैं और सभी विवेकशील लोग सदा इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि कोई भी व्यक्ति तब तक पूरी तरह सुखी नहीं हो सकता है जब तक समाज जिसमें वह रहता है सुखी नहीं है। मनुष्य सदा सामंजस्य और सुंदरता के स्वप्न देखता आया है, बुराई पर अच्छाई की विजय के सपने देखता आया है। दमन और दासत्व से, अत्याचार और अन्याय से मातृभूमि को मुक्त करने के संघर्ष के विचार सदियों से प्रगतिशील और अग्रणी रहे हैं। और सदा ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने दूसरों की स्वतंत्रता और सुख के लिए संघर्ष किया, बलिदान किये, अपना सर्वस्व निछावर किया। गोर्की के शब्दों में जीवन में पौरुष, वीरता के लिए हमेशा स्थान है। साहसिक कार्य ... प्रत्येक ऐसे कार्य के बारे में एक अलग पुस्तक कैसे लिखी जाए। यह भी सही है कि हमारे दैनिक जीवन में ऐसा साहसिक कार्य वर्षों बाद दृष्टिगोचर हुआ करता है।

परंतु ऐसा ज़माना आता है जब एक व्यक्ति की वीरता सारी जनता के पराक्रम में मिल जाती है।

ऐसा हुआ पेरिस कम्यून के दिनों में; ऐसा हुआ अक्तूबर क्रांति के समय और उसकी तैयारी के दिनों में जब रूसी क्रांतिकारी पेरिस कम्यून के शहीदों की परंपरा जारी रखते हुए रूस में ज़ारशाही का तख़्ता उलटने और मज़दूरों व किसानों को राज-सत्ता प्रदान करने के लिए कार्य कर रहे थे।

अलेक्सान्द्र पुश्किन के ये शब्द याद आते हैं: «यह असंभव है कि लोग समय के साथ युद्ध की विभीषिका को न समझ लें, वैसे ही जैसे उन्होंने दासता, ज़ारशाही सत्ता इत्यादि का सार समझ लिया है। वे अवश्य देख लेंगे कि जीना और स्वतंत्र होना ही हमारा भाग्य है।»

पुश्किन के सृजन के साथ रूसी साहित्य में मानवतावाद का विषय प्रकट हुआ, यह चेतना आयी कि «किसान नारियों में भी आत्मा है», कि किसानों को भू-दासता से मुक्त करना है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सोवियत साहित्य रूसी क्लासिकीय साहित्य के महान् आदर्शों का उत्तराधिकारी है जिनकी अभिव्यक्ति १८-१९ वीं सदियों के प्रगतिशील लेखकों के विचारों की समीक्षा करते हुए महाकवि निकोलाई नेक्रासोव ने अपने काव्य «कौन रूस में आनंद से रहता है?» में की थी:

«नियति जनता की
सुख मिले उसे,
प्रकाश और स्वतंत्रता
है सर्वोपरि!»

सुप्रसिद्ध महाकवि के इन शब्दों में वह आदर्श प्रस्तुत है जिसको १९१७ में हुई महान् अक्तूबर क्रांति के द्वारा पैदा किये गये सोवियत साहित्य ने विरासत में पाया है।

परंतु क्रांति से पहले ही १९०५ में गोर्की ने «माँ» उपन्यास में पावेल व्लासोव के बिंब की रचना की थी जो कि अडिग संकल्प का धनी मज़दूर है, साहसी व्यक्ति है, जो जनता की भलाई और आज़ादी के लिए संघर्ष में अपना सर्वस्व निछावर करता है। समाज के विकास का भावी चित्र दिखाते हुए लेखक ने पाठक को इसमें सहायता दी कि वह वास्तविकता को नैतिक-दार्शनिक दृष्टिकोण से देखे। तुम कौन हो, मज़दूर, किसलिए तुम इस धरती पर जीते हो, तुम्हारे जीवन का उद्देश्य क्या है?

बाद में, १९२४-१९३० में गोर्की ने लेनिन के बिंब की रचना करते हुए «व्ला० इ० लेनिन» नामक शब्द-चित्र में क्रांति के नेता के जीवन--कार्य को «विनयशील साधना, क्रांतिकारी की साधना» कहा था «जिन्हें इस धरती पर सामाजिक न्याय की संभावना में अटूट विश्वास था और जिन्होंने लोगों की भलाई के लिए ख़ून-पसीना एक करके संसार की सभी ख़ुशियों को ठुकरा दिया», जिन्होंने क्रांति और नये जीवन के निर्माता के रूप में मज़दूर-वर्ग की महान् नियति पहचानी।

हमारे साहित्य के संपूर्ण इतिहास में लेखकों ने सृजनशील श्रमिक के बिंब की रचना की है। गोर्की का अनुसरण करते हुए उन्होंने जीवन की एक वास्तविकता के रूप में जिसका अपना नैतिक-दार्शनिक अर्थ है श्रमिक और उसके श्रम का चित्रण किया।

वास्तविकता का विस्तृत चित्र प्रस्तुत करते हुए तीसरे और चौथे दशक में फ़्योदोर ग्लाद्कोव ने अपने उपन्यास «सीमेंट» में, वलेन्तीन कतायेव ने अपने उपन्यास «समय, आगे बढ़ो!» में, लेओनीद लेओनोव ने «सोत्य् नदी» नामक उपन्यास में तथा अन्य लेखकों ने स्पष्ट रूप से दिखा दिया कि किस तरह स्वयं श्रम और जीवन की नयी परिस्थितियाँ मानव की चेतना गढ़ती करती हैं, मज़दूरों को एक अटूट समूह में एकजुट करती हैं, श्रम को रचनात्मक बनाती हैं और मनुष्य के कर्त्तव्य तथा उसकी आवश्यक्ताओं को एक करती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आज-कल जब सभी लोगों का सांस्कृतिक तथा तकनीकी स्तर ऊँचा उठ गया है, जब मज़दूर का परिश्रम इंजीनियर के परिश्रम जैसा बनता जा रहा है लेखकों का यह कार्य-भार है कि वे आधुनिक, सृजनशील श्रमिक का चित्रण करें जो न केवल उत्पादन-कार्यों में बल्कि देश के सारे जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेता है। इस दृष्टि से आधुनिक साहित्य में गलीना निकोलायेवा का उपन्यास «रास्ते में संघर्ष», वादीम कोझेवनिकोव का लघु-उपन्यास «इनसे मिलिये, यह कामरेड बलूयेव हैं», कुवायेव का उपन्यास «प्रदेश» तथा कुछ और कृतियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पेशेवर लेखकों द्वारा ही नहीं बल्कि स्वयं मज़दूरों की लिखी कृतियाँ, मुख्यतः संस्मरण भी, रोचक हैं। ई० गुद्कोव की रचना «मज़दूर की क़िस्मत», स० अन्तोनोव की «पीढ़ियों का सिलसिला», व० येरेमिन की «कठिन मार्गों की ख़ुशी» इसके कुछ उदाहरण हैं।

सोवियत साहित्य के संपूर्ण इतिहास में नैतिक आदर्श प्राप्त करने का प्रयत्न साफ़-साफ़ दीखता है। यह स्वाभाविक है कि प्रत्येक लेखक के व्यक्तिगत विश्व-दृष्टिकोण ने इतिहास के विभिन्न चरणों में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी। शुरू में जहाँ कुछ लेखक क्रांति लेनेवाली वीर-जनता को रोमानी रंग देते थे (अलेक्सान्द्र ब्लोक की कविता «बारह», अलेक्सान्द्र फ़देयेव का उपन्यास «विनाश»), वहीं दूसरे लेखक पुराने जीवन और पुरानी चेतना (जो स्वभावतः इतने कम समय में बदल नहीं सकती थी) के लक्षणों को व्यंग्यात्मक ढंग से अस्वीकार करते हुए सकारात्मक आदर्श तक पहुँचते थे (मिख़ाईल ज़ोश्चेन्को की कहानियाँ, यूरी ओलेशा तथा वलेन्तीन कतायेव के व्यंग-लेख आदि)।

सोवियत लेखक यूरी ओलेशा ने लिखा कि «कम्युनिज़्म न केवल आर्थिक बल्कि नैतिक पद्धति है, संसार के प्रति नया समाजवादी रवैया शुद्ध रूप में मानवतावादी रवैया है।»

साथ ही १९वीं सदी के साहित्य की सामान्य परंपरा का अनुकरण करते हुए अलेक्सेई तोल्स्तोय «निकीता का बचपन» लघु-उपन्यास में, मिख़ाईल बुल्गाकोव «डाक्टर की डायरी» में, अन्द्रेई प्लातोनोव अपनी कहानियों में मातृभूमि और जनता के प्रति अपने प्रगाढ़ प्रेम और उसकी सेवा की चर्चा करते हैं।

इसी सिलसिले में सेर्गेई येसेनिन का सृजन रोचक प्रतीत होता है। उन्होंने अत्यंत सरल, स्वभाविक और बड़े काव्यमय ढंग से मातृभूमि की प्रकृति के प्रति प्रेम के बारे में, «भोज-वृक्षों की धरती» के बारे में, जीवन और आम लोगों के बारे में लिखा था।

क्रांतिकारी-मानवतावादी प्रवृत्तियाँ सपनों की रूमानियत का विरोध नहीं करतीं। इसीलिए सोवियत पाठकों को अलेक्सान्द्र ग्रीन की रचनाएँ, विशेषकर उनकी लंबी कहानी «लाल पाल», इतनी पसंद हैं। यह उस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
सुख की कहानी है जो स्वयं व्यक्ति पर, उसके दृढ़संकल्प पर, उसके भावावेग पर, कल्पना की उड़ान भरने की उसकी शक्ति पर निर्भर है।

कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्स्की ने ग्रीन की परंपरा जारी रखी। दयालुता और संवेदनशीलता में, मानवता में, सौंदर्य को देखने और इसे देखना सिखाने के सामर्थ्य में लेखक की सृजन-आस्था का अर्थ निहित है। वह मानते थे कि प्रकृति मनुष्य की आत्मा को और अधिक समृद्ध, दयालु और सुयोग्य बनाती है। पाउस्तोव्स्की के मतानुसार मनुष्य सबसे पहले एक सृष्टि-कर्त्ता है, निर्माता है अतः यह काफ़ी महत्वपूर्ण है कि लोग अपने कार्य के प्रति चाहे यह कार्य कितना छोटा क्यों न हो रचनात्मक रुख़ अपनायें।

व्लादीमिर मयाकोव्स्की की कृतियाँ चाहे येसेनिन, ग्रीन व पाउस्तोव्स्की की सृजन-शैली से बिलकुल विपरीत शैली की हैं तिस पर भी वे लोगों के सुख की उसी कल्पना से ओत-प्रोत हैं। अपनी मातृभूमि के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करते हुए उन्होंने अपनी कविता «अच्छा है!» लिखा:

«... जो है मातृभूमि मेरी उसे सराहता हूँ
तिगुना सराहता हूँ उसे जो होगी...»

इसी भविष्य की ख़ातिर पुतीलोव कारख़ाने का मज़दूर, कम्युनिस्ट दवीदोव सामूहिक फ़ार्म (कोलख़ोज़) की स्थापना करने गाँव जाता है (मिख़ाईल शोलोख़ोव का उपन्यास «कुँआरी धरती ने ली अंगड़ाई») और नयी पीढ़ी की भलाई के लिए संघर्ष में अपनी जान दे देता है।

आज, तीव्र तकनीकी प्रगति के युग में देहाती जीवन तेज़ी से बदल रहा है। हमारे समसामयिक सोवियत लेखक वसीली शुक्शीन, वीक्तोर अस्ताफ़्येव, वसीली बेलोव, येव्गेनी नोसोव अनुपम लोक-चरित्रों की रचना करने में सफल हुए हैं। रूसी क्लासिकीय साहित्य की परंपरा में ही वे लेखक लिखते हैं जो गाँव-संबंधी कृतियाँ रचते हैं और जो मनुष्य तथा प्रकृति के सहसंबंधों का अध्ययन करते हैं। उनके लिए लोग प्रकृति की संतान हैं जिनको न केवल प्रकृति की देन लेनी है वरन् उसकी संपत्ति को सुरक्षित रखना है, यह याद रखते हुए कि हम इस धरती पर अंतिम रहनेवाले नहीं हैं, हमारे बाद हमारे वंशज, हमारे पोते, परपोते यहाँ जियेंगे।

किसानों का जीवन प्रकृति पर निर्भर होता है, इसी पर किसानों के घरों में दैनिक आवश्यकता की वस्तुएँ निर्भर हैं और दस्तकारी निर्भर है जो सदियों से किसान करते आये हैं। और यही उन गीतों, लोक-कथाओं तथा दंतकथाओं का स्रोत है जो «पहाड़ियों और जंगलों के पार» सर्दी की अँधेरी, ठंडी संध्याओं के समय दीपक की रोशनी में लोग रचते थे। रूसी राष्ट्रीय चरित्र का स्रोत ढूँढ़ने की कोशिश, समय की गहराई में देखने की कोशिश में वसीली बेलोव ने रूसी लोक सौंदर्य-बोध पर «सामंजस्य» नामक निबंध-माला लिखी है। लेखक के मतानुसार «सामं-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
जस्य» शब्द में वही सार-तत्व निहित है जिसके आधार पर रूसी आदमी की दयालुता, उसकी सहनशीलता, उसकी बुद्धिमानी, साहसिकता, उसकी नैतिकता बनती चली आयी है।

वसीली शुक्शीन मानव-प्रकृति के गहरे ज्ञान के साथ साधारण लोगों के चरित्र उजागर करते हैं। उनकी रचनाओं में भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग सामने आते हैं, मज़बूत और कमज़ोर, विनयशील, साधारण से साधारण लोग, «प्रबुद्ध आत्माएँ» तथा «सनकी»। लेकिन प्रत्येक में अपना ही सुगुण है – दयालुता, ईमानदारी, दूसरों की चिंता और न्याय का गहरा भाव। उनका पक्का विश्वास है कि दूसरों को दुःख पहुँचाकर सुखी नहीं बना जा सकता।

जनता, उसका जीवन, एक अलग व्यक्ति, जो सारी जनता का छोटा-सा अणु है, आदमी के भाव, अनुभूतियाँ और सपने – यही सोवियत साहित्य के ध्यान का केंद्र-बिंदु है। साहित्य सुख-दुःख, जीवन-मरण, सत्य-असत्य की समस्याओं पर भी अपना ध्यान केंद्रित करता है। यह भी स्वाभाविक है कि बाल-साहित्य के लेखकों ने भी नैतिक समस्याओं पर विचार किया। इनमें एक थे अर्कादी गायदार। वह जानते थे कि बच्चों में कारनामों की इच्छा कैसे जगायी जाती है, वह बहादुरी, वीरता तथा उदारता की कहानियाँ सुनाते थे और देश-भक्ति की भावना पैदा करते थे। «चूक और गेक» नाम की कहानी में गायदार ने लिखा है: «सुख क्या है? यह प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग ढंग से समझता था। किंतु सब लोग जानते थे कि ईमानदारी से रहना चाहिये, बहुत मेहनत करनी चाहिये और उस विशाल व सुखमय मातृभूमि से प्रेम करना चाहिये और उस देश की रक्षा करनी चाहिये जिसको सोवियत संघ कहते हैं।» जब महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध छिड़ा तो यह काम सोवियत लोगों के सामने आया।

चौथे दशक में ही निकोलाई ओस्त्रोव्स्की के उपन्यास «आग्न-दीक्षा» ने विशेष स्थान पाया था। उपन्यास का मुख्य पात्र पावेल कोर्चागिन मनोबल, विचारों की शुद्धता, सिद्धांत-निष्ठता और क्रांतिकारी स्थिरता की दृष्टि से उस आदर्श के नज़दीक आता है जिसका अनुकरण महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध के वीरों ने भी फ़ासिस्ट आक्रमणकारियों से मातृभूमि की रक्षा के लिए जूझते हुए किया। यह अकारण नहीं है कि ओस्त्रोव्स्की के साहित्यिक संग्रहालय में एक सोवियत सैनिक की, गोली से भेदी और ख़ून से लथपथ उपन्यास की एक प्रति सुरक्षित रखी हुई है जिसमें ये शब्द अंकित हैं: «मनुष्य के लिए सबसे प्यारी चीज़ जीवन है। वह मनुष्य को एक ही बार मिलता है। इसलिए इस तरह जीना चाहिये कि बाद में पछतावा न हो कि इतने वर्ष उद्देश्यहीन बीत गये, कि दुष्ट और तुच्छ अतीत के कारण लज्जा न आये और मरते हुए कह सकें कि सारा जीवन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh
और सारी शक्ति संसार में सबसे सुंदर – मानव-जाति की मुक्ति के युद्ध को अर्पित कर दी गयी।»

«जीवन में वीरता के लिए सदा स्थान है।» महान् देशभक्तिपूण युद्ध के समय सोवियत लोग अपने देश की स्वतंत्रता और आज़ादी के लिए लड़े, यूरोप के जनगण को उन्होंने बर्बर विनाश से बचाया। संसार के सभी प्रगतिशील लोगों ने उनकी सहायता दी। यह स्वाभाविक है कि हमारी जनता की वीरता साहित्य में प्रतिबिंबित हुई। अलेक्सान्द्र त्वर्दोव्स्की की कविता «वसीली त्योर्किन» में वसीली त्योर्किन का बिंब दयालुता, साधारण व्यक्ति की हास्यप्रियता, उसकी बहादुरी, उसकी हाज़िरदिमाग़ी, उसकी हिम्मत और सूझ-बूझ की सजीव मूर्त्ति प्रस्तुत करता है जो कठिनतम क्षणों में निराशा नहीं जानता और जो मातृभूमि और संसार के प्रति कर्त्तव्य की भावना से ओत-प्रोत है:

«आज हम जवाबदेह हैं
रूस के लिए, जनता के लिए,
दुनिया के सब-कुछ के लिए»

वसीली त्योर्किन के ये शब्द सारी कविता का आवर्त्ती विचार हैं।

युद्ध के बाद लेखकगण युद्ध की वीरतापूर्ण घटनाओं की ओर बार बार उन्मुख हुए हैं। वे अतीत और वर्त्तमान को एक दूसरे के परिप्रेक्ष्य में देखने की चेष्टा करते हैं। कोन्स्तान्तीन सीमोनोव ने जिन्होंने सुप्रसिद्ध त्रयी «जीवित और मृत» लिखी है, अपने उपन्यासों के मुख्य विचार को स्पष्ट करते हुए कहा था: «मुझे लगता है कि जिन लोगों ने युद्ध नहीं देखा वे तभी युद्ध की पुस्तकें पढ़ते हैं जब उनमें ऐसी मानसिक, मनोवैज्ञाकि एवं नैतिक समस्याएँ मौजूद हैं जो युद्धमात्र से जुड़ी नहीं होतीं बल्कि युद्ध-काल में खुलकर सामने आती हैं ...» सीमोनोव के विचार को जारी रखते हुए यूरी बोन्दरेव और वसील बीकोव उस नैतिक चयन की समस्या प्रस्तुत करते हैं जिसको युद्ध मनुष्य के सामने अवश्यंभावी रूप से ला खड़ा करता था यानी अंतःकरण और कर्त्तव्य की समस्या, यहाँ तक कि जीवन और मरण की समस्या। युद्धकालीन घटनाओं को चित्रित करते हुए सोवियत लेखक दावा करते हैं कि युद्ध मानवता-विरोधी है क्योंकि वह न केवल जान लेता है वह धरती की भावी पीढ़ी, युवा जन को मिटा देता है। सोवियत लेखकों ने युद्ध के बारे में जो भी कृतियाँ प्रस्तुत कीं वे सब युद्ध-विरोधी हैं क्योंकि उनका अंतर्य युद्ध के प्रति, हत्याओं के प्रति, मृत्यु के प्रति घृणा पैदा करता है।

अपने संपूर्ण इतिहास के दौरान सोवियत साहित्य सोवियत जनता के वीरतापूर्ण जीवन की घटनाओं का यथार्थवादी चित्रण करता आया है: १९१७ की महान् अक्तूबर क्रांति का, अर्थ-व्यवस्था के पुनर्निर्माण का,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
औद्योगिकीकरण तथा सामूहिकीकरण का, महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध का और शांतिपूर्ण निर्माण-कार्य की घटनाओं का।

कोटि-कोटि श्रमिकों की धरोहर के रूप में सोवियत साहित्य विश्व संस्कृति की अनुपम वस्तु हो गया है क्योंकि वह सोवियत संघ के जनगण के सत्तर से अधिक साहित्यों को सूत्रबद्ध करता है। सभी जातियों के लेखक गद्य, काव्य और नाट्य-कला के क्षेत्र में काम करते हैं। उनमें बेलोरूसी वसील बीकोव, किर्गीज़ चेंगीज़ आइत्मातोव के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं क्योंकि उनके नामों का ज़िक्र किये बिना आधुनिक साहित्यिक प्रक्रिया की चर्चा करना मुश्किल है। बात यह है कि उनकी साहित्यिक सृष्टि जातीय सीमाओं को लाँघकर कहीं आगे बढ़ी है।

एक भेंट-वार्त्ता के समय इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कि उनके कार्य और सारे साहित्य का अर्थ क्या है चेंगीज़ आइत्मातोव ने कहा कि «साहित्य का सबसे फ़ौरी, महत्वपूर्ण तथा मानवतावादी उद्देश्य है प्रत्येक मनुष्य में जीवन और अपने में विश्वास सुदृढ़ करना तथा व्यक्ति की मुक्ति लाना। साहित्य को मानव का आध्यात्मिक आधार होना चाहिये। मेरे विचार में प्रत्येक ईमानदार कलाकार का कर्त्तव्य है कि वह सार्वजनिक प्रगति में ही नहीं बल्कि नैतिक प्रगति में भी योगदान करे।»

ऐसे ही शब्द वे लेखक भी कह सकते हैं जो नगर की समस्याओं से, बुद्धिजीवी वर्ग के मानसिक जीवन से और नयी पीढ़ी के प्रशिक्षण से अपनी सर्जना जोड़ चुके हैं। इसी विषय को अपनी कहानियाँ अर्पित करते हैं अनातोली अलेक्सिन («मेरा भाई क्लैरिनेट बजाता है») और यूरी त्रीफ़ोनोव («अदला-बदली»)।

सोवियत लेखक किन्हीं भी विषयों पर क्यों न लिखें वे मनुष्य तथा उसके भाग्य के प्रति मानवतावादी रुख़ से तथा भावी पीढ़ी की चिंता से प्रेरित होते हैं। यही भलाई और शांति की रक्षा में लेखकों के सक्रिय दृष्टिकोण का स्रोत है। वे अच्छी तरह जानते हैं कि «यह दुनिया बच्चों के लिए ही है, केवल बच्चों के लिए» (गोर्की)। और बच्चों की ख़ातिर शांति तथा स्वच्छ आकाश को, झरने में पानी की स्वच्छता को, सेब के पेड़ की खिलती हुई फूलदार टहनी को और मनुष्य की आत्मा के ताप को – यानी हमारे नीले ग्रह पृथ्वी पर जो भी सौंदर्य है उसकी रक्षा करनी चाहिये।

प्रस्तुत संकलन उन विदेशी पाठकों के लिए है जो हाल ही में रूसी भाषा सीखने लगे हैं यानी जिनका शब्द-भंडार १५०० प्रचलित रूसी शब्दों के बराबर है। प्रशिक्षण के प्रारंभिक चरण के लिए निश्चित प्रणालीतंत्रीय सिद्धांतों के आधार पर संकलनकर्त्ताओं ने संकलन में विशालतम सोवियत साहित्य के सभी लेखकों को प्रस्तुत करना संभव नहीं समझा। लेकिन वे आशा करते हैं कि जो लेखक यहाँ प्रस्तुत हैं उनकी कृतियों को पढ़कर सोवियत साहित्य का परिचय काफ़ी विस्तृत व पूर्ण होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Максим Горький
मक्सिम गोर्की
( १८६८-१९३६ )

मक्सिम गोर्की ( अलेक्सान्द्र मक्सिमोविच पेश्कोव का उपनाम ) वह कलाकार हैं जिन्होंने अपनी साहित्य-सृष्टि में सुख, स्वतंत्रता, न्याय तथा समानता के बारे में लोगों का सपना साकार बनाया।

१९ वीं सदी के रूसी साहित्य के उत्तम आदर्शों का अनुकरण करते हुए तथा जनता के भाग्य एवं देश के भविष्य को समझने के इस साहित्य के प्रयास से प्रेरित होते हुए गोर्की सर्वहारा-लेखक और सोवियत साहित्य के प्रवर्त्तक तथा समाजवादी यथार्थवाद की विधि के संस्थापक बने।

गोर्की की साहित्यिक सृष्टि के प्रारंभिक चरण में दो कविताएँ आती हैं – «बाज़ का गीत» और «तूफ़ानी चिड़िया का गीत» ( १८९२-१८९९ ) जिनमें गोर्की ने महान् अक्तूबर क्रांति के कहीं पहले «बहादुरों के उन्माद» का गीत गाया था जो लड़ाई, तूफ़ान, क्रांति की अभिलाषा करते हैं। इसी कारण से «तूफ़ानी चिड़िया का गीत» के प्रकाशन के बाद गोर्की को «रूसी क्रांति का तूफ़ानी पक्षी» कहा जाने लगा। इन कविताओं की हाथ से लिखी अनेक प्रतियाँ निकलीं जिनको संघर्ष और क्रांति का सीधा आह्वान समझा जाता था।

परन्तु अपने गद्य-साहित्य तथा नाटकों से ही गोर्की ने विश्वव्यापी ख्याति पायी। अपने उपन्यास «फ़ोमा गोर्देयेव» ( १८९९ ) में गोर्की ने पूंजीवादी व्यवस्था के अनिवार्य विनाश पर बल दिया। उनका उपन्यास «माँ» (१९०६) अत्यंत लोकप्रिय हुआ। उसमें रूसी साहित्य के इतिहास में पहली बार मज़दूर एवं पेशेवर क्रांतिकारी का चरित्र, सुप्रसिद्ध पावेल व्लासोव का चरित्र प्रस्तुत किया गया था। व्ला० इ० लेनिन ने «माँ» उपन्यास के बारे में ये शब्द लिखे: «यह अत्यंत उपयोगी पुस्तक है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh
अब तक क्रांतिकारी आंदोलन में बहुत से मज़दूर अचेतन रूप योग दे रहे थे। अब वे इसे पढ़ेंगे और लाभ उठाएँगे।»

«माँ» उपन्यास १९०२ में सोरमोवो मज़दूरों की बस्ती में मज़दूरों की हड़ताल के दौरान घटी घटनाओं पर आधारित है। पावेल व्लासोव का प्रतिरूप है क्रांतिकारी मज़दूर प्योत्र ज़लोमोव जो पहली मई के जलूस का अगुआ था। इस जलूस में पहली बार रूसी सर्वहारा-वर्ग ने अपनी राजनीतिक माँगें रखीं।

गोर्की के नाटकों में सबसे प्रसिद्ध हैं «टुटपुँजिये» (१९०१), «तलछट पर» (१९०२), «बँगलेवाले» (१९०४), «असभ्य» (१९०५) जिनमें रूसी नाट्य-कला में पहली बार टुटपुँजियापन, उत्पीड़न, मानसिक दासता का घोर सामाजिक विरोध ध्वनित हुआ। बाद में लिखे गये नाटकों «येगोर बुलीचेव तथा अन्य» (१९३२) तथा «वास्सा झेलेज़्नोवा» (१९३५) में समाजवादी क्रांति की ऐतिहासिक अनिवार्यता का विचार व्यक्त हुआ।

गोर्की की आत्मकथात्मक त्रयी – «बचपन» (१९१४), «जीवन की राहों पर» (१९१६), «मेरे विश्वविद्यालय» (१९२२) – तथा उनका उपन्यास «आर्तामोनोव का काम» (१९२५) सोवियत साहित्य में अमूल्य योगदान थी। साथ ही व्ला० इ० लेनिन के साहित्यिक चित्रों (१९२४--१९३१) और लेव तोल्स्तोय तथा अन्तोन चेख़ोव के साहित्यिक चित्रों ने भी काफ़ी बड़ा योगदान किया।

अपने अंतिम उपन्यास «क्लीम समगीन का जीवन» (१९२५-१९३६) में गोर्की ने रूसी जीवन और क्रांतिपूर्व काल के वैचारिक-सामाजिक संघर्ष का विस्तृत चित्र प्रस्तुत किया।

गोर्की सुप्रतिष्ठित प्रचारक और सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। १९०५ की रूसी क्रांति के समय गोर्की ने «नया जीवन» समाचार-पत्र में काम किया, उसकी सहायता से «सर्वहारा-लेखकों का प्रथम कहानी-संग्रह» प्रकाशित किया गया। सोवियत राज-सत्ता स्थापित होने के बाद गोर्की ने «विश्व साहित्य» प्रकाशन-गृह का संचालन किया तथा अनेक लेखकों और कवियों का साहित्यिक कौशल बढ़ाने में योगदान किया। १९३४ में गोर्की ने सोवियत लेखक संघ का नेतृत्व किया। गोर्की की साहित्यिक विरासत और उनके संगठनात्मक कार्य ने सोवियत बहुजातीय साहित्य के विकास पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला।

## МАТЬ

(отры́вки из рома́на)

Ка́ждый день над рабо́чей слобо́дкой * гуде́л фабри́чный гудо́к.* Лю́ди, злы́е, не успе́вшие отдохну́ть за́ ночь, выбега́ли на у́лицу и шли на фа́брику. Она́ звала́

CC0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

их. Прямо стояли её трубы, они поднимались над домами как чёрные палки.

Вечером, когда садилось солнце, работа на фабрике кончалась. Люди снова шли по улицам, уставшие и голодные. Но теперь в их голосах звучала радость — на сегодня кончился тяжёлый труд, дома их ждёт ужин и отдых.

Фабрика взяла у них день. Машины взяли у них столько сил, сколько было. Человек сделал ещё один шаг к своей смерти.

Редко в слободку приходили чужие люди. Из их рассказов было ясно: жизнь рабочего везде одинакова. А если это так — о чём же разговаривать? От людей, которые говорили новое, жители слободки молча уходили, потому что не понимали их.

На краю домов жила семья Власовых. Они жили так же, как и все. После смерти отца Павел сделал то, что надо было каждому молодому человеку: купил гармонь* и красивый галстук. По вечерам он ходил в гости, научился танцевать.

Однажды мать спросила его:

— Тебе было весело вчера?

— Нет, — ответил он.

После этого разговора Павел перестал ходить в гости. Работал он хорошо, но был молчаливым, и его большие и голубые, как у матери, глаза смотрели недовольно.

Он начал приносить книги, старался читать их незаметно, а прочитав, куда-то прятал. Говорили они с матерью мало и мало видели друг друга. Утром он молча пил чай и уходил на работу, в полдень приходил обедать и снова уходил до вечера. А вечером умывался, ужинал и долго читал свои книги. По праздникам он уходил с утра и возвращался поздно ночью. Мать знала, что он ездит в город, бывает там в театре, но к нему из города никто не приезжал. Павел стал больше думать о своей чистоте и чистоте своей одежды, двигался свободнее, становился проще, мягче. И в отношении его к матери появилось что-то новое: он подметал пол в комнате, убирал свою постель, старался облегчить её труд. Никто в слободке этого не делал.

В комнате становилось больше книг, и стало даже красивее.

Так проходили дни, месяцы, и незаметно прошли два года.

CC-0. Agamdigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Однажды после ужина Павел опустил занавеску на окне́, сел и на́чал чита́ть. Мать убрала́ посу́ду и осторо́жно подошла́ к нему́.

— Я хочу́ спроси́ть у тебя́, — сказа́ла она́ ти́хо. — Что ты чита́ешь?

Па́вел отве́тил:

— Я чита́ю запрещённые кни́ги *. Их запреща́ют чита́ть потому́, что они́ говоря́т пра́вду о на́шей рабо́чей жи́зни. Их печа́тают та́йно, и, е́сли их найду́т, меня́ поса́дят в тюрьму́ за то́, что я хочу́ знать пра́вду. Поняла́?

Ей вдруг ста́ло стра́шно за сы́на.

— Заче́м тебе́ э́то, Па́ша?

Он по́днял го́лову, взгляну́л на неё и негро́мко повтори́л:

— Хочу́ знать пра́вду.

Она́ слу́шала его́ со стра́хом. Глаза́ сы́на горе́ли краси́во и светло́, он подви́нулся к ней бли́же и говори́л ей пря́мо в лицо́ свою́ пе́рвую речь о пра́вде, кото́рую он нашёл и по́нял.

— Что́ же ты хо́чешь де́лать? — спроси́ла она́.

— Учи́ться, а пото́м учи́ть други́х. Нам, рабо́чим, на́до учи́ться. Мы должны́ узна́ть и поня́ть, отчего́ мы так пло́хо живём.

Он рассказа́л ей о лю́дях, кото́рые, жела́я добра́ наро́ду, говори́ли ему́ пра́вду, а за э́то их лови́ли и сажа́ли в тюрьму́.

— Я ви́дел таки́х люде́й! — горячо́ воскли́кнул он, — э́то лу́чшие лю́ди на земле́!

Он встал, прошёл по ко́мнате, а пото́м сказа́л:

— Ну вот, тепе́рь ты зна́ешь, что я де́лаю и куда́ хожу́. Я рассказа́л тебе́ всё. Я прошу́ тебя́ то́лько об одно́м: е́сли ты лю́бишь меня́, не меша́й мне!

— Я не бу́ду тебе́ меша́ть, — воскли́кнула мать, — то́лько ты берегй себя́! Вокру́г мно́го плохи́х люде́й, кото́рые всех ненави́дят!

— Мно́го, — отве́тил Па́вел, — но когда́ я узна́л, что на све́те есть пра́вда, мне показа́лось, что лю́ди ста́ли лу́чше.

В слободе́ мно́го говори́ли о социали́стах *, кото́рые разбра́сывали всю́ду листо́вки *. В э́тих листо́вках писа́ли о жи́зни на фа́брике, о забасто́вках * рабо́чих в Петербу́рге * и в ю́жной Росси́и, их призыва́ли объединя́ться и боро́ться за свои́ интере́сы.

Те, кто хорошо́ зараба́тывал на фа́брике, серди́лись. Молоды́е чита́ли листо́вки с увлече́нием.

— Это пра́вда! — говори́ли они́.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Листо́вки волнова́ли рабо́чих, и е́сли их не́ было це́лую неде́лю, лю́ди шепта́ли друг дру́гу:

— Переста́ли, наве́рное, печа́тать!

А в понеде́льник листо́вки опя́ть появля́лись и сно́ва рабо́чие шуме́ли и разгова́ривали. Мать понима́ла, что э́тот шум по́днят рабо́той её сы́на, боя́лась за него́ и горди́лась им.

Осо́бенно подня́лся авторите́т * её сы́на по́сле исто́рии с «Боло́тной копе́йкой».

За фа́брикой бы́ло боло́то. Оно́ принадлежа́ло фа́брике. Но́вый дире́ктор захоте́л его́ осуши́ть * и приказа́л для э́того брать из ка́ждой зарпла́ты рабо́чего копе́йку. Рабо́чие заволнова́лись, собрали́сь перед вхо́дом. Позва́ли Па́вла.

— Вла́сов идёт! — кри́кнул кто́-то.

— Вла́сов? Пусть идёт сюда́!

Появи́лся Па́вел.

— Това́рищи! — сказа́л он.

Мать ви́дела, что у него́ побледне́ло лицо́, и гу́бы дрожа́т. Она́ прошла́ вперёд, раздвига́я люде́й. А Па́вел почу́вствовал, как его́ охвати́ло жела́ние бро́сить лю́дям своё се́рдце, зажжённое огнём мечты́ о пра́вде.

— Това́рищи! — повтори́л он. — Мы те лю́ди, кото́рые стро́ят дома́ и фа́брики. Мы та жива́я си́ла, кото́рая ко́рмит всех с де́тства и до ста́рости. Мы всегда́ и везде́ пе́рвые в рабо́те, но мы — на после́днем ме́сте в жи́зни. Кто забо́тится о на́с? Кто хо́чет нам добра́? Кто счита́ет нас людьми́? Никто́!

— Никто́! — отве́тил чей-то го́лос.

Па́вел стал говори́ть споко́йнее, про́ще. Лю́ди ме́дленно подходи́ли к нему́. Они́ смотре́ли на него́ со́тнями внима́тельных глаз.

— Мы не добьёмся лу́чшей жи́зни, пока́ не объедини́мся, пока́ не ста́нем семьёй друзе́й, кре́пко свя́занных одни́м жела́нием — жела́нием боро́ться за свои́ права́.

— Говори́ о де́ле, — закрича́ли где́-то ря́дом с ма́терью.

— Не меша́й! — отве́тили голоса́ из ра́зных мест.

— Он сме́ло говори́т! — толкну́в мать руко́й, сказа́л высо́кий рабо́чий.

— Пора́, това́рищи, поня́ть, что никто́ из на́с сами́х не помо́жет нам! Оди́н за все́х и все за одного́ * — вот наш зако́н, е́сли мы хоти́м победи́ть врага́.

— Он пра́вильно говори́т! — зашуме́ли в толпе́.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

— Нáдо позвáть дирéктора сюдá и сказáть ему́, что мы не отдади́м нáшу рабóчую копéйку! — продолжáл Пáвел.

Деся́тки голосóв кри́кнули:

— Дирéктора сюдá! Нáдо послáть за ни́м депутáтов *!

Мать прошлá вперёд и смотрéла на сы́на сни́зу вверх, пóлная гóрдости. Пáвел стоя́л среди стáрых, уважáемых рабóчих, все егó слу́шали, соглашáясь с ним. Пáвел смотрéл свéрху на людéй и искáл среди ни́х чегó-то широкó откры́тыми глазáми.

— Дирéктор идёт!

Лю́ди расступи́лись, давáя дорóгу высóкому человéку с бородóй и дли́нным лицóм. Перед ни́м снимáли шáпки, клáнялись. Он шёл ми́мо, не отвечáя на поклóны.

Вот он прошёл ми́мо мáтери, останови́лся. Ктó-то протяну́л ему́ свéрху ру́ку, чтóбы помóчь подня́ться, он не взя́л её, влез навéрх, встал перед Пáвлом и спроси́л:

— Почему́ вы брóсили рабóту?

Нéсколько секу́нд бы́ло ти́хо.

— Почему́ вы прекрати́ли рабóту?

Пáвел встал ря́дом с ним и грóмко сказáл, покáзывая на свои́х друзéй Сизóва и Ры́бина:

— Нас трои́х товáрищи попроси́ли потрéбовать, чтóбы вы отмени́ли своё распоряжéние о копéйке.

— Почему́? — спроси́л дирéктор, не взгляну́в на Пáвла.

— Мы не считáем э́то справедли́вым, — отвéтил Пáвел. — Если фáбрика осу́шит болóто на свои́ дéньги, э́то бу́дет всем поня́тно.

— Фáбрика не бу́дет занимáться таки́ми делáми на свои́ дéньги. Я прикáзываю всем немéдленно начáть рабóтать.

В толпé раздáлся недовóльный шум.

— Что? — спроси́л дирéктор, останáвливаясь.

Все замолчáли, тóлько отку́да-то издалекá раздáлся одинóкий гóлос:

— Рабóтай сам!

— Если через пятнáдцать мину́т вы не начнёте рабóту, я прикажу́ записáть всем штраф *.

Дирéктор снóва прошёл через толпу́, но тепéрь сзáди негó звучáли недовóльные голосá, и чем дáльше он уходи́л, тем грóмче станови́лись кри́ки.

— С ним бесполéзно говори́ть!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Ка́к же нам тепе́рь быть? Вла́сов, реша́й!

Па́вел заяви́л:

— Я предлага́ю, това́рищи, останови́ть рабо́ту до того́ вре́мени, пока́ дире́ктор не отка́жется от копе́йки.

Рабо́чие закрича́ли, заспо́рили.

— Забасто́вка?

— А почему́ не забасто́вка?

— А е́сли нас всех уво́лят?

— А кто́ же тогда́ рабо́тать бу́дет?

Па́вел сошёл вниз, встал ря́дом с ма́терью. Ему́ каза́лось, что его́ слова́ не по́няты, что они́ исче́зли бесследно среди́ э́тих люде́й. Оста́ток дня он ходи́л уста́лый, глаза́ его́ горе́ли и как бу́дто иска́ли чего́-то.

Мать осторо́жно спроси́ла:

— Что с тобо́й, Па́ша?

— Голова́ боли́т, — заду́мчиво отве́тил он.

— Ложи́сь, а я позову́ врача́.

Он посмотре́л на неё и бы́стро отве́тил:

— Нет, не на́до!

И вдруг ти́хо заговори́л:

— Мо́лод я, ма́ло у меня́ сил! Не пове́рили мне, не пошли́ за моей пра́вдой. Зна́чит, не суме́л я её сказа́ть. Пло́хо мне, оби́дно за себя́.

Мать ти́хо сказа́ла:

— Ты подожди́! Сего́дня не по́няли, а за́втра пойму́т...

— Должны́ поня́ть! — воскли́кнул он.

— Да́же я понима́ю твою́ пра́вду!

— Ты, мать, хоро́ший челове́к... — Па́вел отверну́лся от неё.

Она́ приложи́ла ру́ку к се́рдцу и ушла́, бе́режно унося́ с собо́й его́ ла́сковые слова́.

Но́чью, когда́ она́ спала́, а он чита́л кни́гу, пришли́ жандармы *.

Па́вел успе́л шепну́ть ма́тери:

— Меня́ забери́т в тюрьму́...

— Понима́ю...

Она́ понима́ла — его́ поса́дят в тюрьму́ за то́, что он говори́л сего́дня рабо́чим. Но с э́тим мно́гие соглаша́лись, а зна́чит, все должны́ помо́чь ему́ сно́ва вы́йти на свобо́ду.

Листо́вки, призыва́вшие рабо́чих пра́здновать Пе́рвое ма́я *, почти́ ка́ждый день появля́лись на забо́рах. Их находи́ли на фа́брике. По утра́м жандармы ходи́ли по слободе́, срыва́я листо́вки с забо́ров, а днём они́

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

сно́ва лета́ли по у́лицам. Из го́рода присла́ли сы́щиков *, кото́рые стоя́ли на угла́х и рассма́тривали рабо́чих, проходи́вших с фа́брики на обе́д и обра́тно.

Всем нра́вилось, что поли́ция была́ бесси́льна, да́же ста́рым рабо́чим. Вско́ду собира́лись лю́ди, обсужда́ли волну́ющий призы́в. Жизнь в э́ту весну́ была́ интере́снее, она́ несла́ всем что́-то но́вое.

Па́вел и его́ друг Андре́й не спа́ли по ночам, приходи́ли домо́й уста́лые, бле́дные. Мать зна́ла, что они́ устра́ивают собра́ния в лесу́ и на боло́те.

И вот пришёл э́тот день — Пе́рвое ма́я!

Загуде́л гудо́к. Рабо́чие, собра́вшиеся на краю́ ле́са, вздро́гнули, сиде́вшие вста́ли на́ ноги. На мину́ту все за́мерли.

— Това́рищи! — разда́лся го́лос Па́вла, зву́чный и гро́мкий.

Мать смотре́ла ему́ в лицо́ и ви́дела то́лько его́ глаза́, го́рдые, сме́лые, жгу́чие...

— Това́рищи! Мы реши́ли откры́то заяви́ть, кто мы. Мы поднима́ем сего́дня на́ше зна́мя, зна́мя ра́зума, пра́вды, свобо́ды!

Через мину́ту над по́днятыми вверх ли́цами люде́й поднялось кра́сное зна́мя рабо́чего наро́да.

Па́вел по́днял ру́ку вверх, зна́мя покачну́лось. Но деся́тки рук схвати́ли его́, что́бы помо́чь. Среди ни́х была́ рука́ его́ ма́тери.

— Да здра́вствует рабо́чий наро́д! — кри́кнул Па́вел.

Со́тни голосо́в закрича́ли вме́сте с ним.

— Да здра́вствует социа́л-демократи́ческая па́ртия *, на́ша па́ртия, това́рищи!

Толпа́ шуме́ла, сквозь неё подходи́ли бли́же к зна́мени те, кто по́нял значе́ние происходя́щего. Ря́дом с Па́влом стоя́ли Ма́зин, Само́йлов, Гу́севы и ещё каки́е-то незнако́мые ма́тери, молоды́е лю́ди с горя́щими глаза́ми.

— Да здра́вствуют рабо́чие лю́ди всех стран!

Толпа́ станови́лась плотне́е. Па́вел махну́л зна́менем, оно́ попла́ло вперёд, освещённое со́лнцем.

— Отречёмся от ста́рого ми́ра *... — запе́л Фе́дя Ма́зин, и деся́тки рабо́чих подхвати́ли пе́сню.

Мать с улы́бкой на губа́х стоя́ла позади́ Ма́зина и через го́ловы смотре́ла на сы́на и на зна́мя. Вокру́г её мелька́ли ра́достные ли́ца, впереди́ всех шли её сын и Андре́й. Она́ слы́шала их поющие голоса́ — мя́гкий

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
го́лос Андре́я слива́лся с го́лосом её сы́на, густы́м и краси́вым.

— Встава́й, поднима́йся, рабо́чий наро́д,
Встава́й на борьбу́, люд* голо́дный!*

Наро́д бежа́л навстре́чу зна́мени, слива́лся с демонстра́цией и шёл с ней обра́тно. Всё гро́мче пе́ли. Революцио́нная пе́сня звуча́ла со стра́шной си́лой, призыва́ла люде́й в далёкую доро́гу к бу́дущему, че́стно предупрежда́ла о тяжёлом пути́.

Како́е-то же́нское лицо́, испу́ганное и ра́достное, появи́лось ря́дом с ма́терью, и дрожа́щий го́лос закрича́л:

— Ми́тя, сыно́к, куда́ ты?

Мать, не остана́вливаясь, сказа́ла:

— Пусть он идёт, не волну́йтесь! Я то́же снача́ла о́чень боя́лась. А тепе́рь мой сын — впереди́ всех. Вот он несёт зна́мя!

Се́рдце ма́тери би́лось сли́шком си́льно, и она́ начала́ отставать. Ми́мо неё проходи́ла толпа́ люде́й. Их бы́ло о́чень мно́го, и э́то ра́довало её.

— Встава́й, поднима́йся, рабо́чий наро́д! — пе́ли все.

Тепе́рь толпа́ была́ похо́жа на большу́ю чёрную пти́цу. Она́ широко́ раски́нула свои́ кры́лья, гото́вая подня́ться в во́здух и лете́ть, а Па́вел был её кло́вом.

## В. И. ЛЕНИН

(отры́вок)

Влади́мир Ле́нин у́мер.

Да́же не́которые из его́ врагов че́стно признаю́т*: в лице́ Ле́нина мир потеря́л челове́ка, «кото́рый среди́ всех совреме́нных ему́ люде́й наибо́лее я́рко воплоща́л в себе́ гениа́льность*».

Писа́ть его́ портре́т — тру́дно. Хотя́ он был прост и прям, как всё, что он говори́л.

Его́ геройзм — геройзм без вне́шнего бле́ска. Это ча́стая в Росси́и де́ятельность че́стного ру́сского интеллиге́нта, твёрдо убеждённого челове́ка, кото́рый отказа́лся от все́х ра́достей ми́ра ра́ди тяжёлой рабо́ты для сча́стья люде́й. Впервы́е я уви́дел Ле́нина на Ло́ндонском съе́зде*. До э́того я не встреча́л Ле́нина и чита́л его́ не та́к мно́го, как ну́жно бы́ло. Но то, что я прочита́л, а осо́бенно восто́рженные расска́зы това́рищей, кото́рые ли́чно зна́ли его́, потяну́ло меня́ к нему́ с большо́й си́лой. Когда́ нас познако́мили, он, кре́пко пожа́в

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
мою́ ру́ку, гля́дя на меня́ зо́ркими* глаза́ми, загово-
ри́л со мно́й как со ста́рым знако́мым, шутли́во:

— Это хорошо́, что вы прие́хали. Ведь вы дра́ки* лю́бите? Здесь бу́дет больша́я дра́ка!

Я ожида́л, что Ле́нин не тако́й. Мне чего́-то не хвата́ло в нём. Он карта́вил*, и вообще́ был ка́к-то о́чень прост, в нём не́ было ничего́ от «вождя́»*.

Этот лы́сый, карта́вый, кре́пкий* челове́к, ла́сково смотря́ на меня́ свои́ми удиви́тельно живы́ми глаза́ми, сра́зу же на́чал говори́ть со мно́й о недоста́тках мое́й кни́ги «Мать». Оказа́лось, что он прочита́л её ещё в ру́кописи.

Я сказа́л, что о́чень спеши́л написа́ть э́ту кни́гу, но не успе́л объясни́ть, почему́ торопи́лся. Ле́нин утверди́тельно кивну́л голово́й* и сам объясни́л э́то: о́чень хорошо́, что я торопи́лся, кни́га — ну́жная, мно́го рабо́чих уча́ствовало в революцио́нном движе́нии несозна́тельно, стихи́йно*, а тепе́рь они́ прочита́ют «Мать» с большо́й по́льзой для себя́.

«Очень своевре́менная* кни́га», — сказа́л мне Ле́нин. Это был еди́нственный, но о́чень це́нный для меня́ о́тзыв. Пото́м он делови́то спроси́л, перевели́ ли «Мать» на иностра́нные языки́. Рабо́та съе́зда продолжа́лась, мне о́чень хоте́лось услы́шать выступле́ние Ле́нина.

И вот он бы́стро вошёл на ка́федру*, карта́во произнёс сло́во «това́рищи». Мне показа́лось, что он пло́хо говори́т, но уже́ через мину́ту я не слы́шал ничего́, кро́ме его́ ре́чи. Пе́рвый раз в жи́зни я по́нял, что о сложне́йших вопро́сах поли́тики мо́жно говори́ть так про́сто. Ле́нин не сочиня́л краси́вые предложе́ния, он говори́л ка́ждое сло́во, как бы подава́я его́ на ладо́ни, о́чень легко́ пока́зывая его́ то́чный смысл. Очень тру́дно рассказа́ть о необыкнове́нном впечатле́нии, кото́рое он вы́звал.

Его́ рука́, протя́нутая вперёд и немно́го по́днятая вверх, ладо́нь, кото́рая ка́к бы взве́шивала тя́жесть ка́ждого сло́ва, — всё э́то бы́ло необыкнове́нно и говори́лось Ле́ниным ка́к бы не от себя́, а действи́тельно по во́ле исто́рии. Сли́тность*, зако́нченность, прямота́ и си́ла его́ ре́чи, весь он на ка́федре — бы́ли как произведе́ние иску́сства, в кото́ром не́ было ничего́ ли́шнего, никаки́х украше́ний.

По временам он говори́л ме́ньше ора́торов, кото́рые выступа́ли до него́, но по впечатле́нию — значи́тельно бо́льше, не оди́н я чу́вствовал э́то, сза́ди кто́-то ти́хо сказа́л:

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Бу́дете говори́ть*.

Через не́сколько дней рабо́чие, впервы́е ви́девшие Ле́нина, говори́ли о его́ поведе́нии на съе́зде. Кто́-то из ни́х сказа́л:

— Не зна́ю, мо́жет быть, здесь, в Евро́пе, у рабо́чих есть и друго́й тако́й же у́мный челове́к. Но я не ве́рю, что есть друго́й челове́к, кото́рого бы я полюби́л бы сра́зу как Ле́нина.

А друго́й рабо́чий доба́вил, улыба́ясь:

— Этот — наш!

Мы обе́дали всегда́ в одно́м и то́м же небольшо́м, дешёвом рестора́не. Я заме́тил, что Влади́мир Ильи́ч ест о́чень ма́ло. Бы́ло ви́дно, что о себе́ он почти́ не забо́тится, но меня́ удивля́ла его́ удиви́тельная забо́тливость по отноше́нию к рабо́чим. Он спра́шивал:

— Как вы ду́маете: не голода́ют това́рищи? Нет? А мо́жет быть, увели́чить для ни́х коли́чество бутербро́дов?

Когда́ я пришёл с ним в гости́ницу, где я жил, я уви́дел, что он руко́й тро́гает посте́ль.

— Что вы де́лаете? — спроси́л я Влади́мира Ильича́.

— Смотрю́, не сыры́е ли про́стыни.

Я не сра́зу по́нял, заче́м ему́ ну́жно знать, каки́е в э́той гости́нице про́стыни. Тогда́ он объясни́л:

— Вы боле́ете, вы должны́ следи́ть за свои́м здоро́вьем.

Осенью 1918 го́да я спроси́л рабо́чего Дми́трия Па́влова, какова́ са́мая заме́тная черта́ Ле́нина. Он отве́тил:

— Простота́. Он прост как пра́вда.

Он сказа́л э́ти слова́ так, как бу́дто ду́мал об э́том давно́ и давно́ всё реши́л.

Изве́стно, что стро́же всего́ к челове́ку отно́сятся его́ слу́жащие. Но шофёр Ле́нина, по фами́лии Гиль, мно́го ви́девший челове́к, говори́л:

— Ле́нин — осо́бенный. Таки́х бо́льше нет. Я везу́ его́ по большо́й у́лице, где о́чень мно́го маши́н и е́хать тру́дно. Я о́чень волну́юсь. А он откры́л дверь, переся́л на пере́днее сиде́ние и говори́т мне:

— Пожа́луйста, не волну́йтесь, поезжа́йте как все.

— Я ста́рый шофёр*, — сказа́л Гиль, — я зна́ю — никто́ так не сде́лает.

Я никогда́ не встреча́л челове́ка, кото́рый уме́л бы так хорошо́ смея́ться, как смея́лся Влади́мир Ильи́ч. Бы́ло да́же стра́нно ви́деть, что тако́й реали́ст, челове́к, кото́рый так хорошо́ всё ви́дит и чу́вствует неизбе́жность

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
полити́ческих собы́тий, ненави́дящий мир капитали́зма, мо́жет смея́ться, как ребёнок, до слёз *...

Позднée мы встре́тились на Ка́при *. Ле́нин там был прекра́сным това́рищем, весёлым челове́ком с интере́сом ко всему́ в ми́ре, с о́чень мя́гким отноше́нием к лю́дям.

Он ча́сто спра́шивал нас о жи́зни капри́йских * рыба́ков, о то́м, ско́лько они́ зараба́тывают, о це́ркви, о шко́ле. Широта́ его́ интере́сов удивля́ла меня́.

В нём была́ кака́я-то си́ла, кото́рая притя́гивала к нему́ просты́х люде́й. Он не говори́л по-италья́нски, но рыбаки́ о́строва Ка́при, кото́рые ви́дели мно́го ру́сских, ка́к-то сра́зу поста́вили Ле́нина на осо́бое ме́сто *.

Ста́рый рыба́к Джиова́нни Спида́ро сказа́л о нём:

— Так смея́ться мо́жет то́лько о́чень че́стный челове́к.

А для меня́ са́мым дороги́м в Ле́нине бы́ло его́ чу́вство неугаси́мой вражды́ * к несча́стьям люде́й, ве́ра в то, что мо́жно побороть любо́е несча́стье. Именно э́то привлека́ло меня́ к Ле́нину — Челове́ку с большо́й бу́квы *.

Он был ру́сский челове́к, кото́рый до́лго жил за грани́цей и отту́да внима́тельно рассма́тривал свою́ страну́, он пра́вильно оцени́л си́лы её наро́да...

Влади́мир Ле́нин, большо́й настоя́щий челове́к, — у́мер. Эта смерть бо́льно уда́рила по сердца́м тех люде́й, кото́рые зна́ли его́, о́чень бо́льно!

И нет сил, кото́рые смогли́ бы потуши́ть фа́кел, по́днятый Ле́ниным в темноте́ э́того ми́ра.

И нет челове́ка, кото́рый так, как э́тот, заслужи́л в ми́ре ве́чную па́мять.

Влади́мир Ле́нин у́мер. Но его́ после́дователи * — жи́вы. Жи́вы и рабо́тают так успе́шно, как никто́, никогда́, нигде́ в ми́ре не рабо́тал.

### टिप्पणियाँ

рабо́чая слобо́дка — मज़दूरों की बस्ती

фабри́чный гудо́к — कारख़ाने का भोंपू

гармо́нь — रूसी अकार्डियन

запрещённые кни́ги — प्रतिषिद्ध ( निषिद्ध ) पुस्तकें ( क्रांतिकारी संघर्षविषयक पुस्तकें जिन्हें छापने, बाँटने और पढ़ने पर ज़ारशाही सरकार प्रतिबंध लगाती थी )

социали́сты — समाजवादी पार्टियों के सदस्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
листóвка — परचा, पर्चा

забастóвка — हड़ताल

Петербýрг — पीटर्सबर्ग (लेनिनग्राद का पुराना नाम)

авторитéт — प्रतिष्ठा, गौरव

осушúть — सुखाना, पानी निकालना

Одúн за всех и все за одногó — एक सब के लिए और सब एक के लिए

депутáт — [चुना हुआ] प्रतिनिधि

штраф — [माली] जुरमाना, अर्थ-दंड

жандáрм — राजनीतिक पुलिस का सिपाही

Пéрвое мáя — पहली मई (श्रमिकों का अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव, सारी दुनिया के मज़दूरों की एकजुटता का दिन)

сы́щик — जासूस, भेदिया

социáл-демократúческая пáртия — सामाजिक-जनवादी दल (अर्थात् रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर दल — १८९८-१९१७ में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का यही नाम था)

«Отречёмся от стáрого мúра...» — «पुरानी दुनिया को त्याग देंगे..» (लोकप्रिय क्रांतिकारी गीत के पहले शब्द)

«Вставáй, поднимáйся, рабóчий народ, вставáй на борьбý, люд голóдный!» — «उठ खड़े हो जाओ, मज़दूर लोगो, लड़ने को उठो, भूखे लोगो!» (लोकप्रिय क्रांतिकारी गीत के शब्द)

люд — लोग, आम जनता

* * *

признавáть — मानना, स्वीकार करना

наибóлее я́рко воплощáть в себé гениáльность — प्रतिभा की ज्वलंत मूर्त्ति होना

Лóндонский съезд — लंदन में हुई कांग्रेस (रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर दल की पाँचवीं कांग्रेस जो १९०७ में लंदन में हुई थी)

зóркий — (यहाँ) पैना

дрáка — (यहाँ) बहस

картáвить — «र» का «ड़» जैसा उच्चारण करना

крéпкий — कड़ियल

утвердúтельно кивнýть головóй — हामी में सिर हिलाना

несознáтельно, стихúйно — स्वयंस्फूर्त्त ढंग से

своевремéнный — समयानुकूल, समयोचित

кáфедра — मंच

слúтность — तर्कसंगतता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Гу́сто говори́т... — ( यहाँ ) इतनी बातें गागर में सागर भरती हैं...

Я ста́рый шофёр — मैं अनुभवी ड्राइवर हूँ

смея́ться до слёз — हँसते-हँसते दोहरा हो जाना

Ка́при — काप्री ( टिर्हीनियन सागर में इटली का एक छोटा द्वीप जहाँ गोर्की आराम और इलाज के लिए रहे )

капри́йский — काप्री द्वीप पर रहनेवाला

поста́вить на осо́бое ме́сто — विशेष स्थान प्रदान करना

неугаси́мая вражда́ — अतृप्त द्वेष, अनबुझी दुश्मनी

Челове́к с большо́й бу́квы — महापुरुष

после́дователь — अनुयायी, शिष्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

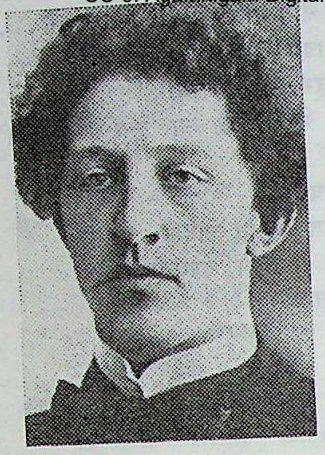

Александр Блок
अलेक्सान्द्र ब्लोक
(१८८०-१९२१)

अलेक्सान्द्र अलेक्सान्द्रोविच ब्लोक २० वीं सदी के पूर्वार्द्ध के सबसे बड़े कवियों में से एक थे। उनका नाम पुश्किन, लेर्मोन्तोव, नेक्रासोव, मायाकोव्स्की की पाँत में आता है। ब्लोक के साहित्यिक सृजन ने रूसी क्लासिक काव्य-धारा को सोवियत काव्य-धारा से मिलाया। उनके समसामयिक यह बात भली भाँति समझते थे। मायाकोव्स्की ने लिखा : «ब्लोक का सृजन आसन्न अतीत का एक पूरा काव्य-युग है। ब्लोक ने समसामयिक काव्य पर गहरा प्रभाव डाला है...»

ब्लोक की आरंभिक कृतियाँ अश्रुतपूर्व परिवर्त्तनों और «विनाश» की भावनाओं से रंजित हैं। प्रतीकवाद के कवि होते हुए ब्लोक ने सामंजस्य के स्वप्न को साकार करते विश्व-सौंदर्य और शाश्वत नारीत्व के सपने देखे। ब्लोक शाश्वतता और प्रणय की प्रतीक सौंदर्य-देवी के उपासक थे। («सौंदर्य-देवी की कविता»)

१९०५ में ब्लोक के सृजन में आमूल परिवर्त्तन आता है, वह प्रतीकवाद से नाता तोड़ते हैं और उनकी कविताओं में सामाजिक विषय आने लगते हैं। पुराने संसार की अस्वीकृति और जीवन का नवीकरण करने की आकांक्षा अक्तूबर क्रांति से पूर्व के ब्लोक के सृजन के लिए लाक्षणिक हो जाती है।

परंतु कवि अंतर्विरोधों से पूर्ण रूप से मुक्ति नहीं हो पाया। क्रांतिपूर्व की कविताओं «बर्फ़ीला नक़ाब» और «आएंब्स» में मनुष्य के प्रति प्रेम, जीवन की संपुष्टि, स्वतंत्रता, सुख के विषयों के साथ-साथ एकाकीपन तथा इस «भयानक संसार» में अपना स्थान ढूँढ़ पाने की असंभाव्यता के विचार भी ध्वनित होते हैं। किंतु इसी समय में ब्लोक अपनी डायरी में लिखते हैं : «मेरे लिए केवल महान् जनवादी रूस संभव और स्वीकार्य है।»

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
१९१७ की अक्तूबर क्रांति के एकदम बाद ब्लोक ने दृढ़तापूर्वक जनता का पक्ष लिया। उन्होंने लिखा: «बुद्धिजीवी वर्ग बोल्शेविकों के साथ हो सकता है और उसे होना चाहिये।»

जनवरी १९१८ में ब्लोक ने «बारह» कविता लिखी और इसके साथ क्रांति को ग्रहण करनेवाले तथा उसका यशगान करनेवाले एक पहले कवि बने। ब्लोक के लिए क्रांति एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन को सारी जुगुप्साओं से मुक्त करती है। इसीलिए वह अपनी कविता में पुराने संसार के विनाश का स्वागत करते हैं। उनके शब्दों में: «हम कवि क्रांति की आत्मा खोजते हैं।» «बारह» कविता का नूतन रूप, इसके छंद की गति, इसकी बोल-चाल की भाषा और तालों का परिवर्त्तन – ये सब कवि के लिए क्रांति की गति व्यक्त करने के माध्यम हैं। «बारह» कविता सोवियत साहित्य की श्रेष्ठतम रचनाओं में से एक है। इसका अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। आज हम ब्लोक के बारे में स्वयं ब्लोक के शब्दों से कह सकते हैं:

«वह है संतान दया और प्रकाश की,
वह है विजय स्वतंत्रता की।»

## ДВЕНАДЦАТЬ

(отры́вки из поэ́мы)

Чёрный ве́чер,
Бе́лый снег.
Ве́тер, ве́тер!
На нога́х не стои́т челове́к.
Ве́тер, ве́тер —
На всём бе́лом све́те!
Завива́ет ве́тер
Бе́лый снежо́к *.
Под снежко́м — ледо́к *.
Ско́льзко, тя́жко *,
Вся́кий ходо́к *
Скользи́т — ах, бедня́жка *!
От зда́ния к зда́нию
Протя́нут кана́т *.
На кана́те — плака́т:
«Вся власть Учреди́тельному Собра́нию!»*
Стару́шка убива́ется *, пла́чет,
Ника́к не поймёт, что зна́чит,
На что́ * тако́й плака́т,
Тако́й огро́мный лоску́т *?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Сколько бы вышло портянок* для робят,
А вся́кий — разде́т, разу́т*...
...Ве́тер весёлый
И зол и рад.
Кру́тит подо́лы*,
Прохо́жих ко́сит*,
Рвёт, мнёт и но́сит
Большо́й плака́т:
Вся власть Учреди́тельному Собра́нию! ...
...Хле́ба!
Что впереди́?
Проходи́!
Чёрное, чёрное не́бо.
Зло́ба, гру́стная зло́ба
Кипи́т в груди́...
Чёрная зло́ба, свята́я зло́ба...
Това́рищ! Гляди́
в о́ба!*
Гуля́ет ве́тер, порха́ет снег*,
Иду́т двена́дцать челове́к.
Винто́вок чёрные ремни́,
Круго́м огни́, огни́, огни́...

Круго́м огни́, огни́, огни́...
Опле́чь* руже́йные ремни́...
Революцио́нный держи́те шаг!*
Неугомо́нный* не дре́млет враг!*

**टिप्पणियाँ**

Завива́ет ве́тер бе́лый снежо́к. — हवा सफ़ेद बर्फ़ के बवंडर उड़ाती है।

ледо́к (лёд का अल्पार्थक रूप) — पतली बर्फ़

тя́жко — मुश्किल है

ходо́к — राह-चलता

бедня́жка — बेचारा

кана́т — रस्सा

«Вся власть Учреди́тельному Собра́нию!» — «सारी राज-सत्ता संविधान-सभा को!»

Стару́шка убива́ется — बुढ़िया दुखी हो रही है

на что — किसलिए

лоску́т — कपड़े का टुकड़ा, लत्ता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
портя́нки — घुटनों तक ऊँचे फ़ौजी बूटों में जुराबों के ऊपर लपेटी जानेवाली पट्टियाँ

разу́т[ый] — नंगे पैरवाला

подо́л — पल्ला

коси́ть — ( यहाँ ) [ नीचे ] गिराना

Гляди́ в о́ба! — सावधान ( चौकस ) रहो !

Гуля́ет ве́тер, порха́ет снег — हवा चलती है, बर्फ़ उड़ रही है

опле́чь — कंधे के ऊपर

Революцио́нный держи́те шаг! — क्रांति की ओर क़दम बढ़ाते चलो !

неугомо́нный — चुलबुला

не дре́млет враг — दुश्मन सोता नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

## Александр Грин

### अलेक्सान्द्र ग्रीन

### (१८८०-१९४२)

अलेक्सान्द्र ग्रीन अलेक्सान्द्र स्तेपानोविच ग्रीनेव्स्की का उपनाम है। प्रसिद्ध सोवियत लेखक कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्स्की ने ग्रीन के जीवन और कार्य के सार-तत्व की सबसे सटीक व्याख्या की: «ग्रीन ने कठिन जीवन बिताया। इस जीवन में सब-कुछ ऐसा रहा मानो वह ग्रीन को या तो अपराधी या चिड़चिड़ा कूप-मंडूक बनाने पर तुला हो। समझ में नहीं आता कि किस तरह यह रूखा आदमी अपनी कठिनतम जीवन-यात्रा में बेदाग़ रहा और उसने प्रबलतम कल्पना-क्षमता की प्रतिभा, भावों की शुद्धता और लजीली मुस्कान बनाये रखी। ग्रीन का जीवन मानव-संबंधों की क्रांतिपूर्व व्यवस्था का निर्मम उदाहरण है।»

दूर-दराज के व्यात्का नगर में ग्रीन ने आनंदहीन, कठिन और निर्धनतापूर्ण बचपन बिताया। जीवन में किसी स्थान और नौकरी की खोज में भटकते फिरे ग्रीन कहाँ कहाँ नहीं गये लेकिन इस स्वप्निल अव्यावहारिक नौजवान के प्रति जीवन सर्वत्र निष्ठुर ही रहा। वह मल्लाह, क़ुली और लिपिक रहे, आग बुझाने का उन्होंने काम किया और उराल की खानों में खुदाई की।

उस सागर से पहली भेंट जिसके बारे में ग्रीन ने अपनी अधिकांश रचनाएँ लिखीं ओदेस्सा नगर में हुई। इसके बाद और भी मुलाक़ातें हुईं – सेवास्तोपोल, फ़ेओदोसिया और याल्ता नगर में। ये नगर ही बाद में कल्पित कथाओं के कल्पित नगर हो गये जिनका वर्णन उनकी रोमांटिक उपन्यासिकाओं और कहानियों में हम पाते हैं।

ग्रीन की पहली कहानी पीटर्सबर्ग के एक समाचार-पत्र में छपी थी। यह उनके जीवन की पहली सच्ची ख़ुशी थी। इसके साथ ग्रीन ने साहित्य में चित्ताकर्षक, रोमानी, स्वप्निल कथाओं के लेखक के रूप में प्रवेश

किया। उनकी लंबी कहानी «लाल पाल» (१९२३) जीवन के प्रति प्रेम, उजाले और इस विश्वास से परिपूर्ण है कि सुख पाने की अपनी अभिलाषा में मनुष्य चमत्कार कर सकता है। अपनी एक दूसरी कृति – «लहरों पर दौड़ती» उपन्यास (१९२८) – में ग्रीन उदार, ज़िंदादिल, बहादुर लोगों का गुणगान करते हैं, सुंदर इलाक़ों और अद्भुत घटनाओं का वर्णन प्रस्तुत करते हैं। वे हृदयस्पर्शी हैं, कल्पना-शक्ति जगाते हैं और जीवन में खोजों की इच्छा पैदा करते हैं। «ग्रीन हमारे युग के लिए नितांत प्रासंगिक लेखक हैं क्योंकि उन्होंने उदात्त भावों के पोषण में अपना योगदान किया है जिनके बिना समाजवादी समाज की स्थापना असंभव है।» – ग्रीन के बारे में पाउस्तोव्स्की ने लिखा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

## АЛЫЕ ПАРУСА

### ПРЕДСКАЗА́НИЕ

Лонгре́н, матро́с*, кото́рый о́чень люби́л свой кора́бль*, ушёл с него́. Это случи́лось так: одна́жды, когда́ он прие́хал в о́тпуск, он не уви́дел свою́ жену́ Ме́ри, кото́рая обы́чно бежа́ла ему́ навстре́чу. А в до́ме он нашёл свою́ сосе́дку о́коло ма́ленькой де́тской крова́тки.

— Посмотри́ на свою́ дочь, — сказа́ла ему́ сосе́дка, — я уха́живала* за не́й три ме́сяца.

— Почему́ умерла́ Ме́ри? — спроси́л Лонгре́н.

Сосе́дка рассказа́ла печа́льную исто́рию. По́сле рожде́ния до́чери Ме́ри до́лго боле́ла, и на лече́ние ушли́ все её де́ньги. Ме́ри попроси́ла де́нег у ла́вочника* Ме́ннерса, он был бога́тым челове́ком. Ме́ннерс обеща́л дать ей де́нег, но потре́бовал за э́то любви́.

Ме́ри пошла́ к нему́ в шесть часо́в ве́чера, а в семь сосе́дка встре́тила её на доро́ге в го́род. Ме́ри сказа́ла, что она́ идёт туда́, что́бы прода́ть своё обруча́льное кольцо́*. Она́ рассказа́ла сосе́дке о тре́бовании Ме́ннерса.

В э́тот ве́чер была́ о́чень холо́дная пого́да. До го́рода бы́ло о́коло трёх часо́в пути́. Верну́вшись, Ме́ри заболе́ла, и через неде́лю умерла́.

На сле́дующий день Лонгре́н пое́хал в го́род, попроща́лся с това́рищами и на́чал расти́ть ма́ленькую Ассо́ль. Он на́чал рабо́тать. Ско́ро в городски́х магази́нах появи́лись его́ игру́шки — ма́ленькие ло́дки, корабли́, парохо́ды. Лонгре́н всегда́ был молчали́вым че-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ловéком, а пóсле смéрти жены́ он совсéм не хотéл никогó ви́деть и тóлько по прáздникам иногдá заходи́л в тракти́р *, но никогдá не сади́лся к столу́ и ни с кéм не разговáривал. Все ну́жные вéщи он покупáл в гóроде, у Мéннерса он не купи́л дáже корóбки спи́чек.

Прошлó пять лет, и Лонгрéн всё светлée улыбáлся, глядя на свою мáленькую дочь, котóрая сидéла у негó на колéнях и пéла матрóсские пéсни. В э́то врéмя произошлó собы́тие, тень от котóрого упáла не тóлько на отцá, но и на дóчь.

Былá óчень холóдная веснá, похóжая на зи́му. На мóре бушевáла бу́ря. В э́ти дни почти́ никтó не выходи́л из дóма. Но Лонгрéн чáсто приходи́л к мóрю, стоя́л на берегу́ и смотрéл на вóлны. Здесь, в шу́ме воды́ и вéтра, он ду́мал о Мéри, и ему́ станови́лось немнóго лéгче.

В оди́н из таки́х дней сын Мéннерса замéтил, что лóдка отцá отвязáлась и мóжет уплы́ть в мóре. Он побежáл домóй и рассказáл об э́том отцу́. Мéннерс побежáл к лóдке, вошёл в неё и попытáлся её привязáть. Но си́льный удáр вéтра отнёс лóдку в откры́тое мóре. На берегу́ стоя́л Лонгрéн. Расстоя́ние от бéрега до лóдки бы́ло ещё не óчень больши́м.

— Лонгрéн! — закричáл испу́ганный Мéннерс. — Брось мне верёвку!

Лонгрéн стоя́л на берегу́ и мóлча смотрéл на Мéннерса.

— Лонгрéн! — кричáл Мéннерс, — спаси́ меня́! Я поги́бну!

Но Лонгрéн молчáл, как бу́дто он не слы́шал гóлоса Мéннерса. А когдá лóдка былá ужé далекó, он кри́кнул:

— Вспóмни про мою́ женý! Онá тáк же проси́ла тебя́! Ду́май об э́том, покá ты ещё не у́мер!

На слéдующий день все говори́ли о исчéзнувшем Мéннерсе, а через шéсть дней егó нашли́ и перед смéртью он рассказáл всем о посту́пке Лонгрéна. Мнóгие понимáли, почему́ Лонгрéн так поступи́л, но никтó не понимáл, почему́ он стоя́л на берегу́ и молчáл. Жи́телям дерéвни бы́ло бы поня́тно, éсли бы Лонгрéн бéгал по бéрегу и злорáдствовал *, гля́дя на Мéннерса. Но он молчáл, и в э́том молчáнии бы́ло бóльше нéнависти, чем в кри́ке.

С э́того дня никтó не разговáривал с Лонгрéном и не подавáл ему́ руки́ *. Егó не понимáли и не люби́ли. И э́та нелюбóвь как тень пáдала на Ассóль.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Де́вочка росла́ без подру́г *. Де́ти не хоте́ли с ней игра́ть, броса́ли в неё ка́мни, когда́ она́ подходи́ла к ним.

— Скажи́, — спра́шивала она́ отца́, — почему́ они́ нас не лю́бят?

— Они́ не уме́ют люби́ть, — отвеча́л оте́ц.

— А как э́то — уме́ть люби́ть?

— Вот так, — отвеча́л оте́ц и целова́л её в глаза́.

Ассо́ль бо́льше всего́ люби́ла рассма́тривать игру́шки, кото́рые де́лал оте́ц. Она́ сиде́ла у него́ на коле́нях, и он расска́зывал ей о свое́й жи́зни на мо́ре, о лю́дях, об и́х отноше́ниях. Когда́ Ассо́ль испо́лнилось во́семь лет, оте́ц научи́л её чита́ть и писа́ть. Он брал её с собо́й в го́род, а иногда́ разреша́л ей пойти́ одно́й и отнести́ гото́вые игру́шки.

Одна́жды в середи́не тако́го путеше́ствия Ассо́ль се́ла на краю́ доро́ги, что́бы съесть кусо́к пирога́, кото́рый взяла́ на за́втрак. Она́ е́ла пиро́г и рассма́тривала игру́шки. Одна́ из ни́х была́ но́вой, потому́ что оте́ц сде́лал её но́чью. Это была́ ма́ленькая я́хта * бе́лого цве́та, паруса́ для кото́рой Лонгре́н сде́лал из а́лого * шёлка *. Наве́рное, у него́ не́ было бе́лого материа́ла. Ассо́ль замерла́, когда́ уви́дела я́хту. Алый цвет был таки́м я́рким, что горе́л у неё в рука́х. Доро́гу пересека́л небольшо́й руче́й *, а Ассо́ль захоте́лось посмотре́ть, как пла́вает э́та я́хта. Она́ осторо́жно опусти́ла кора́блик на́ воду. Паруса́ а́лого цве́та отража́лись в воде́ и на бе́лых ка́мешках дна. Ассо́ль уже́ хоте́ла взять игру́шку и положи́ть её обра́тно в су́мку, но ду́нул ве́тер, я́хта отплыла́ на середи́ну ручейка́ и ме́дленно поплыла́ по тече́нию.

Ассо́ль бежа́ла за не́й по бе́регу, па́дала, встава́ла и опя́ть бежа́ла. Через не́которое вре́мя она́ уви́дела бе́рег мо́ря, облака́ и не́бо, а на берегу́ на большо́м ка́мне сиде́л челове́к и держа́л в рука́х её я́хту.

Ассо́ль подошла́ к нему́, но он не заме́тил де́вочку, так внима́тельно он рассма́тривал краси́вую игру́шку.

Ассо́ль мо́лча смотре́ла на него́. Это был путеше́ственник Эгль, кото́рый собира́л везде́ ска́зки, пе́сни и леге́нды *. Его́ дли́нные седы́е во́лосы па́дали на плечи, на нём был доро́жный костю́м и высо́кие сапоги́. Ассо́ль уви́дела, что он был до́брым челове́ком и подошла́ ещё бли́же.

— Отда́й её мне, — сказа́ла де́вочка. — Ты уже́ на неё посмотре́л. А мне ну́жно отнести́ её в го́род.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
От неожиданности Эгль уронил корабли. Потом он улыбнулся и спросил:

— Как тебя зовут, девочка?

— Ассоль.

— Твоё имя очень красиво. Оно звучит, как полёт птицы или шум морской раковины. А что у тебя в сумке?

— Лодочки.

— Я всё понял. Тебя послали в город, чтобы ты их продала. А ты начала играть, пустила яхту плавать, а яхта убежала от тебя. Правильно?

— Откуда ты знаешь? — спросила Ассоль. — Разве ты меня видел?

— Я знаю всё, потому что я — самый главный волшебник*.

Ассоль испугалась, но Эгль заметил это и сказал:

— Не бойся! Я добрый волшебник*, и хочу поговорить с тобой. Слушай меня внимательно.

Я был в той деревне, из которой ты пришла. Я люблю сказки и песни и собираю их. Но у вас в деревне не поют песен, не рассказывают сказок...

Я не знаю, сколько лет пройдёт, но в вашей деревне случится одна сказка, которую все надолго запомнят. Ты будешь уже большой. Однажды утром ты увидишь в море корабль под алыми парусами. Этот корабль подойдёт прямо к берегу под звуки прекрасной музыки. На берегу соберётся много народа, и ты будешь стоять среди них. От корабля к берегу поплывёт красивая лодка. «Кого вы ищете? К кому вы приехали?» — спросят люди на берегу. И тогда ты увидишь храброго и красивого молодого мужчину. Он протянет к тебе руки и скажет: «Здравствуй, Ассоль! Далеко-далеко отсюда я увидел тебя во сне и приехал, чтобы забрать тебя навсегда с собой и сделать тебя своей женой». И он увезёт тебя в страну, где всегда светит солнце, и звёзды спустятся с неба, чтобы поздравить тебя с приездом.

— Это случится со мной? — спросила Ассоль. — Может быть, этот корабль уже приплыл?

— Нет, — ответил Эгль. — Сначала ты вырастешь и станешь взрослой. Иди, девочка, и не забудь, что рассказал тебе старый Эгль.

Лонгрен сажал картошку в огороде, когда вернулась Ассоль. Она подбежала к нему и, тяжело дыша, сказала:

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
— Папа, там на берегу сидит волшебник, и он сказал...

Она начала с рассказа о волшебнике и о его сказке, потом про убежавшую яхту, потом про лицо волшебника... Мысли её путались, и Лонгрену было трудно её понять, но он понимал, что в таких случаях надо быть очень серьёзным и внимательным и сказал:

— Я думаю, что это действительно был волшебник. Мне бы очень хотелось на него посмотреть. Но когда ты опять пойдёшь в город, не уходи в сторону от дороги, в лесу можно заблудиться.

Ассоль очень устала, она засыпала, но неожиданно подняла голову и тревожно спросила:

— Как ты думаешь, придёт за мной корабль с алыми парусами или нет?

— Придёт, — спокойно ответил Лонгрен. — Раз волшебник сказал тебе об этом, значит, обязательно придёт.

Ассоль заснула на руках у отца. Лонгрен держал её одной рукой, а другой достал из кармана трубку* и закурил. Ветер перенёс запах хорошего табака под дерево, где сидел молодой парень из деревни и ел кусок пирога. Он слышал разговор отца с дочерью и очень развеселился. Он подошёл к Лонгрену и сказал:

— Дай покурить бедному человеку. У меня нет такого хорошего табака, как у тебя.

— Я бы дал, — ответил Лонгрен, но мой табак в том кармане, на котором спит дочка, а будить мне её не хочется. Приходи немного позже!

Парень рассердился.

— Ты воспитываешь её как королеву! И рассказываешь ей глупые сказки!

Через полчаса парень сидел в трактире и рассказывал рыбакам, что старый Лонгрен сошёл с ума, что он рассказывает дочери глупые сказки, а она в них верит. И все решили, что от одиночества Лонгрен и Ассоль сошли с ума.

Через три дня, когда Ассоль шла из города, дети закричали ей:

— Эй, Ассоль! Посмотри на море! Плывёт корабль с красными парусами!

Ассоль вздрогнула, посмотрела на море, но оно было пусто. Девочка поняла, что над ней смеются, заплакала и побежала домой.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


Артур Грей роди́лся капита́ном *. Он хоте́л быть капита́ном и стал им.

Он роди́лся в огро́мном до́ме среди́ ста́рого па́рка. Его́ роди́тели бы́ли о́чень бога́ты. Они́ хоте́ли, что́бы Грей жил та́к же, как они́, и что́бы его́ портре́т мо́жно бы́ло пове́сить среди́ всех портре́тов ро́дственников. Но Артур Грей не хоте́л э́того. Он роди́лся с живо́й душо́й и не хоте́л жить, как его́ роди́тели.

Ему́ бы́ло двена́дцать лет, когда́ он по́нял, что хо́чет быть капита́ном. Это случи́лось в библиоте́ке. Её высо́кая дверь была́ обы́чно закры́та, но замо́к был плохо́й, и его́ мо́жно бы́ло откры́ть руко́й. Ма́льчик вошёл в библиоте́ку и на́чал рассма́тривать по́лки, напо́лненные кни́гами. Пото́м он поверну́лся к две́ри и уви́дел карти́ну. На не́й был нарисо́ван кора́бль в бу́рном мо́ре. Он поднима́лся на волне́, и вода́ текла́ по его́ борта́м. Кора́бль шёл пря́мо на зри́теля. На корабле́ был челове́к. Он что́-то крича́л, но что? Это был капита́н.

Внутри́ себя́ Артур Грей услы́шал шум мо́ря и зву́ки незнако́мого ему́ языка́. Ещё не́сколько раз он приходи́л смотре́ть на э́ту карти́ну. Он иска́л на по́лках и находи́л кни́ги о моряка́х *, кораблях, бу́рном и́ли споко́йном мо́ре, о ры́бах, хоро́шей и́ли плохо́й пого́де. В э́том ми́ре, кото́рый так нра́вился Гре́ю, гла́вным был капита́н. Грей уже́ твёрдо знал, что он бу́дет капита́ном.

Когда́ Гре́ю испо́лнилось пятна́дцать лет, он убежа́л из до́ма. А через не́сколько дней из большо́го по́рта вы́шел кора́бль, унося́ с собо́й ю́нгу *, похо́жего на де́вочку с не́жными рука́ми. Этим ю́нгой был Артур Грей.

Через го́д его́ тру́дно бы́ло узна́ть. Он стал си́льным, загоре́лым. Его́ речь ста́ла коро́ткой и то́чной, и он бо́льше не́ был похо́ж на переоде́тую де́вочку. Сжав зу́бы, он шёл к свое́й це́ли: он хоте́л быть капита́ном. Гре́я не пуга́ли ни тяжёлый труд, ни боль в рука́х, ни смех о́пытных моряко́в. Он улыба́лся, с трудо́м разгиба́я спи́ну, и продолжа́л идти́ к свое́й це́ли.

Через пя́ть лет Артур Грей знал о кораблях всё. Он мог быть капита́ном.

Он верну́лся домо́й и про́жил там семь дней. Пото́м он взял большу́ю су́мму де́нег, верну́лся в порт и сказа́л капита́ну:

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Спаси́бо. Все э́ти пять лет вы бы́ли мои́м хоро́шим това́рищем. Проща́йте. Тепе́рь я бу́ду пла́вать на своём корабле́.

А по́сле э́того Грей и вся кома́нда * се́ли в рестора́не, пе́ли и пи́ли и съе́ли и вы́пили всё, что бы́ло на ку́хне.

Прошло́ немно́го вре́мени, и в порту́ появи́лся но́вый кора́бль. Это был кора́бль Гре́я — белосне́жный * «Секре́т».

## РАССВЕ́Т

Прошло́ ещё четы́ре го́да, пока́ Грей в пе́рвый раз приплы́л в го́род, ря́дом с кото́рым жила́ Ассо́ль. Де́сять дней кора́бль Гре́я стоя́л в порту́ и выгружа́л груз ко́фе, а на оди́ннадцатый день Гре́ю ста́ло о́чень гру́стно. Он не зна́л, почему́ э́то случи́лось. Тогда́ он реши́л заня́ться де́лом. И кора́бль был отремонти́рован, сно́ва покра́шен, па́луба * была́ вы́мыта, но грусть Гре́я не проходи́ла.

Тогда́ он реши́л пое́хать лови́ть ры́бу. Он позва́л одного́ из матро́сов, взял ло́дку, и они́ поплы́ли к бе́регу. Была́ ночь. Где́-то шуме́л го́род. Им бы́ло безразли́чно *, куда́ плыть, и они́ плы́ли вдоль бе́рега. Спра́ва появи́лась дере́вня. Сле́ва шуме́ло мо́ре. Ло́дка поверну́ла к бе́регу.

— Здесь мы бу́дем лови́ть ры́бу, — сказа́л Грей матро́су.

Матро́с разжёг костёр. Грей сел у огня́.

— Лови́, е́сли хо́чешь, ры́бу, — сказа́л Грей матро́су. — А я пойду́ погуля́ю.

Наступи́ло у́тро. Внизу́ ти́хо плеска́лось мо́ре. С дере́вьев па́дали ка́пли росы́. Раскрыва́лись цветы́. Грей вы́шел на откры́тое ме́сто и уви́дел спя́щую де́вушку. Он останови́лся. На траве́ спала́ Ассо́ль.

Грей мо́лча смотре́л на неё. Наконе́ц, он снял с па́льца стари́нное и дорого́е кольцо́ и наде́л его́ на па́лец спя́щей де́вушки.

Матро́с уже́ давно́ звал своего́ капита́на, но Грей ничего́ не слы́шал и продолжа́л смотре́ть на Ассо́ль. Наконе́ц, он верну́лся к костру́ и сказа́л матро́су, что они́ иду́т в сосе́днюю дере́вню.

Они́ подошли́ пря́мо к трактиру Ме́ннерса. Бы́ло ещё ра́но, но в трактире уже́ сиде́ли три челове́ка. У окна́ сиде́л ста́рый у́гольщик *, а за сосе́дним столо́м — два рыбака́.

Грей позва́л сы́на Ме́ннерса.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation ,Chandigarh.
— Вы, наверное, знаете здесь всех жителей, — спокойно сказал Грей. — Меня интересует имя молодой девушки в платье с розовыми цветочками. Ей от семнадцати до двадцати лет.

— Это Ассоль, — ответил младший Меннерс. — Она сумасшедшая.

— Правда? — спросил Грей. — Как же это случилось?

Младший Меннерс рассказал Грею, как семь лет назад Ассоль разговаривала с волшебником на берегу моря.

Грей слушал его и смотрел в окно. Неожиданно он почувствовал, что у него сильно забилось сердце. По улице шла та самая девушка, которой он надел на палец кольцо. Это была Ассоль. Грей увидел её взгляд и понял, что младший Меннерс обманывает — она не могла быть сумасшедшей!

Меннерс продолжал рассказывать:

— Ещё могу вам сказать, что её отец...

Неожиданно к ним подошёл угольщик.

— Ты не сказал ни одного слова правды, — закричал он младшему Меннерсу. — Я знаю Ассоль! Когда я, продав свой уголь, еду из города, а она возвращается домой пешком, я обязательно беру её к себе в повозку. Я много раз разговаривал с ней, она умнее всех вас!

Грей повернулся и вышел из трактира.

Уже в лодке он поднял руку вверх и попытался поймать солнечный луч, как он делал в детстве.

## НАКАНУНЕ

Накануне той ночи, когда Грей увидел спящую Ассоль, она была в городе и относила туда игрушечные корабли, сделанные Лонгреном. Свой товар она принесла обратно. Хозяин магазина игрушек не хотел больше покупать корабли Лонгрена. Теперь у него было много других красивых игрушек. Ассоль была очень расстроена.

Лонгрен выслушал рассказ дочери и сказал:

— Мне нужно вернуться на корабль. Ты сможешь жить одна, пока я буду в море?

— Может быть, я буду работать на корабле в буфете?

— Нет, — ответил Лонгрен. — Пока я жив, ты не будешь работать в море — это не женская работа.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Лонгрен ушёл, а Ассоль села перешивать старую юбку. Наступила ночь. Ассоль потушила лампу и легла спать. Но сон не приходил к ней. Она поняла, что не сможет заснуть и вышла на улицу. На небе светилась утренняя звезда. Ассоль пошла по дороге, вышла из деревни, вошла в лес. Вставало солнце. Ассоль смотрела на море и думала о корабле с алыми парусами *... Она легла на траву и заснула.

Когда Ассоль проснулась, она начала поправлять волосы. Кольцо Грея мешало ей, но она думала, что это просто травинка. Потом она поднесла руку к глазам и вскочила на ноги: на её руке сверкало кольцо Грея...

Так Ассоль и Грей нашли друг друга.

## БОЕВЫЕ ПРИГОТОВЛЕНИЯ

Когда Грей приплыл обратно на свой корабль, он приказал, чтобы его отвели за несколько километров от города, а сам пошёл в магазины. Он обошёл уже три из них, но в каждом ему предлагали шёлк некрасивого красного цвета. Наконец, в одном из магазинов, он нашёл красные шелка разных оттенков. Грей держал в руках светло-красный, тёмно-красный, почти оранжевый, почти чёрный шелка, но не мог найти настоящего алого цвета. Наконец, один цвет привлёк его внимание. Он сел, взял в руки кусок материала * и начал его рассматривать. Грей так долго смотрел на него, что к нему подошёл хозяин магазина.

— Этот шёлк мне нужен. Я покупаю его, — сказал Грей.

— Весь кусок? — с уважением спросил хозяин. — А если не весь кусок, то сколько вам нужно метров?

— Две тысячи метров, — ответил Грей. — Я думаю, что мне хватит двух тысяч метров.

Купив шёлк, Грей пошёл по городу. Неожиданно он услышал музыку. Это играли уличные музыканты *.

Грей знал их, они часто играли в портах *.

— Я предлагаю вам хорошо заработать, — сказал Грей музыкантам. — Соберите оркестр из людей, которые умеют играть так, что плачет и смеётся сердце. Возьмите эти деньги и выпейте за букву «А». А вечером приезжайте на мой корабль.

— Капитан, вы хотите жениться? — спросили музыканты.

— Да, — просто ответил Грей.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Ве́чером матро́сы спроси́ли Грея, заче́м он хо́чет отплы́ть от го́рода.

— Всё о́чень про́сто, — отве́тил Грей. — Мы бу́дем стоя́ть вдалеке́ от го́рода, пока́ не поменя́ем паруса́. Вы ви́дели, что привезли́ шёлк а́лого цве́та. Из него́ мы сошьём но́вые паруса́. Я е́ду к жене́. Она́ ещё не жена́, но обяза́тельно бу́дет е́ю. Мне нужны́ а́лые паруса́, что́бы издалека́ она́ ви́дела, что я плыву́ за не́ю. Как ви́дите, здесь нет ничего́ таинственного. Всё о́чень про́сто.

## АССО́ЛЬ ОСТАЁТСЯ ОДНА́

Лонгре́н на́чал рабо́тать на корабле́. Ассо́ль оста́лась одна́. Но ей не́ было гру́стно. Она́ носи́ла с собо́й кольцо́ Гре́я. Она́ носи́ла его́ так осторо́жно, как но́сят пти́цу. От волне́ния Ассо́ль не могла́ до́лго остава́ться до́ма. Она́ пошла́ в го́род.

В э́тот день мно́гие жи́тели го́рода ви́дели молоду́ю де́вушку, кото́рая заду́мчиво броди́ла по у́лицам, проходи́ла ме́жду людьми́, но не замеча́ла их.

На обра́тном пути́ Ассо́ль встре́тила своего́ дру́га у́гольщика.

— Здра́вствуй, Фили́пп, — сказа́ла она́. — Что ты здесь де́лаешь?

— У меня́ слома́лось колесо́, я его́ ремонти́рую.

— Зна́ешь, Фили́пп, я хочу́ тебе́ что́-то сказа́ть. Я о́чень люблю́ тебя́, и поэ́тому расскажу́ тебе́ оди́н секре́т. Ско́ро я уе́ду отсю́да.

— Куда́ же ты уе́дешь? — удиви́лся у́гольщик.

— Я ничего́ не зна́ю. Я не зна́ю, куда́, не зна́ю, когда́, и ничего́ тебе́ бо́льше не скажу́. Проща́й.

Угольщик о́чень удиви́лся. Он не по́нял, о чём говори́ла Ассо́ль. Он до́лго ду́мал, а пото́м махну́л руко́й и пое́хал в го́род.

## АЛЫЙ «СЕКРЕ́Т»

Бы́ло у́тро. В лесу́ был тума́н. Како́й-то охо́тник вы́шел из ле́са на бе́рег мо́ря и останови́лся: он услы́шал зву́ки му́зыки. Музыка́нт игра́л чи́стую и краси́вую мело́дию, пото́м повтори́л её. Зву́ки дрожа́ли, как го́лос же́нщины. Охо́тник посмотре́л вокру́г. Тума́н рассе́ивался, сквозь него́ был ви́ден како́й-то кора́бль. Его́ свёрнутые паруса́ висе́ли вниз. Неожи́данно поду́л ве́тер с бе́рега. Он надду́л и по́днял паруса́.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Охо́тник, стоя́вший на бере́гу, до́лго не ве́рил свои́м глаза́м. Корабля́ уже́ не́ было ви́дно, а он всё стоя́л и смотре́л.

В по́лдень «Секре́т» встре́тился с вое́нным кораблём, кото́рый приказа́л «Секре́ту» останови́ться.

— Не бо́йтесь, — сказа́л Грей матро́сам, — они́ не бу́дут в нас стреля́ть, они́ про́сто не ве́рят свои́м глаза́м.

С вое́нного корабля́ сошёл капита́н и прошёл к Гре́ю. Через не́сколько мину́т он вы́шел улыба́ющийся, и вое́нный кора́бль приве́тствовал «Секре́т» настоя́щим салю́том. В э́тот день все вое́нные моряки́ разгова́ривали то́лько о любви́.

— Том, как ты жени́лся? — спроси́л оди́н матро́с друго́го.

— Я поима́л её за ю́бку, когда́ она́ хоте́ла вы́прыгнуть от меня́ в окно́, — го́рдо отве́тил Том.

Через не́сколько часо́в все уви́дели бе́рег. Грей смотре́л на дере́вню, где жила́ Ассо́ль. Если бы он мог её ви́деть, он по́нял бы, что она́ сиди́т у окна́ и чита́ет.

Ассо́ль чита́ла. По страни́це кни́ги полз ма́ленький жучо́к. Он всё вре́мя остана́вливался на сло́ве «смотри́». Ассо́ль хоте́ла ду́нуть на него́, что́бы он улете́л, но в э́ту секу́нду её взгляд останови́лся на корабле́ с а́лыми паруса́ми.

Она́ вздро́гнула, замерла́, пото́м вскочи́ла на́ ноги и побежа́ла к мо́рю.

Кора́бль ме́дленно приближа́лся к дере́вне. На нём звуча́ла не́жная му́зыка.

А в дере́вне все так разволнова́лись, что бро́сили все свои́ дела́ и то́же бежа́ли к мо́рю. Никогда́ ещё тако́й большо́й кора́бль не подходи́л к дере́вне, а кро́ме э́того, у корабля́ бы́ли то́чно таки́е паруса́, о кото́рых расска́зывал волше́бник. Мужчи́ны, же́нщины и де́ти бежа́ли к мо́рю, там была́ уже́ це́лая толпа́ наро́да. И в э́ту толпу́ вбежа́ла Ассо́ль.

Пока́ её не́ было, все называ́ли её и́мя. Не́которые со сме́хом, не́которые со зло́бой и за́вистью. Как то́лько она́ прибежа́ла, все замолча́ли и отошли́ от неё. Ассо́ль стоя́ла на берегу́, и её лицо́ бы́ло таки́м же а́лым, как паруса́ «Секре́та».

От корабля́ отплыла́ ло́дка. Среди́ матро́сов в ло́дке стоя́л тот челове́к, кото́рого она́ ждала́ всю жизнь. Ей каза́лось да́же, что она́ зна́ет его́ с де́тства. Он смотре́л на неё с улы́бкой, но Ассо́ль в после́днюю мину́ту испуга́лась, что он ошибётся. Она́ вошла́ в тёплую во́ду и закрича́ла, протя́гивая ру́ки:

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Я здесь! Это я!

И тогда́ музыка́нты сно́ва заигра́ли, Грей нагну́лся к ней из ло́дки и по́днял её наве́рх.

Ассо́ль откры́ла глаза́, сме́ло улыбну́лась и сказа́ла:

— Ты соверше́нно тако́й, каки́м я тебя́ представля́ла *.

— И ты то́же, — отве́тил ей Грей.

— А ты возьмёшь к нам моего́ Лонгре́на?

— Да, — отве́тил он, — и так кре́пко поцелова́л её, что она́ засмея́лась.

На сле́дующий день кора́бль был уже́ далеко́. Часть матро́сов спала́ на па́лубе. Не спа́ли то́лько дежу́рный матро́с и музыка́нт. Он сиде́л, смотре́л на мо́ре, игра́л на скри́пке, кото́рая пе́ла волше́бным, неземны́м * го́лосом, и ду́мал о сча́стье...

### टिप्पणियाँ

матро́с — नाविक, मल्लाह
кора́бль — जहाज़, पोत
уха́живать — देख-रेख करना
ла́вочник — दुकानदार
обруча́льное кольцо́ — शादी की अँगूठी
трактир — शराबख़ाना
злора́дствовать — दूसरों के दुःख से ख़ुश होना
не подава́ть руки́ — हाथ न मिलाना
подру́га — सहेली
я́хта — याट, पाल-नौका
а́лый — लाल, सुर्ख़
шёлк — रेशम
руче́й — सोता
леге́нда — दंतकथा
волше́бник — जादूगर
тру́бка — पाइप
капита́н — कप्तान
моря́к — नाविक, मल्लाह
ю́нга — जहाज़ी लड़का
кома́нда — जहाज़ का अमला
белосне́жный — बर्फ़ जैसा सफ़ेद

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
па́луба — डेक
Им бы́ло безразли́чно... — उनके लिए सब बराबर था...
у́гольщик — कोयलावाला
па́рус — पाल, बादबान
материа́л — कपड़ा
музыка́нт — वाद्यकार
порт — बंदरगाह
представля́ть себе́ — कल्पना करना
неземно́й — अलौकिक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Алексей Толстой
अलेक्सेई तोल्स्तोय
(१८८३-१९४५)

अलेक्सेई निकोलायेविच तोल्स्तोय रूसी सोवियत साहित्य के सुप्रतिष्ठित लेखक हैं। दो युगों के संधि-काल में उनकी लेखन-प्रतिभा की गठन हुई। तोल्स्तोय का जीवन-पथ और सृजन-पथ भी काफ़ी जटिल थे। तूफ़ानी युग के सभी अंतर्विरोध इसमें प्रतिबिंबित हुए।

तोल्स्तोय की कविताओं की पहली पुस्तक «प्रगीत» १९०७ में प्रकाशित हुई थी जिस पर उन दिनों प्रचलित ह्रासवादी प्रवृत्ति की छाप पड़ी थी। लेकिन शीघ्र ही जवान लेखक ने इस प्रवृत्ति से नाता तोड़ लिया क्योंकि उसकी प्रतिभा के लिए जीवन की जटिल घटनाओं का यथार्थ चित्रण स्वाभाविक था। उन्होंने लिखा: «कलाकार के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह किस तरह जीवन की पुस्तक पढ़ता है और इसमें क्या पढ़ता है।» लेखक की क्रांतिपूर्व कृतियों में कहानी-संग्रह «पुराने लिंडन-वृक्षों के नीचे» तथा दो उपन्यास «सनकी लोग» और «लँगड़ा रईस» विशेषकर रुचिकर हैं। उनमें लेखक की प्रतिभा, सच्चाई में उसकी अभिरुचि और अभिजात-वर्ग के जीवन का आलोचनात्मक वर्णन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

परंतु जीवन और साहित्य में तोल्स्तोय का मार्ग टकरावों और भ्रांतियों से भरा था। शुरू में उन्होंने १९१७ की अक्तूबर क्रांति का महत्व नहीं समझा और रूस छोड़कर विदेश चले गये। वहाँ पर वह देश में हुई घटनाओं के अर्थ पर बराबर सोचते रहे। उस समय की कृतियाँ मातृभूमि की यादों में पगी हुई हैं। इनमें प्रमुख हैं – हृदयस्पर्शी, प्रगीतात्मक कथ «निकीता का बचपन» (१९२२), उपन्यास «बहिनें» (१९२२), विज्ञान--कथा «आएलीता» (१९२२-१९२३)।

१९२३ में अपनी भूल की त्रासदी समझकर तोल्स्तोय ने श्वेत उत्प्रवासी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शक्तियों से नाता तोड़ लिया और उनकी भर्त्सना की। उसी साल वक सोवियत रूस लौट आये। यहाँ लेखक ने नवजात सोवियत राज्य को विशाल उपलब्धियाँ और जन-साधारण में व्याप्त उत्साह देखा। बाद में उन्होंने लिखा: «१९१७ तक मैं नहीं जानता था कि मैं किसके लिए लिखता हूँ। अब मैं ज़िंदा पाठक को महसूस करता हूँ जिसकी मेरे लिए आवश्यकता है तथा जो मुझे और समृद्ध बनाता है और जिसे मेरी ज़रूरत है। अक्तूबर क्रांति ने मुझे, एक कलाकार को सब-कुछ दिया है।» तोल्स्तोय की प्रतिभा में आये निखार ने उनके इन शब्दों की पुष्टि की। उन्होंने कहानी, लघु-उपन्यास, ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यास, नाटकों की विधाओं में काम किया। «पीड़ामय यात्रा» उपन्यास-त्रयी (१९२२-१९४१) तोल्स्तोय की सबसे बड़ी कृति है। इसमें रूसी जीवन का विस्तृत चित्र और अक्तूबर क्रांति से प्रभावित लोगों का मानसिक काया-पलट दिखाया गया है।

«प्योत्र प्रथम» उपन्यास (१९२९-१९४५) श्रेष्ठतम सोवियत ऐतिहासिक उपन्यासों में से एक है। इसमें लेखक ने न केवल विगत युग के सजीव चित्र तथा «अपने देश के महान् निर्माता» के रूप में प्योत्र का चित्र प्रस्तुत किया है वरन् रूसी जनता की आध्यात्मिक महत्ता भी प्रदर्शित की है।

महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध (१९४१-१९४५) के दिनों में फ़ासिस्टों के अत्याचारों का पर्दाफ़ाश और सोवियत जनता के महान् कारनामों का गुणगान करते तोल्स्तोय के रोष-भरे प्रचारात्मक लेखों की आवाज़ सारे देश में गूँजती रही। महान् विजय से कुछ समय पहले तोल्स्तोय का देहांत हो गया।

## ДЕТСТВО НИКИТЫ

(Гла́вы из по́вести)

### ВИ́КТОР И ЛИ́ЛЯ

Ники́та и Ви́ктор Ба́бкины просну́лись ра́но у́тром в Ники́тиной ко́мнате и, си́дя на посте́лях, смотре́ли друг на дру́га.

— Я тебя́ по́мню, — сказа́л Ники́та.

— И я тебя́ по́мню, — сейча́с же отве́тил Ви́ктор, — ты у на́с в Сама́ре* был оди́н раз, ты тогда́ съел сли́шком мно́го у́тки с я́блоками, и тебе́ дава́ли лека́рство.

— Я э́того не по́мню.

— А я по́мню.

Ма́льчики помолча́ли. Пото́м Ники́та сказа́л:

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
— Мой учи́тель, Арка́дий Ива́нович, очень стро́гий. И люблю́ кни́гу он мо́жет прочита́ть за полчаса́.

Ви́ктор улыбну́лся.

— А я учу́сь в гимна́зии *, во второ́м кла́ссе. У на́с то́же всё о́чень стро́го. Меня́ всё вре́мя без обе́да оставля́ют *. Но я могу́ ты́сячу дней ничего́ не е́сть.

— Ты про́бовал? — спроси́л Ники́та.

— Нет, ещё не про́бовал. Ма́ма не разреша́ет.

— А я Стёпку * Карнау́шкина победи́л! — сказа́л Ники́та.

— Это кто, Стёпка Карнау́шкин?

— Он са́мый си́льный. Я его́ уда́рил, он упа́л. Я ему́ пото́м подари́л нож с четырьмя́ ле́звиями *, а он мне — свинча́тку. Я её тебе́ пото́м покажу́.

Ники́та вы́лез из посте́ли и на́чал одева́ться.

Ма́льчики оде́лись и пошли́ в столо́вую, где па́хло горя́чим хле́бом и кипе́л самова́р *.

У стола́ сиде́ли ма́тушка *, Арка́дий Ива́нович и де́вочка лет девяти́, сестра́ Ви́ктора, Ли́ля.

Ли́ля была́ оде́та в бе́лое пла́тье с голубо́й шёлковой ле́нтой, завя́занной сза́ди в большо́й бант. В её све́тлых волоса́х был второ́й бант, то́же голубо́й...

Ли́ля повернула́сь на сту́ле, протяну́ла ру́ку и сказа́ла о́чень серьёзно:

— Здра́вствуйте, ма́льчик.

Ники́те показа́лось, что э́то не настоя́щая де́вочка, а ку́кла, така́я она́ была́ хоро́шенькая. Глаза́ у неё бы́ли си́ние, а ресни́цы как шёлк.

Ма́льчики се́ли к столу́ ря́дом. Ви́ктор пил чай как ма́ленький — согну́вшись над ча́шкой, и клал себе́ са́хар до тех по́р, пока́ чай не ста́л густо́й. Тогда́ он попроси́л ещё воды́. Он спроси́л Ники́ту шёпотом:

— Тебе́ нра́вится моя́ сестра́?

Ники́та ничего́ не отве́тил и покрасне́л.

Ли́ля в э́то вре́мя око́нчила пить чай и сказа́ла ве́жливо:

— Благодарю́ вас, тётя Са́ша *.

Пото́м пошла́ к окну́, вле́зла с нога́ми в кре́сло и начала́ шить.

У Ники́ты бы́ли расте́ряны все мы́сли *. Он на́чал пока́зывать Ви́ктору, как мо́жно перепры́гнуть через сту́л, но Ли́ля не повернула́ к нему́ головы́, а ма́тушка сказа́ла:

— Де́ти, иди́те игра́ть во дво́р.

Ма́льчики оде́лись и вы́шли во дво́р. Бы́ло необык-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

новéнно тихо, тóлько у крыльцá* две собáки рычáли друг на дрýга.

— Что мы бýдем дéлать? — спросúл Вúктор.

Никúта смотрéл в стóрону. Емý не хотéлось игрáть и бы́ло грýстно. Он предложúл пойтú домóй и почитáть чтó-нибудь, но Вúктор сказáл:

— Я вúжу, ты хóчешь с Лúлей игрáть.

— Почемý? — спросúл Никúта, краснéя.

— Ты сам знáешь, почемý.

— Ничегó я не знáю. Пойдём к колóдцу*.

Мáльчики пошлú к колóдцу, кудá чáсто приходúли корóвы. Вдалекé стоя́л деревéнский мáльчик Мúшка Коряшóнок. Неожúданно он закричáл:

— Ба́ян, Ба́ян! Берегúсь, Никúта!

Никúта оглянýлся. К мáльчикам шёл Ба́ян — большóй сéрый бык* с ширóким лбом и корóткими рогáми.

— Му-у-у! — замычáл Ба́ян и удáрил себя́ хвостóм пó боку.

— Вúктор, бегú! — крúкнул Никúта, схватúл егó зá руку, и онú побежáли к дóму.

Бык побежáл за мáльчиками.

Вúктор оглянýлся, закричáл, упáл в снег и закры́л гóлову рукáми. Ба́ян был в пятú шагáх. Тогдá Никúта остановúлся, сорвáл* с головы́ шáпку, подбежáл к быкý и стал шáпкой бить егó по мóрде:

— Уходú, уходú!

Бык остановúлся, опустúл рогá. Сбóку подбегáл Мúшка Коряшóнок. Ба́ян жáлобно замычáл, повернýлся и пошёл назáд к колóдцу. У Никúты от волнéния дрожáли гýбы. Он надéл шáпку и обернýлся. Вúктор ужé был óколо дóма и оттýда махáл емý рукóй. Никúта посмотрéл на окнó. В окнé он увúдел два сúних удивлённых глáза и над нúми голубóй бант. Лúля смотрéла на Никúту и вдруг улыбнýлась. Никúта сейчáс же отвернýлся. Он бóльше не смотрéл на окнó. Емý стáло вéсело, он крúкнул:

— Вúктор, идём с гор катáться, скорéе!

Всё врéмя до обéда онú катáлись с гор и Никúта дýмал: «Когдá бýду возвращáться домóй и пройдý óколо окнá, — посмотрéть úли не посмотрéть? Нет, пройдý и не посмотрю́!»

### ЁЛКА

В дом принеслú большýю замёрзшую ёлку. Дéрево пóдняли, и онó оказáлось такúм высóким, что нéжно-зелёная верхýшка согнýлась под потолкóм.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

От неё па́хло хо́лодом, но понемно́гу все де́ти согре́лись, подняли́сь. По всему́ до́му запа́хло ёлкой. Де́ти принесли́ в ко́мнату ёлочные игру́шки*, поста́вили к ёлке сту́лья и на́чали её украша́ть. Но ско́ро оказа́лось, что игру́шек ма́ло. Пришло́сь опя́ть кра́сить золото́й кра́ской оре́хи, привя́зывать к я́блокам и пря́никам серебряные верёвочки. За э́той рабо́той де́ти провели́ весь ве́чер, пока́ Ли́ля не засну́ла у стола́.

Приближа́лся Но́вый год. Ёлку укра́сили игру́шками и свеча́ми*. Когда́ всё бы́ло гото́во, ма́тушка сказа́ла:

— А тепе́рь, де́ти, уходи́те и до ве́чера не загля́дывайте в э́ту ко́мнату.

В э́тот день все обе́дали по́здно. Де́ти е́ли то́лько сла́дкое. В до́ме бы́ло шу́мно. Ма́льчики спра́шивали у всех, ско́ро ли насту́пит ве́чер. Да́же Арка́дий Ива́нович не зна́л, что ему́ де́лать. Он ходи́л от окна́ к окну́ и свисте́л. Ли́ля ушла́ к ма́тери.

Наконе́ц, ма́тушка сказа́ла, что́бы де́ти шли одева́ться. Ники́та нашёл у себя́ на посте́ли си́нюю шёлковую руба́шку и ба́рхатные брю́ки. Ники́та оде́лся и побежа́л к ма́тушке. Она́ причеса́ла его́, взяла́ за пле́чи и подвела́ к большо́му зе́ркалу.

В зе́ркале Ники́та уви́дел наря́дного и краси́вого ма́льчика. Неуже́ли э́то был он?

— Ах, Ники́та! Ники́та! — сказа́ла ма́тушка, целу́я его́ в го́лову. — Если бы ты всегда́ был таки́м хоро́шим ма́льчиком!

Ники́та ти́хо вы́шел в коридо́р и уви́дел ва́жно иду́щую ему́ навстре́чу де́вочку в бе́лом. На ней бы́ло краси́вое пла́тье и большо́й бе́лый бант* в волоса́х. Ники́та останови́лся.

— Ты чего́ испуга́лся? — спроси́ла Ли́ля, прошла́ в ко́мнату и се́ла там с нога́ми на дива́н*.

Ники́та пошёл за не́й и то́же сел на дива́н. Ли́ля сиде́ла не дви́гаясь. Бы́ло чуде́сно, когда́ ого́нь из печи́ освеща́л её щёки и припо́днятый нос. Появи́лся Ви́ктор в си́нем мунди́ре.

Ви́ктор сел в кре́сло и то́же замолча́л. Ря́дом в ко́мнате бы́ло слы́шно, как ма́тушка и Анна Аполло́новна, ма́ма Ви́ктора и Ли́ли, развора́чивали что́-то и ти́хо перегова́ривались.

Пото́м в коридо́ре откры́лась дверь, послы́шались голоса́ и шаги́. Это пришли́ в го́сти де́ти из дере́вни. На́до бы́ло бежа́ть к ним, но Ники́та не мо́г пошевели́ться.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

В э́то вре́мя откры́лась друга́я дверь. Де́ти спры́гнули с дива́на. В ко́мнате от по́ла до потолка́ свети́лась горя́щими свеча́ми ёлка. Она́ стоя́ла, как о́гненное де́рево, перелива́лась зо́лотом, и́скрами, дли́нными лучо́ми. Свет от неё шёл тёплый, па́хнущий хво́ей и пря́никами.

Де́ти стоя́ли неподви́жно, потрясённые. Вошли́ дереве́нские ма́льчики и де́вочки. Все они́ бы́ли в шерстяны́х чулка́х, в кра́сных, жёлтых, ро́зовых руба́шках, в жёлтых, а́лых, бе́лых плато́чках.

Тогда́ ма́тушка се́ла за роя́ль, заигра́ла по́льку * и запе́ла.

Ники́та протяну́л Ли́ле ру́ку. Она́ дала́ ему́ свою́ и продолжа́ла гляде́ть на све́чи. Де́ти стоя́ли не дви́гаясь.

Арка́дий Ива́нович подбежа́л к ма́льчикам и де́вочкам, схвати́л их за́ руки и побежа́л с ни́ми вокру́г ёлки. Бе́гая, он схвати́л ещё двои́х, пото́м Ники́ту, Ли́лю, Ви́ктора и, наконе́ц, все де́ти закружи́лись в хорово́де * вокру́г ёлки.

Ники́та взял с ёлки хлопу́шку * и разорва́л её. В ней оказа́лся колпа́к * со звездо́й. Сейча́с же захло́пали други́е хлопу́шки, де́ти достава́ли из ни́х колпаки́ из бума́ги. Ли́ля доста́ла бума́жный фа́ртук и наде́ла его́ на себя́. Щёки её бы́ли ро́зовыми, гу́бы изма́заны шокола́дом. Она́ всё вре́мя смея́лась и смотре́ла на большу́ю ку́клу, сидя́щую под ёлкой.

Та́м же под ёлкой лежа́ли бума́жные паке́ты с пода́рками для ма́льчиков и де́вочек. Ви́ктор получи́л в пода́рок игру́шечных солда́т с пу́шками и пала́тками. Ники́та — ко́жаное настоя́щее седло́, узде́чку и хлыст *.

Тепе́рь бы́ло слы́шно, как де́ти е́ли оре́хи, развя́зывали паке́ты с пода́рками, шу́мно дыша́ли от волне́ния.

Ма́тушка опя́ть заигра́ла на роя́ле, вокру́г ёлки пошёл хорово́д с пе́снями, но све́чи уже́ догора́ли, и Арка́дий Ива́нович туши́л их. Ма́тушка сказа́ла всем, что́бы шли пить чай.

Но Арка́дий Ива́нович и тут не успоко́ился. Он впереди́, а за ни́м, держа́сь за́ руки, два́дцать пять ребяти́шек, побежа́ли через коридо́р в столо́вую *.

Ли́ля отпусти́ла свою́ ру́ку, останови́лась и посмотре́ла на Ники́ту смею́щимися глаза́ми. Они́ стоя́ли во́зле ве́шалки с шу́бами. Ли́ля спроси́ла:

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
— Ты почему́ смеёшься?

— Это ты смеёшься, — отве́тил Ники́та.

— А почему́ ты на меня́ смо́тришь?

Ники́та покрасне́л, но подви́нулся бли́же и, сам не понима́я, как э́то получи́лось, нагну́лся к Ли́ле и поцелова́л её. Она́ сейча́с же сказа́ла:

— Ты хоро́ший ма́льчик, я э́того тебе́ не говори́ла, что́бы никто́ не узна́л, потому́ что э́то секре́т.

Она́ повернула́сь и убежа́ла в столо́вую *.

По́сле ча́я Арка́дий Ива́нович устро́ил но́вую игру́, но де́ти уста́ли, нае́лись и не понима́ли, что на́до де́лать. Наконе́ц, оди́н совсе́м ма́ленький ма́льчик засну́л, упа́л со сту́ла и на́чал гро́мко пла́кать. Ма́тушка сказа́ла, что пра́здник зако́нчен. Де́ти пошли́ в коридо́р, оде́лись и вы́шли все вме́сте на у́лицу.

Ники́та пошёл провожа́ть дете́й. Когда́ он оди́н возвраща́лся домо́й, в не́бе высоко́ горе́ла луна́. Дере́вья в саду́ стоя́ли больши́е и бе́лые. Каза́лось, что они́ вы́росли, вы́тянулись под лу́нным све́том. Сбо́ку от Ники́ты передвига́ла нога́ми его́ дли́нная большеголо́вая тень *.

Ники́те каза́лось, что он идёт во сне́, как в ска́зке. То́лько в ска́зке быва́ет так стра́нно и сча́стливо на душе́.

### टिप्पणियाँ

Сама́ра — समारा (वोल्गा के तट पर बसा एक नगर; अब इसका नाम कुइबिशेव है)

гимна́зия — क्रांतिपूर्व रूस में माध्यमिक स्कूल का नाम

оста́вить без обе́да — दंड के रूप में दिन का खाना न देना

Стёпка — स्त्योप्का (स्तेपान नाम का बोल-चाल का रूप)

ле́звие — धार

самова́р — समोवार

ма́тушка — माँ जी

Са́ша — साशा (अलेक्सान्द्रा नाम का संक्षिप्त रूप)

растеря́ть все мы́сли — असमंजस में पड़ना

крыльцо́ — ड्योढ़ी

колоде́ц — कुआँ

бык — साँड़

сорва́ть — झट से उतारना

ёлочные игру́шки — क्रिसमस-ट्री के खिलौने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

свеча́ — मोम-बत्ती

бант — बो, फूल के रूप बँधा हुआ रिबन

дива́н — सोफ़ा

по́лька — पोल्का (एक तेज़ लोक-नृत्य)

хорово́д — रूसी लोक-क्रीड़ा जिसमें लोग गाते और नाचते हुए चक्कर लगाते हैं

хлопу́шка — पटाका

колпа́к — नुकीली टोपी

седло́, узде́чка и хлыст — ज़ीन, लगाम और चाबुक

столо́вая — खाने का कमरा

тень — छाया, परछाईं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Михаил Булгаков
मिख़ाईल बुल्गाकोव
(१८९१-१९४०)

मिख़ाईल अफ़ानासियेविच बुल्गाकोव विविधतापूर्ण प्रतिभा के धनी थे। वह लेखक, नाटककार, निर्देशक, पत्रकार और अभिनेता भी थे। उन्होंने अनेक कृतियाँ लिखीं जो सोवियत संघ और विदेशों में प्रसिद्ध हैं। इनमें «श्वेत गार्ड» (१९२५-१९२७), «श्री मोलियेर का जीवन» (१९३२--१९३३), «रंगमंचीय रोमांस» (१९३६), «शिल्पी और मार्ग्रेट» (१९६६--१९६७ में प्रकाशित) उपन्यास तथा «तुर्बीन परिवार के दिन» (१९२६), «अंतिम दिन» (पुश्किन के जीवन के बारे में), «पलायन» और «इवान वसीलियेविच» नाटक प्रमुख हैं।

एक बार किसी ने बुल्गाकोव से पूछा था कि उन्हें गद्य लिखना अधिक पसंद है या नाटक, उनका जवाब था: मेरे लिए दोनों उतने ही आवश्यक हैं जितने प्यानो-वादक के लिए बायाँ व दायाँ हाथ। यह वास्तव में सच भी था क्योंकि उनका अधिकांश गद्य-साहित्य काफ़ी अभिनेय है यहाँ तक कि उनके व्यंग्य-लेख भी अभिनेय हैं। साथ ही बुल्गाकोव सूक्ष्म शैलीकार थे जो गद्य की सुंदरता और मधुरता अच्छी तरह अनुभव करते थे।

लेखक का बचपन और यौवन कीयेव में बीते जहाँ उन्होंने डाक्टरी की शिक्षा पायी। परंतु «अपनी डिग्री तथा अपना उत्तम ज्ञान अधिक दिनों तक इस्तेमाल न कर सका»—साहित्य का आह्वान अधिक प्रबल सिद्ध हुआ। लेकिन एक ग्रामीण अस्पताल में डेढ़ साल तक काम करने से युवा डाक्टर को प्रचुर जीवन-सामग्री मिली जिसके आधार पर बुल्गाकोव ने एक बढ़िया किताब «युवा डाक्टर की कहानियाँ» (१९२५-१९२६) लिखी। इसी संग्रह की एक कहानी यहाँ प्रस्तुत है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

# ПОЛОТЕНЦЕ С ПЕТУХОМ

Если челове́к никогда́ не е́здил на лошадя́х* по плохи́м се́льским доро́гам, то расска́зывать ему́ об э́том я не бу́ду: всё равно́ он не поймёт. А тому́, кто е́здил, я не хочу́ об э́том напомина́ть.

Скажу́ ко́ротко: со́рок киломе́тров от го́рода до Му́рьевской больни́цы* мы е́хали ро́вно су́тки. Ро́вно су́тки: в два часа́ дня 16 сентября́ 1917 го́да мы вы́ехали из го́рода, а в два ча́са пять мину́т 17 сентября́ незабыва́емого 1917 го́да я стоя́л на умира́ющей траве́ во дворе́ Му́рьевской больни́цы. Стоя́л я так: но́ги мои́ ста́ли как деревя́нные и боле́ли так си́льно, что я ту́т же, во дворе́, мы́сленно переч и́тывал страни́цы уче́бника, стара́ясь вспо́мнить, существу́ет ли боле́знь, при кото́рой но́ги стано́вятся деревя́нные и́ли она́ присни́лась мне по доро́ге? Как она́ называ́ется по-лати́ни? Но́ги мои́ си́льно боле́ли, и э́та боль напомина́ла зубну́ю. О па́льцах на нога́х и говори́ть не хоте́лось. Они́ уже́ давно́ не шевели́лись и лежа́ли в сапога́х, как мёртвые.

Призна́юсь, что в э́ту мину́ту я ти́хо руга́л медици́ну* и своё реше́ние пять лет тому́ наза́д поступи́ть в университе́т на медици́нский факульте́т.

В э́то вре́мя све́рху на меня́ па́дал холо́дный дождь. Моё пальто́ бы́ло совсе́м мо́крым. Пра́вой руко́й я хоте́л подня́ть свой чемода́н, но па́льцы не сгиба́лись, и в мое́й голове́, по́лной вся́ких зна́ний из интере́сных медици́нских книг, появи́лось назва́ние «парали́ч»*. «Парали́ч», — сказа́л я себе́, не зна́ю, заче́м.

— П-п-по ва́шим доро́гам, — сказа́л я си́ними и деревя́нными от хо́лода губа́ми, — ну́жно п-п-ривы́кнуть е́здить.

При э́том я о́чень серди́то посмотре́л на челове́ка, кото́рый меня́ привёз, хотя́ он не́ был винова́т, что доро́га така́я плоха́я.

— Эх, това́рищ до́ктор! — отве́тил мне он, то́же с трудо́м шевеля́ губа́ми под све́тлыми уса́ми, — я е́зжу здесь пятна́дцать лет, но привы́кнуть не могу́.

Я задрожа́л и посмотре́л на бе́лое двухэта́жное зда́ние, в кото́ром тепе́рь до́лжен бу́ду рабо́тать.

Проща́й, Москва́, Большо́й теа́тр*, магази́ны... Проща́йте!

Поднима́я чемода́н негну́щимися рука́ми, я ду́мал: «В сле́дующий раз я наде́ну тулу́п»*. Хотя́ в сле́дующий раз, когда́ я пое́ду в го́род, бу́дет уже́ октя́брь... И бу́дет так хо́лодно, что мо́жно наде́ть два тулу́па*.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
А ра́ньше, чем через ме́сяц, я не пое́ду в го́род. Не пое́ду! Через два́дцать киломе́тров мы бы́ли уже́ в по́лной темноте́... Ночь... В дере́вне учи́тель пусти́л нас к себе́ ночева́ть. Утром мы вы́ехали в семь часо́в и пое́хали со ско́ростью пешехо́да. Одно́ колесо́ теле́ги* па́дало в я́му, друго́е поднима́лось в во́здух, чемода́н всё вре́мя па́дал на меня́, снача́ла на́ ноги, пото́м на́ бок. Пото́м я па́дал сам, то вперёд, то наза́д... А све́рху шёл и шёл холо́дный дождь. Я не мо́г пове́рить, что в середи́не сентября́ челове́к мо́жет замёрзнуть та́к же си́льно, как в са́мую холо́дную зи́му. Но, ока́зывается, мо́жет. И пока́ ты умира́ешь от хо́лода ме́дленной сме́ртью, ты ви́дишь вокру́г себя́ одну́ и ту́ же карти́ну: спра́ва по́ле, сле́ва небольшо́й лес, а о́коло него́ ма́ленькие и́збы*, пять и́ли шесть. И ка́жется, что в них нет ни одного́ челове́ка. И вокру́г молча́ние, молча́ние...

Я наконе́ц по́днял чемода́н, но моя́ рука́ отказа́лась рабо́тать, и он упа́л пря́мо на траву́, уда́рив меня́ по нога́м.

— Кто тут есть? — закрича́л мой спу́тник. — Я до́ктора привёз.

В тёмных о́кнах больни́цы показа́лись ли́ца, откры́лась дверь, и я уви́дел, что ко мне́ идёт челове́к в ста́ром пальто́ и сапога́х. Он снял ша́пку, подбежа́л ко мне́, улыбну́лся и поздоро́вался:

— Здра́вствуйте, това́рищ до́ктор!

— Кто вы тако́й? — спроси́л я.

— Я Его́рыч, сто́рож в больни́це, — предста́вился он. — Мы вас давно́ уже́ ждём...

Он взял мой чемода́н, по́днял его́ на плечо́ и понёс. Я с трудо́м пошёл за ни́м на свои́х деревя́нных нога́х.

Челове́ку о́чень немно́го ну́жно. Но пре́жде всего́ ему́ ну́жен ого́нь. Когда́ я е́хал сюда́, в далёкую дере́вню, рабо́тать врачо́м, я обеща́л себе́, что я бу́ду вести́ себя́ как взро́слый, соли́дный, уве́ренный в себе́ челове́к. То, что я вы́глядел о́чень мо́лодо, по́ртило мне жизнь. Я говори́л ка́ждому но́вому знако́мому:

— Врач Булга́ков.

И ка́ждый обяза́тельно поднима́л бро́ви и спра́шивал:

— Неуже́ли вы уже́ врач? А я ду́мал, что вы ещё студе́нт.

— Нет, я уже́ зако́нчил университе́т, — отвеча́л я, а сам ду́мал: «Мне ну́жно купи́ть очки́, тогда́ я бу́ду вы́глядеть ста́рше!» Но глаза́ у меня́ бы́ли здоро́вые,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
очки́ мне бы́ли не́ нужны́, и я реши́л защища́ться от снисходи́тельных улы́бок при по́мощи поведе́ния. Я говори́л ме́дленно и уве́ренно, не дви́гал бы́стро рука́ми, не бе́гал, как бе́гают лю́ди в два́дцать три го́да, а ходи́л. Сейча́с, когда́ прошло́ мно́го лет, я понима́ю, что всё э́то получа́лось у меня́ о́чень пло́хо.

Но сейча́с, си́дя у огня́, я забы́л про всё э́то. Я сиде́л согну́вшись, в одни́х носка́х и протя́гивал к огню́ ру́ки. Сле́ва от меня́ стоя́ли мои́ сапоги́, а ря́дом с ни́ми лежа́л пету́х без головы́, потому́ что все по́няли, что я о́чень голо́дный, и жена́ Его́рыча хоте́ла свари́ть петуха́, что́бы я его́ съел.

Я познако́мился со все́ми. Фе́льдшера* зва́ли Демья́н Луки́ч, двух акуше́рок* — Пелаге́я Ни́ловна и Анна Никола́евна. Я успе́л обойти́ всю больни́цу и уви́деть, что здесь о́чень мно́го медици́нских инструме́нтов. Я сра́зу по́нял (но, коне́чно, никому́ не сказа́л), что я не зна́ю, заче́м о́чень мно́гие из ни́х, и да́же не зна́ю, как они́ называ́ются. Я никогда́ не держа́л их в рука́х и никогда́ их не ви́дел.

— Да, — сказа́л я, — инструме́нты у ва́с о́чень хоро́шие.

— Вы пра́вы, — отве́тил Демья́н Луки́ч. — Эти инструме́нты собра́л врач, кото́рый рабо́тал здесь до ва́с, Леопо́льд Леопо́льдович. Он опери́ровал больны́х с утра́ до ве́чера.

Мне ста́ло стра́шно.

Пото́м мы пошли́ в пала́ты, и я уви́дел, что в них мо́жет лежа́ть со́рок челове́к.

— У Леопо́льда Леопо́льдовича иногда́ лежа́ло и пятьдеся́т челове́к, — сказа́л Демья́н Луки́ч, а седоволо́сая Анна Никола́евна почему́-то сказа́ла:

— Вы, до́ктор, так мо́лодо вы́глядите... Вы похо́жи на студе́нта.

Я не зна́л, что отве́тить.

Пото́м мы пошли́ в апте́ку, и я уви́дел, что там бы́ло всё, о чём мо́жно бы́ло мечта́ть. В двух небольши́х ко́мнатах па́хло лека́рственными тра́вами*, а на по́лках стоя́ли любы́е лека́рства. Бы́ли да́же заграни́чные, о кото́рых я то́же ничего́ не слы́шал.

— Это всё то́же собра́л Леопо́льд Леопо́льдович, — с го́рдостью сказа́ла Пелаге́я Ни́ловна.

«Этот Леопо́льд был гениа́льным челове́ком», — с уваже́нием поду́мал я.

Кро́ме огня́, челове́ку ну́жно ещё привы́кнуть к но́вому ме́сту. Я уже́ давно́ съел петуха́, Его́рыч приго-

CC-0. Agamnjgam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
то́вил для меня́ посте́ль, в ко́мнате горе́ла ла́мпа. Я сиде́л и смотре́л на тре́тье достиже́ние гениа́льного Леопо́льда Леопо́льдовича: шкаф был по́лон кни́гами. Уче́бников по хирурги́и, напи́санных на ру́сском и неме́цком языка́х, бы́ло о́коло тридцати́. И э́то была́ то́лько ма́ленькая часть!

«Я ни в чём не винова́т! — ду́мал я, — у меня́ есть дипло́м*, в кото́ром одни́ пятёрки. Я говори́л всем, что я хочу́ идти́ рабо́тать вторы́м в больни́це врачо́м, а не пе́рвым. Но они́ улыба́лись и говори́ли: «Вы привы́кнете!» А е́сли привезу́т больно́го с гры́жей*? Как я могу́ к э́тому привы́кнуть? Как бу́дет чу́вствовать челове́к с гры́жей у меня́ под рука́ми? Вдруг он умрёт?

А тяжёлые инфекцио́нные боле́зни у деревенских дете́й? А ро́ды? Ро́ды я забы́л! Иногда́ быва́ют непра́вильные положе́ния пло́да*! Что я бу́ду де́лать в э́том слу́чае? Како́й я легкомы́сленный челове́к! Ну́жно бы́ло отказа́ться и не е́хать в э́ту дере́вню пе́рвым врачо́м! Здесь ну́жен тако́й о́пытный врач, каки́м был э́тот Леопо́льд!»

Я не мо́г спать и ходи́л по ко́мнате. В тёмном окне́ я уви́дел отраже́ние своего́ бле́дного лица́. Часа́ через два́ я напуга́л себя́ так, что мои́ не́рвы бо́льше не вы́держали. И я на́чал успока́иваться. И ду́мал:

«Ничего́ стра́шного. Сейча́с не мо́жет быть мно́го больны́х. Осень. Доро́ги плохи́е, во все́х деревня́х рабо́тают, мнут лён*...

Вот тебе́ и привезу́т больно́го с гры́жей, — сказа́л мне вну́тренний го́лос. — Потому́ что простуди́вшийся челове́к (а э́то лёгкая боле́знь) не пойдёт по таки́м доро́гам в больни́цу, а больно́го с гры́жей привезу́т...»

Мой вну́тренний го́лос был неглу́п. Я опя́ть испуга́лся.

— Молчи́! — сказа́л я своему́ вну́треннему го́лосу. — Не обяза́тельно привезу́т больно́го с гры́жей.

«Так, — продолжа́л ду́мать я. — Я не бу́ду расстава́ться с уче́бником. Если ну́жно бу́дет что́-нибудь посмотре́ть, мо́жно э́то сде́лать, когда́ мо́ешь ру́ки. Я положу́ уче́бники пря́мо ря́дом с кни́гой, в кото́рую запи́сывают больны́х. Бу́ду выпи́сывать поле́зные, но не тру́дные лека́рства. Но почему́ же нетру́дные? Я могу́ вы́писать и ре́дкое лека́рство... Вот, наприме́р...»

И в э́ту же мину́ту, хотя́ никто́ у меня́ э́того не проси́л, я взял уче́бник по лека́рствам и откры́л его́. И сра́зу прочита́л про како́й-то «инсипи́н». Что э́то тако́е? Как его́ выпи́сывать? Заче́м он? Я не зна́л.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
В э́ту мину́ту я по́чти запла́кал.

А моя́ уста́лость говори́ла мне:

«Ложи́сь спать. Спи, у́тром всё бу́дет я́сно. Успоко́йся. Посмотри́: за о́кнами темнота́, все спят. Нет пока́ никако́й гры́жи. Утром всё бу́дет я́сно... Спи... Положи́ учёбник, всё равно́ ты сейча́с ничего́ не понима́ешь».

Как вошёл э́тот челове́к, я не по́нял. Он был без ша́пки, в растёгнутом тулу́пе, с безу́мными глаза́ми.

Он упа́л на коле́ни и уда́рился голово́й об пол. Я по́нял, что сейча́с он бу́дет проси́ть меня́...

«Вот оно́, начало́сь са́мое стра́шное!» — поду́мал я.

— Вста́ньте, вста́ньте, — говори́л я и тяну́л его́ за рука́в.

— До́ктор, до́ктор! — говори́л он. — Она́ у меня́ еди́нственная... Еди́нственная... За что́ мне тако́е несча́стье! Спаси́те!

— Что? Что случи́лось? — закрича́л я, чу́вствуя, что у меня́ холоде́ет лицо́.

Он встал на́ ноги и сказа́л:

— Спаси́те её, до́ктор! Я вам дам де́ньги! То́лько что́бы она́ не умерла́! То́лько что́бы не умерла́...

Сза́ди в дверя́х я ви́дел бле́дное лицо́ Анны Никола́евны. Мне опя́ть ста́ло стра́шно.

— Что? Что? Говори́те! — закрича́л я.

— Она́ упа́ла в мя́лку...

— Что тако́е мя́лка! Я не понима́ю!

— Маши́на така́я, — объясни́ла мне Анна Никола́евна. — Этой маши́ной мнут лён...

«Вот оно́, начало́сь, — поду́мал я. — Заче́м я сюда́ прие́хал?»

— Кто она́ вам? — спроси́л я.

— Дочь моя́, — отве́тил он ти́хо, а пото́м опя́ть закрича́л: — Спаси́те, до́ктор!

Ярко горе́ла ла́мпа. На операцио́нном столе́ * я уви́дел её и сра́зу по́нял, что гры́жа — э́то не са́мое стра́шное.

Её ю́бка была́ по́рвана, и кровь на не́й была́ почему́-то ра́зного цве́та. Свет ла́мпы был живы́м и жёлтым по сравне́нию с цве́том её лица́. На её бе́лом лице́ умира́ла необыкнове́нная красота́. Не всегда́, не ча́сто мо́жно уви́деть тако́е краси́вое лицо́.

В операцио́нной * все молча́ли.

CC-0. Agamirzam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
«Почему она такая красивая? Думал я. Наверное, её мать была красивая...»

— У неё есть мать? — спросил я.

— Умерла, — тихо ответила Пелагея Ивановна.

Тут Демьян Лукич резким движением разорвал на ней юбку, я посмотрел, и то, что я увидел, превысило мои ожидания. Левой ноги у неё почти не было. Начиная от колена, это была масса раздавленных костей, мускулов и сосудов. Правая нога была сломана так, что из неё обе кости вышли наружу, разорвав кожу.

Я взял её за руку, чтобы найти пульс *. В холодной руке его не было. И только через несколько секунд я почувствовал слабое движение сердца. Потом опять ничего...

Я уже хотел сказать, что она умерла, но опять почувствовал пульс...

«Вот как умирает раненый человек, — подумал я. — Тут уже ничего невозможно сделать...»

И неожиданно, не узнавая своего голоса, закричал:

— Камфару *!

Анна Николаевна наклонилась ко мне и сказала:

— Зачем, доктор? Она умрёт, вы её не спасёте...

Я злобно посмотрел на неё и сказал мрачно:

— Я прошу камфару.

Я сказал так, что Анна Николаевна покраснела и побежала к столу с лекарствами. Демьян Лукич тоже не одобрял того, что я делаю, но он умело взял шприц * и сделал укол камфары.

— Сейчас умрёт, — сказал он.

Она лежала, как мёртвая, но она не умерла.

В моей голове стало светло, как бывало на операциях, когда я ещё учился.

— Ещё камфару, — сказал я.

Демьян Лукич послушно сделал ещё один укол.

И вдруг я понял, что сейчас мне придётся сделать операцию умирающему человеку. И этот человек умрёт не сам, а под моим ножом. Ведь у неё нет крови в организме! Её везли десять километров и за это время вся кровь вытекла через сломанные ноги. Сейчас даже неизвестно, чувствует ли она что-нибудь, слышит ли... Но она не умирает!

— Готовьтесь к операции, — сказал я чужим голосом.

Пелагея Ивановна посмотрела на меня, как на сумасшедшего, но Демьян Лукич понял меня и побежал к инструментам.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Прошло пятнадцать минут. Я с ужасом смотрел на де́вушку. Я не понима́л ничего́. Как она́ мо́жет жить? Вме́сто кро́ви в её органи́зме бы́ли лека́рства... А де́вушка жила́...

Я никогда́ не де́лал ампута́ции*, но одна́жды ви́дел таку́ю опера́цию. Я взял нож, мо́лча умоля́я де́вушку не умира́ть, пока́ я не ко́нчу опера́цию. «Пусть она́ умрёт в пала́те, когда́ я зако́нчу, но пусть живёт сейча́с», — ду́мал я.

Я на́чал. Я отре́зал но́гу, отпили́в бе́лую кость. На столе́ лежа́ла де́вушка, как бу́дто укоро́ченная на одну́ треть. Я на́чал зашива́ть...

«Не умира́й!» — проси́л я про себя́.

Пот меша́л мне смотре́ть. Мне бы́ло так жа́рко, что я ду́мал, что я в ба́не*.

Я зако́нчил, посмотре́л на бе́лое лицо́ и спроси́л:

— Жива́?

— Жива́... — ти́хо сказа́ла Анна Никола́евна.

— Она́ проживёт ещё одну́ мину́ту, — ти́хо сказа́л Демья́н Луки́ч. — Дава́йте не бу́дем тро́гать втору́ю но́гу, а то она́ не доживёт до пала́ты. Бу́дет лу́чше, е́сли она́ умрёт не в операцио́нной.

— Нет, — твёрдо отве́тил я, потому́ что меня́ толка́ла вперёд кака́я-то неизве́стная мне си́ла. — Да́йте гипс*.

Пра́вая нога́ де́вушки уже́ была́ в ги́псе.

— Она́ живёт! — удивлённо сказа́л фе́льдшер.

Мы на́чали её поднима́ть, что́бы отнести́ в пала́ту. Одну́ треть её те́ла мы оста́вили в операцио́нной...

Я мыл ру́ки.

— Вы, до́ктор, наве́рное, мно́го раз де́лали таки́е опера́ции? — неожи́данно спроси́ла Анна Никола́евна. — Хорошо́, о́чень хорошо́... Не ху́же, чем де́лал Леопо́льд Леопо́льдович.

Я посмотре́л на неё и уви́дел в глаза́х у все́х уваже́ние и удивле́ние.

— Я де́лал таку́ю опера́цию два ра́за...

Заче́м я тогда́ обману́л их? Я не зна́ю.

В больни́це ста́ло ти́хо.

— Когда́ она́ умрёт, — сказа́л я, — приходи́те за мно́й. — Через не́сколько мину́т я опя́ть сиде́л в свое́й ко́мнате. Дом молча́л.

Сейча́с приду́т и ска́жут, что она́ умерла́. Сейча́с постуча́т в дверь...

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
В дверь постучали. Это было через два с половиной месяца. Был один из первых зимних дней.

Вошёл её отец. Я не разглядел его в тот день. Да, действительно, у него правильные черты лица. Ему лет сорок пять.

Потом... На костылях* вошла необыкновенной красоты девушка в широкой юбке.

Она посмотрела на меня и покраснела.

Я начал писать адрес.

— В Москве по этому адресу вам сделают протез, искусственную ногу, — сказал я.

— Поцелуй доктору руку, — строго сказал отец дочери.

Я так испугался, что поцеловал девушку не в губы, а в нос.

Тогда она развернула что-то, и на пол упало белое, как снег, полотенце с вышитым красным петухом. Вот что она прятала под подушку, когда я приходил её осматривать!

— Не возьму! — сказал я строго.

Но у неё стало такое лицо, что я взял.

И много лет оно висело у меня в спальне, а потом странствовало со мной по свету.

### टिप्पणियाँ

на лошадях — घोड़ा-गाड़ी में
больница — अस्पताल
медицина — चिकित्सा-शास्त्र
паралич — लक़वा
Большой театр — बोल्शोई थियेटर (मास्को में)
тулуп — भेड़ की खाल का ओवरकोट
телега — घोड़ा-गाड़ी
изба — लकड़ी का देहाती घर
фельдшер — डाक्टर का सहायक
акушерка — दाई, मिडवाइफ़
лекарственные травы — जड़ी-बूटी
диплом — डिप्लोमा
грыжа — हर्निया
неправильное положение плода — गर्भस्थ शिशु की ग़लत स्थिति
мять лён — फ़्लैक्स पीसना (कूटना)
операционный стол — आपरेटिंग-टेबुल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,New Delhi. Digitized by eGangotri

пульс — नब्ज़
камфара́ — काफ़ूर
шприц — सूई
ампута́ция — अंगच्छेदन
ба́ня — हम्माम
гипс — प्लस्तर
костыли́ — बैसाखी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

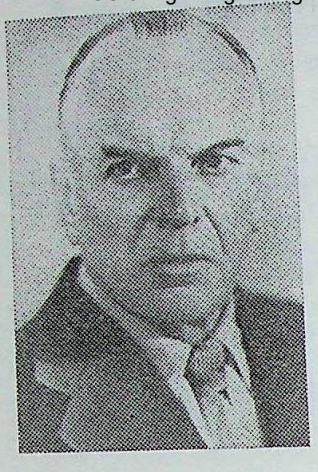

Константин Паустовский
कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्स्की
(१८९२-१९६८)

कोन्स्तान्तीन गेओर्गीयेविच पाउस्तोव्स्की जाने-माने शैलीकार थे। वह रोमानी-प्रगीतात्मक गद्य के प्रतिभाशाली प्रतिनिधि थे। पाउस्तोव्स्की यह मानते थे कि जो व्यक्ति संसार का सौंदर्य नहीं देखता उसका मानसिक जीवन फीका पड़ जाता है, कि प्रकृति मनुष्य को अधिक उदार और निष्कपट बनाती है।

अपने काम में लीन, सहृदय, आत्म-बलिदान और पराक्रम के लिए तत्पर, संवेदनशील, बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली सृष्टिकर्त्ता और नये संसार के निर्माता ही पाउस्तोव्स्की की रचनाओं के नायक हैं।

पाउस्तोव्स्की किसी अलग घटना को जिससे वह प्रभावित हुए, जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का चित्रण करने के लिए कुशलता से इस्तेमाल करते हैं, कृति के पाठ में अपने विचार और प्रगीतात्मक विषयांतर जोड़ते चले जाते हैं। उनके लिए कथानक नहीं बल्कि पुरुष की मनोदशा, उसकी अनुभूतियाँ ही अधिक रोचक होती हैं। यह विशिष्टता ही अनेक वाक्यों और पूरी कृति को विशेष लय और धुन प्रदान करती है।

पाउस्तोव्स्की ने कई उपन्यास-उपन्यासिकाएँ लिखे जिनमें «कारा-बुगाज़» (१९३२), «कोलख़िदा» (१९३४), «उत्तर की कहानी» (१९३८), «सोने का गुलाब» (१९५५), «जीवन-कथा» (१९४५-१९६३) आदि हैं। लेकिन एक कथाकार के रूप में ही पाउस्तोव्स्की ने अधिक नाम कमाया। «सोने का गुलाब» तथा «जीवन-कथा» जैसी बड़ी कृतियाँ भी अपनी विधा की दृष्टि से गल्प के अधिक समीप हैं।

CC-0. Digitized by eGangotri Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



Для писа́теля и для поэ́та са́мое лу́чшее — э́то находи́ть ря́дом с собо́й но́вые исто́чники для тво́рчества. Я находи́л их, и поэ́тому написа́л тако́й стра́нный расска́з.

Утро, когда́ начался́ э́тот расска́з, наступи́ло па́смурное*, но тёплое. Я шёл через луга́ к одному́ таи́нственному о́зеру. На са́мом де́ле ничего́ таи́нственного в э́том о́зере не́ было и быть не могло́. Но впечатле́ние, что оно́ таи́нственное, бы́ло у все́х.

Это ощуще́ние появля́ется от ожида́ния неизве́стного и не совсе́м обыкнове́нного. А густы́е и высо́кие кусты́ вокру́г о́зера заставля́ли ду́мать, что в них обяза́тельно пря́чется и́ли стрекоза́* с кра́сными кры́льями, и́ли си́ний жук*, и́ли цвето́к со стволо́м то́лстым, как челове́ческая рука́.

И всё э́то там действи́тельно бы́ло. Огро́мные жёлтые цветы́ отража́лись в воде́, вокру́г э́того отраже́ния всегда́ пла́вали ма́ленькие серебряные ры́бки.

В луга́х бы́ло совсе́м пу́сто. И ещё и́здали я заме́тил ма́ленького ма́льчика. Он держа́л за по́вод* коня́ и что́-то крича́л. Конь дёргал голово́й и маха́л хвосто́м.

— Дя́денька-а-а*! — крича́л ма́льчик. — Дя́денька-а-а! Иди́ сюда́!

Это был крик о по́мощи. Я сошёл с доро́ги и пошёл к ма́льчику.

— Дя́денька, — сказа́л ма́льчик, — посади́ меня́ на коня́, а то я сам не могу́.

— Хорошо́, — сказа́л я. — А ты чей? Отку́да?

— Я апте́карский*, — отве́тил ма́льчик.

По его́ отве́ту мо́жно бы́ло поня́ть, что он сын апте́каря*, но у на́шего апте́каря Дми́трия Серге́евича дете́й не́ было, и я удиви́лся.

Я по́днял ма́льчика на́ руки и хоте́л посади́ть на коня́, но конь сейча́с же на́чал отходи́ть в сто́рону. Ма́льчик поймал коня́ за по́вод. Конь успоко́ился, да́же бы́ло похо́же, что он засну́л. Я посади́л ма́льчика к нему́ на́ спину, но конь продолжа́л стоя́ть и, каза́лось, собира́лся так стоя́ть це́лый день. Тогда́ ма́льчик подпры́гнул у него́ на спине́ и уда́рил его́ босы́ми нога́ми по бока́м. Конь удивлённо посмотре́л на него́ и лениво поскака́л.

Ма́льчик всё вре́мя подпры́гивал, маха́л рука́ми и бил коня́ нога́ми по бока́м. Тогда́ я по́нял, что на э́том коне́ мо́жно бы́ло е́здить то́лько так...

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Я пришёл к озеру потому, что к нам приехала после экзаменов в школе городская девочка Маша, и я решил набрать ей в подарок букет всяких хороших цветов. Но так как плохих цветов вообще не бывает, то я не знал, что выбрать. Я решил взять по одному цветку и по одной ветке от каждого растения.

Я срезал ветки таволги и широкие листья аира. От листьев шёл сильный запах. Я вспомнил, что на Украине* женщины кладут эти листья на пол по большим праздникам, и их запах остаётся в доме почти до зимы. Ещё я сорвал стрелолист. А белые лилии* рослидалеко, и я никак не мог их достать, а раздеваться и входить в воду мне не хотелось. Вместо лилий я сорвал береговой цветок, похожий на маленькие зонтики.

У самой воды выглядывали из травы голубые незабудки*. А дальше цвела дикая рябина*. А ещё дальше высокой стеной поднимались высокие кусты боярышника* и шиповника*. Ветки их так переплелись, что казалось, будто красные цветы шиповника и белые цветы боярышника расцвели на одном и том же кусте. Шиповник повернул цветы к солнцу. Его цветение совпадало с самыми короткими ночами — нашими русскими северными ночами, когда соловьи поют всю ночь, и солнце почти не уходит за горизонт.

Когда я вернулся домой, Маша* прибивала к дверям лист бумаги. На нём было написано:

Много пыли на дороге,
Много грязи на пути,
Вытирай почище ноги,
Если хочешь в дом войти.

— Ага! — сказал я. — Значит, ты была в нашей аптеке и видела там такую же записку на дверях?

— Ой, какие цветы! — закричала Маша. — Какие красивые! Да, я была в аптеке. Я видела там замечательного человека. Его зовут Иван Степанович Крышкин.

— Кто же он такой?

— Он мальчик. Необыкновенный.

— Почему же он необыкновенный, твой Иван Степанович Крышкин?

— Ему восемь лет, — ответила Маша. — И он собирает для аптекаря разные лечебные травы*.

Из дальнейшего рассказа выяснилось, что Иван Степанович Крышкин похож на того мальчика, которого я сажал на старого коня.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

В э́том ме́сте расска́за уже́ пора́ перейти́ к тому́, о чём я и хоте́л рассказа́ть, — к апте́карю Дми́трию Серге́евичу, и да́же не сто́лько к нему́, ско́лько к давно́ интересова́вшей меня́ те́ме об отноше́нии челове́ка к своему́ де́лу.

Дми́трий Серге́евич был о́чень пре́дан фармаци́и*. Из разгово́ров с ним я убеди́лся, что неинтере́сных профе́ссий на све́те нет. С тех по́р мне нра́вилось в дереве́нской апте́ке всё.

По слова́м Дми́трия Серге́евича, почти́ ка́ждое расте́ние содержит в себе́ и́ли целе́бные, и́ли смерте́льные со́ки. Мно́гое, коне́чно, бы́ло изу́чено ещё давно́. Наприме́р, де́йствие цвето́в ла́ндыша* на се́рдце. Но ты́сячи расте́ний бы́ли ещё не иссле́дованы, и э́тот труд каза́лся Дми́трию Серге́евичу са́мым интере́сным в ми́ре.

В то ле́то наш апте́карь был за́нят тем, что получа́л витами́ны из молодо́й зе́лени сосны́*. Мы пи́ли сок из э́той зе́лени, и хотя́ он был невку́сным, мы должны́ бы́ли согласи́ться, что он о́чень поле́зный.

Одна́жды Дми́трий Серге́евич принёс мне почита́ть то́лстую кни́гу о лека́рственных расте́ниях. Я не запо́мнил её назва́ние. Но э́та кни́га была́ не ме́нее интере́сна, чем прекра́сно напи́санный рома́н. В ней бы́ли опи́саны все удиви́тельные и неожи́данные ка́чества мно́гих расте́ний — не то́лько трав и дере́вьев, но и грибо́в*. Кро́ме того́, в ней бы́ло подро́бно расска́зано, как пригото́вить из э́тих расте́ний лека́рства.

Ка́ждую неде́лю Дми́трий Серге́евич печа́тал в ме́стной райо́нной газе́те* ма́ленькие статьи́ о целе́бной си́ле расте́ний.

Все мы привы́кли к тому́, что у на́с в Росси́и незаме́тный и скро́мный челове́к мо́жет оказа́ться о́чень у́мным и тала́нтливым. Под скро́мной вне́шностью Дми́трия Серге́евича, кото́рый был о́чень незаме́тным, скрыва́лся иска́тель но́вого в своём де́ле, тре́бовательный к себе́ и окружа́ющим челове́к.

Я поду́мал об э́том и вспо́мнил одно́ смешно́е происше́ствие, случи́вшееся с мои́м прия́телем и мной.

Одна́жды мы пое́хали лови́ть ры́бу на Ста́рую Кана́ву. Так называ́лась у́зкая лесна́я ре́чка с бы́стрым тече́нием и кори́чневой водо́й. Ре́чка э́та текла́ в глубине́ ле́са, и проеха́ть на неё бы́ло непро́сто. Снача́ла ну́жно бы́ло е́хать со́рок киломе́тров по желе́зной доро́ге, а пото́м киломе́тров три́дцать идти́ пешко́м.

Мы возвраща́лись на сле́дующий день. Уже́ ве́чером мы вы́шли к желе́зной доро́ге. Подошёл ма́ленькому

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

кий поезд, весь состоявший из густых товарных ваго́нов. Мы се́ли в тот ваго́н, где бы́ло побо́льше наро́да. Же́нщины везли́ корзи́ны * с я́годами и гриба́ми. Два пло́хо оде́тых охо́тника * сиде́ли о́коло откры́тых двере́й и кури́ли.

Снача́ла же́нщины разгова́ривали о свои́х се́льских дела́х, но ско́ро замолча́ли. По́езд вы́шел в луга́, и стал ви́ден ти́хий широ́кий зака́т. Тогда́ са́мая молода́я же́нщина запе́ла, гля́дя на зака́т. Пе́ла она́ просту́ю пе́сню, и други́е же́нщины на́чали ей подпева́ть.

Когда́ же́нщины замолча́ли, пло́хо оде́тый охо́тник ти́хо сказа́л своему́ сосе́ду:

— Мо́жет быть, и мы споём, Ва́ня?

— Коне́чно споём! — согласи́лся тот.

Охо́тники запе́ли. У одного́ из ни́х был густо́й ни́зкий го́лос. Он пел свобо́дно, широко́, и все мы сиде́ли, поражённые э́тим необыкнове́нным го́лосом.

Же́нщины слу́шали певцо́в, кача́ли от удивле́ния голова́ми, а пото́м са́мая молода́я ти́хо запла́кала от восхище́ния.

Мы спроси́ли певца́, кто он тако́й. Он назва́л себя́ колхо́зником *. Мы на́чали угова́ривать его́ прие́хать в Москву́, что́бы кто́-нибудь из знамени́тых моско́вских певцо́в и́ли профессоро́в Консервато́рии послу́шал его́ го́лос.

— Нельзя́, — говори́ли мы, — жить здесь, в дере́вне, с таки́м го́лосом!

Но охо́тник то́лько улыба́лся и отка́зывался.

— Да что́ вы! — говори́л он. — Кака́я же мо́жет быть о́пера с мои́м го́лосом. Да и во́зраст у меня́ не тако́й, что́бы так меня́ть свою́ жизнь. У меня́ в дере́вне сад, жена́, де́ти хо́дят в шко́лу. Я не пое́ду в Москву́! Я там был три го́да тому́ наза́д, так у меня́ от шу́ма голова́ так кружи́лась и боле́ла, что я не зна́л, ка́к бы мне скоре́е уе́хать к себе́ в дере́вню.

Ма́ленький парово́з загуде́л. Мы подъезжа́ли к своей ста́нции.

— Вот что! — реши́тельно сказа́л мой друг охо́тнику. — Нам сейча́с ну́жно выходи́ть. Я оста́влю вам свой моско́вский а́дрес и телефо́н. Приезжа́йте в Москву́. И как мо́жно скоре́е. Я познако́млю вас с ну́жными людьми́, кото́рые вас послу́шают.

Он взял из записно́й кни́жки листо́к и написа́л свой а́дрес. По́езд уже́ подошёл к ста́нции. Охо́тник при сла́бом све́те зака́та прочита́л запи́ску и сказа́л:

— Вы писа́тель?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Я чита́л ва́ши кни́ги. О́чень рад познако́миться. Но позво́льте и мне предста́виться — певе́ц Большо́го теа́тра Пирого́в. Не обижа́йтесь на меня́ за э́тот небольшо́й обма́н. Я могу́ сказа́ть то́лько одно́: сча́стлива та страна́, где лю́ди так хорошо́ отно́сятся друг к дру́гу.

Он засмея́лся.

— Я говорю́, коне́чно, о то́м, как вы хоте́ли помо́чь колхо́знику стать о́перным певцо́м *. И уве́рен, е́сли бы я действи́тельно был колхо́зником, то вы не да́ли бы поги́бнуть моему́ го́лосу. Вот за э́то спаси́бо!

Он кре́пко пожа́л нам ру́ки. По́езд уе́хал. А мы оста́лись. То́лько тогда́ мы вспо́мнили расска́з Дми́трия Серге́евича о то́м, что певе́ц Пирого́в ка́ждое ле́то отдыха́ет у себя́ на ро́дине в большо́й дере́вне недалеко́ от на́с.

Но пора́ конча́ть расска́з.

Зада́ча у меня́ была́ са́мая проста́я — рассказа́ть хотя́ бы незначи́тельные слу́чаи, свиде́тельствующие о тала́нтливости и доброте́ ру́сского челове́ка. А о значи́тельных слу́чаях мы ещё поговори́м.

### टिप्पणियाँ

па́смурный — बादलीयुक्त, मेघाच्छन्न

стрекоза́ — ड्रेगन-फ़्लाइ

жук — गुबरैला

по́вод — बाग

дя́денька — चाचा (छोटे बच्चे बड़े पुरुषों को इस प्रकार संबोधित करते हैं)

апте́карский — दवाफ़रोश का

апте́карь — दवाफ़रोश

незабу́дка, боя́рышник, шипо́вник — सोवियत संघ के यूरोपीय भाग के केंद्रीय क्षेत्रों में उगनेवाले पौधों और झाड़ियों के नाम

Украи́на — उक्राइन, उक्राइनी सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र

ли́лия — लिली, कुमुदिनी

ряби́на — रोवान-वृक्ष

Ма́ша — माशा (मरीया नाम का संक्षिप्त रूप)

лече́бные тра́вы — जड़ी-बूटी

фармаци́я — फ़ार्मेसी, औषध-निर्माण-शास्त्र

ла́ндыш — लिली-आफ़-दी वेली (एक वन्य फूल)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

сосна́ — पाइन [ वृक्ष ], चीड़
гриб — खुमी, कुकुरमुत्ता
райо́нная газе́та — ज़िले का समाचार-पत्र
корзи́на — टोकरा
охо́тник — शिकारी
колхо́зник — सामूहिक किसान, सामूहिक फ़ार्म का सदस्य
о́перный певе́ц — ओपेरा-गायक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Владимир Маяковский
व्लादीमिर मायाकोव्स्की
(१८९३-१९३०)

व्लादीमिर व्लादीमिरोविच मायाकोव्स्की २०वीं सदी के एक विलक्षण कवि तथा काव्य में समाजवादी यथार्थवाद की प्रणाली के प्रवर्त्तक हैं। मातृभूमि और क्रांति को ही उन्होंने अपने काव्य का प्रमुख विषय बनाया।

मायाकोव्स्की का जन्म जार्जिया के बगदादी नाम के एक छोटे-से क़स्बे में हुआ था। १९०६ में पिता की मृत्यु के बाद परिवार मास्को चला आया जहाँ किशोर मायाकोव्स्की क्रांतिकारी संघर्ष में भाग लेने लगा और अनेक बार गिरफ़्तार किया गया। बुतीर्स्काया जेल की काल-कोठरी तक में मायाकोव्स्की बंद रहे और यहीं उन्होंने अपनी पहली कविताएँ लिखीं।

१९१० में स्त्रोगानोव कला-विद्यालय का छात्र मायाकोव्स्की भविष्य-वादियों से जा मिला जो साहित्य और कला में रूपवाद के पक्षधर थे। लेकिन कुछ समय पश्चात् वह अपने लिए विजातीय इस प्रवृत्ति से अलग हो गये। सामाजिक विचार उनके काव्य में अधिक स्थान पाने लगे।

क्रांति से पूर्व उन्होंने जो कविताएँ लिखीं – «पतलून में बादल» (१९१५), «मनुष्य» (१९१६-१९१७), «रीढ़नुमा बाँसुरी» (१९१६) – उनमें न केवल अनोखे छंद और विरूप चित्रण थे बल्कि पूंजीवादी व्यवस्था, उसकी नैतिकता, उसके धर्म का ज़बरदस्त विरोध था तथा ज़ारशाही के पतन और भावी क्रांति की विजय की भविष्यवाणी थी।

१९१७ की अक्तूबर क्रांति का मायाकोव्स्की ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया और «कवि की अपनी सारी गूंजती शक्ति» उसे अर्पित कर दी। इस क्षण से उनका सारा जीवन और सृजन अटूट रूप से समाजवादी मातृभूमि से जुड़ गया।

सोवियत काल में मायाकोव्स्की की विलक्षण प्रतिभा सच्चे अर्थों में मुखरित हुई। उनकी विभिन्न विषयों व शैलियों की कृतियाँ कवि के आवेश

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
से अपने देश की स्वतंत्र जनता पर अभिमान की भावना से ओत-प्रोत हैं। उन्होंने अपनी सुप्रसिद्ध कविताएँ «१५ करोड़» (१९१९), «व्लादीमिर इल्यीच लेनिन» (१९२४), «अच्छा है!» (१९२७), «पूरी आवाज़ के साथ» (१९३०) लिखीं।

अपने नाटकों «मिस्टेरिया-बूफ़» (१९१९), «खटमल» (१९२८), «हम्माम» (१९२९) में मायाकोव्स्की जनाभिवक्ता के रूप में सामने आते हैं «जिसको क्रांति ने संगठित किया और बुलाया»। वह मानते थे कि लेखक का कर्त्तव्य है उन सभी टुटपुँजिया अवशेषों का पर्दाफ़ाश करना और उनसे जूझना जो समाजवादी निर्माण में बाधाएँ डालते हैं।

मायाकोव्स्की की तथाकथित «विदेशी» कविता-माला भी काफ़ी रुचिकर है जो अमरीका और यूरोप की उनकी यात्रा के बाद लिखी गयी थी। मायाकोव्स्की की सारी साहित्यिक सृष्टि की भाँति वे कविताएँ आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि स्वतंत्रता, भलाई और शांति का ज़ोरदार आह्वान करती हैं।

«सबको बताओ
साथी-भाई
संसार में नहीं होगी लड़ाई!»

## РАЗГОВОР С ТОВАРИЩЕМ ЛЕНИНЫМ

Гру́дой дел,
суматóхой явлéний
День отошёл *,
постепéнно стемнéв.
Двóе в кóмнате.
Я
и Лéнин —
фотогрáфией на бéлой стенé *.
Рот откры́т
в напряжённой рéчи,
усóв
щети́нка
вздёрнулась ввысь *,
в склáдках лба
зажáта
человéчья,
в огрóмный лоб
огрóмная мысль *.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Должно быть *,
под ни́м
прохо́дят ты́сячи...
Лес фла́гов *...
рук трава́ *...
Я встал со сту́ла,
ра́достью вы́свечен *,
хо́чется —
идти́,
приве́тствовать,
рапортова́ть *!
«Това́рищ Ле́нин,
я вам докла́дываю
не по слу́жбе,
а по душе́ *.
Това́рищ Ле́нин,
рабо́та а́довая *
бу́дет
сде́лана
и де́лается уже́.
Освеща́ем *,
одева́ем нищь и голь *,
ши́рится добы́ча
у́гля и руды́...
А ря́дом с э́тим,
коне́чно,
мно́го,
мно́го
ра́зной
дря́ни и ерунды́ *.
Устаёшь
отбива́ться и отгрыза́ться *.
Мно́гие без ва́с
отби́лись от ру́к *.
Очень
мно́го
ра́зных мерза́вцев
хо́дят по на́шей земле́
и вокру́г.
Не́ту
им
ни числа́,
ни кли́чки *,
це́лая ле́нта ти́пов
тя́нется *.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Кулаки́ *
и волоки́тчики *,
подхали́мы *,
секта́нты
и пья́ницы, —
хо́дят,
го́рдо
вы́пятив гру́ди *,
в ру́чках сплошь
и в значка́х нагру́дных *...
Мы их
всех,
коне́чно, скру́тим *,
но всех
скрути́ть
ужа́сно тру́дно *.
Това́рищ Ле́нин,
по фа́брикам ды́мным,
по зе́млям,
покры́тым
и сне́гом
и жнивьём *,
ва́шим,
това́рищ,
се́рдцем
и и́менем *
ду́маем,
ды́шим,
бо́ремся
и живём!...»
Гру́дой дел,
суматóхой явле́ний
день отошёл,
постепе́нно стемне́в.
Дво́е в ко́мнате.
Я
и Ле́нин —
фотогра́фией
на бе́лой стене́.*

## Я САМ

Я — поэ́т. Этим и интере́сен. Об э́том и пишу́.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ГЛА́ВНОЕ

Роди́лся 7 ию́ля 1893 го́да. Ро́дина — село́ Багда́ды о́коло Кутаи́си*, Гру́зия.

СОСТА́В СЕМЬИ́

Оте́ц: Влади́мир Константи́нович, багда́дский лесни́чий*. Умер в 1906 году́. Ма́ма: Алекса́ндра Алексе́евна. Сёстры Лю́да и Оля. Была́ ещё тётя Аню́та.

ПЕ́РВОЕ ВОСПОМИНА́НИЕ

Зима́. Оте́ц вы́писал журна́л «Ро́дина». В журна́ле есть юмористи́ческие страни́цы. Их чита́ют и ждут. Одна́жды принесли́ журна́л. Я открыва́ю его́ и сра́зу кричу́: «Как смешно́, мужчи́на и же́нщина целу́ются!» Все смея́лись. По́зже ста́ло я́сно, что смея́лись надо мно́й, а не над журна́лом.

ВОЗНИКНОВЕ́НИЕ РОМАНТИ́ЗМА

Хорошо́ по́мню наш пе́рвый дом. В нём два этажа́. Ве́рхний — наш. На ни́жнем — ви́нный заво́д. Раз в год привози́ли мно́го винограда́, де́лали вино́. Я ел виногра́д. Всё э́то бы́ло на террито́рии стари́нной грузи́нской кре́пости. За кре́постью — леса́. За леса́ми — го́ры. Когда́ я немно́го вы́рос, я бе́гал на са́мую высо́кую. На се́вере была́ Росси́я. Туда́ хоте́лось о́чень си́льно.

УЧЕ́НИЕ

Учи́ла меня́ ма́ма и сёстры. Арифме́тика была́ для меня́ стра́нной нау́кой, потому́ что на́до бы́ло счита́ть я́блоки и гру́ши и дели́ть их ме́жду ма́льчиками. Таки́е бы́ли арифмети́ческие зада́чи. А у на́с на Кавка́зе фру́ктов бы́ло так мно́го, что их никогда́ не счита́ли. С удово́льствием научи́лся чита́ть.

ПЕ́РВАЯ КНИ́ГА

Кака́я-то «Пти́чница Ага́фья». Если бы мне в то вре́мя да́ли не́сколько таки́х книг — переста́л бы чита́ть совсе́м. К сча́стью, втора́я — «Дон-Кихо́т». Вот э́то настоя́щая кни́га!

НЕЛЕГА́ЛЬНАЯ ЛИТЕРАТУ́РА*

Прие́хала сестра́ из Москвы́. Та́йно дала́ мне каки́е-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
то листы́ бума́ги. Нра́вилось, что чита́ть на́до бы́ло та́йно. Это бы́ло о револю́ции. Это бы́ли стихи́. Стихи́ и револю́ция объедини́лись в голове́.

### СОЦИАЛИ́ЗМ

Всю́ду ре́чи, газе́ты. Мно́го незнако́мых слов. Про́бую объясни́ть их себе́. Мно́го книг. Покупа́ю все. Встаю́ в шесть утра́ и чита́ю. На всю́ жизнь удиви́ла спосо́бность социали́стов объясня́ть фа́кты, объясня́ть, что происхо́дит в ми́ре.

Меня́ при́няли в марксисти́ский кружо́к *.

### 1906 ГОД

Умер оте́ц. По́сле его́ похоро́н у на́с оста́лось три рубля́. Мы про́дали всю ме́бель и перее́хали в Москву́.

### ПА́РТИЯ

1908 год. Вступи́л в па́ртию РСДРП *. Пошёл к бу́лочникам, к сапо́жникам, к типогра́фщикам * агити́ровать за револю́цию. На общегородско́й конфере́нции вы́брали в МК *.

### ЧТЕ́НИЕ

Худо́жественную литерату́ру не чита́л. То́лько по филосо́фии и естествозна́нию. Но гла́вным о́бразом — марксизм.

### ПЕ́РВОЕ СТИХОТВОРЕ́НИЕ

В гимна́зии издава́ли ма́ленький журна́л. Я оби́делся. Други́е пи́шут, а я не могу́? На́чал писа́ть. Получи́лось о́чень революцио́нно и о́чень пло́хо. Написа́л второ́е. Получи́лось о́чень лири́чно. Не понра́вилось. Переста́л писа́ть вообще́.

### ВЫБОР

Я хочу́ писа́ть. У меня́ уже́ есть о́пыт в жи́зни. Мне ну́жен о́пыт в иску́сстве. Я не́уч. Мне ну́жно учи́ться. Ра́зве револю́ция не потре́бует от меня́ серьёзного образова́ния? Я пошёл к това́рищу и сказа́л, что хочу́ де́лать социалисти́ческое иску́сство. Он до́лго смея́лся надо мно́й, говори́л, что не смогу́.

Я ду́маю, что он меня́ недооцени́л.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

## ОДИННАДЦАТЬ МЕСЯЦЕВ В ТЮРЬМЕ

Важне́йшее для меня́ вре́мя. По́сле трёх лет тео́рии и пра́ктики революцио́нной борьбы́ на́чал чита́ть худо́жественную литерату́ру.

Прочита́л всё са́мое но́вое. Прочита́в совреме́нное, на́чал чита́ть кла́ссиков: Ба́йрон, Шекспи́р, Толсто́й. После́дняя кни́га — «Анна Каре́нина». Не успе́л дочита́ть. Вы́пустили из тюрьмы́.

### НАЧА́ЛО МАСТЕРСТВА́

Ду́мал, что стихо́в писа́ть не смогу́. На́чал учи́ться жи́вописи. Поступи́л в Учи́лище жи́вописи. Рабо́тал хорошо́. В учи́лище появи́лся Дави́д Бурлю́к*. Подружи́лись.

Одна́жды днём написа́л стихотворе́ние. Прочита́л Бурлюку́. Сказа́л, что э́то написа́л оди́н мой знако́мый. Дави́д останови́лся. Посмотре́л на меня́ и сказа́л: «Да э́то вы са́ми написа́ли! Вы гениа́льный поэ́т!» Я так обра́довался, что меня́ назва́ли гениа́льным, что весь ушёл в стихи́. В э́тот ве́чер соверше́нно неожи́данно стал поэ́том.

Уже́ у́тром Бурлю́к, знако́мя меня́ с ке́м-то, говори́л: «Как, вы его́ не зна́ете? Это мой гениа́льный друг. Вели́кий поэ́т Маяко́вский». Отошёл в сто́рону и ти́хо сказа́л мне: «Тепе́рь пиши́те стихи́, а то вы ста́вите меня́ в неудо́бное положе́ние».

### ЖЁЛТАЯ КО́ФТА

Костю́мов у меня́ не́ было никогда́. Бы́ли две некраси́вые руба́шки. Реши́л укра́сить их га́лстуком. На га́лстук не́ было де́нег. Взял у сестры́ кусо́к жёлтой ле́нты, повяза́л на ше́ю. Всем понра́вилось. Зна́чит, са́мое заме́тное и краси́вое в челове́ке — га́лстук.

### НАЧА́ЛО 1914 ГО́ДА

Чу́вствую мастерство́. Ду́маю о те́ме. О революцио́нной. Ду́маю над поэ́мой «Облако в штана́х».

### ВОЙНА́*

Война́ ужа́сна. Но что́бы сказа́ть о не́й, на́до её ви́деть. Пошёл запи́сываться добровóльцем. Не взя́ли. Отвраще́ние и не́нависть к войне́.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


Принима́ть револю́цию и́ли не принима́ть? Тако́го вопро́са для меня́ и мои́х това́рищей не́ было. Моя́ револю́ция. Пошёл в Смо́льный *. Рабо́тал. Де́лал всё, что ну́жно бы́ло.

1919 ГОД

Езжу со свое́й пье́сой «Мисте́рия-Буфф» и други́ми произведе́ниями по заво́дам. Пока́зываю рабо́чим. Ра́достный приём. Всем нра́вится. Ду́маю о поэ́ме «150 000 000».

1920 ГОД

Ко́нчил писа́ть «Сто пятьдеся́т миллио́нов». Печа́таю без фами́лии, потому́ что хочу́, что́бы ка́ждый допи́сывал и улучша́л. Никто́ не допи́сывает, но фами́лию зна́ют все. Война́. Наступа́ет Дени́кин. Нарисова́л три ты́сячи плака́тов и ты́сяч шесть по́дписей к ним.

1924 ГОД

Зако́нчил поэ́му «Ле́нин». Чита́л рабо́чим. Я о́чень боя́лся э́той поэ́мы, та́к как легко́ бы́ло сни́зиться до просто́го полити́ческого переска́за. Отноше́ние рабо́чих показа́ло мне, что поэ́ма нужна́.

1926 ГОД

Рабо́таю как газе́тчик, журнали́ст *. Пишу́ фельето́ны *, ло́зунги *. Мно́гие поэ́ты смею́тся, а мне смешно́ смотре́ть на и́х лири́ческие стихи́, кото́рые никому́ кро́ме жены́ не интере́сны.

Пишу́ в «Изве́стиях», «Труде́», «Рабо́чей Москве́», «Заре́ Восто́ка» и други́х газе́тах. Втора́я рабо́та — е́зжу по города́м и чита́ю свои́ стихи́. Был в Новочерка́сске, Ха́рькове, Пари́же, Росто́ве, Тбили́си, Берли́не, Москве́, Воро́неже.....

1928 ГОД

Мно́гие говоря́т: «Ва́ша автобиогра́фия не о́чень серьёзна». Пра́вильно. Я ведь ещё не ста́л акаде́миком. Возникнове́ние литерату́ры, ра́зные литерату́рные направле́ния, развива́вшиеся на мои́х глаза́х — э́то часть исто́рии. Это тре́бует, что́бы о нём написа́ть. И я напишу́.

# ХОРОШО!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(отры́вок из поэ́мы)

Я
земно́й шар
чуть не * ве́сь
обошёл, —
и жизнь
хороша́,
и жить
хорошо́.
А в на́шей бу́че,
боево́й, кипу́чей *, —
и того́ лу́чше.
Вьётся
у́лица-змея́.
Дома́
вдоль змей.
Улица —
моя́.
Дома́ —
мои́.
Окна
рази́нув *,
стоя́т
магази́ны.
Гру́дью
у витри́нных
кни́жных груд *
Моя́
фами́лия
в поэти́ческой ру́брике,
Ра́дуюсь я —
э́то
мой труд
влива́ется
в труд
мое́й респу́блики.
Ро́зовые ли́ца.
Револьве́р
жёлт.
Моя́
мили́ция *
меня́
бережёт.

CC-0. Agamkigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


пра́вит *,
чтоб впра́во
шёл.
Пойду́
напра́во.
Очень хорошо́.
Надо мно́ю
не́бо.
Си́ний
шёлк!
Никогда́
не́ было
так
хорошо́!
Пыши́,
маши́на,
ши́бче-ка *,
Вове́к * чтоб
не смо́лкла, —
побо́льше
си́тчика *
мои́м
комсомо́лкам *.
Ве́тер
поду́л
в сосе́днем саду́.
В ду́-
хах
про-
шёл *.
Как хо-
рошо́!
За го́родом —
по́ле.
В поля́х —
деревеньки.
В дере́внях —
крестья́не.
Бо́роды-
ве́ники *.
Сидя́т
папа́ши *.
Ка́ждый
хитр.
Зе́млю попа́шет,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


стихи́.
До́ят *,
па́шут,
ло́вят ры́бицу *.
Респу́блика на́ша
стро́ится,
ды́бится *.
Други́м
стра́нам
по́ сто.
Исто́рия —
па́стью гро́ба *.
А моя́
страна́ —
подро́сток *, —
твори́,
выду́мывай,
про́буй!
Ра́дость прёт *.
Не для ва́с
удели́ть ли нам!*
Жизнь прекра́сна
и
удиви́тельна.
Лет до ста́
расти́
нам
без ста́рости.
Год от го́да
расти́
на́шей бо́дрости.
Сла́вьте,
мо́лот
и стих *,
зе́млю мо́лодости.

**टिप्पणियाँ**

Гру́дой дел, суматохой явле́ний день отошёл — काम ही काम में, घटनाओं के उलट-फेर में दिन ढल गया
и Ле́нин — фотогра́фией на бе́лой стене́ — और सफ़ेद दीवार पर फ़ोटो में लेनिन
усо́в щети́нка вздёрнулась ввысь — मूंछों के रोयें कुछ ऊपर उठे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

в скла́дках лба зажа́та ... огро́мная мы́сль — ललाट की झुर्रियों में ... महत्वपूर्ण विचार छिपा पड़ा है

должно́ быть — हो न हो

лес фла́гов — झंडे-झंडियों का जंगल

рук трава́ — ऊपर उठे अनगिनत हाथ

ра́достью вы́свечен — ख़ुशी से फूले न समाये

рапортова́ть — रिपोर्ट पेश करना

не по слу́жбе, а по душе́ — काम के तक़ाज़े पर नहीं, मन के तक़ाज़े पर

а́довый — बड़ा मुश्किल, ख़ून-पसीने का

освеща́ем — (यहाँ) रोशनी देते हैं, विद्युतीकरण करते हैं

нищь и голь — निर्धन और निर्वस्त्र लोग

устаёшь отбива́ться и отгрыза́ться — लड़ते-भिड़ते थक जाता है

отби́лись от рук — बेलगाम हो गये हैं

не́ту им ни числа́ ни кли́чки — न उनकी कोई गिनती है न कोई नाम

це́лая ле́нта ти́пов тя́нется — दुष्टों का लंबा ताँता है

кула́к — कुलक (धनी किसान जो ग़रीब लोगों का शोषण करता था)

волоки́тчик — लालफ़ीताशाह

подхали́м — चापलूस, जी-हुज़ूर

го́рдо вы́пятив гру́ди — छाती फुलाये

в ру́чках сплошь и в значка́х нагру́дных... — कोट के ब्रेस्ट-पॉकेट में पेन ही पेन और कोट के लैपेल पर बैज ही बैज

скрути́ть — क़ाबू पा लेना

ужа́сно тру́дно — बहुत मुश्किल है

жнивьё — खूँटी, खुत्थी

ва́шим ... се́рдцем и и́менем — ... आपके हृदय और नाम को लेकर

* * *

Кутаи́си — कुताईसी (जार्जियाई सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र का एक नगर)

лесни́чий — वनपाल, वन-रक्षक

нелега́льная литерату́ра — अवैध साहित्य (क्रांतिकारी संघर्षविषयक पुस्तकें जिन्हें छापने, बाँटने और पढ़ने पर ज़ारशाही सरकार प्रतिबंध लगाती है)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

марксистский кружок — मार्क्सवादी अध्ययन-मंडल

РСДРП — रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर दल (१८९८-१९१७ में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का नाम)

бу́лочник, сапо́жник, типогра́фщик — नानवाई, मोची, मुद्रक

МК — [पार्टी की] मास्को समिति

Давид Бурлюк (1882—1967) — रूसी कवि और चित्रकार, रूसी भविष्यवाद का एक प्रवर्त्तक

война́ — प्रथम विश्व युद्ध (१९१४-१९१८), साम्राज्यवादी युद्ध जो पूँजीवादी देशों के दो गुटों के बीच था

Смо́льный — पेत्रोग्राद (भावी लेनिनग्राद) का स्मोल्नी इन्स्टिट्यूट का भवन जिसमें महान् अक्तूबर समाजवादी क्रांति के समय बोल्शेविकों का मुख्यालय था

журнали́ст — पत्रकार

фельето́н — व्यंग्य-लेख

ло́зунг — नारा

«Изве́стия», «Труд», «Рабо́чая Москва́», «Заря́ Восто́ка» — उस समय के अख़बारों के नाम

* * *

чуть не — प्राय:

бу́ча, боева́я, кипу́чая — सक्रिय, जोशीला जीवन

О́кна рази́нув — खिड़कीरूपी मुँह बाये

Гру́дью у витри́нных кни́жных груд — किताबों की दुकान की खिड़की के सामने खड़ा होकर

мили́ция — मिलिशिया (सोवियत पुलिस)

Же́злом пра́вит — डंडे से रास्ता दिखाती है

Пыши́, маши́на, ши́бче-ка — ज़ोर-शोर से चल मशीन रे

вове́к — कभी नहीं

си́тчик (си́тец का अल्पवाचक रूप) — छींट का कपड़ा

комсомо́лка — कोम्सोमोल (अखिल-सोवियत लेनिनीय युवा कम्युनिस्ट लीग) की सदस्या; (यहाँ) नौजवान लड़की

В духа́х прошёл. — सुगंध (ख़ुशबू) आयी।

бо́роды-ве́ники — झाड़ू जैसी दाढ़ियाँ

папа́ша — (यहाँ) अधेड़ उम्र का आदमी

дои́ть — दूध दोहना

ры́бица — (यहाँ) मछली

ды́биться — (यहाँ) तरक़्क़ी करना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Другим странам по сто. История — частью тро́па — दूसरे देश कब के बने हैं

А моя́ страна́ — подро́сток (यहाँ) और मेरा नवोदित देश है

Ра́дость прёт. — ख़ुशी का वार-पार नहीं है।

Не для вас уделя́ть ли нам! — आपसे इसको बाँटे!

мо́лот и стих — (यहाँ) श्रम और काव्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

## Сергей Есенин
## सेर्गेई येसेनिन
## (१८९५-१९२५)

सेर्गेई अलेक्सान्द्रोविच येसेनिन का काव्य रूसी सोवियत साहित्य में एक ज्वलंत परिघटना है। उनकी पहली कविताएँ १९१४ में निकली थीं और १९१६ में उनकी पहली पुस्तक «मृतक-स्मृति» निकली थी।

अपनी जन्म-भूमि – रियाज़ान प्रदेश – की शांत प्रकृति, उसकी नदियाँ, उसके घास के मैदान और वन येसेनिन के काव्य-जगत् में उतरे। कवि ने कहा: «मेरे गीत जन्म-भूमि के प्रति असीम प्रेम के कारण ही जीवित हैं। मेरे सृजन में जन्म-भूमि की भावना ही सबसे महत्वपूर्ण है।» येसेनिन की शानदार कविताएँ «प्रिय भूमि! सपनों में देखो» (१९१४), «ओ, मेरे प्रिय रूस» (१९१४), «रूस» (१९१४), «गुज़रता जाता रूस» (१९२४), «सोवियत रूस» (१९२५) इसी भावना से ओत-प्रोत हैं।

येसेनिन की क्रांतिपूर्व रचनाएँ गाँव की सामाजिक समस्याओं से दूर थीं और यह बात «शुद्ध कला» के पक्षधरों तथा विभिन्न ह्रासवादियों को उनकी ओर आकर्षित करती थी। परंतु एक सच्चे लोक-कवि के नाते येसेनिन में देशभक्तिपूर्ण भावनाएँ प्रबल थीं, वह आम लोगों से सहानुभूति रखते थे। यह अकारण ही नहीं कि गोर्की और ब्लोक ने उनकी प्रतिभा पहचानी।

जैसा कि कवि ने स्वयं लिखा था, १९१७ में वह «... अक्तूबर क्रांति के पक्ष में था लेकिन सब-कुछ अपने ढंग से समझ रहा था, किसानों की मनोवृत्ति से... मैं देहात का अंतिम कवि हूँ...» «इनोनिया» कविता (१९१८) में येसेनिन एक काल्पनिक नगर «इनोनिया» का स्वप्न देखते हैं जहाँ वह संसार की आदर्शवादी कल्पना करते हैं।

येसेनिन के जीवन के अंतिम वर्ष उनकी सृजनशीलता में तीव्र उत्थान के वर्ष थे। गाँव का विषय जो सदा उनकी रचनाओं में मौजूद था क्रांतिकारी रंगों में रंजित होने लगा। येसेनिन ने देहाती पिछड़ेपन के ख़िलाफ़

CC-0. Agamnirman Digital Preservation Foundation, Chandigarh

«इस्पाती» रस के लिए आवाज़ उठायी है येसेनिन ने। कई ऐसी कविताएँ लिखी हैं जो रूप की दृष्टि से भी और मनुष्य की आत्मा की गहराई तक पहुँचने की दृष्टि से भी अनुपम हैं। १९२४ में उन्होंने «लेनिन» कविता, «महाभियान का गीत» काव्य और १९२५ में «फ़ारस देश की धुनें» गीति-माला और «अन्ना स्नेगिना» काव्य जो कवि का सर्वोत्तम महाकाव्य है लिखा था। इस काव्य में गाँव में जीवन और संघर्ष तथा किसान लोगों के क्रांतिकारी उत्थान के सजीव चित्र प्रस्तुत हैं। येसेनिन की श्रेष्ठ कृतियों में हृदयस्पर्शिता, आत्मिक पवित्रता, रूप की क्लासिक सरलता और प्रगीतात्मक विषयों की प्रचुरता देखी जा सकती है। उनकी कविताएँ, उनका महाकाव्य, उनके गीत वह अमूल्य देन है जिसने सोवियत साहित्य को समृद्ध बनाया है।

## НЕ ЖАЛЕЮ, НЕ ЗОВУ, НЕ ПЛАЧУ...

Не жале́ю, не зову́, не пла́чу,
Всё пройдёт, как с бе́лых я́блонь дым *.
Увяда́нья зо́лотом * охва́ченный,
Я не бу́ду бо́льше молоды́м.

Ты тепе́рь не та́к уж бу́дешь би́ться,
Се́рдце, тро́нутое холодко́м *.
И страна́ берёзового си́тца *
Не зама́нит шля́ться босико́м *.

Дух броде́яжий *, ты всё ре́же, ре́же
Расшеве́ливаешь пла́мень уст *.
О, моя́ утра́ченная * све́жесть,
Бу́йство глаз * и полово́дье чувств *.

Я тепе́рь скупе́е стал в жела́ньях *,
Жизнь моя́! Иль ты присни́лась мне?
Сло́вно я весе́нней гу́лкой ра́нью *
Проскака́л на ро́зовом коне́.

Все мы, все мы в э́том ми́ре тле́нны *,
Ти́хо льётся с клёнов ли́стьев медь *...
Бу́дь же ты вове́к * благослове́нно,
Что пришло́ процве́сть * и умере́ть.

### टिप्पणियाँ

как с бе́лых я́блонь дым— जिस तरह खिलने के बाद सेब के पेड़ों से सफ़ेद फूल झड़ जाते हैं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
увяда́нья зо́лото — पतझड़ में झड़ती हुई पत्तियों का सुनहरा रंग
се́рдце, тро́нутое холодко́м — थका हुआ दिल उदासीन हृदय
страна́ берёзового си́тца — ( यहाँ ) भोज-वृक्षों ( भूर्ज-वृक्षों ) की धरती
не зама́нит шля́ться босико́м — नंगे पैर घूमने का प्रलोभन अब न देगी
дух броде́ржий — भ्रमण की इच्छा
расшеве́ливаешь пла́мень уст — दिल में आग लगाती है
утра́ченный — खोया हुआ
бу́йство глаз — आँखों में तीव्र इच्छाएँ
полово́дье чувств — भावों की बाढ़
скупе́е стал в жела́ньях — मेरी लालसाएँ अब इतनी नहीं
весе́нняя гу́лкая рань — वसंत का भोर
все мы в э́том ми́ре тле́нны — मर्त्य हैं इस संसार में हम सब
льётся с клёнов ли́стьев медь — ढरकते हैं मैपल के पेड़ों से तामड़े पत्ते
вове́к — सदा के लिए
процве́сть — खिलकर मुरझाना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Михаил Зощенко
मिख़ाईल ज़ोश्चेन्को
(१८९५-१९५८)

मिख़ाईल मिख़ाईलोविच ज़ोश्चेन्को तीसरे दशक के शुरू में साहित्य में प्रविष्ट हुए थे जब नये मानव की गठन की समस्या विशेषत: गंभीर रूप से सामने आयी थी। साम्राज्यवादी युद्ध, क्रांति और गृह-युद्ध से होकर गुज़रे मनुष्य का विस्तृत जीवन-अनुभव लेकर ज़ोश्चेन्को साहित्य में आये। ज़ोश्चेन्को एक प्रथम सोवियत व्यंग्यकार थे। क्रांति के बाद के कठिन समय में लोगों के सामने पैदा हुई जीवन की समस्याओं को ही उन्होंने अपने सृजन का विषय बनाया और सर्वप्रथम एक आम, साधारण व्यक्ति के जीवन का चित्रण किया जिसकी चेतना जीवन की एकदम नयी पद्धति के अनुसार नहीं बदल पायी थी।

«मैं टुटपुँजिया लोगों की कहानी लिखता हूँ। यह सही है कि एक वर्ग के रूप में हमारे यहाँ टुटपुँजिया वर्ग नहीं है, लेकिन मैं बहुधा सामान्यीकृत चरित्र प्रस्तुत करता हूँ। हममें से प्रत्येक में टुटपुँजियापन और कूपमंडूकता के कुछ लक्षण होते हैं। मैं ये प्राय: अस्पष्ट लक्षण एक ही नायक में जमा करता हूँ और तब यह नायक हमारे लिए जाना-पहचाना हो जाता है।»

ज़ोश्चेन्को का यह विश्वास था कि व्यंग्य और हास्य में दुर्गुणों से छुटकारा दिलाने की प्रबल शक्ति होती है और इस नाते यह समाजवादी चेतना के विकास का एक सक्रिय साधन है।

१९२२ में ज़ोश्चेन्को की पहली पुस्तक «श्रीमान नज़ार इल्यीच सीने-बूख़ोव की कहानियाँ» प्रकाशित हुई। ज़ोश्चेन्को की प्रतिभा की मौलिकता – उनका विशेष प्रकार का «नायक» और उसका भाग्य – इस पहली पुस्तक में ही प्रकट हो गयी। यह वह नायक है जो बराबर हास्यकर, बेतुकी परिस्थितियों में आ फँसता है क्योंकि ठीक तरह से ख़ुद समझ नहीं पाता कि उसके इर्द-गिर्द क्या हो रहा है। ज़ोश्चेन्को के छोटे-छोटे व्यंग्य-लेख

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
और हास्य-कथाएँ बहुत लोकप्रिय हुए क्योंकि वे प्रासंगिक और जीवन जैसे सच्चे थे। चौथे दशक में उनके «मिशेल सिन्यागिन», «एक जीवन की कथा» और «नीली पुस्तक» लघु-उपन्यास प्रकाशित हुए जिनमें मानव-गरिमा के लिए, चतुर्मुखी विकसित और सामाजिक-नैतिक दृष्टि से सुयोग्य व्यक्ति के लिए संघर्ष के प्रश्न अधिक गंभीर तथा सामान्यीकृत रूप में उठाये गये। पाँचवे दशक के अंत में ज़ोश्चेन्को की बाल-कृतियाँ प्रकाशित हुईं। इनकी विशेषता यह है कि ज़ोश्चेन्को बच्चों को उपदेश नहीं देते, बल्कि सीधे-सादे ढंग से ही जटिल नैतिक समस्याओं पर विचार करते हैं। «लेनिन के बारे में कहानियाँ» (१९२६) ऐसी ही एक कृति है। ज़ोश्चेन्को ने कुछ नाटक भी लिखे: «कनवास का बैग» (१९४१-१९४४), «सैनिक का सुख» (१९४२), «बहुत ख़ुशी हुई» (१९४५) आदि।

## РАССКАЗ О ПИСЬМЕ И НЕГРАМОТНОЙ ЖЕНЩИНЕ

Жи́ли в Ленингра́де муж и жена́.

Муж был отве́тственный сове́тский рабо́тник*. Он был неста́рый, здоро́вый, энерги́чный и пре́данный де́лу социали́зма челове́к.

И хотя́ он был челове́к просто́й, из дере́вни, и никогда́ не получа́л вы́сшего образова́ния, но за го́ды житья́ в го́роде он мно́гое узна́л и вы́учил. Та́к как он мно́гое знал, он мог произноси́ть ре́чи в любо́й аудито́рии* и да́же спо́рил с учёными ра́зных специа́льностей.

А жена́ его́, Пелаге́я, была́ же́нщина негра́мотная*. И хотя́ она́ прие́хала из дере́вни вме́сте с ним, но ничему́ не научи́лась, оста́лась негра́мотной и да́же не уме́ла написа́ть свою́ фами́лию.

А муж Пелаге́и, ви́дя таку́ю ситуа́цию, о́чень огорча́лся, страда́л и не понима́л, как вы́йти из беды́. Тем бо́лее, что он был о́чень за́нят на рабо́те, не име́л свобо́дного вре́мени для того́, что́бы обуча́ть свою́ жену́.

И он ей говори́л:

— Ты, Пелаге́я, научи́сь чита́ть и писа́ть. Сейча́с на́ша страна́ выхо́дит из вековой темноты́ и некульту́рности. Все вокру́г уже́ гра́мотные. А ты, жена́ дире́ктора хле́бного заво́да, не уме́ешь ни чита́ть, ни писа́ть! Мне гру́стно об э́том ду́мать.

А Пелаге́я на э́то отвеча́ет:

— Ах, Ива́н Никола́евич! О чём вы говори́те? Я в мо́лодости э́тому не научи́лась, а тепе́рь мо́лодость моя́

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
прошла́, и мои́ ру́ки не могу́т держа́ть каранда́ш. За чём мне учи́ться? Пуска́й молоды́е лю́ди у́чатся, а я и негра́мотная до ста́рости доживу́.

Но одна́жды Ива́н Никола́евич принёс домо́й уче́бник.

— Вот, — говори́т он, — Пелаге́я, са́мый но́вый самоучи́тель *, напи́санный по после́дним да́нным нау́ки. Я сам тебе́ всё покажу́. И прошу́ тебя́ со мно́й не спо́рить.

Пелаге́я ти́хо улыбну́лась, взяла́ уче́бник в ру́ки, посмотре́ла его́ и спря́тала.

И вот одна́жды днём начала́ Пелаге́я зашива́ть му́жу пиджа́к. Се́ла за сто́л, взяла́ иго́лку с ни́ткой, пиджа́к и вдруг почу́вствовала, что что́-то лежи́т в карма́не.

Посмотре́ла — письмо́. Бе́лый аккура́тный конве́рт, на нём напи́сан а́дрес то́нкими бу́квами, а бума́га и́ли духа́ми и́ли одеколо́ном па́хнет.

За́мерло се́рдце у Пелаге́и.

«Неуже́ли, — ду́мает она́, — мой Ива́н Никола́евич меня́ обма́нывает? Неуже́ли он пи́шет же́нщинам любо́вные пи́сьма и смеётся надо мно́й, негра́мотной?»

Посмотре́ла Пелаге́я на конве́рт, доста́ла письмо́, а прочита́ть не мо́жет.

Пе́рвый раз в жи́зни пожале́ла Пелаге́я о то́м, что чита́ть не уме́ет.

«Коне́чно, — ду́мает она́, — э́то чужо́е письмо́. Но я должна́ знать, что в нём напи́сано. Мо́жет быть, от э́того вся моя́ жизнь изме́нится. Мо́жет быть, мне на́до обра́тно в дере́вню уезжа́ть...».

А у само́й от оби́ды се́рдце боли́т.

«Я, — ду́мает Пелаге́я, — своего́ му́жа о́чень люблю́, е́сли мне так бо́льно и нехорошо́ от э́того письма́. Как оби́дно и пло́хо, что я не могу́ его́ прочита́ть! Я бы сра́зу узна́ла, о чём оно́, е́сли бы уме́ла чита́ть!»

И она́ запла́кала. И ста́ла ду́мать про Ива́на Никола́евича и вспомина́ть ра́зные ме́лочи. Да, он действи́тельно измени́лся за после́днее вре́мя. Он стал ча́сто причёсывать свои́ усы́. И купи́л но́вую шля́пу.

Сиди́т Пелаге́я, ду́мает обо всём э́том и пла́чет. А прочесть письмо́, коне́чно, не мо́жет. Она́ да́же бу́квы не понима́ет. А друго́му челове́ку тако́е письмо́ показа́ть нельзя́.

Попла́кала она́, спря́тала письмо́, зашила́ пиджа́к и ждёт Ива́на Никола́евича.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
А когда́ он пришёл, Пелаге́я ему́ о письме́ ничего́ не сказа́ла, она́ разгова́ривала с му́жем споко́йно. А пото́м сказа́ла, что хо́чет учи́ться чита́ть и писа́ть, потому́ что ей надое́ло быть негра́мотной.

Ива́н Никола́евич о́чень обра́довался.

— Очень хорошо́! — сказа́л он. — Я сам тебя́ бу́ду учи́ть.

— Учи́! — отве́тила Пелаге́я, а сама́ внима́тельно посмотре́ла на ро́вные, расчёсанные усы́ Ива́на Никола́евича. И сно́ва у неё заболе́ло се́рдце.

Два ме́сяца Пелаге́я учи́лась чита́ть и писа́ть ка́ждый день. Она́ чита́ла слова́, писа́ла бу́квы, учи́ла наизу́сть це́лые предложе́ния. И ка́ждый ве́чер доставала́ спря́танное письмо́ и стара́лась поня́ть его́.

Но э́то бы́ло нелегко́.

То́лько через три́ ме́сяца Пелаге́я научи́лась чита́ть хорошо́.

Утром, когда́ Ива́н Никола́евич ушёл на рабо́ту, Пелаге́я доста́ла письмо́ и начала́ его́ чита́ть.

Она́ с трудо́м чита́ла тру́дный по́черк. Но за́пах духо́в от письма́ заставля́л её чита́ть да́льше.

Письмо́ бы́ло для Ива́на Никола́евича.

Пелаге́я чита́ла:

«Уважа́емый това́рищ Ку́чкин.

Посыла́ю Вам уче́бник, кото́рый обеща́ла. Я ду́маю, что Ва́ша жена́ за два́ и́ли три ме́сяца мо́жет научи́ться и чита́ть, и писа́ть. Обеща́йте мне помо́чь ей э́то сде́лать. Объясни́те ей, как пло́хо быть негра́мотной.

Сейча́с, к годовщи́не Октя́брьской револю́ции, мы ликвиди́руем негра́мотность * по всей стране́, испо́льзуем все сре́дства, а о свои́х родны́х почему́-то забыва́ем.

Обеща́йте, Ива́н Никола́евич, э́то сде́лать.

С коммунисти́ческим приве́том, Мари́я Блохина́».

Пелаге́я два ра́за прочита́ла э́то письмо́ и опя́ть запла́кала.

Но пото́м поду́мала об Ива́не Никола́евиче, о то́м, что у неё в супру́жеской жи́зни * всё в поря́дке, успоко́илась, спря́тала уче́бник и письмо́.

Так за коро́ткое вре́мя из-за любви́ и ре́вности на́ша Пелаге́я научи́лась чита́ть и писа́ть и ста́ла гра́мотной.

И э́то был оди́н из са́мых удиви́тельных слу́чаев ликвида́ции негра́мотности в на́шей стране́.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

टिप्पणियाँ

ответственный работник — उच्च पदाधिकारी
в любой аудитории — किसी भी श्रोतागण के सम्मुख
неграмотный — अनपढ़
самоучитель — स्वयंशिक्षक [ -पुस्तक ]
ликвидация неграмотности — निरक्षरता-उन्मूलन
супружеская жизнь — दाम्पत्य जीवन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

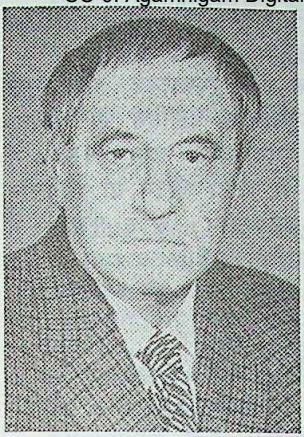

Валентин Катаев
वलेन्तीन कतायेव
(जन्म १८९७)

वरिष्ठ सोवियत लेखकों में वलेन्तीन पेत्रोविच कतायेव का नाम रखा जा सकता है। उनकी पहली कविता १९१० में प्रकाशित हुई थी। कतायेव ने ओदेस्सा और मास्को के समाचार-पत्रों व पत्रिकाओं में काम किया, वह व्यंग्य-लेख, कहानियाँ, निबंध, कथाएँ लिखते रहे।

समाचार-पत्रों में काम करके भावी लेखक ने जीवन की विस्तृत सामग्री इकट्ठी की।

तीसरे व चौथे दशक में कतायेव नाटकों के क्षेत्र में प्रविष्ट हुए और उन्होंने «वृत्त का वर्गकरण» (१९२८), «करोड़ों दुःख» (१९३१), «फूलों का रास्ता» (१९३४) नाटक लिखे जिनमें टुटपुँजियों, कूप-मडूंकों तथा समयसेवियों का पर्दाफ़ाश किया।

उन्हीं वर्षों में कतायेव ने देश में हो रही प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए देश का बहुत भ्रमण किया तथा भिन्न-भिन्न लोगों से मिले। नये जीवन के निर्माताओं के उत्साह से, निर्माण-कार्य के विशाल विस्तार से और श्रम के प्रति नये रवैये से वह बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने लिखा: «मेरे लिए यह बड़े सुख और सम्मान की बात थी कि मैं मग्नीतोगोर्स्क में संसार के एक विशालतम कारख़ाने की नींव रखने तथा पहले ब्लास्ट-फ़र्नेस का निर्माण करने के दृश्य देख पाया...» इसके बारे में कतायेव ने एक उपन्यास «समय, आगे बढो!» (१९३२) लिखा।

१९३६ में कतायेव ने «अकेला पाल सफ़ेद-सा दीखता है» उपन्यासिका लिखी। अपने बचपन के संस्मरणों के आधार पर उन्होंने १९०५ के क्रांतिकारी ओदेस्सा, युद्ध-पोत «पोत्योमकिन» पर हुए विद्रोह, गाव्रिक और पेत्या नाम के दो किशोर ओदेस्सावासियों के चरित्र की गठन की कहानी सुनायी। «अकेला पाल सफ़ेद-सा दीखता है» उपन्यासिका से कतायेव ने क्रांति-संबंधी अपनी चतुष्कृति आरंभ की। दूसरा भाग «स्तेपी में छोटा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
गाँव» १९५६ में प्रकाशित हुआ, तीसरा भाग «जाड़े की हवा»–१९६० में और चौथा भाग «सोवियत सत्ता के लिए»–१९६१ में।

सातवें दशक में कतायेव ने प्रगीतात्मक, संस्मरणात्मक और वृत्त उपन्यासिकाएँ लिखीं। १९६४ में पेरिस में व्ला० इ० लेनिन के जीवन-संबंधी उनका लघु-उपन्यास «दीवार में लोहे का छोटा द्वार» छपा। १९६७ में «पवित्र कुआँ», «विस्मृति की घास», १९७२ में «टूटा जीवन या ओबेरॉन का मंगल-सींग», १९७५ में «स्कुल्याना में क़ब्रिस्तान» और १९७८ में «हीरों का मेरा मुकुट» शीर्षक रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

## БЕЛЕЕТ ПАРУС ОДИНОКИЙ

(отры́вки из по́вести)

### МО́РЕ

Ярко свети́ло ни́зкое со́лнце. Пе́тя* бежа́л вниз по доро́жке к мо́рю. Но́ги бежа́ли са́ми, их невозмо́жно бы́ло останови́ть. Пе́тя уви́дел сухо́й и холо́дный, ещё не согре́тый со́лнцем песо́к на бергу́. Песо́к был совсе́м бе́лым, поэ́тому пляж каза́лся о́чень краси́вым.

На берегу́ никого́ не́ было, и ма́льчик почу́вствовал одино́чество. Пе́тя смотре́л на мо́ре. Ско́лько бы челове́к ни смотре́л на мо́ре — оно́ никогда́ не надое́ст. Оно́ всегда́ ра́зное, но́вое, неви́данное, меня́ется ка́ждый час. То оно́ ти́хое, све́тло-голубо́е, то я́рко-си́нее, сверка́ющее. Иногда́ на нём поднима́ются высо́кие во́лны, то прилета́ет бу́ря, си́льный ве́тер го́нит перед собо́й тёмно-си́нюю во́ду, по тёмному не́бу лета́ют бе́лые ча́йки и трево́жно крича́т.

В мо́ре всегда́ быва́ют та́йны. Одна́жды Пе́тя уви́дел в мо́ре броненосец «Потёмкин»*. Он не́сколько раз появля́лся на горизо́нте, и тогда́ все переста́вали рабо́тать, выходи́ли к мо́рю, снима́ли ша́пки и руба́шки и маха́ли и́ми в во́здухе, ду́мая, что их ви́дят революцио́нные моряки́. Пото́м все уви́дели мно́го корабле́й, кото́рые плы́ли за «Потёмкиным». Пе́тя узна́л, что революцио́нный кора́бль приплы́л в Румы́нию, где все матро́сы бы́ли аресто́ваны*, а через не́сколько дней корабли́ проплы́ли обра́тно и привели́ за собо́й «Потёмкин», но уже́ без матро́сов.

Мно́гие из ни́х бежа́ли, а тепе́рь на доро́гах появи́лось мно́го жанда́рмов на лошадя́х, кото́рые иска́ли убежа́вших матро́сов.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Пе́тя вспомина́л обо всём э́том, когда́ он услы́шал го́лос своего́ отца́. Оте́ц крича́л:

— Беги́ сюда́ скоре́е! Мы мо́жем опозда́ть на парохо́д!

Пе́тя бы́стро побежа́л наве́рх.

## БЕГЛЕ́Ц

Пе́тин оте́ц, Пе́тя и его́ мла́дший брат Па́влик должны́ бы́ли снача́ла е́хать на дилижа́нсе *, а пото́м плыть на парохо́де в Оде́ссу.

Дилижа́нс дви́гался ме́дленно, вокру́г росли́ виногра́дники, и Пе́те ста́ло ску́чно. Но в э́то вре́мя случи́лось тако́е неожи́данное собы́тие, что тру́дно бы́ло поня́ть, что произошло́ снача́ла, а что пото́м.

Снача́ла все услы́шали вы́стрел. Пото́м на доро́ге появи́лся жанда́рм с ружьём в рука́х. Он ещё раз вы́стрелил куда́-то в виногра́дники, а пото́м побежа́л в то́м же направле́нии. На доро́ге появи́лся друго́й челове́к, кото́рый бежа́л уже́ не в виногра́дники, а за дилижа́нсом. Неизве́стный челове́к вскочи́л в дилижа́нс. Он тяжело́ дыша́л.

Это был невысо́кий челове́к с молоды́м, бле́дным от уста́лости лицо́м и тёмными, и́ли весёлыми, и́ли испу́ганными глаза́ми. На нём была́ крестья́нская руба́ха, как бу́дто он был крестья́нином, но под бро́ками вид не́лись матро́сские сапоги́.

«Матро́с с «Потёмкина», — с у́жасом поду́мал Пе́тя и ту́т же уви́дел на руке́ у челове́ка голубо́й я́корь *. Тепе́рь Пе́тя не сомнева́лся, что э́то был бежа́вший с революцио́нного корабля́ матро́с.

Матро́с уви́дел испу́ганных дете́й и их отца́, хоте́л спры́гнуть обра́тно на доро́гу, но в э́ту же мину́ту уви́дел на доро́ге друго́го жанда́рма. Он мо́лча махну́л руко́й и бы́стро поле́з под скаме́йку. Пе́тя испуга́лся ещё бо́льше.

Ма́льчик посмотре́л на отца́, но тот сиде́л мо́лча и неподви́жно, де́лая вид, что ничего́ не случи́лось. Его́ лицо́ говори́ло: ничего́ не произошло́, ни о чём не ну́жно спра́шивать, ну́жно споко́йно сиде́ть на своём ме́сте и споко́йно е́хать да́льше.

Не то́лько Пе́тя, но и ма́ленький Па́влик сра́зу всё по́няли.

Ря́дом с дилижа́нсом появи́лось не́сколько солда́т. Они́ посмотре́ли в окно́, но не уви́дели внутри́ никого́, кро́ме отца́, путеше́ствующего с двумя́ детьми́. Не

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
остана́вливаясь, они́ прое́хали ми́мо. Ещё подраса́ все молча́ли. Матро́с мо́лча лежа́л под скаме́йкой. Вокру́г всё бы́ло споко́йно.

Наконе́ц, появи́лись пе́рвые дома́. Тогда́ заговори́л оте́ц. Смотря́ в окно́, он гро́мко сказа́л:

— Мы подъезжа́ем к го́роду. На доро́ге никого́ не ви́дно...

Пе́тя сра́зу по́нял, кому́ он э́то говори́т, и то́же закрича́л:

— Подъезжа́ем, подъезжа́ем!

Они́ с Па́вликом смотре́ли в окно́, когда́ услы́шали, что матро́с откры́л дверь и спры́гнул на доро́гу. А дилижа́нс пое́хал да́льше к парохо́ду.

## ФОТОГРА́ФИЯ

На парохо́де Пе́тя сра́зу уви́дел, что дете́й его́ во́зраста здесь нет и он не смо́жет ни с ке́м познако́миться. Тогда́ он нашёл о́чень интере́сное заня́тие: он стал ходи́ть за одни́м пассажи́ром. Куда́ шёл пассажи́р — туда́ шёл и Пе́тя. Это была́ о́чень интере́сная игра́, потому́ что челове́к был стра́нный: у него́ не́ было биле́та, но на э́то никто́ не обраща́л внима́ния, и ему́ разреша́ли ходи́ть по всему́ парохо́ду.

Кто же был э́тот стра́нный пассажи́р *?

Он не́ был похо́ж ни на поме́щика, ни на рабо́чего, ни на крестья́нина. Снача́ла он пошёл на ку́хню; пото́м поднялся́ наве́рх, пото́м на́чал внима́тельно смотре́ть на ка́ждого пассажи́ра. Пе́тя ходи́л за ни́м и то́же всех рассма́тривал.

Оди́н из пассажи́ров спал, прикры́в лицо́ ша́пкой. Пе́тя посмотре́л на его́ но́ги и вздро́гнул: на нём бы́ли хорошо́ знако́мые ма́льчику матро́сские сапоги́. Пе́тя посмотре́л ему́ на́ руку и уви́дел тот са́мый ма́ленький голубо́й я́корь. Это был тот са́мый матро́с, кото́рый пры́гнул к ним в дилижа́нс!

Пассажи́р, за кото́рым всё вре́мя ходи́л Пе́тя, то́же обрати́л внима́ние на спя́щего. Он да́же толкну́л его́ ногой, и когда́ матро́с проснулся, внима́тельно посмотре́л ему́ в лицо́ и сказа́л:

— Извини́те.

Пе́тя чуть не закрича́л от стра́ха, но ничего́ не случи́лось. Пассажи́р ещё раз извини́лся и отошёл в сто́рону. Пе́тя подошёл к нему́ сза́ди и уви́дел, что он внима́тельно рассма́тривает каку́ю-то фотогра́фию. На фотогра́фии был ви́ден тот са́мый матро́с в матро́сской

CC-0. Agamkar Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ша́пке, на которой было написано: «Потёмкин». И сра́зу же Пе́тя по́нял, что пассажи́р с фотогра́фией — переоде́тый жанда́рм!

## ЧЕЛОВЕ́К ЗА БО́РТОМ!

Дул си́льный ве́тер. Что́бы парохо́д плыл ещё быстре́е, капита́н приказа́л подня́ть па́рус. Это бы́ло так краси́во, что Пе́тя сра́зу забы́л про матро́са и переоде́того жанда́рма. Жа́лко бы́ло, что о́чень ско́ро парохо́д подходи́л к Оде́ссе*, и на́до бы́ло идти́ к па́пе и Па́влику. Пе́тя повернýлся и похолоде́л от стра́ха: матро́с с я́корем на руке́ шёл пря́мо на него́, а сбо́ку к нему́ подходи́л переоде́тый жанда́рм.

Жанда́рм подошёл к матро́су и ти́хо сказа́л:

— Ты Жу́ков? С «Потёмкина»? А мы тебя́ и́щем! Давно́ и́щем!

Говоря́ э́ти слова́, жанда́рм кре́пко взял Жу́кова за́ руку.

— Не тро́гай! — закрича́л Жу́ков. Он уда́рил жанда́рма в грудь и побежа́л.

— Стой! — закрича́л жанда́рм, но бы́ло по́здно.

— Стой! Держи́те его́! — крича́л жанда́рм.

Пассажи́ры, собра́вшиеся на па́лубе, со стра́хом смотре́ли на убега́ющего матро́са, а тот подбежа́л к бо́рту и спры́гнул в во́ду.

Пе́тя то́же подбежа́л к бо́рту и уви́дел далеко́ в мо́ре го́лову плыву́щего челове́ка. Челове́к плыл не к парохо́ду, а от него́, к бе́регу. Все заме́тили, что спаса́ть его́ не на́до, а наоборо́т, он стара́ется уплы́ть как мо́жно да́льше от спаса́телей. Кро́ме того́, до бе́рега бы́ло не о́чень далеко́. Поэ́тому парохо́д споко́йно поплы́л да́льше.

Переоде́тый жанда́рм бе́гал по бо́рту и крича́л капита́ну:

— Это опа́сный госуда́рственный престу́пник*! На́до его́ пойма́ть!

Но капита́н отве́тил ему́, что парохо́д опа́здывает, и что опа́сных престу́пников мо́жно лови́ть и на берегу́. Тогда́ жанда́рм, толка́я люде́й, пошёл к вы́ходу, что́бы пе́рвым сойти́ с парохо́да.

## ГА́ВРИК

В э́то же у́тро друго́й ма́льчик, по и́мени Га́врик, проснýлся от хо́лода. Он спал на берегу́ мо́ря, положи́в

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

под голову плоский камень, накрывшись дедушкиным пиджаком. Конечно, он мог спать вместе с дедушкой в хибарке*, там было тепло и мягко, но Гаврику больше нравилось ночевать прямо на берегу моря.

Ему было так холодно, что он понял, что больше не заснёт. Тогда он встал и пошёл к хибарке.

Хибарка стояла в тридцати шагах от моря, на небольшой горке. Она была сделана из разных деревянных остатков: старых досок, кусков от лодок, ящиков. На крыше лежала земля, на которой росли помидоры.

Когда была жива бабушка Гаврика, она каждый год красила хибарку, чтобы не было видно, как они бедно живут. Но бабушка умерла уже три года назад, и теперь хибарку никто не красил. Матери и отца у Гаврика тоже не было. У него был только дедушка и старший брат.

Дедушка уже встал. Он ходил вокруг дома и искал помидоры. Помидоров было мало — только восемь. Остальные они уже съели.

Дедушка и внук не поздоровались и не пожелали друг другу доброго утра. Но это было не потому, что они не любили друг друга. Они были большими друзьями. Просто день не обещал им ничего, кроме тяжёлого труда, а есть было нечего.

— Надо ехать за рыбой? — спросил Гаврик, смотря в море.

— Надо ехать, — ответил дедушка. Он взял в хибарке небольшой кусок вчерашнего хлеба, попил воды, и они пошли к лодке.

Сегодня им обязательно надо было наловить рыбы, потому что несколько дней погода была очень плохая, рыба не ловилась, а денег у них уже не было ни копейки. Вчера вечером погода стала хорошей, и они поставили сеть. Сегодня надо было вынуть из неё рыбу, отнести её в город для продажи, а вечером опять поставить сеть. Но и сегодня рыбы было мало. Дедушка и внук доставали её из сети, и Гаврик смотрел на проходящий мимо пароход.

Нужно было работать быстро, чтобы успеть отнести рыбу в город...

## ЛОДКА В МОРЕ

Когда матрос Жуков увидел, что пароход продолжает двигаться к городу, он немного успокоился. Сначала он разделся, чтобы ему было легче плыть, потом

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

с трудо́м снял сапоги́. Когда́ вся его одежда утону́ла, он почу́вствовал, что плыть ему́ всё равно́ о́чень тяжело́, потому́ что он о́чень уста́л. Он почти́ не спа́л две но́чи, прошёл пешко́м о́коло пяти́десяти киломе́тров и о́чень волнова́лся. В глаза́х бы́ло темно́. Иногда́ ему́ каза́лось, что он теря́ет созна́ние. Иногда́ ему́ станови́лось о́чень стра́шно. Ра́ньше э́того никогда́ не́ было. Жу́ков поду́мал, что он, наве́рное, заболе́л...

Вокру́г никого́ не́ было. Но неожи́данно Жу́ков заме́тил небольшу́ю ло́дку, в кото́рой лови́ли ры́бу стари́к и ма́льчик. Собра́в после́дние си́лы, Жу́ков подплы́л к ло́дке и схвати́лся руко́й за её борт.

Га́врик не удиви́лся, когда́ уви́дел о́коло ло́дки челове́ка, хотя́ они́ бы́ли далеко́ от бе́рега. В Оде́ссе мно́гие о́чень хорошо́ пла́вают. Он удиви́лся, когда́ заме́тил, что челове́к был в руба́шке, ведь обы́чно лю́ди в руба́шках не купа́ются.

— Тебе́ что ну́жно? — спроси́л Га́врик у челове́ка.

— Я... больно́й, — отве́тил челове́к. — Я матро́с, с «Потёмкина»... Спря́чьте меня́, е́сли меня́ найду́т, меня́ убью́т...

Де́душка и Га́врик по́дняли матро́са в ло́дку и положи́ли его́ вниз, на дно́. Вокру́г, к сча́стью, никого́ не́ было.

Во́зле са́мого бе́рега де́душка оста́лся в ло́дке охраня́ть больно́го, а Га́врик пошёл посмотре́ть, не́т ли кого́-нибудь вокру́г. Но вокру́г хиба́рки то́же бы́ло ти́хо и безлю́дно. Тогда́ они́ по́дняли матро́са на́ ноги и помогли́ ему́ дойти́ до две́ри. Как то́лько они́ вошли́ в ко́мнату, матро́с упа́л на крова́ть. Одна́ его́ рука́ све́силась вниз, и Га́врик уви́дел на не́й небольшо́й голубо́й якорёк...

## ВОПРО́СЫ И ОТВЕ́ТЫ

Га́врик сиде́л на берегу́, когда́ к нему́ подошёл незнако́мый челове́к и на́чал задава́ть вопро́сы.

— У тебя́ есть оте́ц и мать?

— Нет.

— А с кем ты живёшь?

— С де́душкой.

— Кто твой де́душка?

— Стари́к.

— Я понима́ю, что он не молодо́й. Что он де́лает?

— Ры́бу ло́вит.

— Зна́чит, он рыба́к *?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
— Рыба́к.
— А ты что де́лаешь? То́же ры́бу ло́вишь?
— Я ему́ помога́ю.
— Зна́чит, вы вме́сте ры́бу ло́вите?
— Да.
— И ка́к же вы её ло́вите?
— Ве́чером ста́вим сеть, а у́тром вынима́ем ры́бу.
— Зна́чит, вы выхо́дите в мо́ре ка́ждый день?
— Ка́ждый.
— Утром и ве́чером?
— Нет.
— Почему́ ты говори́шь «нет»? Вы выхо́дите в мо́ре два ра́за в день?
— Нет.
— А когда́? Утром?
— И ве́чером.
— Зна́чит, вы выхо́дите в мо́ре два ра́за в день? Ты почему́ пра́вильно не отвеча́ешь на мои́ вопро́сы? Ты меня́ не понима́ешь?
— Я ещё ма́ленький, — отве́тил Га́врик, а сам поду́мал, что э́тот челове́к не случа́йно пришёл сюда́ и спра́шивает его́ обо всём.
— А как тебя́ зову́т?
— Га́врик.
Челове́к поду́мал, что Га́врик и в са́мом де́ле о́чень ма́ленький, и, что́бы подружи́ться с ним, а пото́м уже́ расспроси́ть обо всём, сказа́л:
— Хо́чешь, я угощу́ тебя́ сла́дкой водо́й?
— Хочу́! — отве́тил Га́врик.
Га́врик пил во́ду, а сам ду́мал, как отвеча́ть, е́сли э́тот челове́к бу́дет расспра́шивать его́ о матро́се Жу́кове.
— Скажи́ мне, — сказа́л челове́к, — вы вчера́ пла́вали за ры́бой?
— Пла́вали.
— А парохо́д ты ви́дел?
— Ви́дел.
— А с парохо́да никто́ не пры́гал?
Га́врик испуга́лся, но не показа́л э́того, а гро́мко закрича́л:
— Пры́гал! Пры́гал! Я ви́дел! Пры́гнул и поплы́л, а пото́м его́ взя́ли к себе́ лю́ди из большо́й си́ней ло́дки!
— Како́й ло́дки? У неё бы́ло назва́ние?
— Така́я больша́я ло́дка, и называ́лась она́ «Со́ня».
— «Со́ня»?
— Нет, по-мо́ему, «Ве́ра»... и́ли «На́дя».

CC-0. Jammu and Kashmir Digital Preservation Foundation, Chandigarh
— А ты меня́ не обма́нываешь? — стро́го спроси́л челове́к, но не ста́л ждать отве́та, а бы́стро пошёл к го́роду.

## ЧЕ́СТНОЕ СЛО́ВО

— О, Га́врик!

— О, Пе́тя!

Так закрича́ли Пе́тя и Га́врик, когда́ встре́тились на у́лице по́сле до́лгого переры́ва.

Они́ о́чень обра́довались друг дру́гу, но не ста́ли обнима́ться и целова́ться, а вели́ себя́ как взро́слые мужчи́ны и разгова́ривали так, как бу́дто ви́делись то́лько вчера́.

— Куда́ ты идёшь?

— На мо́ре.

— А ты?

— К бра́ту.

— Хо́чешь, пойдём вме́сте?

— Хочу́!

Пе́тя шёл ря́дом с Га́вриком и расска́зывал ему́ о свои́х приключе́ниях. Он рассказа́л о матро́се, кото́рый пры́гнул к ним в дилижа́нс, а пото́м оказа́лся на то́м же парохо́де, на кото́ром плы́ли Пе́тя, Па́влик и па́па. Он расска́зывал о переоде́том жанда́рме, вы́нувшем из карма́на фотогра́фию матро́са Жу́кова, о то́м, как Жу́ков убежа́л от него́ и пры́гнул в мо́ре...

Пе́тя ду́мал, что он расска́зывает о́чень хорошо́, потому́ что Га́врик слу́шал его́ о́чень внима́тельно и ни ра́зу не за́дал ни одного́ вопро́са.

Зако́нчив расска́зывать, Пе́тя на́чал всё снача́ла. Га́врик молча́л и второ́й раз слу́шал расска́з Пе́ти, а самому́ ему́ о́чень хоте́лось то́же рассказа́ть Пе́те о то́м, что случи́лось в мо́ре, и о то́м, что матро́с Жу́ков сейча́с лежи́т в его́ хиба́рке на берегу́ мо́ря.

Мо́жет быть, всё-таки рассказа́ть? Рассказа́ть, но не всё... Га́врика му́чали сомне́ния. Ему́ так хоте́лось рассказать обо всём Пе́те, что он держа́л рот руко́й. Но да́же э́то не помога́ло. Откры́ть та́йну хоте́лось всё сильне́е и сильне́е. А Пе́тя в тре́тий раз на́чал расска́зывать о то́м, как матро́с пры́гнул к ним в дилижа́нс...

И Га́врик не смо́г бо́льше молча́ть.

— Дай че́стное сло́во, что никому́ ничего́ не ска́жешь! — сказа́л Га́врик Пе́те.

— Че́стное сло́во!

CC-0. Aggamigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
— Я скажу́ тебе́ кто́-то рассказа́ть. То́лько ты никому́ не ска́жешь?

— Никому́ на све́те!

Га́врик шёл мо́лча. Он ещё не реши́л, расска́зывать ли Пе́те о том, что матро́с лежи́т у ни́х в хиба́рке. Но ему́ так хоте́лось рассказа́ть!

— Пе́тька*! — сказа́л Га́врик. — Ешь зе́млю, что никому́ не ска́жешь!

Пе́тя внима́тельно посмотре́л вокру́г, уви́дел под стено́й до́ма, как ему́ показа́лось, чи́стую зе́млю, взял немно́го, положи́л на язы́к и, закры́в глаза́, на́чал есть.

В э́то вре́мя ма́льчики уви́дели, что по доро́ге два жанда́рма веду́т челове́ка с уста́лым лицо́м в разо́рванной оде́жде. Челове́к шёл, опусти́в го́лову...

— Ну, — сказа́л Пе́тя, — расска́зывай секре́т.

Но Га́врик почему́-то о́чень зло посмотре́л на Пе́тю и закрича́л:

— Не скажу́! Ты дура́к! Я тебя́ обману́л!

— Ка́к же так? Я же ел зе́млю!

— Я тебя́ обману́л! — закрича́л Га́врик и убежа́л.

## ПОГО́НЯ

Уже́ бы́ло темно́, когда́ дверь хиба́рки неожи́данно откры́лась и в неё вошёл высо́кий челове́к, фигу́ра кото́рого на мину́ту закры́ла звёзды на ночно́м не́бе.

Матро́с испуга́лся и вскочи́л на́ ноги.

— Не бо́йтесь, — сказа́л Га́врик. — Это мой брат Тере́нтий.

— До́брый ве́чер, — сказа́л в темноте́ Тере́нтий. — Почему́ вы ла́мпу не зажига́ете?

Де́душка зажёг ма́ленькую ла́мпочку.

Тере́нтий внима́тельно смотре́л на матро́са.

— Родио́н Жу́ков? — спроси́л Тере́нтий ве́село.

Матро́с си́льно испуга́лся, но пото́м сказа́л:

— Да, я Жу́ков, а ты кто?

Га́врик никогда́ не ви́дел бра́та таки́м серьёзным.

— Я член революцио́нного комите́та, — отве́тил Тере́нтий.

— Докажи́те! — сказа́л Жу́ков.

— Снача́ла вы докажи́те! — отве́тил Тере́нтий.

Пото́м он наклони́лся к две́ри и ти́хо сказа́л на у́лицу:

— Илья́ Бори́сович! Зайди́те, пожа́луйста, к нам!

В э́ту же секу́нду в хиба́рку вошёл ма́ленький челове́к, оде́тый как студе́нт, с очка́ми на носу́. Матро́с поду́мал, что он уже́ где́-то ви́дел э́того студе́нта.

Mrdu Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Молодой человек остановился и посмотрел на матро́са.

— Ты его́ зна́ешь? — спроси́л Тере́нтий.

— Я ви́дел э́того това́рища, — отве́тил Илья́ Бори́сович, — пятна́дцатого ию́ня на похорона́х матро́са Вакуленчука́, кото́рого уби́ли офице́ры. Пра́вда, вы там бы́ли?

— Был, — отве́тил Жу́ков.

Тогда́ Тере́нтий мо́лча доста́л большо́й свёрток и протяну́л его́ Жу́кову.

— Здесь брю́ки, руба́шка, сапоги́. Одева́йтесь скоре́е, нам ну́жно идти́. Мне ка́жется, что во́зле до́ма кто́-то шуми́т...

Тере́нтий позва́л Га́врика и мо́лча показа́л ему́ на две́рь. Ма́льчик сра́зу встал и бесшу́мно вы́шел из хиба́рки. Он останови́лся, на́чал слу́шать. Ему́ показа́лось, что за до́мом шуми́т суха́я трава́. Он присе́л и вдруг уви́дел за до́мом фигу́ры двух мужчи́н.

Га́врик испуга́лся. У него́ в голове́ зашуме́ло так, что он переста́л слы́шать шум мо́ря. Пото́м совсе́м неслы́шно он подошёл к хиба́рке, что́бы посмотре́ть, не стои́т ли кто́-нибудь на доро́жке.

На доро́жке стоя́ло ещё дво́е в бе́лых костю́мах жанда́рмов. Хиба́рка была́ окружена́.

Ма́льчик хоте́л побежа́ть наза́д, но в э́ту секу́нду он почу́вствовал, что горя́чая рука́ схвати́ла его́ сза́ди.

— Пусти́те! — запла́кал Га́врик.

— Ти́хо! Молчи́! — сказа́л ему́ жанда́рм.

Га́врик собра́л все свои́ си́лы и закрича́л так гро́мко, как то́лько мог:

— Беги́те!

— Молчи́! Убью́! — закрича́л жанда́рм.

Он бо́льно схвати́л Га́врика за́ ухо, а друго́й руко́й закрыва́л ему́ рот.

Га́врик почу́вствовал таку́ю боль, како́й он не чу́вствовал никогда́ в жи́зни, но в э́то же вре́мя он почу́вствовал не́нависть к э́тим лю́дям, кото́рые хоте́ли схвати́ть Тере́нтия и Родио́на Жу́кова. Поэ́тому он собра́л после́дние си́лы и опя́ть закрича́л:

— Беги́те! Беги́те!

Его́ услы́шали. На доро́жке показа́лись три мужски́е фигу́ры.

Га́врик услы́шал вы́стрелы. Ничего́ не понима́я от стра́ха, Га́врик побежа́л к ним, что́бы помо́чь.

— Держи́, держи́! — крича́ли жанда́рмы.

В темноте́ Га́врик уви́дел, как к бе́регу мо́ря побе-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

жáли три тёмные фигу́ры. Жандáрмы [illegible] мáльчика и повели́ его́ в хибáрку. Гáврик сел ря́дом с дéдушкой и мóлча слу́шал шум и кри́ки за стенóй. Наконец, всё стáло ти́хо.

И тóлько тогдá Гáврик почу́вствовал, как у негó боли́т у́хо. Изо всéх сил мáльчик старáлся не плáкать...

Дéдушка мóлча посмотрéл на негó, потóм наклони́лся и ти́хо спроси́л:

— Ты чтó-нибудь ви́дел? Суméли они́ убежáть?

— Если никогó не уби́ли, то суméли, — тáк же ти́хо отвéтил Гáврик и уви́дел, как мáленькая, почти не ви́дная слезá пробежáла по дéдушкиной щекé.

### टिप्पणियाँ

Пéтя — पेत्या ( प्योत्र नाम का संक्षिप्त रूप )

броненóсец «Потёмкин» — युद्ध-पोत «पोत्योमकिन» ( काले सागर के बेड़े का एक जहाज़ जिसमें १९०५ की क्रांति के समय नौसैनिकों का पहला क्रांतिकारी विद्रोह हुआ जो असफल रहा )

арестóванный — गिरफ़्तार

дилижáнс — अनेक सीटोंवाली सार्वजनिक घोड़ा-गाड़ी

на рукé у человéка голубóй я́корь — हाथ पर गोदा हुआ नीला लंगर

пассажи́р — यात्री, मुसाफ़िर

Одéсса — ओदेस्सा ( काले सागर के तट पर सबसे बड़ा नगर और बंदरगाह )

госудáрственный престу́пник — राजकीय अपराधी

хибáрка — झोंपड़ी

рыбáк — मछुआ

Пéтька — पेत्यका ( प्योत्र नाम का बोल-चाल का रूप )

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

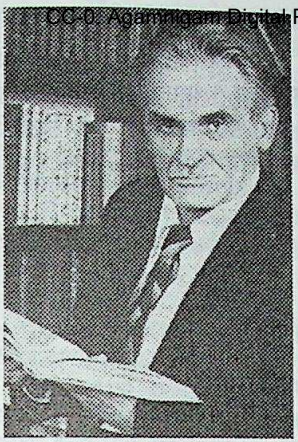

Юрий Олеша
यूरी ओलेशा
(१८९९-१९६०)

कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्स्की ने यूरी ओलेशा के बारे में लिखा था: «कभी-कभी मुझे लगता है (शायद यह सच भी था) कि यूरी कार्लोविच जीवनपर्यंत प्रतिभाशाली व्यक्तियों तथा बच्चों से, ख़ुशमिज़ाज औरतों और मौजी लोगों से चुपके-चुपके बातचीत करते रहे। ओलेशा के इर्द-गिर्द विद्यमान् था एक अनोखा जीवन जो उन्होंने वास्तविकता में से अपने लिए चुन लिया था और जिसे अपनी कल्पना-शक्ति की सहायता से सुंदर बनाया था।»

यूरी ओलेशा बीसवीं सदी से केवल एक साल बड़े थे। इस सदी की तूफ़ानी घटनाओं के वह साक्षी थे और उन्होंने इनमें भाग भी लिया। रूसी साहित्य की विभूतियों के सामने सिर नवाते हुए उन्होंने परंपराओं से समृद्ध पुरानी संस्कृति को उस नयी संस्कृति से मिलाने का प्रयास किया जो क्रांति अपने साथ लायी थी। यही कारण है कि श्रेष्ठ बुद्धिजीवियों द्वारा क्रांति का पक्ष ग्रहण करने की प्रक्रिया का उनकी रचनाओं में इतना सजीव और ज्वलंत चित्रण हुआ है।

बुद्धिजीवी और क्रांति, कला और क्रांति – तीसरे और चौथे दशकों में साहित्य की ये नितांत प्रासंगिक समस्याएँ ओलेशा के सृजन में भी प्रमुख थीं। वह भविष्य के आत्मिक रूप से समृद्ध, चतुर्मुखी विकसित मानव का स्वप्न देखते थे। मानव-संबंधों का सौंदर्य और भलाई का नैतिक बल ही उनके चिंतन-मनन का विषय था। यह समस्या उनकी कृतियों «ईर्ष्या» (१९२७), «हर दिन लिखना है» (१९६१) में प्रस्तुत है। ओलेशा तन-मन से क्रांति के पक्ष में थे। क्रांति ने उन्हें एक लेखक और सच्चा मानव बनाया। गृह-युद्ध और शांतिपूर्ण निर्माण के समय ओलेशा ने पत्रकार का जो काम किया उससे उन्हें जीवन की विशाल सामग्री मिली। इन्हीं वर्षों में वलेन्तीन कतायेव, इल्या इल्फ़, येव्गेनी पेत्रोव,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
मिखाईल बुलगाकोव जैसे लब्ध-प्रतिष्ठ लेखकों के साथ उनकी गहरी दोस्ती हुई। स्वयं ओलेशा के शब्दों में इन लोगों के साथ काम के वर्ष उनके जीवन के सबसे सुखी वर्ष थे। तीसरे दशक में ही ओलेशा ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ रचीं। «तीन मोटे» नामक बाल-कथा इन्हीं में से एक है। यह विद्रोही जनता की विजय, स्वप्नों की उड़ान, सुख और न्याय की एक कथा है जिसका एक अंश यहाँ प्रस्तुत है।

## ТРИ ТОЛСТЯКА

(отры́вки из рома́на-ска́зки)

### УДИВИ́ТЕЛЬНОЕ ПРИКЛЮЧЕ́НИЕ ПРОДАВЦА́ ВОЗДУ́ШНЫХ ШАРО́В

Восста́ние* наро́да про́тив вла́сти Трёх Толстяко́в* бы́ло пода́влено...

На Пло́щади Суда́ пло́тники* стро́или де́сять плах* для ка́зни уча́стников восста́ния. Гварде́йцы* смотре́ли, как они́ рабо́тают. Пло́тники рабо́тали без жела́ния.

— Мы не хоти́м стро́ить пла́хи для рабо́чих! — говори́ли они́. — Это на́ши бра́тья. Они́ шли на сме́рть, что́бы освободи́ть всех, кто тру́дится.

— Замолчи́те! — закрича́л нача́льник гварде́йцев* стра́шным го́лосом. — Замолчи́те, и́ли я прикажу́ вас поби́ть!

А наро́д с ра́зных у́лиц шёл к Пло́щади Суда́.

Дул си́льный ве́тер. Он поднима́л пыль и срыва́л шля́пы с голо́в. В одно́м ме́сте он да́же по́днял в во́здух продавца́ де́тских возду́шных шаро́в*.

— Ура́! Ура́! — крича́ли де́ти, смотря́ на э́тот фантасти́ческий полёт.

Де́ти всегда́ зави́довали э́тому продавцу́. За́висть — плохо́е чу́вство. Но оно́ появля́лось, когда́ они́ смотре́ли на возду́шные шары́ — кра́сные, си́ние, жёлтые. Они́ бы́ли таки́е краси́вые! У продавца́ их бы́ло так мно́го! Ка́ждому ребёнку хоте́лось име́ть тако́й шар. Но ни одному́ ма́льчику, са́мому послу́шному, ни одно́й де́вочке, са́мой внима́тельной, продаве́ц ни ра́зу в жи́зни не подари́л ни одного́ шара́, а де́нег у дете́й не́ было.

И вот тепе́рь э́тот продаве́ц возду́шных шаро́в лете́л над го́родом, держа́сь за верёвку, на кото́рой бы́ли привя́заны шары́.

— Помоги́те! — крича́л он и маха́л в во́здухе нога́ми.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

— Помогите! — кричал продавец. — Я не хочу лете́ть. Я про́сто не уме́ю лета́ть!

Но ве́тер станови́лся сильне́е. Шары́ поднима́лись всё вы́ше и вы́ше. Ве́тер нёс их за го́род в сто́рону дворца́ * Трёх Толстяко́в.

«Ещё немно́го, и я упаду́ в парк дворца́ Трёх Толстяко́в!» — поду́мал продаве́ц и испуга́лся.

А в сле́дующую мину́ту он ме́дленно и краси́во проплы́л над па́рком, опусти́лся ни́же и ещё ни́же. Ве́тер успока́ивался.

«Я сейча́с ся́ду на зе́млю!» — поду́мал продаве́ц. — «Меня́ схва́тят, а пото́м поса́дят в тюрьму́ * и́ли отру́бят го́лову, ведь Толстяки́ таки́е злы́е!»

Но его́ никто́ не уви́дел. Продаве́ц лете́л к откры́тым о́кнам дворца́. Он не сомнева́лся, что сейча́с влети́т в одно́ из ни́х.

Так и случи́лось.

Продаве́ц влете́л в окно́. Это бы́ло окно́ дворцо́вой ку́хни, окно́ конди́терской *. Обы́чно там де́лали то́рты *.

А сего́дня во дворце́ Трёх Толстяко́в гото́вили торже́ственный за́втрак по слу́чаю побе́ды над вчера́шним наро́дным восста́нием. По́сле за́втрака Три Толстяка́ и их го́сти собира́лись е́хать на Пло́щадь Суда́, что́бы посмотре́ть, как бу́дут казни́ть уча́стников восста́ния...

Продаве́ц влете́л в окно́ и сел во что́-то мя́гкое и тёплое. Шары́ он кре́пко держа́л в руке́, и они́ неподви́жно останови́лись у него́ над голово́й. От стра́ха он кре́пко закры́л глаза́ и реши́л не открыва́ть их ни за что́ на све́те.

«Тепе́рь я понима́ю всё, — поду́мал он. — Это конди́терская. Здесь де́лают торт для торже́ственного за́втрака. И я упа́л пря́мо в него́».

Так э́то и бы́ло. Продаве́ц де́тских возду́шных шаро́в сиде́л среди́ шокола́да, апельси́нов, кре́ма, са́хара. Он сиде́л на то́рте.

Он не открыва́л глаза́. Он ждал кри́ков и был гото́в ко всему́. Но случи́лось то, чего́ он не ожида́л.

— Торт испо́рчен! — сказа́л мла́дший конди́тер * стро́го и печа́льно.

Все вокру́г замолча́ли.

— Что тепе́рь со мно́й бу́дет? — ти́хо сказа́л себе́ продаве́ц.

— Ничего́ стра́шного! — сказа́л ста́рший конди́тер та́к же стро́го. — Толстяки́ уже́ съе́ли второ́е блю́до.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
Через два́дцать мину́т ну́жно принести́ на стол торт. Разноцве́тные шары́ и глу́пое лицо́ э́того челове́ка бу́дут прекра́сным украше́нием для то́рта.

— Неси́те крем *! — закрича́ли сра́зу все конди́теры.

Что начало́сь!

Три ста́рших конди́тера и два́дцать мла́дших принесли́ крем и нама́зали им продавца́ возду́шных шаро́в. Он уже́ не́ был похо́ж на себя́. Тепе́рь его́ тру́дно бы́ло узна́ть. Све́рху над ни́м висе́ли шары́.

— Гото́во! — сказа́л ста́рший конди́тер. — Тепе́рь его́ ну́жно немно́го подержа́ть в печи́, что́бы он стал ещё краси́вее.

— В печи́! — закрича́л продаве́ц. — В како́й печи́? Меня́ нельзя́ держа́ть в печи́?

В э́ту мину́ту в конди́терскую вбежа́л оди́н из слу́г.

— Торт! Торт! — закрича́л он. — Неме́дленно дава́йте торт! Толстяки́ ждут сла́дкого!

—Неси́те торт! — сказа́л гла́вный конди́тер.

Продавца́ возду́шных шаро́в, а верне́е, торт принесли́ и поста́вили на сто́л.

Тогда́ продаве́ц откры́л глаза́. Он уви́дел Трёх Толстяко́в. Они́ бы́ли таки́е то́лстые, что у продавца́ от удивле́ния откры́лся рот.

«На́до его́ закры́ть» — поду́мал продаве́ц, но рот не закрыва́лся. И когда́ он с трудо́м закры́л рот, у него́ от удивле́ния широко́ откры́лись глаза́. Он сиде́л в то́рте и открыва́л то рот, то глаза́.

Толстяки́ сиде́ли на гла́вных места́х, вы́ше, чем все остальны́е. Они́ е́ли бо́льше всех. Оди́н да́же на́чал есть салфе́тку.

— Вы еди́те салфе́тку! — сказа́л ему́ друго́й Толстя́к.

— Неуже́ли? А я да́же не заме́тил...

Толстя́к положи́л салфе́тку в сто́рону и на́чал жева́ть у́хо тре́тьего Толстяка́.

Все гро́мко и ве́село засмея́лись.

— Не шути́те! — сказа́л Второ́й Толстя́к и по́днял вверх ви́лку. — Перед на́ми стои́т о́чень серьёзная зада́ча, потому́ что нам принесли́ торт и на́до его́ съесть.

— Ура́! — закрича́ли го́сти.

«Что со мно́й бу́дет? — ду́мал продаве́ц, — они́ меня́ сейча́с съедя́т!»

— Через ча́с на Пло́щади Суда́ начнётся казнь! — неожи́данно сказа́л Пе́рвый Толстя́к, посмотре́в на часы́.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

— Первым будут казнить оружейника Проспе́ро? — спроси́ли го́сти. — Мы зна́ем, он был во главе́ восста́ния!

— Его́ не бу́дут казни́ть сего́дня, — отве́тил Второ́й Толстя́к.

— Как? Почему́?

— Где он сейча́с?

— Он здесь, во дворце́, — сказа́л Тре́тий Толстя́к. — Мы хоти́м казни́ть его́ после́дним. Если хоти́те, мы позовём его́ сюда́. Мы бу́дем есть торт и смотре́ть на Проспе́ро!

— Приведи́те сюда́ Проспе́ро! — приказа́л Пе́рвый Толстя́к.

Все замолча́ли.

— Он о́чень стра́шный, — сказа́л Второ́й Толстя́к. — Он сильне́е всех. Он сильне́е льва. У него́ ры́жие во́лосы. Мо́жно поду́мать, что э́то гори́т ого́нь...

Тепе́рь, когда́ Толстяки́ говори́ли о Проспе́ро, го́сти переста́ли есть, шути́ть и смея́ться. Не́которые побледне́ли от стра́ха. Мно́гие боя́лись уви́деть вожда́ наро́дного восста́ния.

Три Толстяка́ ста́ли серьёзными и как бу́дто немно́го похуде́ли. Они́ то́же боя́лись. Вдруг все замолча́ли. Наступи́ла по́лная тишина́. Ка́ждый из Толстяко́в сде́лал тако́е движе́ние, как бу́дто хоте́л спря́таться.

В зал ввели́ оружейника Проспе́ро.

Ру́ки Проспе́ро бы́ли свя́заны. Его́ подвели́ к столу́. Он стоя́л, опусти́в го́лову, лицо́ его́ бы́ло бле́дным, на лбу́ была́ кровь...

— Что вам от меня́ ну́жно? — спроси́л оружейник.

— Мы хоте́ли уви́деть тебя́! — сказа́л Пе́рвый Толстя́к. — А тебе́ интере́сно уви́деть нас?

— Мне неприя́тно вас ви́деть, — отве́тил Проспе́ро.

— Ско́ро мы отру́бим тебе́ го́лову. И бо́льше ты нас не уви́дишь...

— Я не бою́сь, — сказа́л Проспе́ро. — У меня́ одна́ голова́. Но у наро́да ты́сячи голо́в. И вы не смо́жете отруби́ть их все.

— Сего́дня на Пло́щади Суда́ бу́дет казнь. Там отру́бят го́ловы твои́м това́рищам.

— Этого не бу́дет! — отве́тил Проспе́ро. — Вы ничего́ не ви́дите! У ва́с в голове́ оди́н то́лько жир! И поэ́тому вы не ви́дите ничего́, кро́ме свои́х живото́в!

Второ́й Толстя́к оби́делся.

— А что́ же мы должны́ ви́деть? — спроси́л он.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Спроси́те ва́ших мини́стров. Они́ зна́ют о то́м, что происхо́дит в стране́. Они́ вам расска́жут о то́м, как крестья́не, у кото́рых вы отбира́ете хлеб, подни-ма́ют восста́ния про́тив вас. Они́ сжига́ют дворцы́ по-ме́щиков* и выгоня́ют их с земли́. Рудоко́пы* не хо-тя́т добыва́ть у́голь для ва́с. Рабо́чие лома́ют маши́ны, что́бы не рабо́тать для ва́с. Матро́сы выбра́сывают ва́ши гру́зы пря́мо в мо́ре. Солда́ты отка́зываются служи́ть вам. Учёные, студе́нты, су́дьи перехо́дят на сто́рону наро́да! Все во́ют про́тив вас, потому́ что у ва́с вме́сто се́рдца — ка́мень! Пятна́дцать лет я учи́л наро́д нена-ви́деть вас и ва́шу власть. Мы давно́ собира́ем си́лы*. А тепе́рь пришёл ваш после́дний час...

— Останови́те его́! — кри́кнул Тре́тий Толстя́к.

— Ты забы́л, с кем хо́чешь воева́ть, — отве́тил Про-спе́ро Пе́рвый Толстя́к. — Мы, Три Толстяка́, си́льные и мо́жем всё. Я, Пе́рвый Толстя́к, владе́ю всем хле́бом, кото́рый роди́тся на на́шей земле́. Второ́му Толстяку́ принадлежи́т весь у́голь, а Тре́тий купи́л всё желе́зо в на́шей стране́! Мы бога́че всех! Са́мый бога́тый чело-ве́к беднее нас в сто раз! За на́ше зо́лото мы мо́жем купи́ть всё, что хоти́м!

Пе́рвый Толстя́к ко́нчил говори́ть, и Проспе́ро увели́ обра́тно в тюрьму́.

— А тепе́рь мы бу́дем есть торт, — сказа́л Пе́рвый Толстя́к.

— Коне́ц! — поду́мал продаве́ц возду́шных шаро́в. Он закры́л глаза́, а го́сти смотре́ли на то́рт и сме-я́лись:

— Ха-ха-ха́! Хо-хо-хо́! Како́й смешно́й торт! Посмот-ри́те, каки́е краси́вые шары́!

— А что внутри́ у э́того смешно́го сла́дкого челове́ка? — спра́шивали го́сти. — Наве́рное, крем...

Продаве́ц услы́шал э́ти слова́ и реши́л, что его́ сей-ча́с разре́жут, что́бы посмотре́ть, что у него́ внутри́. Он откры́л глаза́ и гро́мко кри́кнул:

— Ай! Ай!

Го́сти то́же испуга́лись.

Но в э́ту мину́ту все услы́шали де́тский плач. Ре-бёнок крича́л:

— Ку́кла! Моя́ ку́кла!

Это пла́кал насле́дник Ту́тти. Ему́ бы́ло двена́дцать лет. Он жил во дворце́ Трёх Толстяко́в, потому́ что у них не́ было свои́х дете́й, а им ну́жен был насле́дник. Всё бога́тство Трёх Толстяко́в должно́ бы́ло перейти́ к насле́днику Ту́тти.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[illegible] никогда́ не ви́дел дете́й, потому́ что Три Толстяка́ хоте́ли, что́бы у него́ то́же, как и у них, бы́ло ка́менное се́рдце. Ту́тти игра́л то́лько с ку́клой.

Он вбежа́л в ко́мнату, где сиде́ли го́сти, и закрича́л:

— Моя́ ку́кла! Её слома́ли! Её слома́ли гварде́йцы в па́рке!

— Где они́? — закрича́ли Толстяки́. — Мы отру́бим им го́ловы!

— Они́ бро́сили сло́манную ку́клу и побежа́ли да́льше в парк! Они́ крича́ли: «Да здра́вствует восста́ние! Да здра́вствует оруже́йник Проспе́ро! Да здра́вствует наро́д! Доло́й Трёх Толстяко́в!»

— А почему́ стра́жники * не стреля́ли в них? — спроси́ли го́сти.

И тогда́ Ту́тти сообщи́л стра́шную но́вость:

— Стра́жа маха́ла им рука́ми! Я сам ви́дел, как стра́жники проща́лись с гварде́йцами и говори́ли: «Това́рищи! Иди́те к наро́ду и скажи́те, что мы все ско́ро перейдём на его́ сто́рону!»

Когда́ Толстяки́ услы́шали э́то, они́ закрича́ли:

— Прекрати́ть пра́здник! Прекрати́ть за́втрак! Отложи́ть все дела́! Собра́ть всех су́дей, всех мини́стров и палаче́й!

И продавца́ вме́сте с то́ртом вы́несли из ко́мнаты. Его́ несли́ опя́ть в конди́терскую, но тут случи́лось несча́стье. Оди́н из слуг, кото́рый нёс торт, споткну́лся, упа́л на ка́менный пол вме́сте с то́ртом.

Продаве́ц упа́л на́ пол и сиде́л среди́ разби́той посу́ды и вку́сного кре́ма. Он уви́дел, что ста́рших конди́теров в ко́мнате нет. Вокру́г него́ собрали́сь все мла́дшие конди́теры.

«Они́ помо́гут мне убежа́ть отсю́да, — поду́мал продаве́ц, — ведь они́ де́ти, а все де́ти лю́бят возду́шные шары́...»

— Вы мо́жете помо́чь мне убежа́ть отсю́да? — спроси́л продаве́ц.

— Мо́жем, — ти́хо сказа́л са́мый ма́ленький мла́дший конди́тер. — То́лько подари́те нам ва́ши шары́.

— Хорошо́, — сказа́л продаве́ц. — Я согла́сен.

Мла́дший конди́тер подошёл к большо́й ме́дной кастрю́ле и по́днял кры́шку.

— Дава́йте шары́! — сказа́л он.

Продаве́ц посмотре́л на кастрю́лю. Там не́ было дна. Э́то бы́ло нача́ло подзе́много хо́да *, кото́рый начина́лся в дворцо́вой ку́хне.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
— Хорошо́! — вздохну́л продаве́ц возду́шных шаро́в. — Сего́дня я уже́ лета́л по во́здуху и сиде́л в то́рте. Тепе́рь мне не стра́шно лезть в кастрю́лю.

Он о́тдал шары́ мла́дшим конди́терам. Потомо́ он влез в кастрю́лю, и они́ закры́ли его́ кры́шкой.

— Шары́! Шары́! — крича́ли де́ти.

Они́ вы́бежали в парк. Здесь, на откры́том во́здухе, бы́ло намно́го интере́снее поигра́ть с шара́ми. И вдруг в трёх о́кнах конди́терской появи́лись три ста́рших конди́тера.

— Это что тако́е? — закрича́л ка́ждый из ни́х. — Это что тако́е? Сейча́с же иди́те обра́тно рабо́тать!

И де́ти так испуга́лись, что вы́пустили из ру́к шары́. Их сча́стье ко́нчилось.

Два́дцать шаро́в бы́стро полете́ли вверх в си́нее не́бо. А де́ти стоя́ли внизу́ на траве́ и, подня́в го́ловы, смотре́ли им вслед.

### टिप्पणियाँ

восста́ние — विद्रोह
толстя́к — मोटा, मुटल्ला
пло́тник — बढ़ई
пла́ха — जल्लाद का कुंदा
гварде́йцы — (यहाँ) तीन मुटल्लों के सिपाही
возду́шный шар — गुब्बारा
дворе́ц — महल
тюрьма́ — जेल
конди́терская — मिठाईख़ाना
торт — केक
конди́тер — मिठाईवाला
крем — क्रीम
оруже́йник — शस्त्रकार
поме́щик — ज़मींदार
рудоко́п — खनक
Мы давно́ собира́ем си́лы. — हम कब से शक्ति बटोर रहे हैं।
стра́жник — (यहाँ) पहरेदार, सन्तरी
подзе́мный ход — सुरंग

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

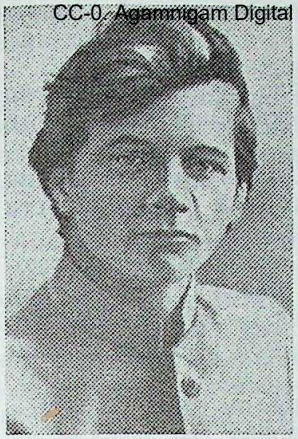

Андрей Платонов
अन्द्रेई प्लातोनोव
(१८९९-१९५१)

अन्द्रेई प्लातोनोव (अन्द्रेई प्लातोनोविच क्लिमेन्तोव का उपनाम) प्रसिद्ध सोवियत गद्य-लेखक हैं। प्लातोनोव की रचनाओं के मूल में जासूसी उपन्यासों जैसा कथानक नहीं है, इनके मूल में मनुष्य का तनावपूर्ण आंतरिक जीवन, नैतिक मूल्यों की उसकी खोज और जीवन के बुद्धिसंगत औचित्य की उसकी अभिलाषा हैं। प्लातोनोव रूप की दृष्टि से सरल यहाँ तक कि देखने में भोली-भाली अपनी कहानियों और उपन्यासिकाओं में मनुष्य और प्रकृति, मनुष्य और समाज तथा मनुष्य और इतिहास के सहसंबंधों की जटिल दार्शनिक समस्याओं पर विचार करते हैं।

२५ साल के अपने साहित्यिक कार्य के दौरान प्लातोनोव ने नौ उपन्यासिकाएँ लिखीं जिनमें «ग्रादोव नगर» (१९२६), «येपिफ़ान्स्की जल-द्वार» (१९२७), «प्रच्छन्न मनुष्य» (१९२८), «कारीगर का जन्म» (१९२९), «जान» (मरणोपरांत प्रकाशित – १९६४) उल्लेखनीय हैं। उन्होंने पुश्किन, गोर्की, निकोलाई ओस्त्रोव्स्की, अलेक्सान्द्र ग्रीन, कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्स्की, एर्नेस्ट हेमिंग्वे, कारेल चापेक, रिचर्ड ओल्डिंग्टन आदि के बारे में लेख लिखे।

प्लातोनोव ने अनेक लोक-कथाओं का रूपांतरण भी किया। १९४७ में «तेजस्वी महाबली फ़िनीस्त» और १९५० में «जादू का छल्ला» शीर्षक से लोक-कथा-संग्रह उन्होंने प्रकाशित कराये। प्लातोनोव ने अनेक कहानियाँ लिखीं जो विभिन्न कहानी-संग्रहों में छपीं। इनमें «मातृभूमि के गगन तले» (१९४२), «मातृभूमि की कथाएँ» और «कवच» (१९४३), «सूर्यास्त की दिशा में» (१९४५) मुख्य हैं।

१९६५ में प्लातोनोव की कहानियों और उपन्यासिकाओं का सबसे बड़ा संग्रह «सुंदर और तूफ़ानी दुनिया में» प्रकाशित हुआ था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

# КОРО́ВА *

Се́рая коро́ва жила́ одна́ в сара́е. Этот сара́й стоя́л во дворе́ железнодоро́жного сто́рожа. Она́ жила́ ря́дом с дрова́ми, се́ном, ста́рой ме́белью.

Днём и ве́чером к ней приходи́л в го́сти ма́льчик Ва́ся Рубцо́в, сын хозя́ина. Он гла́дил её по ше́рсти во́зле головы́. Сего́дня он то́же пришёл.

— Коро́ва, коро́ва, — говори́л он, потому́ что у коро́вы не́ было своего́ и́мени, и он называ́л её так, как бы́ло напи́сано в кни́ге для чте́ния. — Ты не скуча́й, твой сын вы́здоровеет, его́ сего́дня мой оте́ц наза́д приведёт.

У коро́вы был телёнок *. Вчера́ он заболе́л. Оте́ц испуга́лся, что телёнок умрёт, и повёл его́ сего́дня на большу́ю ста́нцию * показа́ть ветерина́ру *.

Коро́ва смотре́ла вбок на ма́льчика и жева́ла траву́. Она́ всегда́ узнава́ла ма́льчика, а он люби́л её. Ему́ нра́вилось в коро́ве всё — до́брые тёплые глаза́ с тёмными круга́ми вокру́г них, как бу́дто коро́ва была́ уста́лой и заду́мчивой, лоб и большо́е худо́е те́ло, потому́ что всё, что коро́ва е́ла, она́ отдава́ла молоко́м и всегда́ рабо́тала.

Посмотре́в немно́го на ма́льчика, коро́ва нагну́ла го́лову и подняла́ ещё не́сколько трави́нок. Ей бы́ло не́когда до́лго смотре́ть в сто́рону и́ли отдыха́ть, она́ должна́ была́ всё вре́мя есть, что́бы дава́ть молоко́.

Ва́ся ушёл из сара́я. Была́ о́сень. Вокру́г до́ма железнодоро́жного сто́рожа тяну́лись ро́вные пусты́е поля́, шуме́вшие от ве́тра ле́том, а тепе́рь пусты́е и ску́чные.

Сейча́с начина́лся ве́чер. Не́бо темне́ло, ве́тер, шевели́вший днём оста́вшейся на поля́х траво́й, улёгся в ти́хих, ни́зких места́х и то́лько почти́ неслы́шно пел в печно́й трубе́ пе́сню о́сени.

Узкая ли́ния желе́зной доро́ги лежа́ла недалеко́ от до́ма, во́зле небольшо́го са́да, в кото́ром в э́то вре́мя го́да всё уже́ засо́хло — и трава́, и цветы́.

Мать зажгла́ в до́ме ла́мпу и поста́вила на скаме́йку сигна́льный железнодоро́жный фона́рь *.

— Ско́ро пойдёт четы́реста шесто́й по́езд, — сказа́ла она́ сы́ну. — А оте́ц ещё не верну́лся. Ты до́лжен проводи́ть по́езд *.

Оте́ц ушёл с телёнком на ста́нцию за се́мь киломе́тров. Он ушёл ещё у́тром. Наве́рное, он о́тдал телёнка ветерина́ру, а сам пошёл на собра́ние железнодоро́ж-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

нико́го*. А мо́жет быть, у ветерина́ра больша́я о́чередь, и он ждёт.

Ва́ся взял сигна́льный фона́рь и сел у желе́зной доро́ги. По́езда ещё не́ было слы́шно, и Ва́ся огорчи́лся: ему́ не́когда бы́ло сиде́ть тут и провожа́ть поезда́. Ему́ на́до бы́ло де́лать уро́ки к за́втрашнему дню и ложи́ться спать, потому́ что у́тром ра́но встава́ть.

Он ходи́л в шко́лу за пя́ть киломе́тров от до́ма и учи́лся там в четвёртом кла́ссе.

Ва́ся люби́л ходи́ть в шко́лу, потому́ что, слу́шая учи́тельницу и чита́я кни́ги, он представля́л себе́ весь мир, кото́рый он ещё не зна́л, кото́рый был далеко́ от него́. Еги́пет, Да́льний Восто́к, вели́кие ре́ки — Миссиси́пи, Енисе́й, Амазо́нка, го́род Москва́, гора́ Арара́т — всё э́то волнова́ло Ва́сю и притя́гивало к себе́. Ему́ каза́лось, что все стра́ны и лю́ди давно́ ждут, когда́ он вы́растет и придёт к ним. Но он ещё нигде́ не успе́л побыва́ть: он роди́лся та́м же, где жил, а быва́л то́лько в колхо́зе* и на ста́нции. Поэ́тому он с трево́гой и ра́достью смотре́л на ли́ца люде́й, проезжа́вших ми́мо на пассажи́рских поезда́х*. Но поезда́ проходи́ли ми́мо бы́стро, и их бы́ло ма́ло — всего́ четы́ре в день, а три из ни́х проходи́ли но́чью.

Но одна́жды по́езд шёл ти́хо, и Ва́ся разгляде́л лицо́ молодо́го заду́мчивого челове́ка. Он смотре́л в откры́тое окно́ на незнако́мые ему́ места́ и кури́л тру́бку. Уви́дев ма́льчика, стоя́вшего с по́днятым зелёным флажко́м*, он улыбну́лся ему́ и сказа́л: «До свида́ния, челове́к!» — и ещё помаха́л руко́й. «До свида́ния», — отве́тил ему́ Ва́ся и поду́мал: — «Я вы́расту, и мы уви́димся!»

Далеко́ — в пусто́й ночи́ осе́нних поле́й — загуде́л парово́з*. Ва́ся подошёл побли́же к желе́зной доро́ге и высоко́ по́днял над голово́й фона́рь, что́бы показа́ть, что путь свобо́ден. Он слу́шал шум бегу́щего по́езда, а пото́м поверну́лся к своему́ до́му. Во дворе́ жа́лобно замыча́ла коро́ва. Она́ всё вре́мя ждала́ своего́ сы́на телёнка, но он не приходи́л. «Где́ же э́то оте́ц задержа́лся? — серди́то поду́мал Ва́ся. — На́ша коро́ва уже́ пла́чет! Ночь, темно́, а отца́ всё нет».

Парово́з доехал до ма́льчика, но меха́ник не посмотре́л на него́. Далеко́ вы́сунувшись из окна́, он следи́л за маши́ной. Парово́з был сло́ман, пар выходи́л из него́ сбо́ку. Ва́ся э́то заме́тил. Ско́ро бу́дет дли́нный подъём*, и сло́манной маши́не бу́дет тяжело́ вести́ за собо́й по́езд. Ма́льчик знал, как рабо́тает парова́я ма-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ши́на *. Он прочита́л про неё в уче́бнике фи́зики, но, е́сли бы там не́ было про э́то напи́сано, он зна́л бы всё равно́, потому́ что всегда́, когда́ Ва́ся ви́дел како́й-нибудь предме́т и́ли вещество́, он хоте́л узна́ть, как они́ живу́т и де́йствуют.

Ва́ся не оби́делся на машини́ста *, когда́ тот не посмотре́л на него́. Машини́ст ду́мал о парово́зе. Если он остано́вится на дли́нном подъёме, он не смо́жет сдви́нуть по́езд вперёд.

Ми́мо Ва́си ме́дленно дви́гались тяжёлые ваго́ны. Ма́льчик понима́л, что в них лежи́т дорого́й груз. Зате́м пое́хали откры́тые платфо́рмы. На ни́х стоя́ли автомоби́ли и неизве́стные Ва́се маши́ны, лежа́л у́голь, а по́сле у́гля опя́ть начали́сь закры́тые ваго́ны, в кото́рых везли́ скот.

Ва́ся свети́л фонарём на колёса, что́бы прове́рить, не слома́лось ли там что́-нибудь, но там всё бы́ло в поря́дке. Из одного́ ваго́на закрича́л телёнок, и тогда́ из сара́я ему́ отве́тила коро́ва, скуча́ющая без своего́ сы́на.

После́дние ваго́ны прошли́ ми́мо Ва́си совсе́м ме́дленно. Бы́ло слы́шно, как тяжело́ рабо́тал парово́з. Его́ колёса верте́лись, но не тяну́ли за собо́й по́езд. Ва́ся с фонарём пошёл к парово́зу, потому́ что маши́не бы́ло тру́дно и он хоте́л побы́ть во́зле неё, сло́вно он мог ей помо́чь.

Парово́з рабо́тал так тяжело́, что из его́ трубы́ вылета́ли кусо́чки у́гля. Колёса ме́дленно верте́лись, и меха́ник следи́л за ни́ми из окна́. Впереди́ парово́за шёл помо́щник машини́ста. Он брал лопа́той песо́к и сы́пал его́ на ре́льсы *, что́бы маши́на не скользи́ла. Свет парово́зных фонаре́й освеща́л гря́зного, уста́лого челове́ка. Ва́ся поста́вил свой фона́рь на зе́млю и подошёл к рабо́тающему помо́щнику машини́ста.

— Дай я помогу́, — сказа́л Ва́ся. — А ты иди́ помоги́ парово́зу, а то он сейча́с остано́вится.

— А ты суме́ешь? — спроси́л помо́щник, гля́дя на ма́льчика больши́ми све́тлыми глаза́ми с тёмного гря́зного лица́. — Ну, попро́буй, то́лько осторо́жно и всё вре́мя огля́дывайся на парово́з, что́бы он тебя́ не раздави́л.

Лопа́та была́ сли́шком большо́й и тяжёлой для Ва́си. Он о́тдал её обра́тно помо́щнику.

— Я бу́ду сы́пать песо́к рука́ми, так ле́гче.

Ва́ся взял песо́к и насы́пал его́ на ре́льс.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Посыпай оба рельса, — сказа́л помо́щник и побежа́л на парово́з.

Ва́ся сы́пал песо́к то на оди́н рельс, то на друго́й. Парово́з тяжело́ и ме́дленно шёл за ни́м. Угольная пыль и вода́ от охлаждённого па́ра па́дали све́рху на Ва́сю, но ему́ бы́ло интере́сно рабо́тать. Он чу́вствовал себя́ важне́е парово́за, потому́ что сам парово́з шёл вслед за ни́м и благодаря́ ему́ не остана́вливался.

Если Ва́ся увлека́лся рабо́той и парово́з подходи́л к нему́ сли́шком бли́зко, то машини́ст гуде́л и крича́л с маши́ны:

— Эй, осторо́жно!

Снача́ла Ва́ся мо́лча рабо́тал, но пото́м рассерди́лся, что на него́ крича́т. Он сбежа́л с пути́ и сам закрича́л машини́сту:

— Почему́ вы без песка́ пое́хали?

— Он у на́с ко́нчился, — отве́тил машини́ст. — У на́с для него́ был ма́ленький я́щик.

— Ещё оди́н я́щик поста́вьте. Его́ мо́жно сде́лать из ста́рого желе́за.

Машини́ст посмотре́л на ма́льчика. У него́ до́ма рос тако́й же сын.

— И пар у ва́с идёт не та́м, где ну́жно, а сбо́ку, — говори́л Ва́ся. — То́лько си́ла зря пропада́ет!

«Если бы у меня́ не́ было сы́на, — поду́мал машини́ст, — я бы хоте́л э́того. Он ма́ленький, но уже́ настоя́щий челове́к, а у него́ ещё всё впереди́».

Ва́ся огляну́лся и сошёл в сто́рону.

— Ты почему́ ушёл? — закрича́л машини́ст.

— Подъём ко́нчился, — отве́тил Ва́ся. — Сейча́с парово́з сам пое́дет, без меня́.

— Поня́тно, — сказа́л све́рху машини́ст и бро́сил ма́льчику два больши́х я́блока.

— Подожди́, не е́шь, — попроси́л машини́ст. — Иди́ наза́д и смотри́ под ваго́ны, мне ка́жется, что где́-то зажа́ты тормоза́. А пото́м дай мне сигна́л свои́м фонарём. Зна́ешь как?

— Я все сигна́лы зна́ю, — отве́тил Ва́ся, наклони́лся и посмотре́л под парово́з.

— Зажа́то! — кри́кнул он.

— Где? — спроси́л машини́ст.

— У тебя́ под парово́зом. Там колёса быстре́е кру́тятся, а там ме́дленнее.

Машини́ст вы́ругал себя́, помо́щника и всю жизнь целико́м, а Ва́ся пошёл домо́й.

По́езд прое́хал. На вся́кий слу́чай Ва́ся послу́шал,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
как работают колеса каждого вагона, но нигде ничего́ плохо́го не услы́шал. Ма́льчик оберну́лся туда́, где стоя́л его́ фона́рь. Свет фонаря́ поднялся в во́здух, его́ взял в ру́ки како́й-то челове́к. Ва́ся побежа́л туда́ и уви́дел своего́ отца́.

— А где наш телёнок? — спроси́л он. — Он у́мер?

— Нет, — отве́тил оте́ц. — Я его́ про́дал, мне за него́ мно́го де́нег да́ли. Ведь нам не ну́жен бык.

Ва́ся взял фона́рь и не́сколько раз по́днял его́ над голово́й, что́бы показа́ть машини́сту, что колёса под вагона́ми иду́т свобо́дно.

— Иди́ домо́й, — сказа́л оте́ц Ва́се. — А я обойду́ наш уча́сток и посмотрю́, всё ли в поря́дке. А то мне телёнка жа́лко: мы его́ расти́ли, привы́кли к нему́. Если бы я знал, что мне его́ так бу́дет жа́лко, я бы его́ не про́дал...

Коро́ва опя́ть закрича́ла, когда́ Ва́ся вошёл во дво́р. Ва́ся вошёл в сара́й. Коро́ва тепе́рь ничего́ не е́ла. Она́ молча́ла и тяжело́ дыша́ла. У неё бы́ло го́ре, и она́ не могла́ себя́ успоко́ить ни сло́вом, ни созна́нием, ни дру́гом, как э́то мо́жет сде́лать челове́к. Ва́ся до́лго гла́дил коро́ву, но она́ была́ равноду́шной. Ей ну́жен был её сын телёнок, и ничто́ не могло́ замени́ть ей его́: ни челове́к, ни трава́, ни со́лнце. Коро́ва не понима́ла, что мо́жно забы́ть одно́ сча́стье и найти́ друго́е.

И коро́ва гру́стно молча́ла. Она́ гляде́ла в темноту́ больши́ми глаза́ми и не могла́ запла́кать, что́бы облегчи́ть своё го́ре.

Утром Ва́ся ушёл в шко́лу, а оте́ц на́чал паха́ть зе́млю, что́бы весно́й посе́ять на не́й хлеб.

Верну́вшись из шко́лы, Ва́ся уви́дел, что оте́ц ещё па́шет, но сде́лал ма́ло. Коро́ва рабо́тала пло́хо, хотя́ Ва́ся с отцо́м рабо́тали на не́й и ра́ньше, и она́ уме́ла паха́ть.

Ве́чером оте́ц пусти́л коро́ву на сухо́ю траву́. Ва́ся сиде́л в до́ме за столо́м, де́лал уро́ки и иногда́ смотре́л в окно́ — там он ви́дел свою́ коро́ву. Она́ стоя́ла в по́ле, но ничего́ не е́ла.

Сде́лав уро́ки, Ва́ся взял кусо́к хле́ба, посоли́л его́ и понёс коро́ве. Коро́ва не ста́ла есть хлеб, она́ оста́лась гру́стной, как была́. Ва́ся постоя́л о́коло неё, пото́м о́бнял её за ше́ю, что́бы она́ зна́ла, что он лю́бит и понима́ет её. Но коро́ва толкну́ла ма́льчика, закрича́ла и убежа́ла в по́ле.

До са́мой но́чи мать, оте́ц и Ва́ся иска́ли коро́ву, но не нашли́ её. А у́тром Ва́ся проснулся пе́рвым и

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
услы́шал, что около до́ма кто́-то ды́шит. Он посмотре́л в окно́ и уви́дел коро́ву. Она́ стоя́ла у воро́т и ждала́, когда́ её пу́стят домо́й.

С тех пор, хотя́ коро́ва жила́ и рабо́тала, она́ была́ гру́стной, переста́ла всё понима́ть, и молоко́ у неё ко́нчилось. Ва́ся сам пои́л, корми́л и чи́стил её, но она́ не замеча́ла э́того, потому́ что ей бы́ло всё равно́, что с ней де́лают.

Днём коро́ву выпуска́ли в по́ле, что́бы она́ гуля́ла на во́ле и ей ста́ло лу́чше. Но коро́ва гуля́ла ма́ло. Она́ до́лго стоя́ла на ме́сте, пото́м шла немно́го и опя́ть остана́вливалась. Одна́жды она́ вы́шла на желе́зную доро́гу, но её уви́дел оте́ц Ва́си и увёл в сто́рону. А ра́ньше коро́ва была́ о́чень осторо́жная и никогда́ не выходи́ла на желе́зную доро́гу. Поэ́тому Ва́ся стал боя́ться, что коро́ву мо́жет задави́ть по́езд, и, си́дя в шко́ле, всё вре́мя ду́мал об э́том, а из шко́лы бежа́л пря́мо домо́й.

Одна́жды, когда́ дни ста́ли совсе́м коро́ткие, Ва́ся верну́лся из шко́лы и уви́дел, что во́зле их до́ма стои́т по́езд. Он испуга́лся и сра́зу побежа́л к парово́зу.

Знако́мый машини́ст, кото́рому он неда́вно помога́л, и оте́ц вынима́ли из-под парово́за уби́тую коро́ву. Ва́ся сел на зе́млю и за́мер от го́ря пе́рвой сме́рти, кото́рую он ви́дел.

— Я ей де́сять мину́т дава́л сигна́лы, — говори́л машини́ст отцу́ Ва́си. — Она́ у тебя́ глуха́я была́?

— Она́ не глуха́я была́, она́, наве́рное, засну́ла.

— А что ты бу́дешь де́лать с мя́сом?

— Придётся прода́ть, — сказа́л оте́ц. — Нам нужны́ де́ньги, что́бы купи́ть другу́ю коро́ву.

— Без коро́вы тебе́ жить нельзя́, — согласи́лся машини́ст. — Собира́й де́ньги, а я тебе́ немно́го помогу́. Мно́го у меня́ нет, но я ско́ро получу́ пре́мию * и дам тебе́ де́нег.

— За что́ ты мне де́нег дашь? — удиви́лся Ва́син оте́ц. — Я тебе́ не ро́дственник, никто́. Я и сам могу́ купи́ть коро́ву.

— Я хочу́ тебе́ помо́чь. Твой сын мне помога́л, и я вам помогу́. И ещё я никогда́ никого́ не дави́л. Мне бу́дет тяжело́ на се́рдце, е́сли я за коро́ву не заплачу́.

— А за что́ ты пре́мию полу́чишь? — спроси́л Ва́ся. — Ты в про́шлый раз пло́хо е́здил.

— Я тепе́рь лу́чше е́здить стал, — улыбну́лся машини́ст. — Научи́лся.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
— Вы поста́вили второ́й я́щик для пе́ска? — спроси́л Ва́ся.

— Нет, но ма́ленький на большо́й смени́ли.

На сле́дующий день в шко́ле начали́сь прове́рочные зада́ния за пе́рвую че́тверть. Ученики́ должны́ бы́ли написа́ть сочине́ние на те́му «Как я бу́ду жить и рабо́тать, что́бы принести́ по́льзу на́шей Ро́дине».

Ва́ся написа́л в свое́й тетра́ди:

«Как я бу́ду жить, я не зна́ю, я ещё не заду́мывался. У на́с была́ коро́ва. Она́ дава́ла молоко́ отцу́, ма́тери и мне. Пото́м у неё роди́лся сын телёнок, и она́ дава́ла молоко́ и ему́. Мы че́тверо пи́ли молоко́, и нам хвата́ло. Ещё коро́ва паха́ла зе́млю и вози́ла тяжёлые ве́щи. Пото́м она́ попа́ла под по́езд и умерла́. Коро́ва отдала́ нам всё, что у неё бы́ло — молоко́, мя́со, ко́жу, потому́ что она́ была́ до́брая. Я то́же хочу́, что́бы всем лю́дям на́шей Ро́дины была́ от меня́ по́льза. А на́шу коро́ву я никогда́ не забу́ду».

Домо́й Ва́ся верну́лся ве́чером. Оте́ц был уже́ до́ма и пока́зывал ма́тери сто рубле́й — две бума́жки, кото́рые ему́ бро́сил машини́ст с паровоза.

### टिप्पणियाँ

коро́ва — गाय
телёнок — बछड़ा
ста́нция — [ रलवे- ] स्टेशन
ветерина́р — पशु-चिकित्सक , सलोतरी
фона́рь — लालटेन
проводи́ть по́езд — रेल-गाड़ी को लालटेन दिखाना
железнодоро́жник — रेलवे-कर्मचारी
колхо́з — सामूहिक फ़ार्म
пассажи́рский по́езд — सवारी-गाड़ी , पैसिंजर-ट्रेन
флажо́к — झंडी
паровоз — इंजन
подъём — चढ़ाई ( स्थान )
парова́я маши́на — स्टीम-इंजन , भाप का इंजन
машини́ст — इंजन-ड्राइवर
рельс — पटरी
пре́мия — बोनस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

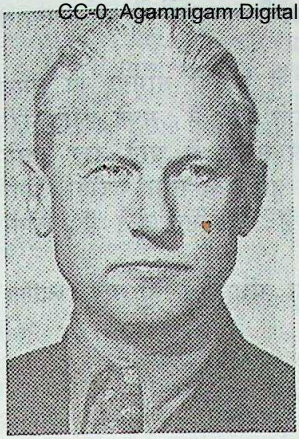

Александр Фадеев
अलेक्सान्द्र फ़देयेव
(१९०१-१९५६)

«मैंने दो ही संपूर्ण उपन्यास लिखे जिनमें से एक में अभी हाल ही में काफ़ी संशोधन किये हैं... और एक अधूरे उपन्यास का लेखक हूँ जो लेखक की इच्छा के अनुसार लंबे समय से पुनःमुद्रित नहीं हो रहा और जिसमें आमूल परिवर्त्तन करना आवश्यक है» – ये फ़देयेव के शब्द हैं।

दो संपूर्ण उपन्यासों के नाम «विनाश» (१९२५-१९२७) तथा «तरुण गार्ड» (१९४५-१९५१) हैं। अधूरा उपन्यास है «अंतिम उदेगी» (१९२९--१९४०)। जीवन के अंत में लेखक ने एक और उपन्यास «लौह धातुकर्म» लिखना शुरू किया लेकिन वह भी अधूरा ही रह गया।

फ़देयेव की मृत्यु के बाद उनके निबंधों और आलोचनात्मक लेखों का संग्रह «तीस वर्षों में» (१९५७) प्रकाशित हुआ। फ़देयेव की साहित्यिक विरासत बड़ी नहीं थी लेकिन जो किताबें उन्होंने लिखीं उनमें क्रांति और गृह-युद्ध के दिनों के महान् परिवर्त्तन प्रतिबिंबित हैं। प्रसिद्ध लेखक कोन्स्तान्तीन फ़ेदिन के शब्दों में «... «बाढ़» (१९२४), «बहाव के विपरीत» (१९२३) कहानियों से «विनाश» उपन्यास तक, «अंतिम उदेगी» उपन्यास से «तरुण गार्ड» उपन्यास तक उनकी सभी कृतियों में एक ही आवर्त्ती विचार सामने आता है – साम्यवाद के ध्येय के लिए व्यक्ति का संघर्ष...»

फ़देयेव की प्रायः सभी कृतियाँ – «बाढ़» और «बहाव के विपरीत» कहानियाँ तथा «विनाश» उपन्यास – घनिष्ठ रूप से लेखक के जीवन से और १९१९ में सुदूर पूर्व में प्रतिक्रांति के ख़िलाफ़ छापेमारों की लड़ाई में उनकी शिरकत से संबंधित हैं।

इन घटनाओं की छाप «विनाश» उपन्यास में विशेषतः सजीव रूप से प्रस्तुत की गयी है। तीसरे दशक के सोवियत साहित्य में समसामयिक युग के अच्छे नायक का तथा सोवियत शासन के लिए संघर्ष में कम्युनिस्ट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका का चित्रण करनेवाली रचनाओं में यह उपन्यास एक पहली कृति है।

जैसा कि स्वयं फ़देयेव ने कहा, गृह-युद्ध में मानवी सामग्री का चयन होता है, क्रांति द्वारा सब शत्रुतापूर्ण तत्व मिटाये जाते हैं, सच्चे क्रांतिकारी सघर्ष में अयोग्य तत्व और क्रांति के दायरे में संयोग से आये तत्व हटाये जाते हैं और क्रांति की जीवित जड़ों से उभरे हुए तत्व तथा करोड़ों लोगों की गहराई से निकले हुए तत्व मज़बूत होते हैं, विकसित होते हैं, लोगों का महान् काया-पलट होता है।

«विनाश» उपन्यास का नीचे दिया गया अंश ऐसे ही एक व्यक्ति के बारे में है।

## РАЗГРОМ

(отры́вок из рома́на)

### РАЗВЕ́ДКА МЕТЕ́ЛИЦЫ

Посыла́я Мете́лицу в развéдку *, Левинсо́н приказа́л ему́ верну́ться то́й же но́чью. Но дере́вня, в кото́рую до́лжен был е́хать Мете́лица, оказа́лась намно́го да́льше, чем ду́мал Левинсо́н, и то́лько по́здно ве́чером Мете́лица вы́ехал из тайги́ на кра́й по́ля. Недалеко́, о́коло реки́ горе́л костёр. Мете́лице ста́ло хо́лодно. Он реши́л снача́ла подъе́хать к костру́. На вся́кий слу́чай вы́нул из кобуры́ * револьве́р и спря́тал его́ под руба́шку, а кобуру́ положи́л в су́мку за седло́м. Тепе́рь он был похо́ж на крестья́нина.

Он был уже́ совсе́м бли́зко к костру́, когда́ раздало́сь лошади́ное ржа́ние. В э́ту же секу́нду у огня́ качну́лась тень. У костра́, испу́ганно гля́дя на Мете́лицу, стоя́л худо́й черноволо́сый ма́льчик — в лаптя́х *, в рва́ных штана́х, дли́нном, не по ро́сту пиджаке́. Мете́лица хоте́л кри́кнуть ему́ что́-нибудь гру́бое, но уви́дел перед собо́й испу́ганные глаза́, рва́ные штаны́, пиджа́к, из кото́рого была́ видна́ то́нкая де́тская ше́я...

— Что ты стои́шь?.. Испуга́лся? Ах ты, воробе́й *, воробе́й! — заговори́л Мете́лица так, как никогда́ не разгова́ривал с людьми́, а то́лько с лошадьми́.

Ма́льчик опусти́л ру́ку.

— А почему́ ты так лети́шь *? — сказа́л он, стара́ясь говори́ть как взро́слый. — Коне́чно, испуга́лся — у меня́ тут ко́ни...

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

— Ко́-они? — спроси́лся Мете́лица. Он смея́лся так гро́мко и ве́село, что да́же сам удиви́лся.

Ма́льчик, поня́в, что ничего́ стра́шного не случи́тся, то́же рассмея́лся, но совсе́м по-де́тски — то́ненько. Так смея́лись они́ не́сколько мину́т.

— Ну и насмеши́л ты меня́, — сказа́л Мете́лица, спры́гнув с коня́.

— Я карто́шку пеку́, — совсе́м успоко́ившись, сказа́л ма́льчик.

— Карто́шку? Это хорошо́! А где ты живёшь?

— А вон на́ша дере́вня, — ма́льчик показа́л голово́й на огни́. — А ты к нам заче́м прие́хал?

— Это до́лго расска́зывать... Коне́й хочу́ в ва́шей дере́вне купи́ть. Я о́чень коне́й люблю́. То́лько у меня́ свои́х нет, всё чужи́е.

— И у меня́ чужи́е, — отве́тил ма́льчик. — Мо́жет, ты есть хо́чешь, у меня́ немно́го хле́ба есть...

— Спаси́бо, я то́лько что ел, — обману́л Мете́лица ма́льчика и почу́вствовал, как си́льно он го́лоден.

Ма́льчик ел карто́шку и расска́зывал:

— Я сирота́ *. Уже́ полго́да как сирота́. Отца́ у меня́ бе́лые * уби́ли, и мать уби́ли и бра́та...

— Бе́лые? — переспроси́л Мете́лица.

— Бе́лые. Они́ и сейча́с в дере́вне...

— Зна́ешь что, — попроси́л Мете́лица, — пусть мой конь побу́дет у тебя́, а я пешко́м схожу́ в ва́шу дере́вню и посмотрю́ как там и что... Где там у ва́с са́мый гла́вный нача́льник живёт?

Ма́льчик объясни́л, как найти́ избу́, где живёт нача́льник и как лу́чше пройти́.

Мете́лица пошёл по тропи́нке вдоль реки́, а ма́льчик с гру́стью смотре́л ему́ вслед.

Село́ уже́ спа́ло. Мете́лица прошёл две у́лицы, сверну́л на тре́тью. Ла́яли соба́ки, но никто́ не вы́шел, не окли́кнул его́.

Ско́ро показа́лся большо́й дом с освещёнными о́кнами. Одно́ из ни́х бы́ло откры́то.

«Вот оно́!» — не́рвно поду́мал Мете́лица. Через не́сколько мину́т он уже́ стоя́л под де́ревом, слу́шая и запомина́я всё, что происходи́ло в ко́мнате.

Там сиде́ли четы́ре челове́ка и игра́ли в ка́рты. Спра́ва сиде́л ма́ленького ро́ста свяще́нник *, лицо́м к Мете́лице — краси́вый по́лный офице́р, кото́рого Мете́лица при́нял за команди́ра. Но всё вре́мя, по непоня́тным для себя́ причи́нам Мете́лица интересова́лся четвёртым из игра́ющих — с бле́дным лицо́м и неподви́жным взгля́дом.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Вопреки́ тому́, что ожида́л услы́шать Мете́лица, они́ говори́ли о са́мых неинтере́сных вещах: о игре́ в ка́рты.

Послу́шав немно́го, Мете́лица согну́лся и пошёл от окна́. Он поверну́л за́ угол и вдруг, лицо́м к лицу́ столкну́лся с челове́ком в шине́ли *, сза́ди его́ стоя́ли ещё дво́е.

— Ты что тут де́лаешь? — удивлённо спроси́л челове́к.

Мете́лица пры́гнул в сто́рону и побежа́л в кусты́.

— Вот он, держи́! — кри́кнул кто́-то. Пу́ля просвисте́ла о́коло его́ у́ха. Мете́лица то́же вы́стрелил. Челове́к, бежа́вший за ни́м, упа́л.

— Не пойма́ете! — закрича́л Мете́лица, до са́мой после́дней мину́ты не ве́ривший, что его́ мо́гут схвати́ть.

Но кто́-то большо́й пры́гнул на него́ сза́ди. Жесто́кий уда́р по голове́ повали́л его́ на зе́млю...

Мете́лица откры́л глаза́ в большо́м и тёмном сара́е. Он сра́зу вспо́мнил всё, что произошло́ с ним. Уда́ры ещё шуме́ли в его́ голове́, во́лосы бы́ли в крови́, он чу́вствовал э́ту кровь на лице́.

Пе́рвая мысль, кото́рая пришла́ Мете́лице в го́лову, была́ о побе́ге. Он ника́к не мо́г пове́рить, что по́сле всего́, что он пе́режил и испыта́л, по́сле всех свои́х по́двигов, просла́вивших его́ и́мя среди́ люде́й, он бу́дет лежа́ть здесь, в э́том тёмном и сыро́м сара́е.

Мете́лица обошёл сара́й. Но всю́ду он чу́вствовал то́лько мёртвое, холо́дное де́рево, а ще́ли бы́ли так малы́, что почти́ не пропуска́ли у́тренний свет. И когда́ он оконча́тельно по́нял, что в э́тот раз ему́ не уйти́, вопро́с о со́бственной жи́зни и́ли сме́рти сра́зу переста́л интересова́ть его́. И все его́ душе́вные и физи́ческие си́лы сосредото́чились на вопро́се о то́м, как он, Мете́лица, смо́жет показа́ть тем лю́дям, кото́рые ста́нут его́ убива́ть, что он не бои́тся их.

За две́рью послы́шался шум, она́ откры́лась и в сара́й вошли́ два челове́ка с ору́жием *. Мете́лица, широко́ расста́вив но́ги, смотре́л на ни́х.

— Пойдём, — сказа́л пе́рвый челове́к без зло́бы, да́же немно́го винова́то.

Мете́лица вы́шел нару́жу.

Через мину́ту он стоя́л перед знако́мым ему́ бле́дным челове́ком с неподви́жным взгля́дом. Ту́т же сиде́л краси́вый по́лный офице́р. Тепе́рь, рассмотре́в обо́их, Мете́лица по́нял, что командиром был не э́тот краси́вый офице́р, а друго́й.

— Что ты де́лал вчера́ в саду́?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Метелица молча улыбается, смотрит на них, показывая собой, что он ничего не скажет. Он не отвечал и тогда, когда ему угрожающе показали револьвер...

Открылась дверь, чья-то лохматая голова с большими испуганными глазами показалась в комнате.

— Собрались? — спросил командир.

Те же два вооружённых человека вывели Метелицу на крыльцо.

Метелице всегда казалось, что он не любит людей. Он думал, что ему всё равно, как они относятся к нему, никогда не имел друзей и не хотел иметь их. Но вместе с тем всё самое большое и важное в своей жизни, он, сам этого не замечая, делал для людей, чтобы они смотрели на него и гордились им. И теперь, когда он поднял голову и увидел большую толпу мужиков * и женщин, он сразу обрадовался им, пошёл легче и свободнее.

— Кто знает этого человека? — спросил начальник, оглядывая всех своими неподвижными глазами.

Каждый, кто встречался с этим взглядом, опускал голову.

— Никто не знает?

Люди заволновались, стоящие впереди повернулись назад, — кто-то решительно шёл сквозь толпу. Человек подошёл к крыльцу, и стало видно, что он ведёт за собой маленького черноволосого мальчика в длинном пиджаке. Метелица посмотрел вниз и узнал в мальчике пастуха, которому вчера ночью он оставил свою лошадь.

В течение нескольких секунд Метелица и мальчик смотрели друг на друга. Метелица с деланным * равнодушием, мальчик — со страхом и жалостью.

Потом мальчик посмотрел на начальника, глубоко и тяжело вздохнул и отрицательно покачал головой.

— Ты не бойся, не бойся, — говорил ему мужик, держа мальчика за руку. — Кто же, если не он, оставил тебе вчера лошадь?

Мальчик молчал и отрицательно качал головой.

— Да он это! — закричал мужик. — Только мальчишка боится. А конь был с седлом и с сумкой... Этот приехал вчера вечером, оставил коня, а сам пошёл в деревню...

— Понятно, — сказал начальник. — Только ведь мальчишка молчит... Давай-ка его сюда, мы его сейчас ещё раз спросим.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Офице́р * схвати́л ма́льчика за плечи́ и уста́вился * на него́ свои́м неподви́жным взгля́дом.

— А-а... а! — закрича́л ма́льчик от стра́ха.

В э́ту же мину́ту чьё-то ги́бкое и стреми́тельное те́ло пры́гнуло с крыльца́, — нача́льник упа́л.

— Стреля́йте * в него́! — крича́л краси́вый офице́р, кото́рый забы́л, что сам уме́ет стреля́ть. Не́сколько вооружённых люде́й бро́сились к Мете́лице. Мете́лица, лёжа на земле́, хоте́л схвати́ть за го́рло нача́льника, тот боро́лся и пыта́лся доста́ть револьве́р. И в ту мину́ту, когда́ Мете́лица схвати́л его́, он вы́стрелил не́сколько раз...

### टिप्पणियाँ

посыла́ть в разве́дку — टोह पर भेजना
кобура́ — [ पिस्तौल का ] खोल
ла́пти — पेड़ की खाल के बने जूते
воробе́й — चिड़ा ; ( यहाँ ) मेरा लाल
лете́ть — ( यहाँ ) हवा से बातें करना
сирота́ — अनाथ
бе́лые — श्वेत गार्ड ( ज़ारशाही सेना के सिपाही और अफ़सर जो क्रांति के विरुद्ध लड़े थे )
свяще́нник — पादरी
шине́ль — ट्रेंचकोट , ग्रेटकोट , बरानकोट
ору́жие — हथियार , शस्त्र
мужи́к — नर , मर्द
де́ланный — बनावटी , कृत्रिम
офице́р — अफ़सर
уста́виться — आखें गड़ाना ( जमाना )
стреля́ть — गोली चलाना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

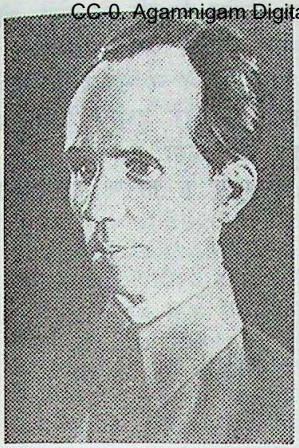

Николай Островский
निकोलाई ओस्त्रोव्स्की
(१९०४-१९३६)

उदीयमान् पीढ़ी के चरित्र-निर्माण की समस्याओं का समाधान करनेवाले लेखकों में एक प्रथम स्थान ओस्त्रोव्स्की का है जिन्होंने चौथे दशक के शुरू में «अग्नि-दीक्षा» उपन्यास लिखा था। उपन्यास काफ़ी हद तक आत्मकथात्मक है। लेकिन वह लेखक के जीवन की सही नक़ल नहीं है। स्वयं ओस्त्रोव्स्की ने इसके बारे में कहा: «उपन्यास के मूल में अनेक वास्तविक घटनाएँ हैं, लकिन उपन्यास को दस्तावेज़ी कहना ठीक नहीं होगा। यह उपन्यास है, जीवनी नहीं, यों कहें कि युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्य ओस्त्रोव्स्की की जीवनी नहीं है।»

निकोलाई अलेक्सेयेविच ओस्त्रोव्स्की का जन्म उक्राइना में हुआ था। भावी लेखक का बचपन और किशोरावस्था एक छोटे नगर शेपेतोव्का में गुज़रे। १९१९ में नगर में सोवियत सत्ता स्थापित होने के बाद अस्त्रोव्स्की युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्य बननेवाले पहले युवकों में थे और फिर वह लाल सेना में स्वयंसेवक के रूप में भरती हो गये। इन्हीं वर्षों में भावी लेखक के दृढ़-संकल्पी, साहसिक, सोद्देश्य चरित्र का निर्माण हुआ।

अगस्त १९२० में बुरी तरह घायल होने पर वह सेना से निवृत्त हो गये। तब वह सोलह साल के थे और एक अपाहिज का जीवन जीने की बात सुनना तक नहीं चाहते थे क्योंकि वह देश के तूफ़ानी राजनीतिक और सामाजिक जीवन से अलग रहने की कल्पना तक नहीं कर सकते थे। १९२४ में ओस्त्रोव्स्की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बने और युवा कम्युनिस्ट लीग और पार्टी का काम करने लगे।

उनका स्वास्थ्य बिगड़ता गया। १९३० में उनकी आँखों की ज्योति जाती रही और शरीर की हिलने-डोलने की क्षमता भी। केवल हाथों में ही कुछ गति शेष थी। परंतु ओस्त्रोव्स्की ने हार नहीं मानी और वह गृह-युद्ध के अपने संस्मरण लिखने लगे। इस तरह «अग्नि-दीक्षा» उपन्यास

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
प्रकट हुआ जो उन्होंने सख़्त पीड़ा सहते हुए विशेष लिखने के फ़्रेम की सहायता से या रिश्तेदारों व दोस्तों को इमला बोलते हुए लिखा।

१९३३ में उपन्यास समाप्त हुआ। इस तरह जीवन व संघर्ष में फिर से सक्रिय भाग ले पाते ओस्त्रोव्स्की का सपना साकार हुआ। उपन्यास सोवियत युवक-युवतियों की सबसे प्रिय पुस्तक बन गया है।

उनकी और भी साहित्यिक योजनाएँ थीं जो मृत्यु के कारण कार्यान्वित नहीं हो सकीं।

## КАК ЗАКАЛЯЛАСЬ СТАЛЬ

(отры́вки из рома́на)

Буфе́т* на вокза́ле рабо́тал днём и но́чью. На вокза́ле всегда́ бы́ло мно́го наро́да, и отдохну́ть мо́жно бы́ло то́лько два-три часа́.

Два го́да Па́вка* рабо́тал здесь. Он получа́л уже́ не во́семь, а де́сять рубле́й. Вы́рос, стал сильне́е. Когда́ бы́ло мно́го наро́да, он бе́гал с подно́сами, пры́гая через четы́ре-пять ступе́нек вниз, на ку́хню, и обра́тно.

Но́чью, когда́ люде́й станови́лось ме́ньше, на ку́хне собира́лись официа́нты*. Они́ начина́ли игра́ть в ка́рты. Па́вка не оди́н раз ви́дел больши́е де́ньги, лежа́вшие на столах. Он не удивля́лся, потому́ что знал, что ка́ждый из официа́нтов за день получа́л от посети́телей по три́дцать-со́рок рубле́й.

— Сво́лочи! — ду́мал Па́вка. — Мой брат Артём, хоро́ший сле́сарь*, а получа́ет со́рок во́семь рубле́й в ме́сяц. А я — де́сять.

Па́вка счита́л официа́нтов чужи́ми и враждебными, таки́ми же, как хозя́ева буфе́та. Он загляну́л в са́мую глубину́ жи́зни, на её дно, и тепе́рь ждал, когда́ Артём устро́ит его́ ученико́м* в железнодоро́жное депо́*, но моло́же пятна́дцати лет туда́ не бра́ли...

Па́вкина слу́жба ко́нчилась ра́ньше, чем он ду́мал. И так ко́нчилась, как он не ожида́л.

В оди́н из холо́дных зи́мних дней Па́вка зако́нчил свою́ сме́ну — два́дцать четы́ре часа́. Он хоте́л уйти́ домо́й, но того́ па́рня, кото́рый до́лжен был его́ смени́ть, не́ было. Па́вка пошёл к хозя́йке и сказа́л, что хо́чет уйти́ домо́й, но она́ его́ не отпусти́ла. Пришло́сь уста́лому Па́вке рабо́тать вторы́е су́тки. К но́чи он о́чень

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

уста́л. Ему́ бы́ло нужно набра́ть воды́, он откры́л кран, но воды́ не́ было. Па́вка оста́вил кран откры́тым, лёг ря́дом и засну́л.

Через не́сколько мину́т вода́ пошла́. Она́ напо́лнила бак, потекла́ по́ полу, на ку́хню, где никого́ не́ было. Воды́ бы́ло всё бо́льше и бо́льше. Она́ поднима́лась и полила́сь под две́рь в зал, под ве́щи и чемода́ны спя́щих пассажи́ров. Но никто́ ничего́ не замеча́л, пока́ вода́ не залила́ лежа́щего на полу́ челове́ка. Он закрича́л, все побежа́ли к веща́м.

А вода́ всё лила́сь и лила́сь. Официа́нт, убира́вший посу́ду со стола́, услы́шал кри́ки и, пры́гая через лу́жи, подбежа́л к две́ри и откры́л её. Вода́, сде́рживаемая две́рью, реко́й полила́сь в зал.

Кри́ки пассажи́ров уси́лились. В ко́мнату, где во́зле откры́того кра́на спал Па́вка, вбежа́ли официа́нты. Оди́н из ни́х бро́сился к ма́льчику.

Уда́ры оди́н за други́м сы́пались на ничего́ не понима́ющего Па́вку. По́сле сна он ничего́ не ви́дел, то́лько в глаза́х у него́ вспы́хивали от бо́ли мо́лнии.

Изби́тый, он с трудо́м дошёл домо́й.

Утром Артём спроси́л Па́вку, кто его́ бил.

Па́вка рассказа́л всё, как бы́ло.

Артём мо́лча оде́лся и ушёл.

А через неде́лю Па́вка рабо́тал ученико́м в железнодоро́жном депо́ *.

* * *

Бил в окно́ осе́нний дождь. Над землёй ни́зко лете́ли тёмно-се́рые дождевы́е ту́чи. Дере́вья стоя́ли го́лые.

Среди́ ле́са одино́ко стоя́ла ма́ленькая железнодоро́жная ста́нция. От неё уходи́ла в лес полоса́ земли́, во́зле кото́рой рабо́тали лю́ди.

Го́роду нужны́ бы́ли дрова́ на́ зиму. Если не бу́дет дров — не бу́дет тепла́. А дрова́ мо́жно бы́ло привезти́ из ле́са, то́лько постро́ив э́ту желе́зную доро́гу. И её ну́жно бы́ло постро́ить бы́стро. Все коммуни́сты * и комсомо́льцы * го́рода пое́хали на э́ту стро́йку...

Под нога́ми была́ мо́края земля́. Лю́ди с трудо́м копа́ли её, а дождь смыва́л результа́ты их труда́, и его́ холо́дные ка́пли проходи́ли сквозь оде́жду. Она́ была́ тяжёлой и мо́крой, но лю́ди уходи́ли с рабо́ты то́лько по́здно ве́чером. И с ка́ждым днём полоса́ земли́ уходи́ла всё да́льше в лес *.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Недалеко́ от ста́нции стоя́л дом. У него́ не́ было ни о́кон, ни двере́й. Сквозь кры́шу бы́ло ви́дно не́бо. Лю́ди ложи́лись на́ пол, покры́тый соло́мой, и пыта́лись согре́ть друг дру́га. Их оде́жда не высыха́ла, а сквозь о́кна дул ве́тер и па́дали ка́пли дождя́.

Утром они́ пи́ли чай там, где была́ ку́хня, в обе́д получа́ли чёрный хлеб. Это бы́ло всё, что мог дать им го́род.

Но с ка́ждым днём полоса́ земли́ уходи́ла всё да́льше в лес.

А дождь всё шёл.

Па́вел Корча́гин по́днял но́гу и по хо́лоду по́нял, что подо́швы на его́ сапоге́ бо́льше нет. Как то́лько он прие́хал сюда́, он по́нял, что его́ сапоги́ сли́шком плохи́е для рабо́ты, а сейча́с ещё отвали́лась подо́шва. Он не мо́г бо́льше рабо́тать. Снял сапо́г и наступи́л ного́й на холо́дную зе́млю. А пото́м взял в ру́ки оста́тки сапога́ и пошёл на ку́хню.

На ку́хне ре́зала о́вощи Ода́рка, кото́рую по́вар взял в помо́щники.

Она́ недово́льно посмотре́ла на Па́вла и сказа́ла:

— Ты уже́ обе́дать пришёл? Ещё ра́но! Рабо́тать не хо́чешь?

— Нет, — отве́тил Па́вел. — У меня́ сапо́г * порва́лся.

— А я ду́мала, что ты рабо́тать не хо́чешь... Покажи́ мне свой сапо́г!

Па́вел о́тдал ей сапо́г.

— Почини́ть его́ уже́ нельзя́. А что́бы ты не отморо́зил но́гу *, я принесу́ тебе́ одну́ гало́шу *, у меня́ есть. Нельзя́ ходи́ть без о́буви — ско́ро начнётся снег и моро́з.

Ско́ро она́ верну́лась с гало́шей и куско́м мате́рии. Когда́ завёрнутая в мате́рию нога́ согре́лась, Па́вел посмотре́л на Ода́рку с благода́рностью.

На сле́дующий день все собрали́сь на собра́ние. Говори́л нача́льник стро́йки * То́карев.

— Я, това́рищи, скажу́ пря́мо: нам о́чень тру́дно. Ско́ро начнётся зима́. До неё нам ну́жно пройти́ сквозь боло́то, ина́че земля́ бу́дет сли́шком твёрдой. На стро́йке остаю́тся то́лько комсомо́льцы и чле́ны па́ртии, остальны́е мо́гут уе́хать в го́род.

Все зашуме́ли. Одни́ говори́ли о до́ме, о тепле́. Други́е — о свое́й уста́лости. Мно́гие молча́ли. И то́лько оди́н из четырёхсот челове́к заговори́л о бе́гстве.

— Я не оста́нусь здесь! — крича́л он. — Я не хочу́

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
потеря́ть здоро́вье * из-за своего́ комсомо́льского биле́та *!

Он подошёл к столу́ и бро́сил на него́ кра́сную кни́жечку. То́карев мо́лча бро́сил её в ого́нь, а па́рень пошёл к вы́ходу. Лю́ди отвора́чивались от него́, как бу́дто он был бо́лен.

— Нам нельзя́ уезжа́ть! — продолжа́л То́карев. — Если мы не постро́им доро́гу, лю́ди в го́роде бу́дут умира́ть от хо́лода...

А у́тром вы́пал пе́рвый снег и начался́ си́льный моро́з.

Зима́ пришла́ сра́зу. Она́ была́ холо́дной и сне́жной. По утра́м все должны́ бы́ли очи́стить от сне́га свой уча́сток рабо́ты. То́лько тепе́рь Па́вел почу́вствовал, как ему́ хо́лодно. Ста́рый пиджа́к не гре́л его́, а в гало́шу всё вре́мя попада́л снег. Сапо́г на другу́ю ногу́ то́же порва́лся. Вме́сто ша́рфа То́карев дал ему́ полоте́нце. Но худо́й, с кра́сными от хо́лода глаза́ми, Па́вел продолжа́л рабо́тать.

В э́то вре́мя на ста́нцию ря́дом со стро́йкой пришёл пассажи́рский по́езд. Он останови́лся потому́, что для парово́за не́ было дров. Когда́ пассажи́рам объясни́ли причи́ну останово́ки, они́ пошли́ к нача́льнику стро́йки То́кареву проси́ть дрова́, что́бы пое́хать да́льше.

— Я дам вам дрова́, — сказа́л Тока́рев, — е́сли вы помо́жете очи́стить ме́сто строи́тельства от сне́га. Рабо́тать должны́ все взро́слые пассажи́ры. Де́ти и же́нщины мо́гут оста́ться в по́езде. Остальны́е бу́дут рабо́тать до ве́чера, и тогда́ я дам дрова́.

Пассажи́ры согласи́лись рабо́тать.

— Вот тебе́ сто челове́к, — сказа́л То́карев Па́влу Корча́гину. — Покажи́ им, что на́до де́лать.

Корча́гин пока́зывал пассажи́рам, что на́до де́лать. Како́й-то мужчи́на в тёплом пальто́ и мехово́й ша́пке держа́л в рука́х лопа́ту и возмущённо говори́л стоя́щей ря́дом с ним же́нщине:

— Я не бу́ду убира́ть снег! Я инжене́р! Я могу́ руководи́ть рабо́той, но рабо́тать лопа́той я не бу́ду!

К нему́ подошёл Корча́гин.

— Почему́ вы не рабо́таете, граждани́н?

Мужчи́на с презре́нием посмотре́л на Па́вла.

— Кто вы тако́й?

— Я рабо́чий.

— Тогда́ мне не́ о чем с ва́ми разгова́ривать. Позови́те мне нача́льника.

Па́вел посмотре́л на него́.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
— Если вы не хоти́те рабо́тать — не на́до. Но тогда́ вы не пое́дете да́льше. А вы то́же не хоти́те рабо́тать? — повернýлся он к же́нщине.

На мину́ту Па́вел за́мер. Перед ни́м стоя́ла То́ня Тума́нова. Та То́ня, кото́рую он по́мнил де́вочкой ещё в родно́м го́роде, с кото́рой чита́л кни́ги вслух, кото́рую люби́л...

Она́ с трудо́м узна́ла в э́том пло́хо оде́том челове́ке Корча́гина. Он стоя́л в рва́ной оде́жде, на одно́й ноге́ — сапо́г, а на друго́й — гало́ша, с гря́зным полоте́нцем на ше́е и гря́зным лицо́м. И э́того челове́ка она́ так неда́вно люби́ла! Как всё измени́лось!

Она́ то́лько что вы́шла за́муж и тепе́рь е́хала со свои́м му́жем в большо́й го́род, где он до́лжен был рабо́тать инжене́ром. И вот тепе́рь она́ встре́тилась со свое́й пе́рвой любо́вью! Ей бы́ло неудо́бно да́же пода́ть ему́ ру́ку. Что поду́мает её муж? Как неприя́тно, что Корча́гин так пло́хо вы́глядит, так пло́хо оде́т! Наве́рное, он не смо́г продви́нуться в жи́зни и оста́лся просты́м рабо́чим.

Она́ стоя́ла кра́сная от смуще́ния и не зна́ла, что сказа́ть.

— Пойдём, То́ня! — сказа́л ей муж. — Я не могу́ споко́йно смотре́ть на э́того челове́ка.

То́ня уговори́ла му́жа рабо́тать.

Ве́чером, когда́, око́нчив рабо́ту, все возвраща́лись к по́езду, То́ня останови́лась, пропуска́я всех вперёд. Сза́ди шёл Корча́гин.

— Здра́вствуй, Па́вел! — сказа́ла она́. — Я не ожида́ла уви́деть тебя́ таки́м. Неуже́ли ты не мо́жешь де́лать в жи́зни ничего́, кро́ме са́мой тяжёлой рабо́ты? Я ду́мала, что ты давно́ уже́ нача́льник...

— Я то́же не ожида́л, что ты мо́жешь так говори́ть. О мое́й жи́зни ты мо́жешь не беспоко́иться. У меня́ всё хорошо́. А вот у тебя́ всё ху́же. Два го́да наза́д ты не боя́лась пода́ть ру́ку просто́му рабо́чему. А тепе́рь мне не́ о чем с тобо́й разгова́ривать.

* * *

Ко́нчилась зима́. Все откры́ли о́кна. Выздора́вливая по́сле после́дней опера́ции, Корча́гин по́нял, что он не смо́жет бо́льше остава́ться в больни́це. Ему́ бы́ло тру́дно ви́деть страда́ния други́х люде́й.

На предложе́ние сде́лать ещё одну́ опера́цию он отве́тил отка́зом. И в то́т же день написа́л письмо́ в

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Центра́льный Комите́т па́ртии, что́бы ему́ разреши́ли перее́хать в Москву́, где рабо́тает его́ бу́дущая жена́ Та́я. Впервы́е в жи́зни он обрати́лся к па́ртии за по́мощью.

В отве́т на его́ письмо́ ему́ да́ли ко́мнату в Москве́. И Па́вел ушёл из больни́цы с еди́нственным жела́нием бо́льше туда́ не возвраща́ться.

Скро́мная ма́ленькая ко́мната в ти́хом переу́лке показа́лась ему́ огро́мной.

К нему́ ча́сто приезжа́ли друзья́, расспра́шивали о то́м, как он бу́дет да́льше рабо́тать. В э́то вре́мя Па́вел уже́ оконча́тельно потеря́л зре́ние и возмо́жность дви́гаться. Дви́гались то́лько его́ ру́ки.

— Ско́ро мне сде́лают транспара́нт*, — расска́зывал он друзья́м. — Без него́ я не могу́ писа́ть, потому́ что одна́ строка́ закрыва́ет другу́ю. А е́сли вы́резать из пло́тного карто́на поло́ски, мне бу́дет ле́гче. Писа́ть, не ви́дя напи́санного, тру́дно, но э́то возмо́жно. Очень до́лго у меня́ ничего́ не получа́лось, но тепе́рь я пишу́ ме́дленнее, и получа́ется хорошо́.

Па́вел на́чал рабо́тать.

Он реши́л написа́ть по́весть, назва́ние кото́рой он уже́ приду́мал: «Рождённые бу́рей».

С э́того дня он ду́мал то́лько о кни́ге. Ме́дленно рожда́лись страни́цы. Он забыва́л обо всём, пережива́л му́ки тво́рчества, когда́ всё пережито́е каза́лось на бума́ге невырази́тельным.

И вот уже́ зако́нчены три главы́*. Но рабо́тать одному́ бы́ло о́чень тру́дно. Неожи́данно помогла́ сосе́дка по кварти́ре восемнадцатиле́тняя де́вушка Га́ля.

Па́вел попроси́л свою́ мать спроси́ть у неё, не согласи́тся ли Га́ля быть его́ секретарём. Га́ля согласи́лась. Она́ пришла́ весёлая и улыба́ющаяся и, узна́в, что Па́вел пи́шет по́весть*, сказа́ла:

— Я с удово́льствием бу́ду помога́ть вам, това́рищ Корча́гин.

С э́того дня литерату́рная рабо́та дви́галась вперёд о́чень бы́стро. За ме́сяц они́ сде́лали так мно́го, что Па́вел удиви́лся. Он диктова́л*, а Га́ля писа́ла. Он слы́шал, как по бума́ге шурши́т её каранда́ш, а перед глаза́ми встава́ли карти́ны про́шлого. В те мину́ты, когда́ он молча́л и ду́мал, Га́ля ви́дела, как меня́ется выраже́ние его́ лица́, как меня́ются его́ глаза́.

Когда́ рабо́чий день конча́лся, Га́ля чита́ла всё напи́санное за́ день. Ви́дя, что он се́рдится, говори́ла:

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Почему́ вы се́рдитесь, това́рищ Корча́гин? Ведь всё напи́сано хорошо́!

— Нет, Га́ля, пло́хо!

По́сле неуда́чных страни́ц он начина́л писа́ть сам. К концу́ рабо́ты устава́л, не́рвничал.

Но вот допи́сана после́дняя глава́. Не́сколько дней Га́ля чита́ла Корча́гину по́весть.

За́втра он до́лжен посла́ть её в изда́тельство * в Ленингра́д. Если там по́весть понра́вится, она́ бу́дет напеча́тана. И тогда́...

Тогда́ начнётся но́вая жизнь, зарабо́танная тяжёлым трудо́м. Тогда́ он начнёт писа́ть но́вую кни́гу.

Мать отнесла́ по́весть на по́чту. Наступи́ли дни ожида́ния. Никогда́ в свое́й жи́зни Па́вел не жда́л так мучи́тельно, с нетерпе́нием. А отве́та не́ было.

Прошло́ не́сколько дней, и когда́ Па́вел уже́ не мо́г ждать бо́льше, мать, волну́ясь бо́льше сы́на, кри́кнула, входя́ в ко́мнату:

— По́чта из Ленингра́да!

Это была́ телегра́мма. Не́сколько слов. «По́весть горячо́ одо́брена. Ско́ро издади́м кни́гу. Поздравля́ем с побе́дой!»

Се́рдце у Па́вла Корча́гина си́льно би́лось. Его́ мечта́ ста́ла действи́тельностью. Он возвраща́лся в жизнь с но́вым ору́жием *!

### टिप्पणियाँ

буфе́т — कैंटीन

Па́вка — पाव्का (पावेल नाम का बोल-चाल का रूप)

официа́нт — बैरा, वेटर

сле́сарь — फ़िटर

учени́к — अप्रेन्टिस

железнодоро́жное депо́ — रेल-डिपो

* * *

коммуни́ст — कम्युनिस्ट

комсомо́лец — कोम्सोमोल (अखिल-सोवियत लेनिनीय युवा कम्युनिस्ट लीग) का सदस्य

полоса́ земли́ уходи́ла всё да́льше в лес — खुली पट्टी वन में दूर तक चली गयी थी

сапо́г — हाई (ऊँची) बूट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

А чтобы ты не отморозил ногу... — और तेरा पाँव ठंड से अकड़ न जाये...

гало́ша — रबड़ का जूता

стро́йка — निर्माण-स्थल

здоро́вье — स्वास्थ्य, सेहत

комсомо́льский биле́т — कोम्सोमोल का सदस्यता-कार्ड

* * *

транспара́нт — लिखने का फ़्रेम

глава́ — अध्याय

по́весть — लघु-उपन्यास, उपन्यासिका

диктова́ть — [ बोलकर ] लिखवाना

изда́тельство — प्रकाशन-गृह

с но́вым ору́жием — ( यहाँ ) अपनी किताबों के साथ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Аркадий Гайдар
अर्कादी गायदार
(१९०४-१९४१)

अर्कादी गायदार (अर्कादी पेत्रोविच गोलिकोव का उपनाम) तीसरे और चौथे दशकों में बाल-साहित्य के एक सबसे अधिक लोकप्रिय लेखक थे। तब से सोवियत बच्चों की सभी पीढ़ियों के वे प्रिय हैं। वैसे गायदार की रचनाएँ वयस्क लोग भी खुशी से पढ़ते हैं।

गायदार का जन्म १९०४ में अर्ज़ामास नगर में हुआ था। १३ साल की उम्र में ही उन्होंने क्रांतिकारी घटनाओं में भाग लिया। १९१८ में वह «बेहतर भाग्य के लिए, सुख के लिए, लोगों के भ्रातृत्व के लिए, सोवियत सत्ता के लिए» लड़ने निकले। एक साल बाद उन्होंने कीयेव में सेना-कमांडर की शिक्षा पायी तथा इसके एक साल बाद ही – १६ वर्ष की आयु में – रेजिमेंट-कमांडर हो गये। यह «असाधारण काल की एक साधारण जीवनी» थी। युवा लोग ही तो क्रांति और नये संसार की रक्षा कर रहे थे। १९२४ में मात्र बीस वर्ष की आयु में गायदार को पुराने घावों के कारण सेना से निवृत्त होना पड़ा। तब वह पत्रकार बन गये और कालांतर में लेखक। उन्होंने अपने बारे में कहा कि «शायद इसलिए कि मैं किशोरावस्था में सेना में था मैंने नये लड़के-लड़कियों को यह बताना चाहा कि जीवन तब कैसा था, वह किस तरह शुरू हुआ, किस तरह चल रहा था क्योंकि मैं बहुत कुछ देख चुका था।»

क्रांति और गृह-युद्ध के कठोर परंतु रोमानी काल में किशोर बालक के चरित्र की सृष्टि कैसे होती है इसका वर्णन गायदार ने «क्रांतिकारी--सैनिक परिषद्» (१९२५) और «स्कूल» (१९३०) नामक उपन्यासिकाओं में प्रस्तुत किया। इन कृतियों ने उन्हें ख्याति प्रदान की।

गायदार प्रतिभाशाली लेखक थे जो ज़माने की सबसे महत्वपूर्ण समस्याओं को समझते थे। वह सुबोध परंतु गंभीर रूप से बच्चों के साथ इन समस्याओं की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
चर्चा करते थे। उनकी रचनाओं में हम यह साफ़-साफ़ देख सकते हैं कि युद्धपूर्व के दो दशकों में देश में क्या-क्या परिवर्त्तन हुए और क्रांति के बाद कैसी नयी पीढ़ी पनपी।

«क्रांतिकारी-सैनिक परिषद्» और «स्कूल» के अतिरिक्त गायदार ने «चौथा मैदानी तहख़ाना» (१९३१), «दूर के देश» (१९३२), «सैनिक भेद» (१९३३), «नीला प्याला» (१९३६), «नक़्क़ारची का नसीबा» (१९३७), «चूक और गेक» (१९३८), «जंगल में कुआँ» (१९३९), «तिमूर और उसकी टीम» (१९४०) नामक लंबी कहानियाँ लिखीं।

गायदार के नायकों का कलात्मक संसार भावपूर्ण और यथार्थ है। गायदार की शैली सरल, स्पष्ट, रोमानी और सुस्वर है, कभी-कभी वह कथा-काव्य के ताल से मिलती-जुलती है। साथ ही उनकी कृतियाँ हलके हास्य से, बच्चों के प्रति सहृदयतापूर्ण रवैये से और इनमें पूरे विश्वास से परिपूर्ण हैं।

## ЧУК И ГЕК

### (отры́вок)

Жил челове́к в лесу́ о́коло си́них гор. Он мно́го рабо́тал, но рабо́ты не станови́лось ме́ньше, и ему́ нельзя́ бы́ло уе́хать домо́й в о́тпуск.

Наконе́ц, когда́ наступи́ла зима́, он совсе́м соску́чился и попроси́л разреше́ния у нача́льников написа́ть свое́й жене́ письмо́, что́бы она́ прие́хала с детьми́ к нему́ в го́сти.

Дете́й у него́ бы́ло дво́е — Чук и Гек.

И жи́ли они́ с ма́терью в далёком огро́мном го́роде, кото́рый называ́лся Москва́.

Как ра́з в то вре́мя, когда́ почтальо́н с письмо́м поднима́лся по ле́стнице, Чук с Ге́ком драли́сь.

Я уже́ забы́л, почему́ случи́лась э́та дра́ка*. Но то́лько о́ба бра́та уда́рили друг дру́га кулака́ми и хоте́ли уда́рить ещё оди́н раз, как зазвене́л звоно́к, и они́ с трево́гой посмотре́ли друг на дру́га. Они́ поду́мали, что пришла́ их ма́ма. А у э́той ма́мы был стра́нный хара́ктер. Она́ никогда́ не руга́ла их за дра́ки, никогда́ не крича́ла, а про́сто разводи́ла бра́тьев в ра́зные ко́мнаты на це́лый час и́ли да́же на два́ и не разреша́ла им игра́ть вме́сте. И э́то бы́ло о́чень ску́чно, потому́ что в одно́м ча́се — шестьдеся́т мину́т, а в двух ещё бо́льше.

Вот почему́ о́ба бра́та бы́стро вы́терли слёзы и по-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

бежа́ли открыва́ть дверь. Но э́то была́ не ма́ма, а почтальо́н, кото́рый принёс письмо́.

— Это письмо́ от па́пы! Да, да, от па́пы! И он, наве́рное, ско́ро прие́дет! — закрича́ли о́ба бра́та.

И они́ так развесели́лись, что не заме́тили, как пришла́ их ма́ма.

Она́ о́чень удиви́лась, уви́дев, что о́ба её сы́на лежа́т на спине́ и бьют нога́ми по сте́не так си́льно, что пры́гает карти́на и гудя́т стенны́е часы́ *.

Но когда́ ма́ма узна́ла, отчего́ они́ так ра́дуются, то не ста́ла их руга́ть. Она́ бы́стро сняла́ пальто́ и взяла́ в ру́ки письмо́.

Всем изве́стно, что пи́сьма быва́ют весёлые и гру́стные, поэ́тому, пока́ мать чита́ла письмо́, Чук и Гек внима́тельно смотре́ли на её лицо́.

Снача́ла лицо́ у неё ста́ло гру́стным, и де́ти ста́ли то́же гру́стными. Но пото́м она́ начала́ улыба́ться, и де́ти реши́ли, что письмо́ весёлое.

— Оте́ц не прие́дет, — сказа́ла ма́ма, — у него́ ещё мно́го рабо́ты, и его́ не пуска́ют в Москву́.

Чук и Гек печа́льно посмотре́ли друг на дру́га. Письмо́ оказа́лось печа́льным.

Они́ с удивле́нием смотре́ли на ма́ть, кото́рая улыба́лась.

— Он не прие́дет, — сказа́ла мать, — но он зовёт нас всех в го́сти...

Прошла́ це́лая неде́ля перед те́м, как ма́ма начала́ собира́ться в доро́гу. Чук и Гек то́же собира́лись. Чук сде́лал себе́ кинжа́л из ку́хонного ножа́, а Гек нашёл па́лку, вбил в неё гвоздь, и получи́лась пи́ка, така́я кре́пкая, что е́сли встре́тить в лесу́ медве́дя и уда́рить его́ э́той пи́кой *, то медве́дь сра́зу умрёт.

Наконе́ц, все дела́ бы́ли зако́нчены. И мать пое́хала на вокза́л за биле́тами.

Но без неё Чук и Гек поссо́рились.

Если бы они́ зна́ли, что слу́чится из-за э́той ссо́ры, они́ бы никогда́ не ста́ли ссо́риться!

У Чу́ка была́ металли́ческая коро́бка, в кото́рой он храни́л краси́вую бума́гу, конфе́ты, пти́чьи пе́рья и други́е о́чень ну́жные ве́щи.

У Ге́ка тако́й коро́бки не́ было, но он уме́л петь пе́сни.

И вот как ра́з в то вре́мя, когда́ Чук шёл посмотре́ть, где его́ коро́бка, а Гек в друго́й ко́мнате пел пе́сни, пришёл почтальо́н и принёс телегра́мму для ма́тери.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Чук взял телегра́мму, спря́тал её в коро́бку и пошёл узна́ть, почему́ Гек уже́ не поёт пе́сни, а кричи́т:

— Р-ра, р-ра! Ура́! Эй! Бей!

Чук откры́л дверь и уви́дел, что Гек бьёт свое́й пи́кой по жёлтой коро́бке из-под ма́миных ту́фель, ду́мая, наве́рное, что э́то медве́дь.

А у Чу́ка в э́той коро́бке лежа́ли краси́вые значки́ и де́ньги — со́рок шесть копе́ек, кото́рые он не истра́тил, как Гек, а спря́тал для да́льней доро́ги к па́пе.

Уви́дев всё э́то, Чук схвати́л пи́ку и слома́л её. А Гек схвати́л у Чу́ка коро́бочку с телегра́ммой и вы́бросил её в окно́.

Чук закрича́л:

— Телегра́мма! Телегра́мма! — и без ша́пки побежа́л на у́лицу. За Чу́ком побежа́л Гек.

Но коро́бки, в кото́рой лежа́ла нике́м не прочи́танная телегра́мма, они́ не нашли́.

Верну́вшись домо́й, Чук и Гек до́лго молча́ли. Они́ бо́льше не ссо́рились, потому́ что понима́ли, что ма́ма бу́дет руга́ть их обо́их. Но та́к как Чук был ста́рше Ге́ка на це́лый год, и он боя́лся, что ма́ма бу́дет его́ руга́ть бо́льше, он приду́мал вы́ход:

— Зна́ешь, Гек, дава́й ничего́ не говори́ть ма́ме про телегра́мму.

— Обма́нывать ма́му нельзя́! — отве́тил Гек. — Этого ма́ма не лю́бит бо́льше всего́ на све́те.

— А мы не бу́дем обма́нывать! — ра́достно сказа́л Чук. — Если она́ спро́сит, где телегра́мма, — мы ска́жем. А е́сли она́ не спро́сит, мы са́ми не бу́дем говори́ть об э́том.

— Хорошо́, — сказа́л Гек. — Если нам не ну́жно обма́нывать ма́му, мы так и сде́лаем. Это ты о́чень хорошо́ приду́мал.

Про телегра́мму ма́ма ничего́ не зна́ла, поэ́тому она́ ничего́ не спроси́ла.

И на сле́дующий день они́ уе́хали.

Они́ е́хали о́чень до́лго: ночь, день, пото́м ещё ночь, и вот одна́жды у́тром по́езд подъе́хал к ма́ленькой ста́нции. Они́ вы́шли из него́ и вы́несли ве́щи, и сра́зу по́езд уе́хал.

Чемода́ны лежа́ли на снегу́, на вокза́ле никого́ не́ было, оте́ц не прие́хал их встреча́ть. Наве́рное, он не получи́л телегра́мму об и́х прие́зде.

Тогда́ они́ позва́ли ямщика́ *. Положи́ли в больши́е са́ни * ве́щи, се́ли са́ми, накры́лись от хо́лода тулу́пами * и одея́лами и пое́хали да́льше.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Прощáйте, большúе городá, завóды, фáбрики, стáнции и дерéвни! Тепéрь впередú тóлько лес, гóры и опять густóй тёмный лес.

Онú éхали óчень дóлго, переночевáли в леснóй избýшке* и, наконéц, подъéхали к трём дóмикам, стоявшим на краю́ лéса.

— Приéхали! — сказáл ямщúк.

Очень стрáнно! Не лáяли собáки, нé было вúдно людéй, никтó не топúл пéчи*... На всéх дорóжках лежáл глубóкий снег, а кругóм былá тишинá.

Куда́ же ушлú лю́ди?

Ямщúк пошёл к одномý из дóмиков. Скóро он вернýлся.

— Дом пустóй, но пéчка тёплая. Знáчит, здесь живёт стóрож*. Навéрное, он ушёл на охóту*. Вéчером он вернётся и всё вам расскáжет.

С трудóм онú подъéхали к крыльцý дóмика, от котóрого шла ýзкая дорóжка в лес.

В дóмике бы́ло теплó. Ямщúк пошёл кормúть лошадéй, а мать мóлча раздевáла испýганных детéй.

Вошёл ямщúк, откры́л пéчку.

— Вот в пéчке горшóк* со щáми*. Если бы стóрож ушёл надóлго, он бы вы́нес щи на ýлицу, на хóлод. Знáчит, он скóро вернётся. Но éсли вы не хотúте оставáться здесь, я довезý вас обрáтно на стáнцию беспла́тно...

— Нет, — сказáла мать. — На стáнции нам дéлать нéчего.

Чук и Гек леглú на пéчку и заснýли. Онú не слы́шали, как уéхал ямщúк, как леглá рядом с нúми мать. Онú проснýлись, когдá в дóмике стáло совсéм тёмно. Мать тóже проснýлась, потомý что услы́шала на крыльцé шагú, откры́лась дверь и вошёл стóрож вмéсте с большóй собáкой. Он снял с плечá ружьё*, брóсил нá пол убúтого зáйца* и спросúл:

— Кто ко мнé приéхал?

— Я женá геóлога* Серёгина, — ответúла мать. — А э́то егó дéти. Если нýжно, я могý показáть вам докумéнты.

— Вот онú, докумéнты, — ответúл стóрож, показывая на Чýка и Гéка. — Оба óчень похóжи на отцá, особенно вот э́тот тóлстый. — И он показáл на Чýка.

Чук и Гек обúделись. Чук обúделся потомý, что стóрож назвáл егó тóлстым, а Гек — потомý что дýмал, что он похóж на отцá бóльше, чем Чук.

— Зачéм вы приéхали? — спросúл стóрож. — Я сам

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

отвозил-ся на ста́нцию телегра́мму, в кото́рой бы́ло напи́сано: «Задержи́тесь приезжа́ть на две́ неде́ли. Мы сро́чно ухо́дим в лес». Раз Серёгин написа́л, что ну́жно задержа́ться, то ну́жно задержа́ться. А вы прие́хали.

— Кака́я телегра́мма! Мы никако́й телегра́ммы не получа́ли! — сказа́ла мать. — Де́ти, вы без меня́ не получа́ли телегра́мму?

Чук и Гек молча́ли.

— Отвеча́йте, мучи́тели*! — сказа́ла мать. — Вы, наве́рное, без меня́ получи́ли телегра́мму, а мне её не о́тдали?

Прошло́ ещё не́сколько секу́нд, и Чук с Ге́ком гро́мко запла́кали. А пото́м они́ рассказа́ли, как всё случи́лось.

— Ну что мне с ва́ми де́лать? — гру́стно сказа́ла мать, но руга́ть сынове́й не ста́ла, а начала́ спра́шивать сто́рожа, как им жить да́льше.

Сто́рож сказа́л, что гео́логи сро́чно ушли́ в лес и верну́тся через де́сять дней.

— Ка́к же мы бу́дем жить э́ти де́сять дней? У на́с нет никако́й еды́!

— Ничего́ стра́шного! — отве́тил сто́рож. — Хлеб у меня́ есть, за́йца я уби́л, сва́рите из него́ суп. А я за́втра уйду́ в лес на́ два дня.

— Это нехорошо́, — сказа́ла мать. — Ка́к же мы оста́немся в лесу́ одни́? Мы тут ничего́ не зна́ем, а в лесу́ — зве́ри.

— Я вам оста́влю второ́е ружьё, — сказа́л сто́рож. — Покажу́, где лежи́т соль, где брать во́ду. А мне на́до в лес, я не могу́ тут с ва́ми сиде́ть.

— Како́й он злой, — ти́хо сказа́л Гек.

Сто́рож снял тулу́п и поверну́лся к све́ту. Тут Гек уви́дел, что тулу́п весь рва́ный: от плеча́ к спине́ на нём была́ огро́мная дыра́.

— Где вы так тулу́п разорва́ли? — спроси́л Чук.

— Я поссо́рился с медве́дем*, — отве́тил сто́рож и поста́вил на сто́л горшо́к со ща́ми.

— Слы́шишь, Гек, — сказа́л бра́ту Чук, — он подра́лся с медве́дем и поэ́тому, наве́рное, сего́дня тако́й серди́тый.

Гек слы́шал всё сам. Но ему́ всё равно́ не нра́вился серди́тый сто́рож. Ге́ку каза́лось, что он обижа́ет его́ мать, а он не люби́л, что́бы кто́-нибудь обижа́л его́ мать, хотя́ бы э́то был тако́й челове́к, кото́рый мо́жет подра́ться с сами́м медве́дем.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
Ра́но у́тром сто́рож взял ружьё, позва́л соба́ку, встал на лы́жи и ушёл в лес. Тепе́рь они́ оста́лись одни́.

Втроём они́ пошли́ за водо́й. Пото́м принесли́ дрова́. Мать затопи́ла пе́чку и свари́ла суп из за́йца.

А по́сле обе́да они́ пошли́ гуля́ть. Чук проси́л мать, что́бы она́ взяла́ с собо́й ружьё и́ли хотя́ бы патро́ны от него́, но мать ружьё не взяла́, а пове́сила его́ высоко́ на сте́ну, положи́ла патро́ны на по́лку и сказа́ла Чу́ку, что, е́сли он возьмёт хотя́ бы оди́н патро́н, пусть забу́дет о хоро́шей жи́зни.

Чук покрасне́л и бы́стро ушёл, потому́ что оди́н патро́н уже́ лежа́л у него́ в карма́не.

Это была́ удиви́тельная прогу́лка! Они́ шли по у́зенькой доро́жке к родни́ку. Над ни́ми бы́ло о́чень холо́дное голубо́е не́бо, за ле́сом поднима́лись вверх си́ние го́ры. В моро́зной тишине́ крича́ли пти́цы. Под дере́вьями на снегу́ бы́ли видны́ следы́ незнако́мых звере́й и птиц.

Ра́ньше, когда́ Гек жил в Москве́, ему́ каза́лось, что вся земля́ состои́т из Москвы́: из у́лиц, домо́в, трамва́ев, авто́бусов. Тепе́рь ему́ каза́лось, что вся земля́ состои́т из тёмного высо́кого ле́са...

Прошло́ два дня. Наступи́л тре́тий, а сто́рож из ле́са не возвраща́лся. Ма́ма волнова́лась. На у́тро четвёртого дня они́ дое́ли за́йца. Хлеб конча́лся, поэ́тому на обе́д они́ свари́ли ка́шу * без ма́сла.

По́сле тако́го обе́да Гек был гру́стный, и ма́тери показа́лось, что он заболе́л.

Она́ оста́вила Ге́ка до́ма, оде́ла Чу́ка и пошла́ с ним за водо́й.

Гек оста́лся оди́н. Он так до́лго ждал, что ему́ ста́ло ску́чно и он на́чал что́-то приду́мывать...

...А мать и Чук ходи́ли за водо́й действи́тельно до́лго. На обра́тном пути́ они́ урони́ли вёдра, пришло́сь идти́ к родни́ку * опя́ть. Пото́м оказа́лось, что Чук оста́вил о́коло родника́ ва́режку *, они́ опя́ть верну́лись и до́лго её иска́ли. Пока́ они́ иска́ли ва́режку, на́чало темне́ть.

Когда́ они́ верну́лись в дом, Ге́ка там не́ было. Снача́ла они́ поду́мали, что Гек спря́тался на пе́чке. Но и там его́ не́ было. Под пе́чкой Ге́ка то́же не́ было...

Мать испуга́лась, посмотре́ла на гво́здь, вби́тый в сте́ну у две́ри. Но на гвозде́ не́ было тёплой оде́жды Ге́ка...

Тогда́ мать доста́ла патро́ны, кри́кнула Чу́ку, что́бы он никуда́ не выходи́л из до́ма, и побежа́ла во дво́р.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Где иска́ть. Ге́ка, мать не зна́ла, но она́ побежа́ла к доро́ге, та́к как дума́ла, что Гек побои́тся идти́ но́чью в лес.

На доро́ге бы́ло пу́сто.

Мать вы́стрелила. Послу́шала, а пото́м вы́стрелила ещё раз. Вдруг совсе́м недалеко́ кто́-то вы́стрелил в отве́т. Кто́-то бежа́л ей на по́мощь.

В э́то вре́мя с крыльца́ до́ма она́ услы́шала крик Чу́ка. Чук, услы́шав вы́стрелы, поду́мал, что во́лки, кото́рые уже́ съе́ли Ге́ка, тепе́рь хотя́т съесть его́ мать.

Услы́шав крик Чу́ка, мать бро́сила ружьё и побежа́ла к до́му. Она́ толкну́ла разде́того Чу́ка в тёплую ко́мнату, а сама́ начала́ пить холо́дную во́ду.

У вхо́да разда́лся шум, откры́лась дверь, в избу́ вбежа́ла соба́ка, за не́й вошёл сто́рож.

— Что случи́лось? — спроси́л он не раздева́ясь.

— Потеря́лся ма́льчик, — сказа́ла мать. Слёзы полили́сь из её глаз, и она́ ничего́ бо́льше не могла́ сказа́ть.

— Подожди́, не пла́чь! — закрича́л сто́рож. — Когда́ потеря́лся? Давно́? Неда́вно?

— Час наза́д. Мы ходи́ли за водо́й, верну́лись, а его́ уже́ нет. Он оде́лся и куда́-то ушёл.

— За ча́с он далеко́ не уйдёт, — сказа́л сто́рож. — А в тёплой оде́жде не замёрзнет... Ко мне́, Сме́лый! — позва́л он соба́ку. — На!

Сто́рож взял ша́пку Ге́ка и дал соба́ке её понюха́ть.

Соба́ка понюха́ла ве́щи, у́мными глаза́ми посмотре́ла на сто́рожа, пото́м пошла́ в у́гол избы́ к большо́му я́щику и положи́ла на я́щик ла́пу.

Сто́рож о́тдал своё ружьё ма́тери, подошёл и откры́л я́щик.

В я́щике, накры́тый свое́й оде́ждой, споко́йно спал Гек.

Ока́зывается, когда́ мать с Чу́ком ушли́ за водо́й, Гек реши́л пошути́ть *. Он взял свои́ тёплые ве́щи и спря́тался в я́щик, что́бы стра́шно закрича́ть из него́, когда́ мать с Чу́ком верну́тся в дом, и напуга́ть их. Но так как Чук с ма́терью ходи́ли о́чень до́лго, то Гек незаме́тно засну́л...

Вдруг сто́рож подошёл к столу́ и положи́л на него́ тяжёлый ключ и голубо́е письмо́.

— Вот, — сказа́л он. — Это вам. Это ключ от ко́мнаты Серёгина, а э́то письмо́ от него́. Он вернётся со все́ми остальны́ми через четы́ре дня, как ра́з к Но́вому го́ду.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
Так вот куда́ ходи́л э́тот стари́к! Он про́сто сказа́л, что ему́ ну́жно в лес, а сам бе́гал на лы́жах далеко́-далеко́ к па́пе!

Тепе́рь в до́ме ста́ло ве́село. На сле́дующий день они́ откры́ли па́пину ко́мнату. Ко́мната была́ больша́я и све́тлая, но в ней был о́чень большо́й беспоря́док.

Це́лый день мать убира́ла ко́мнату, всё мы́ла. А на сле́дующий день они́ реши́ли идти́ в лес за ёлкой *. Мать попроси́ла у сто́рожа топо́р, но он ничего́ ей не отве́тил, а встал на лы́жи и ушёл в лес. Через полчаса́ он верну́лся с ёлкой. И пусть игру́шки для ёлки бы́ли самоде́льные и не таки́е краси́вые, как в моско́вских магази́нах, но зато́ тако́й ёлки не́ было ни у кого́ в Москве́! Это была́ настоя́щая лесна́я краса́вица — вы́сокая, густа́я, прямая!

Четы́ре дня прошли́ незаме́тно. В после́дний день декабря́ Чук и Гек совсе́м не заходи́ли в дом. Они́ хоте́ли пе́рвыми уви́деть па́пу.

И уви́дели. Из ле́са вы́бежали соба́ки, а за ни́ми все уви́дели де́вять лы́жников. Они́ уви́дели на крыльце́ мать, Чу́ка и Ге́ка и закрича́ли «ура́!» Тогда́ Чук и Гек побежа́ли навстре́чу высо́кому борода́тому челове́ку, кото́рый гро́мче всех крича́л «ура́».

А ве́чером все встреча́ли Но́вый год. И все о́чень краси́во танцева́ли, осо́бенно, когда́ приглаша́ли ма́му.

А оте́ц танцева́ть не уме́л. Он посади́л к себе́ на коле́ни Чу́ка и Ге́ка, и они́ гро́мко хло́пали в ладо́ши.

А пото́м Гек спел всем пе́сню. Это была́ о́чень хоро́шая пе́сня, потому́ что лю́ди, слу́шая её, замолча́ли.

А когда́ Гек зако́нчил петь, все зашуме́ли, закрича́ли и на́чали броса́ть Ге́ка к потолку́.

— Тепе́рь все сади́тесь, — сказа́л оте́ц, посмотре́в на часы́. — Сейча́с начнётся са́мое гла́вное.

Все се́ли и замолча́ли. Снача́ла бы́ло ти́хо. Пото́м все услы́шали звон. Звони́ли больши́е и ма́ленькие колокола́.

Чук и Гек посмотре́ли друг на дру́га. Они́ зна́ли, что э́то игра́ют часы́ в далёкой Москве́, под кра́сной звездо́й на Спа́сской ба́шне Кремля́ *.

И э́тот звон слу́шают сейча́с лю́ди и в города́х, и в гора́х, и в леса́х, и на си́нем мо́ре.

И тогда́ все вста́ли и ещё раз поздра́вили * друг дру́га с Но́вым го́дом и пожела́ли друг дру́гу сча́стья.

Что тако́е сча́стье — э́то ка́ждый понима́л по́-своему. Но все вме́сте лю́ди зна́ли и понима́ли, что на́до

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
чéстно жить, мнóго трудúться и óчень любúть своё зéмлю.

### टिप्पणियाँ

стенны́е часы́ — दीवार की घड़ी
пи́ка — भाला, बरछा
ямщи́к — गाड़ीवान
са́ни — स्लेज, बर्फ़-गाड़ी
тулу́п — भेड़ की खाल का ओवरकोट
избу́шка — लकड़ी का छोटा देहाती घर
топи́ть печь — अँगीठी जलाना
сто́рож — चौकीदार
охо́та — शिकार
горшо́к — मटका
щи — बंद-गोभी का सूप
ружьё — बंदूक़
за́яц — ख़रगोश
гео́лог — भू-विज्ञानी
мучи́тель — (यहाँ) उत्पीड़क
медве́дь — भालू
ка́ша — दलिया
родни́к — झरना, चश्मा
ва́режки — ऊनी दस्ताने
пошути́ть — मज़ाक़ करना
ёлка — क्रिसमस-ट्री
часы́ на Спа́сской ба́шне Кремля́ — क्रेमलिन की स्पास्स्की मीनार पर लगी घड़ी
поздравля́ть — बधाई देना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Михаил Шолохов
मिख़ाईल शोलोख़ोव
(१९०५-१९८४)

«मैं उन लेखकों में से एक हूँ जो श्रमिक जनता की अपने क़लम से सेवा करने की अबाध संभावना में अपने लिए सर्वोपरि गौरव और स्वतंत्रता देखते हैं।» – अपने बारे में शोलोख़ोव ने लिखा।

मिख़ाईल अलेक्सान्द्रोविच शोलोख़ोव का जन्म दोन प्रांत के वेशेन्स्काया गाँव में हुआ था। वह सोवियत देश के जीवन की सभी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं के, महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध और समाजवाद के निर्माण के काल के प्रत्यक्षदर्शी थे।

अपने लोक-तत्व, नागरिक दायित्व और महाकाव्यात्मकता के लिए प्रसिद्ध रूसी क्लासिकीय साहित्य की श्रेष्ठतम परंपराओं को उन्होंने सोवियत साहित्य में आगे बढ़ाया।

शोलोख़ोव की कृतियाँ सोवियत सघ में ही नहीं, संसार के अनेक देशों में जानी जाती हैं। पचास से भी अधिक वर्षों तक वह साहित्यिक सृजन करते रहे। इस काल के शुरू में ही समीक्षकों ने उनके «दोन की कहानियाँ» (१९२६) संग्रह के गहरे मनोवैज्ञानिक तत्वों का उल्लेख किया था तथा इन कहानियों की रचनात्मक स्पष्टता और जीवन की सच्चाई दिखाने के प्रयास को सराहा था। शोलोख़ोव ने नये संसार के जन्म और इस अश्रुतपूर्व समाज में नये मानव के जन्म का विषय लेकर साहित्य में प्रवेश किया। उनके उपन्यासों «धीरे बहे दोन रे» (१९२८--१९४०) और «कुँआरी धरती ने ली अँगड़ाई» (पहला भाग – १९३२, दूसरा भाग – १९६०) का यथार्थवाद और इनका बहुलयात्मक गद्य, इनमें स्वभावों और चरित्रों की सारी विविधता के साथ श्रमिक जनता का वर्णन, मानव-अनुभूतियों की बहुरूपता, नैतिक, दार्शनिक, सामाजिक, मानवतावादी समस्याओं की प्रस्तुति तथा उच्च कलात्मक निपुणता शो-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोख़ोव की कृतियों को विश्व-साहित्य की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं के बीच ला खड़ा कर देते हैं।

शोलोख़ोव एक निराले शैलीकार हैं। उनकी रचनाओं में काव्यात्मकता, हास्य, रूसी प्रकृति के अनुपम दृश्य – सब-कुछ मिलता है। पात्रों की भाषा सजीव और मुहावरेदार है।

«कुँआरी धरती ने ली अँगड़ाई» उपन्यास के लिए शोलोख़ोव को १९६० में लेनिन पुरस्कार मिला और १९६४ में «धीरे बहे दोन रे» उपन्यास के लिए – नोबल पुरस्कार।

महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध के समय शोलोख़ोव ने «...जो देश के लिए लड़े» उपन्यास लिखना शुरू किया जिसमें फ़ासिज़्म के विरुद्ध संघर्ष के कठिन वर्षों में सोवियत लोगों की वीरता का चित्रण किया।

१९५६-१९५७ में शोलोख़ोव ने «इनसान का नसीबा» कहानी लिखी जो छपते ही सोवियत साहित्य की एक महत्वपूर्ण घटना हो गयी। इसमें लेखक ने रूसी आदमी का यह अद्भुत गुण दिखाया कि किस प्रकार वह कठोरतम परिस्थितियों में भी अपना मनोबल, अपनी सहृदयता और मानवता बनाये रखता है।

उन्हें दो बार «समाजवादी श्रम-वीर» की उपाधि से सम्मानित किया गया और अकादमीशियन निर्वाचित किया गया। वह देश के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ता भी थे। वह सोवियत लेखक-संघ के संचालन-मंडल के सदस्य, विश्व शांति-परिषद् के सदस्य थे। वह दोन तटीय रोस्तोव और लाइपत्सिग विश्वविद्यालयों के मानद साहित्य-वारिधि (डाक्टर-ऑफ़-लेटर्स) भी थे।

## ПОДНЯТАЯ ЦЕЛИНА *

(отры́вки из рома́на)

Деся́того ма́рта ве́чером на Гремя́чий Лог опусти́лся тума́н. До утра́ с крыш домо́в текла́ вода́ от раста́явшего сне́га, дул мо́крый и тёплый ве́тер. Это была́ пе́рвая весе́нняя ночь. По́здно у́тром поднялся́ тума́н, ста́ло ви́дно не́бо и со́лнце, почерне́ла доро́га, а к середи́не дня све́тлая, прозра́чная, как слёзы, сне́жная вода́ потекла́ по ни́зким места́м в сады́, покрыва́я прошлого́днюю траву́.

Дня через два́ уже́ показа́лась из сне́га земля́, вода́ ста́ла гря́зной, она́ несла́ с собо́й ко́рни, траву́, зе́млю.

В Гремя́чем Логу́ вы́шла из берего́в ре́чка *. Отку́да-то све́рху плы́ли по не́й голубы́е куски́ льда, кружа́сь, как огро́мные ры́бы. Иногда́ льди́ны заплыва́ли

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
в сады́ и плы́ли ме́жду дере́вьями, лома́я их и наклоня́я к земле́.

За ху́тором темне́ла освобождённая от сне́га земля́. В дневны́е часы́ над сте́пью стоя́ла вели́кая тишина́. Свети́ло со́лнце, звуча́ли пе́рвые пе́сни птиц. Острые зелёные ли́стья травы́ стреми́лись вверх, тяну́лись к светоно́сным луча́м.

К пятна́дцатому ма́рта в Гремя́чем Логу́ был целико́м со́бран семенно́й фонд*. Колхо́зники до ве́рха напо́лнили шесть амба́ров*. В ку́знице* Ипполи́та Ша́лого до темноты́ продолжа́лась рабо́та, греме́ли инструме́нты*. А шестна́дцатого ма́рта ве́чером в зда́нии шко́лы Давы́дов на глаза́х у все́х колхо́зников подари́л ему́ свои́, привезённые из Ленингра́да, инструме́нты и сказа́л таку́ю речь:

— На́шему дорого́му кузнецу́, това́рищу Ипполи́ту Си́доровичу Ша́лому, за его́ уда́рную рабо́ту*, мы — правле́ние колхо́за* — да́рим э́ти инструме́нты.

Давы́дов по слу́чаю торже́ственного собра́ния был оде́т в чи́стую руба́шку. Он взял со стола́ разло́женные на кра́сном материа́ле инструме́нты, а Андре́й Разме́тнов вы́вел на сце́ну кра́сного от волне́ния Ипполи́та.

— Това́рищ Ша́лый к сего́дняшнему дню на сто́ проце́нтов зако́нчил ремо́нт! Получи́, дорого́й наш това́рищ, наш бра́тский пода́рок, что́бы ты в бу́дущем та́к же уда́рно рабо́тал, что́бы вся те́хника* в на́шем колхо́зе всегда́ хорошо́ рабо́тала. И вы, дороги́е гра́ждане, должны́ так же уда́рно рабо́тать в по́ле, то́лько тогда́ нас мо́жно бу́дет назва́ть настоя́щим колхо́зом на́шей страны́.

С э́тими слова́ми Давы́дов заверну́л в трёхметро́вый кусо́к кра́сного материа́ла пода́рок и дал его́ Ша́лому. Ша́лый дрожа́щими рука́ми взял кра́сный свёрток, а в шко́ле начался́ шум:

— Пра́вильно, он хорошо́ рабо́тал!

— И инструме́нты получи́л в пода́рок, и жене́ материа́л на пла́тье!

Дед Щука́рь закрича́л свои́м гро́мким го́лосом:

— Чего́ же ты стои́шь мо́лча? Отвеча́й, говори́! Речь говори́!

Предложе́ние Щукаря́ поддержа́ли и в шу́тку ста́ли крича́ть:

— Посмотри́те, у него́ от стра́ха но́ги дрожа́т!

— Он от ра́дости язы́к проглоти́л!*

— Говори́ть трудне́е, чем инструме́нты ремонти́ровать!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Но Андре́й Размётнов, люби́вший все́кие пра́здники и руководи́вший на э́тот раз, успоко́ил наро́д:

— Ти́хо! Да́йте челове́ку поду́мать! — Он поверну́лся к Ипполи́ту, толкну́л его́ и ти́хо сказа́л:

— Вдохни́ побо́льше во́здуха и говори́. Длинне́е говори́, как учёный. Ты у на́с сего́дня геро́й и речь до́лжен сказа́ть большу́ю.

Ипполи́т Ша́лый, никогда́ в жи́зни не говори́вший больши́х речёй, никогда́ не получа́вший пода́рков в торже́ственной обстано́вке, о́чень волнова́лся. У него́ дрожа́ли ру́ки, кото́рыми он прижима́л к груди́ кра́сный свёрток, дрожа́ли но́ги, всегда́ так твёрдо стоя́вшие в ку́знице во вре́мя тяжёлой рабо́ты...

Он вы́тер рукаво́м лицо́ и ти́хо сказа́л:

— Инструме́нты э́ти мне о́чень нужны́... Спаси́бо и ещё раз спаси́бо! А материа́л э́тот мое́й жене́ то́же о́чень ну́жен...

Он в волне́нии на́чал иска́ть глаза́ми жену́, наде́ясь, что она́ ему́ помо́жет, но не нашёл, вздохну́л и зако́нчил свою́ непросту́ю речь:

— И за инструме́нты и за материа́л вам, това́рищ Давы́дов, и всему́ колхо́зу спаси́бо!

Размётнов уви́дел, что взволно́ванная речь Ша́лого прихо́дит к концу́, на́чал де́лать кузнецу́ * зна́ки рука́ми, что́бы он продолжа́л. Ша́лый не хоте́л замеча́ть э́ти зна́ки и, поклони́вшись, пошёл со сце́ны, неся́ пода́рок на рука́х, как но́сят ма́леньких дете́й.

Нагу́льнов бы́стро снял с головы́ ша́пку и махну́л руко́й. Орке́стр, состоя́вший из скри́пки и двух балала́ек *, на́чал игра́ть «Интернациона́л *».

На дворе́ колхо́зного правле́ния бы́ло ти́хо. Колхо́зник Люби́шкин въе́хал во дво́р верхо́м на ма́ленькой лоша́дке. Он был злым и невесёлым. Не заезжа́я домо́й, он пое́хал в правле́ние. Для высо́кого Люби́шкина лоша́дка была́ мала́, и Дёмка Ушако́в, сиде́вший на крыльце́, засмея́лся.

— Ты но́ги подними́ вы́ше, а то ты и́ми е́дешь по земле́! — закрича́л он.

Не отвеча́я Дёмке, Люби́шкин слез с ло́шади и стро́го спроси́л:

— Давы́дов здесь?

— Здесь. Сиди́т, скуча́ет без тебя́. Тре́тий день не пьёт, не ест, всё вре́мя спра́шивает: «Где мой Люби́шкин? Жить без него́ не могу́!» — отве́тил Дёмка.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Е́сли ты ска́жешь ещё что́-нибудь, — рассерди́лся Любу́шкин, — я наступлю́ тебе́ на язы́к.

Дёмка замолча́л, а Любу́шкин вошёл в правле́ние.

Давы́дов и Размётнов разгова́ривали с же́нщинами о постро́йке де́тского са́да. Любу́шкин подожда́л, пока́ же́нщины вы́шли, подошёл к столу́.

— Я прие́хал из брига́ды *...

— Заче́м прие́хал? — спроси́л Давы́дов.

— У на́с ничего́ не получа́ется! У меня́ в брига́де два́дцать во́семь челове́к. Я ничего́ не могу́ с ни́ми сде́лать. Рабо́тает оди́н Кондра́т Майда́нников, а остальны́е — го́ре, а не рабо́тники *. Немно́го рабо́тают, сидя́т и ку́рят.

— Ско́лько вы успева́ете вспаха́ть * в день?

— Майда́нников и я мно́го успева́ем, а остальны́е... Если мы так бу́дем паха́ть, то ничего́ не успе́ем.

Давы́дов мо́лча постуча́л карандашо́м об сто́л. Спроси́л:

— Так заче́м же ты прие́хал? Что́бы мы тебе́ слёзы вы́терли?

Любу́шкин рассерди́лся.

— Я не за э́тим прие́хал. Ты мне до́лжен дать ещё люде́й и те́хники.

Давы́дов да́же рассерди́лся.

— Ты плохо́й бригади́р, е́сли не уме́ешь с людьми́ рабо́тать. Где у тебя́ дисципли́на?

— Нет у меня́ дисципли́ны! У меня́ Атаманчуко́в говори́т всем, что́бы из колхо́за уходи́ли. А е́сли я его́ вы́гоню из брига́ды, за ни́м пойду́т остальны́е. А каки́х ты мне люде́й в брига́ду дал? Де́да Щукаря́ быки́ не слу́шаются, я его́ назна́чил кашева́ром *, дал ему́ са́ло *, что́бы он с ним ка́шу свари́л, а он са́ло съел сам, а ка́шу пересоли́л *. Ну что мне с ним де́лать? Не могу́ я бо́льше быть бригади́ром, снима́йте меня́ *!

— Мы зна́ем, когда́ тебя́ мо́жно бу́дет снять, — сказа́л Давы́дов. — А сейча́с поезжа́й в брига́ду, и ну́жно, что́бы к ве́черу бы́ло вспа́хано всё за сего́дняшний день *. Часа́ через два́ я прие́ду и прове́рю. Иди́.

Как то́лько Любу́шкин уе́хал, Давы́дов вы́шел во дво́р и сказа́л Дёмке:

— Я уезжа́ю на не́сколько дней во вторую́ брига́ду, а тебя́ оставля́ю замести́телем. Если что́-нибудь случи́тся — приезжа́й ко мне́. Скажи́ Размётнову, что́бы он сейча́с зашёл ко мне́ домо́й.

Размётнов ско́ро подъе́хал к до́му Давы́дова.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Что э́то у тебя́? — спроси́л он, уви́дев у Давы́дова свёрток.

— Бельё.

— Како́е бельё? Заче́м?

— Я е́ду в брига́ду и бу́ду там, пока́ не ко́нчат паха́ть.

— Что ты там бу́дешь де́лать?

— Паха́ть.

— Уе́дешь из правле́ния и пое́дешь паха́ть? Ты ду́маешь, что они́ без тебя́ не мо́гут? Ты до́лжен руководи́ть, а не ходи́ть за плу́гом. Ты — председа́тель колхо́за!

— Я снача́ла коммуни́ст, а пото́м уже́ председа́тель колхо́за *. У меня́ ги́бнет па́хота *, а я тут бу́ду сиде́ть? Пое́хали!

Вы́ехав из ху́тора *, Размётнов сказа́л:

— Ты, Давы́дов, де́лаешь глу́пость. Ты до́лжен им показа́ть, как на́до рабо́тать и е́хать обра́тно. Хоро́ший руководи́тель не до́лжен сам рабо́тать, он до́лжен руководи́ть, вот что я тебе́ скажу́!

— Я до́лжен научи́ть их рабо́тать, и я научу́. Это и есть руково́дство! Я зна́ю хоро́ших руководи́телей! Они́ в тру́дную мину́ту всем приме́р пока́зывают.

До́лго они́ е́хали мо́лча. Над землёй показа́лись облака́. По края́м они́ бы́ли бе́лые, а в середи́не — тяжёлые и тёмные. Земля́ ждала́ дождя́. Ве́тер уже́ принёс за́пах дождево́й воды́. А через мину́ту пошёл дождь, засверка́ла мо́лния, загреме́л гром.

Неожи́данно Размётнов заме́тил иду́щего навстре́чу челове́ка. Он шёл без доро́ги, пры́гал через я́мы, иногда́ начина́л бежа́ть. Ещё издалека́ Размётнов узна́л де́да Щукаря́. Бы́ло ви́дно, что со Щукарём что́-то случи́лось. Во́лосы у него́ на голове́ бы́ли мо́крые, он был бле́дным и о́чень испу́ганным, и Давы́дов поду́мал, что в брига́де случи́лось како́е-то несча́стье.

— Что случи́лось? — спроси́л он.

— Я от сме́рти ушёл, — сказа́л Щука́рь. — Меня́ уби́ть хоте́ли.

— Кто?

— Любишкин и все остальны́е.

— За что́?

— За ка́шу...

— Иди́ домо́й, я узна́ю в чём де́ло, — сказа́л Давы́дов, успоко́ившись.

...А за полчаса́ до э́того случи́лось во́т что. Дед Щу-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ка́рь, кото́рый вчера́ пересоли́л ка́шу, реши́л, что до́лжен пригото́вить что́-нибудь вку́сное. Он пошёл в дере́вню, переночева́л там, а у́тром по пути́ обра́тно спря́тался о́коло до́ма крестья́нина Красноку́това и стал ждать. План у де́да Щукаря́ был о́чень прост. Он хоте́л укра́сть ку́рицу, свари́ть ка́шу с куря́тиной * для все́й брига́ды. И тогда́ его́ начну́т уважа́ть и люби́ть.

Щука́рь пря́тался и ждал уже́ полчаса́, но ку́ры не подходи́ли туда́, где он сиде́л. Тогда́ он на́чал их ти́хо звать.

Стари́к Краснокутов, кото́рый был недалеко́, услы́шал Щукаря́ и уви́дел, как он схвати́л ку́рицу за́ ногу и спря́тал в мешо́к.

Краснокутов вы́шел к Щукарю́ и спроси́л:

— Кур вору́ешь?

Щука́рь испуга́лся, вы́ронил из ру́к мешо́к с ку́рицей и сказа́л:

— Здра́вствуйте, Афана́сий Петро́вич!

— Здра́вствуй. Зна́чит, кур вору́ешь?

— Я шёл ми́мо, — на́чал Щука́рь, — и уви́дел таку́ю краси́вую ку́рицу, что мне захоте́лось посмотре́ть на неё побли́же. Я мно́го про́жил, но таки́х краси́вых ещё не ви́дел.

Краснокутов отве́тил:

— Не обма́нывай! Кур в мешке́ не разгля́дывают. Говори́, заче́м хоте́л укра́сть?

И Щука́рь рассказа́л ему́, что хоте́л свари́ть ка́шу с куря́тиной для все́й брига́ды. К его́ удивле́нию, Краснокутов не рассерди́лся, а наоборо́т, сказа́л, что для па́харей * он мо́жет дать ещё одну́ ку́рицу.

Очень дово́льный Щука́рь пойма́л ещё одну́ ку́рицу и бы́стро пошёл в брига́ду.

Через два́ часа́ ка́ша уже́ была́ гото́ва. Еди́нственное, чего́ боя́лся Щука́рь — э́то того́, что ка́ша бу́дет невку́сной, потому́ что во́ду он взял из пруда́, в кото́ром росла́ трава́. Но все е́ли ка́шу и о́чень хвали́ли. А бригади́р Люби́шкин сказа́л:

— В жи́зни не ел тако́й вку́сной ка́ши. Спаси́бо тебе́ от все́й брига́ды!

Ка́ша бы́стро конча́лась. Не́которые уже́ на́чали достава́ть со дна́ куски́ кури́ного мя́са. Вот тогда́ и случи́лось то, что навсегда́ испо́ртило карье́ру де́да Щукаря́... Люби́шкин доста́л кусо́чек мя́са, посмотре́л на него́ и побледне́л.

— Что э́то тако́е? — спроси́л он у де́да.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Наве́рное, кури́ное кры́лышко *, — споко́йно отве́тил дед.

— Кры́лышко? Посмотри́ сюда́!

— Бра́тцы! — закрича́л Аки́м Бесхле́бнов. — Мы лягу́шку съе́ли!

Одна́ из же́нщин, закры́в лицо́ рука́ми, убежа́ла. Мужчи́ны засмея́лись, а возмущённый Аки́м закрича́л:

— Како́й мо́жет быть смех! Бей Щукаря́!

Люби́шкин то́же не вы́держал. Он схвати́л в ру́ки ло́жку и закрича́л:

— Я кра́сный партиза́н *, а ты меня́ лягу́шками ко́рмишь?

Щукарю́ показа́лось, что в рука́х у Люби́шкина нож, и он бро́сился бежа́ть...

Давы́дов узна́л об э́том, когда́ прие́хал в брига́ду.

Ве́чером, когда́ все собрали́сь, Давы́дов сказа́л:

— Задаю́ брига́де вопро́с: как быть с колхо́зником, кото́рый обма́нывает колхо́з и сове́тскую власть и не выполня́ет но́рму * в хоро́шую пого́ду и в дождь?

— Вы́гнать из колхо́за! — сказа́л Люби́шкин.

С ним согласи́лись же́нщины.

— Тако́й колхо́зник есть среди на́с. Вот он! — Давы́дов показа́л на Атаманчукова. Дава́йте голосова́ть. Кто за то́, что́бы Атаманчукова вы́гнать из колхо́за?

Из двадцати́ семи́ челове́к два́дцать три проголосова́ли «за *». Давы́дов пересчита́л по́днятые ру́ки и сказа́л:

— Уходи́. Тепе́рь ты не колхо́зник. А через го́д мы посмо́трим, е́сли ты бу́дешь рабо́тать лу́чше, мы при́мем тебя́ обра́тно.

— Тепе́рь, това́рищи, послу́шайте меня́! Вы все рабо́таете пло́хо, о́чень пло́хо! Никто́ не выполня́ет но́рму, кро́ме това́рища Майда́нникова. На́до рабо́тать по-друго́му.

— Это сли́шком больша́я но́рма, — сказа́л Аки́м Бесхле́бнов. — На́ши быки́ не мо́гут её вы́полнить.

— А почему́ быки́ Майда́нникова мо́гут? — спроси́л Давы́дов. — Я остаю́сь в ва́шей брига́де, беру́ быко́в Атаманчукова и покажу́ вам, что мо́жно вспаха́ть земли́ бо́льше но́рмы!

Но́чью Давы́дов спал пло́хо. Он ча́сто просыпа́лся. Мо́жет быть, потому́, что шуме́л ве́тер, мо́жет быть, потому́, что бы́ло хо́лодно. Ра́но у́тром его́ разбуди́л Кондра́т Майда́нников. Давы́дов умы́лся, а Майда́нников говори́л:

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
— За день вспахать больше нормы очень трудно. Сможем ли мы?

— Всё в наших руках!* — ответил Давыдов, а сам подумал: «Умру, но сделаю. Ночью буду пахать, если не успею. По-другому нельзя — позор всему рабочему классу!»

— Вы когда-нибудь пахали? — спросил Майданников.

— Нет, никогда. Ты мне покажи, я пойму.

— Я помогу вам, пройду немного рядом с вами, а потом вы сами научитесь, — сказал Кондрат и улыбнулся.

Перед завтраком Давыдов вспахал немного. Он поел, покормил быков и сказал Кондрату:

— Начинаем? Я готов.

И снова полоса за полосой вспаханной земли, солнце ещё высоко, а у быков уже мокрая от пота шерсть.

— Ну, сколько успел? — спросили у Давыдова, когда он, падая от усталости, вечером пришёл в бригаду. — Половину нормы выполнил?

— Нет, больше нормы! — улыбнулся Давыдов чёрными от земли губами.

В эту ночь Давыдов не слышал ни ветра, ни разговоров — он спал как мёртвый. Только ранним утром он проснулся и увидел подходившего к нему Кондрата Майданникова.

— Где ты был? — спросил Давыдов.

— Я кормил своих и твоих быков, — ответил Майданников. — Там внизу очень хорошая трава выросла...

Голос Майданникова начал удаляться от Давыдова, потому что он опять засыпал...

В этот вечер многие из бригады выполнили норму.

На следующий день к вечеру норму выполнили уже все. После ужина Давыдов сказал:

— У нас во второй бригаде началось настоящее социалистическое соревнование*. За работу бригаде от колхоза — большое спасибо! Мы доказали, что норму можно выполнить. И особенное спасибо ударнику Кондрату Майданникову!

Женщины вымыли посуду, все легли спать, быков погнали кормить свежей травой, и Кондрат начал уже засыпать, когда жена спросила его:

— А что это такое — ударник?

— Ударник? — переспросил Кондрат, не зная, как ответить. Но не ответить было нельзя и он сказал:

— Вот, например, у ружья есть деталь, которая

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
стреля́ет. Она́ в руке́ са́мая гла́вная. Так и в колхо́зе — уда́рник * са́мый гла́вный челове́к. Поняла́?

**टिप्पणियाँ**

по́днятая целина́ — पहली बार जोती हुई भूमि
вы́шла из берего́в ре́чка — नदी में बाढ़ आ गयी
семенно́й фонд — बोने के बीज
амба́р — अंबार
ку́зница — लोहारख़ाना
инструме́нты — औज़ार
уда́рная рабо́та — तूफ़ानी काम
правле́ние колхо́за — सामूहिक फ़ार्म का प्रबंध-मंडल
те́хника — ( यहाँ ) कृषि के औज़ार
Он от ра́дости язы́к проглоти́л! — ख़ुशी के मारे उसके मुँह से बोल नहीं निकल रहे !
кузне́ц — लोहार
балала́йка — बलालाइका ( रूसी तारदार बाजा )
«Интернациона́л» — «इंटरनेशनल» ( अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा-वर्ग का गीत )
брига́да — टोली , टीम
го́ре, а не рабо́тники — निकम्मे कमेरे
вспаха́ть — जोतना , हल चलाना
бригади́р — टोली का मुखिया , टीम-लीडर
кашева́р — रसोइया
са́ло — चरबी
пересоли́ть — ज़्यादा नमक डालना
снима́йте меня́ — मुझे बरख़ास्त देना
всё за сего́дняшний день — दिन का पूरा कोटा
председа́тель колхо́за — सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष
па́хота ги́бнет — जोताई ख़राब हो रही है
ху́тор — छोटा गाँव
куря́тина — मुर्ग़ी का गोश्त
па́харь — हलवाहा
кры́лышко — पंख
ляга́шка — मेंढक
кра́сный партиза́н — लाल छापामार जो गृह-युद्ध के समय (१९१८-१९२०) मोर्चे के पीछे सोवियत शासन के शत्रुओं के विरुद्ध लड़ता था

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

выполня́ть но́рму — उत्पादन का कोटा पूरा करना

проголосова́ть «за» — [हाथ उठाकर] प्रस्ताव के पक्ष में मत (वोट) देना

Всё в на́ших рука́х! — सब हम पर निर्भर है!

социалисти́ческое соревнова́ние — समाजवादी प्रतियोगिता (प्रतियोगिता का नया रूप जब समस्त कर्मी अपने काम का अच्छे से अच्छा परिणाम पाने की कोशिश करते हैं; सोवियत समाज के विकास की एक प्रेरक शक्ति)

уда́рник — तूफ़ानी कर्मी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

## Вера Панова
## वेरा पानोवा
## (१९०५-१९७३)

वेरा फ़ेदोरोव्ना पानोवा चरित्रों के सूक्ष्म वर्णन, मधुर और शांत शैली की निपुण कलाकार थीं। साधारण से साधारण लोग जिनमें पहली नज़र में कोई विशेषता नहीं है, लेकिन जो असल में खुले और सच्चे दिल के तथा जोशीले और भावपूर्ण लोग हैं, पानोवा का ध्यान सदा आकर्षित करते थे। इन्हें ही उन्होंने अपनी श्रेष्ठ कृतियों «हमराह» (१९४६), «क्रुझीलिखा» (१९४७), «वर्ष की ऋतुएँ» (१९५३), «निरभ्र तीर» (१९५३) के नायक बनाया।

पानोवा ने अपनी रचनाओं में आधुनिक काल के सबसे महत्वपूर्ण सवाल उठाये : मनुष्य और समाज तथा पीढ़ियों के सहसंबंध के सवाल। मानसिक मूल्यों के शाश्वत महत्व के बारे में उन्होंने लिखा और लगभग सभी कृतियों में नयी पीढ़ी के पालन-पोषण की समस्याओं पर विचार किया। पानोवा ने इस सिलसिले में अपना एक प्रगीतात्मक और हृदयस्पर्शी लघु-उपन्यास «सेर्योझा» (१९५५) लिखा। नयी पीढ़ी के प्रशिक्षण-संबंधी प्रश्नों में पानोवा ने जो रुचि ली उसे लेकर उन्होंने सातवें दशक में कुछ रचनाएँ प्रस्तुत कीं। वे बाद में «प्रातःकाल के लोग» नामक संग्रह के रूप में छपीं। यह किताब «उस देश के साथ जहाँ तुम पैदा हुए हो और पनपे हो, घनिष्ठ निकटता तथा रक्त-संबंधों» के विचार से परिपूर्ण है।

«भावुकतापूर्ण उपन्यास» (१९५८) में लेखिका ने नये बुद्धिजीवियों के और तीसरे दशक के युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों के जीवन का वर्णन किया।

«साहित्यकार की डायरी» (१९७२) और अपनी अंतिम पुस्तक «मेरे जीवन, ग्रंथों और पाठकों के बारे में» में पानोवा ने अपने जीवन तथा इर्द-गिर्द के लोगों के जीवन पर और साहित्यकार के कठिन दैनिक परि-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
श्रम, अपनी रचनाओं के नायकों और उनके आदिप्ररूपों पर गंभीरता के साथ विचार किया।

पानोवा का युद्धोत्तर उपन्यास «कुझीलिखा», जिसका एक अंश इस संग्रह में प्रस्तुत है, मज़दूरों के जीवन, महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध के समय और युद्धोत्तर काल में जब राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का पुनर्निर्माण हो रहा था, उनके वीरतापूर्ण श्रम को समर्पित है।

## КРУЖИЛИХА *

(отры́вок из рома́на)

В чи́стом золото́м во́здухе над широ́кой реко́й подними́ается со́лнце. Вме́сте с со́лнцем вверх подними́ается звук заводско́го гудка́ *. Он звучи́т так гро́мко, что никто́ не слы́шит шум маши́н, челове́ческие голоса́. Беззву́чно проезжа́ют поезда́ по заводско́му двору́, беззву́чно подними́ают и опуска́ют груз подъёмные кра́ны *, беззву́чно разгова́ривают лю́ди.

Си́льный гудо́к слы́шен в го́роде, находя́щемся в девяти́ киломе́трах от Кружи́лихи.

Услы́шав гудо́к, к заво́ду приезжа́ют лю́ди. Не́которые прихо́дят пешко́м, не́которые приезжа́ют на трамва́е, большинство́ приезжа́ет на поезда́х. Дли́нные поезда́ приво́зят люде́й к ма́ленькой ста́нции из го́рода и при́городов *. Мужчи́ны и же́нщины, светловоло́сые и тёмноволо́сые, весёлые и печа́льные, высо́кие и ма́ленькие — де́сять ты́сяч люде́й прихо́дят у́тром на заво́д, на рабо́ту...

Ме́дленно замолка́ет гудо́к... Лю́ди расхо́дятся по свои́м цеха́м *... Дневна́я сме́на * начина́ется...

Сего́дня Листопа́д привёл на заво́д свою́ мать, что́бы показа́ть ей, просто́й колхо́знице *, как рабо́тают здесь лю́ди и механи́змы.

Они́ стоя́т в сталелите́йном це́хе *, где рабо́чие гото́вятся к приёму пла́вки *. Ковш * уже́ подвели́ к печи́ *.

— Смотри́те, ма́ма, сейча́с потечёт распла́вленная сталь, — сказа́л Листопа́д, положи́в ру́ку на плечо́ ма́тери.

Огненная струя́ побежа́ла в ковш. Сте́ны и потоло́к окра́сились в цвет пла́мени.

— Вот она́, сталь, на́ша краса́вица! — гро́мко ска-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

зáл Листопáд мáтери. Он смотрéл и смотрéл на тяжёлую струю́, падáющую в ковш, не мог отвести́ глазá от э́того блéска. Вверх поднялúсь úскры, онú взлетéли к потолку́, вокру́г запáхло горя́чим метáллом. Этот зáпах всегдá напоминáл Листопáду то врéмя, когдá нáша Земля́ былá раскалённым, расплáвленным тéлом...

Ковш, вéсящий пятьдеся́т тонн, мéдленно поплы́л над излóжницами *, наполня́я их расплáвленной стáлью. Листопáд хотéл пошути́ть и спроси́ть у мáтери, не ну́жен ли для её колхóза такóй большóй ковш, но увúдел по её глазáм, что онá волну́ется, и не пошути́л.

Мать былá на завóде до концá дневнóй смéны и посмотрéла на тру́д всех рабóчих. Листопáда удивúло, что ей не понрáвились слóжные станки́-автомáты *, сбóрка * готóвых издéлий. Онá дóлго смотрéла на то, как дви́гаются чáсти чёрной машúны, блестя́щей от машúнного мáсла, как пáдают вниз готóвые детáли, но пóсле того́, как онá вúдела теку́щий в ковш горя́чий метáлл, ничегó не моглó её удивúть...

Уходя́ с завóда, онá с гóрдостью посмотрéла на сы́на и сказáла:

— Это тяжёлый, но прекрáсный труд.

### टिप्पणियाँ

Кружúлиха — ऋुझीलिख़ा ( जगह का नाम जहाँ उपन्यास में चित्रित कारख़ाना था )

заводскóй гудóк — कारख़ाने का भोंपू

подъёмный кран — क्रेन

прúгород — उपनगर

цех — वर्कशॉप

дневнáя смéна — दिन की पाली

колхóзница — सामूहिक किसान-औरत, सामूहिक फ़ार्म की सदस्या

сталелитéйный цех — ढलाई-विभाग, स्टील-फ़ाउंडरी

рабóчие готóвятся к приёму плáвки — मज़दूर भट्ठी में से पिघला इस्पात निकालने की तैयारी कर रहे हैं

ковш — लैडल, दर्वी

печь — भट्ठी

излóжница — साँचा

станóк-автомáт — स्वचालित यंत्र ( मशीन )

сбóрка — संयोजन, जोड़ाई

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

## Александр Твардовский
अलेक्सान्द्र त्वार्दोव्स्की
(१९१०-१९७१)

अलेक्सान्द्र त्रीफ़ोनोविच त्वार्दोव्स्की के सृजन का सोवियत साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान है। वह उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने रूसी क्लासिकीय काव्य की परंपराएँ गंभीर रूप से आत्मसात् कीं।

त्वार्दोव्स्की की कविताओं में क्रांति के बाद के देश के इतिहास की मुख्य घटनाएँ – सामूहिकीकरण तथा महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध, अर्थ-व्यवस्था के पुनर्निर्माण के प्रथम कठिन वर्ष, छठे और सातवें दशकों का शांतिमय सृजनात्मक जीवन – प्रतिबिंबित हुईं।

देश का जीवन कवि की सृजनात्मक जीवनी में काफ़ी हद तक देखा जा सकता है क्योंकि त्वार्दोव्स्की की कृतियों का नायक सभी उपरोक्त घटनाओं में शरीक था।

चौथे दशक में अपना साहित्यिक कार्य शुरू करते हुए त्वार्दोव्स्की ने उस समय की सबसे महत्वपूर्ण घटना – सामूहिकीकरण – पर ध्यान केंद्रित किया। उनका काव्य «मूराविया देश» (१९३६) किसान के भाग्य को समर्पित था। इस काव्य ने त्वार्दोव्स्की को तुरंत ही लोकप्रिय बना दिया। युद्धोत्तर काल में लिखी कविताएँ «सड़क पर का मकान» (१९४६) और «दूरी के पार दूरी» (१९५०-१९६०) भी अत्युत्तम हैं। इनमें युद्ध के समय और युद्धोत्तर काल में सोवियत मनुष्य की नैतिक और श्रमिक वीरता की चर्चा है।

त्वार्दोव्स्की देश की एक बहुत प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका «नोवी मीर» (नयी दुनिया) के प्रधान संपादक रहे। उन्होंने आइत्मातोव, वसील बीकोव, सेर्गेई ज़लीगिन, बोरिस मोझायेव, वलेन्तीन ओवेच्किन, गन्निईल त्रोयेपोल्स्की जैसे आज के जाने-माने सोवियत लेखकों के लिए साहित्य-जगत् का मार्ग प्रशस्त किया।

लेकिन उनकी सबसे प्रमुख और सर्वाधिक लोकप्रिय रचना है «वसीली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
के वर्षों में लिखा। यह फ़ासिज्म के विरुद्ध संघर्ष में सोवियत जनता की वीरता को समर्पित है। त्वार्दोव्स्की ने लिखा कि «वसीली त्योर्किन» काव्य ... «मेरे लिए प्रगीत व प्रचार, गीत व उपदेश, लतीफ़ा और चुटकुला, दिली बातचीत और मौक़े पर की उक्ति» था।

काव्य के नायक में त्वार्दोव्स्की ने उस नये मानव के लक्षण चित्रित किये जो सोवियत देश का रक्षक, देश-भक्त है और जो न केवल अपने भाग्य के लिए बल्कि «रूस, जनता तथा दुनिया में सब-कुछ के लिए» उत्तरदायित्व अनुभव करता है।

## ВАСИЛИЙ ТЁРКИН

(отры́вки из поэ́мы)

Тёркин — кто́ же он тако́й?
Ска́жем откровéнно:
Про́сто па́рень * сам собо́й
Он обыкновéнный.
Впро́чем, па́рень хоть куда́ *.
Па́рень в э́том ро́де *
В ка́ждой ро́те * есть всегда́,
Да и в ка́ждом взво́де *.
И чтоб зна́ли, чем силён,
Ска́жем откровéнно:
Красото́ю наделён
Не́ был он отмéнной *.
Не высо́к, не то́ чтоб мал,
Но геро́й-геро́ем *.
На Каре́льском * воева́л —
За реко́й Сестро́ю *.

Перепра́ва *, перепра́ва!
Бе́рег ле́вый, бе́рег пра́вый.
Снег шерша́вый *, кро́мка * льда...

Но́чью, пе́рвым из колóнны *,
Обломáв у кра́я лёд,
Погрузи́лся на понто́ны *
Пе́рвый взвод.
Погрузи́лся, оттолкну́лся
И пошёл. Второ́й за ни́м.
Приготóвился, пригну́лся *
Тре́тий сле́дом за вторы́м.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Как плоты́ пошли́ понто́ны,
Громыхну́л оди́н, друго́й
Басовы́м, желе́зным то́ном,
То́чно кры́ша под ного́й.*

И плыву́т бойцы́ куда́-то,
Притаи́в штыки́ в тени́ *,
И совсе́м свои́ ребя́та
Сра́зу — бу́дто не они́,
Сра́зу бу́дто не похо́жи
На свои́х, на те́х ребя́т:
Ка́к-то все дружне́й и стро́же,
Ка́к-то все тебе́ доро́же
И родне́й, чем час наза́д...

Перепра́ва, перепра́ва! Бе́рег ле́вый как стена́...
Бе́рег пра́вый, как стена́...

Этой но́чи след крова́вый
В мо́ре вы́несла война́.

Бы́ло так: из тьмы́ глубо́кой,
Огненный взметну́в клино́к,
Луч проже́ктора прото́ку
Пересёк наискосо́к *,
И столбо́м поста́вил во́ду
Вдруг снаря́д.* Понто́ны — в ряд.
Гу́сто бы́ло там наро́ду * —
На́ших стри́женых ребя́т...

И уви́делось впервы́е,
Не забу́дется оно́:
Лю́ди тёплые, живы́е
Шли на дно́ *, на дно́, на дно́...

Под огнём — неразбери́ха * —
Где свои́, где кто, где связь?

То́лько вско́ре ста́ло ти́хо, —
Перепра́ва сорвала́сь *.

Два бойца́ * сидя́т в дозо́ре *
Над холо́дною водо́й.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

То́ ли сни́тся, то́ ли мни́тся *,
Показа́лось что ниве́сть *,
То́ ли и́ней * на ресни́цах,
То́ ли впра́вду кто́-то есть?

Ви́дят, ма́ленькая то́чка,
Показа́лась вдалеке́:
То́ ли чу́рка *, то́ ли бо́чка
Проплыва́ет по реке́?
— Нет, не чу́рка, и не бо́чка —
Про́сто гла́зу маета́ *.

— Не плове́ц ли одино́чка?
— Шу́тишь, брат. Вода́ не та́!
— Да, вода́. Поду́мать стра́шно.
Да́же ры́бам холодна́.
— Не из на́ших ли вчера́шних
Поднялся́ како́й со дна́?

Оба сра́зу присмире́ли *,
И сказа́л оди́н бое́ц:
— Нет, не вы́плыл бы в шине́ли,
С по́лной вы́кладкой *, мертве́ц.

Оба здо́рово продро́гли *,
Ка́к бы ни́ было — вперво́й *.

Подошёл сержа́нт * с бино́клем *,
Присмотре́лся *: нет, живо́й.
— Нет, живо́й, без гимнастёрки *.
— А не фри́ц *? Не к на́м ли в тыл *?
— Нет. А мо́жет, э́то Тёркин? —
Кто́-то ро́бко пошути́л.
Стой, ребя́та, не сова́ться *,
То́лку нет * спуска́ть понто́н,
Разреши́те попыта́ться?
— Что пыта́ться?
— Бра́тцы *, — он!

Разреши́те доложи́ть *...
Взвод на пра́вом берегу́
Жив-здоро́в назло́ врагу́!
Лейтена́нт * всего́ лишь про́сит
Огоньку́ туда́ подбро́сить *.
А уж сле́дом за огнём
Вста́нем, но́ги разомнём *.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Что там есть перекале́чим *,
Перепра́ву обеспе́чим *...

Доложи́л по фо́рме *, сло́вно
То́тчас * плыть ему́ наза́д.
— Молоде́ц *, — сказа́л полко́вник *. —
Молоде́ц! Спаси́бо, брат...

Перепра́ва, перепра́ва!
Пу́шки бьют * в кроме́шной мгле *.
Бой идёт свято́й и пра́вый *.
Сме́ртный бой не ра́ди сла́вы,
Ра́ди жи́зни на земле́.

**टिप्पनियाँ**

па́рень — छोकड़ा
хоть куда́ — कितना अच्छा
в э́том ро́де — उस जैसा
ро́та — कम्पनी
взвод — प्लाटून
красото́ю наделён не был он отме́нной — वह सौंदर्य की मूर्त्ति नहीं था
геро́й-геро́ем — वीरों का वीर
Каре́льский — ( यहाँ ) करेलियन मोर्चा, जो सोवियत संघ के उत्तर-पश्चिम में था
река́ Сестра́ — करेलियन स्थलडमरूमध्य में सेस्त्रा नाम की एक नदी
перепра́ва — उतारा, नदी-पारण
шершА́вый — खुरदरा
кро́мка — किनारी
коло́нна — काफ़िला, तांता
понто́н — पंटून
пригну́ться — झुकना
громыхну́л оди́н, друго́й басовы́м, желе́зным то́ном, то́чно кры́ша под ного́й — एक के बाद एक वे यों खड़खड़ाये ज्यों पाँव तले टिन की छत
притаи́в штыки́ в тени́ — छाया में संगीनों को छिपाकर
о́гненный взметну́в клино́к, луч проже́ктора прото́ку пересёк наискосо́к — सर्चलाइट से रोशनी की किरण आग की तलवार-सरीखी लपकी और नहर को आड़े पार कर गयी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

и столбóм постáвил вóду вдруг снаря́д — सहसा गोले के फटने से पानी का स्तंभ ऊपर उठा

гу́сто бы́ло там нарóду — खचाखच भरे थे लोग वहाँ

идти́ на днó — डूबना

неразбери́ха — गड़बड़

перепрáва сорвалáсь — उतारा सफल नहीं हुआ

боéц — जवान, सैनिक, सिपाही

сидéть в дозóре — ताक में बैठना

мни́ться — लगना, मालूम होना

показáлось что нивéсть — जाने क्या दिखाई दिया

и́ней — तुषार

чу́рка — लकड़ी का कुंदा

глáзу маетá — (यहाँ) आँखें थक गयी हैं

присмирéть — शांत हो जाना

с пóлной вы́кладкой — सारे हथियारों और सामान के साथ

здóрово продрóгли — बुरी तरह ठिठुर गये

впервóй — पहली बार

сержáнт — सारजेंट

бинóкль — दूरबीन

присмотрéться — आँखें गड़ाना (जमाना)

гимнастёрка — फ़ौजी कमीज़, ऊँचे कालरवाला ट्यूनिक

фриц — युद्ध के समय फ़ासिस्ट सेना के सैनिकों को ऐसा पुकारा जाता था

тыл — पृष्ठ-भाग, पीछा

не совáться — आगे न बढ़ना

тóлку нет — बेकार है

брáтцы — भाइयो

разреши́те доложи́ть — रिपोर्ट पेश करने की इजाज़त हो

лейтенáнт — लेफ़्टिनेंट

огонькý тудá подбрóсить — (यहाँ) उस जगह पर गोलाबारी शुरू करना

размя́ть нóги — (यहाँ) हमला शुरू करना, धावा बोलना

перекалéчить — (यहाँ) नष्ट करना

обеспéчить переправу — नदी-पारण सफल बनाना

доложи́ть по фóрме — विधिवत् ढंग से रिपोर्ट पेश करना

тóтчас — एकदम, इसी क्षण

Молодéц! — शाबाश!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

полко́вник — कर्नल
пу́шки бьют — तोपें गरजती हैं
кроме́шная мгла — छटाटोप का अँधेरा
пра́вый — न्यायपूर्ण

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

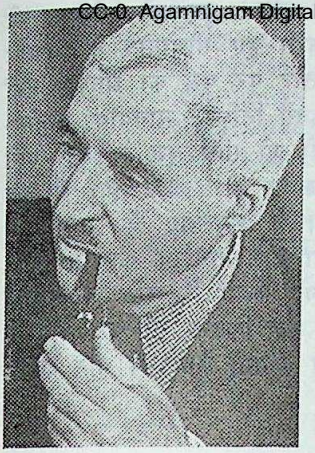

## Константин Симонов
## कोन्स्तान्तीन सीमोनोव
## (१९१५-१९७९)

कोन्स्तान्तीन सीमोनोव सुप्रसिद्ध सोवियत लेखक हैं। उनकी कृतियाँ अनेक देशों में विख्यात हैं। उन्होंने विभिन्न विधाओं में काम किया – गद्य और कविता में, नाटक-कला और पत्रकारिता में।

सीमोनोव की पहली कविताएँ १९३६ में प्रकाशित हुईं। महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध के समय वह बहुत लोकप्रिय लेखक बन गये जब उनकी कविताएँ «मेरा इन्तज़ार करो» तथा «तुमको याद है, अल्योशा, स्मोलेन्स्क प्रदेश की सड़कें» प्रकाशित हुईं।

युद्ध में अनिवार्य विनाश और कुरबानियों के विपरीत सोवियत काव्य में जीवनदायी प्रेम का गीत गूँज उठा जोकि अनेक सोवियत लोगों के लिए बहुत मूल्यवान् था और उन्हें जीने, काम करने तथा शत्रु से लड़ने की प्रेरणा देता था।

युद्ध के पहले ही दिनों से सीमोनोव सैनिक संवाददाता की हैसियत से मोरचे पर काम करने लगे। कालांतर में इस काम के अनुभव के आधार पर उन्होंने «युद्ध के अलग-अलग दिन» शीर्षक से अत्यंत रोचक सैनिक डायरी और कई ललित रचनाएँ लिखीं। इनमें «दिन और रातें» लघु--उपन्यास, «हथियार के साथी» उपन्यास तथा «जीवित और मृत» नामक उपन्यास-त्रयी हैं जो महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध के बारे में सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में से एक है।

«जीवित और मृत» उपन्यास (१९५५-१९७०) महाकाव्यात्मक कृति है जिसमें १९४१-१९४४ की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया गया है: मास्को और स्तालिनग्राद की लड़ाइयाँ तथा १९४४ की गर्मियों में बेलोरूस के प्रदेश में सोवियत सेनाओं का धावा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपनी पुस्तकों के भविष्य के बारे में सोचते हुए और लेखक की हैसियत से अपनी भावी लक्ष्यों की चर्चा करते हुए सीमोनोव ने लिखा: «मुझे लगता है कि जिन लोगों को निजी तौर पर युद्ध का अनुभव नहीं हुआ वे तभी युद्ध की किताबें पढ़ते हैं जब इनमें निश्चित मानवीय, मनोवैज्ञानिक तथा नैतिक समस्याएँ उठायी गयी हों जो सीधे युद्ध से जुड़ी नहीं होतीं, परंतु युद्ध के समय और अधिक स्पष्ट हो जाती हैं। मैं इन समस्याओं के बारे में लिखना चाहता हूँ। ये समस्याएँ हैं – मनुष्य में विश्वास और अविश्वास की, नागरिक वीरता और नागरिक कायरता की, अपने शब्दों के लिए उत्तरदायित्व और अपने शब्दों के प्रति लापरवाही की। ... सदा सच बोलना चाहिये, चाहे वह कितना ही कटु क्यों न हो। ये भी वे समस्याएँ हैं जिनपर युद्ध की सामग्री लेकर मैं ग़ौर करता हूँ।»

## ЖДИ МЕНЯ...

Жди меня́, и я верну́сь.
То́лько о́чень жди.
Жди, когда́ наво́дят грусть *
Жёлтые дожди́,
Жди, когда́ снега́ мету́т *,
Жди, когда́ жара́,
Жди, когда́ други́х не жду́т,
Позабы́в вчера́ *.
Жди, когда́ из да́льних мест
Пи́сем не придёт,
Жди, когда́ уж надое́ст
Всем, кто вме́сте ждёт.

Жди меня́, и я верну́сь,
Не жела́й добра́
Всем, кто зна́ет наизу́сть,
Что забы́ть пора́.
Пусть пове́рят мать и сын,
В то, что нет меня́,
Пусть друзья́ уста́нут ждать,
Ся́дут у огня́,
Вы́пьют го́рькое вино́ *
На поми́н души́...
Жди. И с ни́ми заодно́ *
Вы́пить не спеши́.
Жди меня́, и я верну́сь
Всем смертя́м назло́ *.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Кто не жда́л меня́, тот пусть
Ска́жет: — Повезло́ *.
Не поня́ть не жда́вшим им,
Как среди́ огня́
Ожида́нием свои́м
Ты спасла́ меня́.
Как я вы́жил, бу́дем знать
То́лько мы с тобо́й, —
Про́сто ты уме́ла ждать,
Как никто́ друго́й.

## ЖИВЫЕ И МЁРТВЫЕ

(отры́вок из рома́на)

Когда́ на́чали стреля́ть, Синцо́в вме́сте со свои́м това́рищем, молоды́м солда́том Ко́лей Баяко́вым, сиде́л о́коло пулемёта.

Ко́ля был помо́щником Синцо́ва и поэ́тому называ́лся вторы́м но́мером. У него́ бы́ло ро́зовое, как у де́вушки, лицо́ и чёрные бро́ви. Когда́ он снима́л ша́пку, бы́ло ви́дно, что во́лосы у него́ совсе́м све́тлые. Ещё в пе́рвый день знако́мства Синцо́в поду́мал, что Баюко́в с его́ чёрными бровя́ми и све́тлыми волоса́ми, наве́рное, был о́чень краси́вый па́рень. Сейча́с э́того не́ было ви́дно, потому́ что Ко́ля был ко́ротко постри́жен, ша́пка на нём была́ сли́шком больша́я, и лежа́т они́ на э́той земле́ уже́ три дня снача́ла под дождём, а пото́м в моро́з, и поэ́тому о красоте́ ду́мать нет вре́мени.

Они́ подружи́лись * сра́зу, с пе́рвого дня знако́мства, а точне́е с той мину́ты, когда́ Синцо́в сказа́л Баюко́ву, что на пулемёте * нет ра́зницы ме́жду но́мером пе́рвым и его́ помо́щником, но́мером вторы́м. Оба они́ должны́ де́лать всё. В э́тот же день он на́чал учи́ть Ко́лю.

За неде́лю Баюко́в успе́л рассказа́ть Синцо́ву, что он не успе́л око́нчить семь кла́ссов, потому́ что его́ оте́ц у́мер, а мать заболе́ла, что це́лый год перед а́рмией он рабо́тал бригади́ром комсомо́льской брига́ды *, выра́щивавшей и убира́вшей карто́шку, что по́сле а́рмии он хо́чет учи́ться и быть агроно́мом *.

— Мне ну́жно сдать экза́мены за се́мь кла́ссов, — говори́л Ко́ля, — я хоте́л э́то сде́лать в а́рмии, но во вре́мя войны́ не полу́чится...

Ко́ля люби́л чита́ть. У него́ была́ тетра́дь, в кото́рую

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
он запи́сывал назва́ния всех проч и́танных им книг. Для его́ во́зраста их бы́ло нема́ло — сто четы́ре. Большинство́ книг бы́ли хоро́шими. По вечера́м, е́сли была́ возмо́жность, Ко́ля пересказывал их Синцо́ву.

Во вре́мя бо́я Баюко́в хорошо́ выполня́л свои́ обя́занности. И то, что Ко́ля был хоро́шим това́рищем, бы́ло для Синцо́ва гора́здо важне́е всего́ на све́те, и поэ́тому он был гото́в сде́лать для Баюко́ва гора́здо бо́льше, чем для все́х люде́й, кото́рых знал давно́.

Когда́ на́чали стреля́ть, Синцо́в и Баюко́в немно́го подви́нули пулемёт наза́д, что́бы его́ не уда́рил случа́йный оско́лок снаря́да *, а са́ми се́ли вниз, на дно́ большо́й трубы́, покры́той внутри́ кирпичо́м. Стреля́ли си́льно и о́чень то́чно. Всё вокру́г гуде́ло и шуме́ло от взры́вов снаря́дов, но они́ чу́вствовали себя́ в безопа́сности, потому́ что э́ту трубу́ мог разру́шить то́лько снаря́д, па́дающий пря́мо све́рху с о́чень бли́зкого расстоя́ния. Но о тако́й неуда́че они́ не ду́мали.

Фаши́сты на́чали стреля́ть ещё сильне́е. Баюко́в зале́з руко́й в карма́н, что́бы найти́ таба́к и закури́ть. Табака́ не́ было ещё вчера́, но Ко́ля всё-таки иска́л его́: он не́рвничал.

Синцо́в встал, подошёл к амбразу́ре * и посмотре́л на покры́тое сне́гом по́ле, лежа́щее перед ни́м.

Снаря́ды па́дали и там, и из трёх до́миков, стоя́вших там вчера́, остава́лось то́лько два.

О чём ду́мают в таки́е мину́ты лю́ди? Иногда́ о ва́жном, иногда́ о нева́жном, иногда́ и о том и о друго́м. Иногда́ они́ ду́мают о чём-нибудь есте́ственном, а иногда́ приду́мывают, о чём ду́мать, что́бы забы́ть о стра́хе сме́рти.

Синцо́в ду́мал обо всём, мы́сли пролета́ли в его́ голове́ так бы́стро, как бу́дто боя́лись, что он не успе́ет поду́мать обо всём, о чём ещё ну́жно поду́мать.

— Ты, Ко́ля, смотри́ в другу́ю амбразу́ру, — сказа́л Синцо́в, а сам пошёл к пулемёту.

Отсю́да бы́ло хорошо́ ви́дно, как на то́м ме́сте, где стоя́ли три до́мика, а тепе́рь оста́лось то́лько два, дви́гались фаши́стские та́нки *.

Пе́рвый танк останови́лся, вы́стрелил из пу́шки, и ещё оди́н до́мик упа́л на зе́млю, как бу́дто он был просто́й игру́шкой. Но в э́ту же мину́ту под та́нком разда́лся взрыв, и Синцо́в уви́дел чёрный дым. Второ́й танк прошёл ми́мо горя́щего, а за ни́м споко́йно дви́гались остальны́е.

Прошла́ ещё одна́ мину́та, и Синцо́в уви́дел фаши́-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

стских солда́т*. Их тёмные фигу́ры дви́гались сза́ди та́нков.

— Баюко́в! — закрича́л Синцо́в, — беги́ к пулемёту!

Баюко́в подбежа́л к нему́, посмотре́л в амбразу́ру, а пото́м на Синцо́ва. «Что́ же ты не начина́ешь стреля́ть?» — говори́л его́ взгляд. Но Синцо́в ждал. Он хоте́л, что́бы фаши́сты подошли́ бли́же.

Уже́ мину́т пять* Синцо́в и Баюко́в стреля́ли и заде́рживали передвиже́ние фаши́стов. Пото́м фаши́сты ста́ли пробега́ть там, где ого́нь от их пулемёта был не таки́м си́льным. Не́которые подошли́ к оста́вшимся до́микам. Отту́да уже́ никто́ не стреля́л, и Синцо́в по́нял, что там все уби́ты.

Како́й-то фаши́стский пулемётчик* лёг пря́мо на сне́г и на́чал стреля́ть в них с Баюко́вым. Он стреля́л хорошо́, но был в нера́вном положе́нии — он лежа́л на откры́том ме́сте, а их защища́ла труба́. Синцо́в ско́ро уби́л его́. Второ́й но́мер фаши́стского пулемётчика до́лго лежа́л неподви́жно, пото́м попо́лз в сто́рону.

Баюко́в показа́л на него́ руко́й:

— Смотри́! Упо́лз...

В слова́х Баюко́ва бы́ло осужде́ние. Он, Баюко́в, не оста́вил бы пулемёт по́сле сме́рти това́рища и продолжа́л бы стреля́ть.

Наконе́ц, фаши́сты, кото́рые снача́ла не обраща́ли внима́ния на э́тот пулемёт, реши́ли уничто́жить его́ и пе́редали об э́том по ра́дио свои́м танки́стам*. Та́нки, кото́рые уже́ на́чали уходи́ть, верну́ли обра́тно. Оди́н из ни́х бы́стро дви́гался пря́мо по направле́нию к трубе́. Наконе́ц, он останови́лся.

— Сейча́с он бу́дет стреля́ть, — сказа́л Баюко́в.

Синцо́в согласи́лся с ним.

В та́нке откры́лся люк, из него́ подня́лся фаши́стский танки́ст. Наве́рное, он хоте́л точне́е определи́ть, отку́да стреля́ют Синцо́в и Баюко́в.

Синцо́в на́чал стреля́ть, танки́ст исче́з. А ещё через секу́нду снаря́д взорва́лся совсе́м ря́дом с трубо́й. И сра́зу же Синцо́в на́чал стреля́ть опя́ть, что́бы показа́ть, что он жив.

Танк сно́ва вы́стрелил, и снаря́д опя́ть взорва́лся недалеко́ от амбразу́ры. Синцо́в отве́тил ему́ из своего́ пулемёта.

— Если он захо́чет подойти́ ещё бли́же, — сказа́л он Баюко́ву, — нам нужны́ бу́дут грана́ты*.

Баюко́в мо́лча по́днял с по́ла не́сколько грана́т, свя́занных вме́сте,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Танк выстрелил ещё несколько раз, и, как правильно подумал Синцов, решил подойти ещё ближе. Он медленно поехал вверх и вошёл в мёртвую зону *. Синцов и Баюков хорошо слышали его шум.

— Если он подойдёт совсем близко, — сказал Синцов, — он будет стрелять в амбразуру.

— Тогда ты стреляй по нему, — ответил Баюков, — а я выбегу из трубы и ударю в него гранатами.

Но Синцов не ответил, а начал стрелять по пробегающим мимо фашистским солдатам.

Танк продолжал шуметь где-то снаружи, и Синцову показалось, что он не приближается и не удаляется от трубы. Наконец, они снова увидели танк, который стоял на старом месте.

— Он не смог подняться по льду! — радостно сказал Синцов и вытер пот со лба.

В танке опять открылся люк, на секунду они увидели голову танкиста, потом танк немного подвинулся в сторону. Пушка, похожая на палец, поднялась и опустилась. Танкист хотел точно попасть в амбразуру. Синцов почувствовал страх. Снаряд взорвался совсем рядом с амбразурой. Ещё один... Ещё один... Ещё один взрыв, Синцов ударился головой о стену, и подумал, что снаряд наконец попал в амбразуру, хотя понимал, что, если бы это было так, они с Баюковым были бы уже убиты.

На самом деле снаряд взорвался у края амбразуры, и только несколько осколков влетели в трубу. Чувствуя боль в голове, Синцов подполз к пулемёту и увидел в амбразуру фашистского танкиста, который спокойно стоял на верху танка и рассматривал результаты своего выстрела.

Синцов начал стрелять. Танкист упал на танк, но потом кто-то изнутри потянул убитого за ноги, и он скрылся внутри танка. Танк сделал ещё несколько выстрелов из пушки, но эти выстрелы уже не попадали в трубу, повернулся и пошёл в сторону.

Только сейчас Синцов отошёл от пулемёта и увидел неподвижно лежавшего Баюкова. Тот лежал и тихо стонал.

— Что с тобой, Коля? — спросил Синцов и почувствовал ужасное одиночество.

— Я в спину ранен... — тихо ответил Баюков.

Он приподнялся на руках, ноги не слушались его.

Синцов поднял его шинель и увидел на спине у Баюкова небольшое кровавое пятно. Осколок был малень-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

кий, но он попа́л в позвоно́чник, и Баюко́в не мо́г дви́гаться.

Пока́ Синцо́в перевя́зывал Баюко́ва, тот говори́л:

— Ничего́, рука́ми я ещё могу́ дви́гать. Помоги́ мне подви́нуться, и я опя́ть бу́ду тебе́ помога́ть!

— Не волну́йся, — сказа́л това́рищу Синцо́в, — э́то у тебя́ не стра́шно. Вы́здоровеешь.

Он трево́жно посмотре́л в амбразу́ру. Он боя́лся, что не уви́дит подходя́щих бли́зко фаши́стов.

Он поду́мал о то́м, что е́сли фаши́сты подни́мутся к их трубе́ с друго́й стороны́, то они́ поги́бнут, потому́ что тепе́рь Баюко́в не смо́жет стреля́ть из друго́й амбразу́ры. Синцо́в побежа́л ко второ́й амбразу́ре. На по́ле стоя́ла непоня́тная тишина́.

— Смотри́! Смотри́! — неожи́данно закрича́л Синцо́в, хотя́ Баюко́в был ря́дом и крича́ть не на́до бы́ло.

Там, в дере́вне, куда́ уже́ вошли́ фаши́сты, стено́й стоя́л чёрный дым. На небольшо́й горе́ что́-то со стра́шным шу́мом выбра́сывало ого́нь и дым, захва́тывая всё но́вые по́лосы земли́. Синцо́ву каза́лось, что сама́ земля́ взрыва́ется под нога́ми у фаши́стов. Среди́ взры́вов бе́гали и па́дали их фигу́ры, поднима́лись и сно́ва па́дали. А взры́вы всё продолжа́лись и продолжа́лись...

Баюко́в уже́ ви́дел э́то но́вое сове́тское ору́дие, а Синцо́в никогда́ не ви́дел, но дога́дывался.

— Это «Катю́ши»*, — пе́рвым сказа́л он.

— Да, — отве́тил Баюко́в, — я уже́ ви́дел их.

И о́ба они́, здоро́вый и ра́неный, смотре́ли на э́то стра́шное зре́лище. Фаши́сты останови́лись на ме́сте, пото́м на́чали уходи́ть наза́д.

Неме́цкие та́нки поверну́ли обра́тно, подошли́ к тому́ ме́сту, где ра́ньше стоя́ли три до́мика, и на́чали стреля́ть отту́да. А из-за небольшо́го ле́са вы́ехали семь сове́тских та́нков и на́чали стреля́ть по фаши́стским. Вот загоре́лся оди́н фаши́стский танк. Вот загоре́лся второ́й... Вот загоре́лся сове́тский...

Синцо́в сжима́л зу́бы и наблюда́л за э́тим бо́ем, кото́рому он уже́ не мо́г помо́чь, а на́ши та́нки всё стреля́ли и стреля́ли.

И фаши́сты отступа́ли*, тепе́рь э́то бы́ло уже́ я́сно.

### टिप्पणियाँ

наводи́ть грусть — उदासी लाना

снега́ мету́т — बर्फ़ पड़ती है

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

позабы́в вчера́ — कल ही भुलाकर
го́рькое вино́ — तेज़ शराब
на поми́н души́ — मृतक की स्मृति में
заодно́ — साथ ही
всем смертя́м назло́ — मौत की उपेक्षा करके
повезло́ — भाग्य खुल गया, नसीब जाग गया

* * *

Они́ подружи́лись — उनकी दोस्ती हो गयी
на пулемёте — मशीन-गन चलानेवालों में
комсомо́льская брига́да — कोम्सोमोल के सदस्यों से बनी टोली
агроно́м — कृषि-विशेषज्ञ, एग्रोनोमिस्ट
оско́лок снаря́да — गोले का टुकड़ा
амбразу́ра — झरोखा
танк — टैंक
солда́т — जवान, सैनिक
мину́т пять — कोई पाँच मिनट
пулемётчик — मशीन-गनर
танки́ст — टैंकची
грана́та — हथगोला
мёртвая зо́на — टैंक के ऐन सामने का वह क्षेत्र जिसमें स्थित सैनिकों, मशीन-गनों, तोपों आदि पर वह गोली या गोला नहीं चला सकता।

«Като́ша» — «कत्यूशा» (राकेट-मार्टर का लोकप्रिय नाम; कत्यूशा एकातेरीना नाम का अल्पार्थक रूप है)
отступа́ть — पीछे हटना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

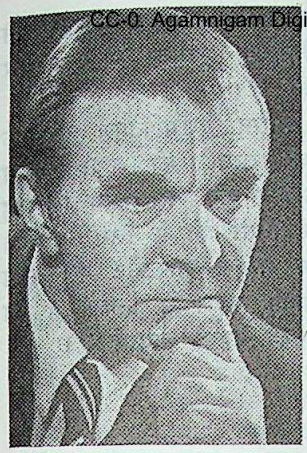

## Юрий Бондарев
## यूरी बोन्दरेव
## (जन्म १९२४)

«यद्ध में आग, राख और मौत की बदबू है। युद्ध कड़वे पसीने और ख़ून से भरा है। युद्ध वे चिट्ठियाँ हैं जिनकी प्रतीक्षा करते हैं और जिनको पाने में डर लगता है। युद्ध बुराई, विनाश, मृत्यु के प्रति विशिष्ट, दहकती घृणा है, उन जवानों का मरण है जो तेजस्वी जीवन बिता सकते थे, युद्ध अधूरी आशाएँ हैं, अनलिखी किताबें और अधूरे अन्वेषण हैं और युद्ध वे दुलहनें हैं जिनकी शादियाँ नहीं हो सकीं»—यूरी वसीलियेविच बोन्दरेव ने इस प्रश्न के उत्तर में कि वह युद्ध के बारे में क्यों लिखते हैं, यह बात कही थी। महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध में लड़े बोन्दरेव शांति के योद्धा हैं। युद्ध की सामग्री को लेकर बोन्दरेव नैतिक-दार्शनिक समस्याओं को खड़ा करके इनको हल करने की कोशिश करते हैं। धरती पर मनुष्य का स्थान, मातृभूमि के प्रति कर्त्तव्य और प्रेम की भावना, मानव से प्रेम और सभी जनगण के बीच परस्पर समझ—ऐसी ही समस्याएँ हैं।

बोन्दरेव ने अनेक कहानियाँ और उपन्यास लिखे हैं जिनमें «बटालियन गोलाबारी की माँग करते हैं» (१९५७), «तोपों की अंतिम बाढ़ें» (१९५९), «रिश्तेदार», «चुप्पी» (१९६५-१९६९), «गर्म बर्फ़» (१९६९) हैं।

«किनारा» उपन्यास (१९७५) के लिए बोन्दरेव को १९७७ के सोवियत संघ के राजकीय पुरस्कार से विभूषित किया गया। धारावाहिक फ़िल्म «मुक्ति» की पट-कथा लिखने में भाग लेने के लिए उन्हें १९७२ का लेनिन पुरस्कर मिला। उनकी नवीनतम रचनाएँ «एक क्षण» और «चयन» विगत जीवन तथा अतीत और वर्तमान पर दार्शनिक चिंतन-मनन हैं।

बोन्दरेव उस पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं जिसके लोगों की उम्र युद्ध के दिनों में बीस साल थी। ये लोग युद्ध से गुज़रे हैं और यह आश्चर्य की बात नहीं है कि अपने लघु-उपन्यासों «बटालियन गोलाबारी की माँग

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
करते हैं», «तोपों की अंतिम बाढ़ें» और «गर्म बर्फ़» में बोन्दरेव ने इतनी सरलता और यथार्थता, इतनी मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता से युद्ध और युद्धरत सैनिकों के जीवन का चित्रण किया है।

«गर्म बर्फ़» लघु-उपन्यास में बोन्दरेव महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध के निर्णायक वर्ष – १९४३ – की स्तालिनग्राद की लड़ाई की कथा प्रस्तुत करते हैं। फ़ासिस्ट कमान ने अपने एक टैंक-कोर को हुक्म दिया कि वह स्तालिनग्राद में घिरी पाउलूस की सेना को सहायता देने के लिए सोवियत युद्ध-पंक्ति में दरार डाले। पुस्तक का मुख्य नायक लेफ़्टिनेंट कुज़्नेत्सोव अपने दोस्तों के साथ जो सब अभी-अभी सैनिक स्कूल से निकले हैं इन टैंकों को रोकने में भाग लेता है। यह उनकी पहली लड़ाई है।

## ГОРЯЧИЙ СНЕГ

(отры́вок из рома́на)

Мо́щный звук мото́ров * висе́л над голово́й, дрожа́л в уша́х. Пе́рвая гру́ппа самолётов * образова́ла круг, и Кузнецо́в ви́дел кра́сные и си́ние раке́ты * над дома́ми дере́вни. Не́мцы сигна́лили * с земли́ и с во́здуха, уточня́я ме́сто бомбёжки *, но Кузнецо́в сейча́с не пыта́лся определи́ть, рассчита́ть, где они́ бу́дут бомби́ть: э́то бы́ло я́сно: «Юнкерсы»* вы́строились в огро́мный круг, захвати́в дере́вню, бе́рег реки́, сосе́дние ору́дия *, и каза́лось, что из э́того кру́га никуда́ невозмо́жно бы́ло вы́рваться.

— Возду́шная трево́га!* Возду́шная трево́га! — крича́л кто́-то внизу́ на берегу́.

Кузнецо́в стоя́л сле́ва от ору́дия в око́пе * вме́сте с Уха́новым и Чи́бисовым. Они́ чу́вствовали, как дрожа́ла под нога́ми земля́.

— Со́рок во́семь, — сосчита́л Уха́нов самолёты и посмотре́л на Чи́бисова.

— Ты чего́ бои́шься? Страшне́е сме́рти ничего́ не бу́дет. Бо́йся и́ли не бо́йся — не помо́жет.

— Да я понима́ю, — Чи́бисов попыта́лся улыбну́ться. — Но не могу́.

— Сюда́ летя́т! На на́с! — закрича́л Чи́бисов. Кузнецо́в по́днял го́лову и уви́дел что́-то огро́мное с бе́лыми кресто́м. Это был пе́рвый самолёт.

Он на секу́нду останови́лся, на́чал па́дать вниз, и из него́ вы́пали чёрные дли́нные предме́ты. Бо́мбы лете́ли к земле́, увели́чиваясь на глаза́х, тяжело́ пока́чивались в во́здухе.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

— Пожа́ся! — закрича́л Кузнецо́в, сам не услы́шал своего́ го́лоса, схвати́л Уха́нова за шине́ль и потяну́л вниз. Уха́нов упа́л на него́, и сейча́с же око́п напо́лнился чёрным ды́мом, и Кузнецо́ву показа́лось, что вся земля́ поднима́ется вверх.

— Сейча́с всё э́то ко́нчится, — говори́л себе́ Кузнецо́в, чу́вствуя во рту́ вкус земли́. Он закры́л глаза́, ду́мая, что так быстре́е всё ко́нчится. — Ещё не́сколько мину́т... Но ору́дия... ка́к же ору́дия? Они́ же пригото́влены к бо́ю, е́сли оско́лки бомб разобью́т прице́лы *, ничего́ нельзя́ бу́дет сде́лать...

Он знал, что ну́жно встать на́ ноги, вы́йти из око́па и посмотре́ть на ору́дия, но встать не мо́г. Боле́ла грудь и у́ши, и горя́чие уда́ры во́здуха заставля́ли его́ ещё кре́пче прижима́ться к земле́.

— Я не име́ю пра́ва боя́ться! — ду́мал Кузнецо́в. — На́до снять с ору́дий прице́лы. Я не до́лжен боя́ться умере́ть!..

— Уха́нов, слу́шай! Ну́жно снять прице́лы!

— Я сам так ду́маю! Без прице́лов мы оста́немся как го́лые!

Уха́нов наде́л ша́пку и хоте́л встать, но Кузнецо́в останови́л его́.

— Подожди́! Как то́лько они́ хоть на мину́ту переста́нут бомби́ть, мы вы́йдем к ору́диям. Ты — к пе́рвому, я — ко второ́му, и сни́мем прице́лы.

— На́до сейча́с, лейтена́нт! Мы мо́жем не успе́ть!

— Успе́ем! Пошли́!

Он вы́скочил из око́па, побежа́л по чёрному по́сле взры́вов сне́гу. Всё бы́ло закры́то чёрным ды́мом, но прице́лы бы́ли це́лы, и Кузнецо́в на́чал их снима́ть непослу́шными па́льцами.

— Та́нки-и-и-и! — закрича́л кто́-то.

«Не мо́жет быть! — поду́мал Кузнецо́в. — Кто́-то оши́бся. Где та́нки?»

Он хоте́л подня́ться, но не смо́г, потому́ что у него́ над голово́й опя́ть лете́ли неме́цкие самолёты.

— Това́рищ лейтена́нт! Вас вызыва́ют! — закрича́л связно́й * и протяну́л Кузнецо́ву тру́бку полево́го телефо́на *.

В тру́бке Кузнецо́в услы́шал го́лос Дроздо́вского.

— Кузнецо́в! Пря́мо на ва́с иду́т та́нки! Пригото́вьтесь к бо́ю! У лейтена́нта Давлатя́на уже́ разби́то одно́ ору́дие, дво́е уби́то, пя́теро ра́нено.

«Вот оно́, — поду́мал Кузнецо́в. — Уже́ начало́сь.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
Так бы́стро всё начало́сь. У Давлатя́на уже́ уби́то семь челове́к...»

Кузнецо́в бро́сил тру́бку связи́сту и вы́шел из око́па. Самолёты улета́ли в сто́рону и продолжа́ли броса́ть бо́мбы. Там, где па́дали бо́мбы, кто́-то умира́л, но Кузнецо́в почу́вствовал коро́ткое облегче́ние, как бу́дто на мину́ту вы́рвался на свобо́ду, забы́в про стра́х сме́рти.

Впереди́ густо́й дым меня́л свои́ очерта́ния, там дви́гались каки́е-то се́рые и жёлтые квадра́ты. Кузнецо́в по́нял, что э́то та́нки, но ещё не почу́вствовал опа́сности по́сле то́лько что пережито́й бомбёжки. Чу́вство опа́сности пришло́ через мину́ту. Кузнецо́в уви́дел, как тяжело́ пока́чивались на перо́вной земле́ пе́рвые маши́ны, как крути́лся вокру́г них снег.

— К ору́диям! — закрича́л Кузнецо́в. — К бо́ю!*

Солда́ты бежа́ли из око́пов к ору́диям. Никто́ не мо́г сейча́с оцени́ть обстано́вку то́чно и реа́льно, лю́ди мо́лча гото́вили ору́дия к бо́ю.

— Това́рищ лейтена́нт! — закрича́л Чуба́риков. — Почему́ они́ не стреля́ют! Почему́ молча́т и иду́т на на́с?

— Не торопи́тесь! — отве́тил Кузнецо́в. — Начина́йте ого́нь то́лько тогда́, когда́ они́ бу́дут бли́зко. Жди́те! На́до ждать!

— Во́лки, — вы́дохнул Чуба́риков. — Они́ окружа́ют нас как во́лки!

— Ещё немно́го, — крича́л Кузнецо́в. — Ещё две́сти ме́тров, пусть они́ подойду́т побли́же!

И чу́вствуя, что он не мо́жет бо́льше ждать, не слы́ша своего́ го́лоса закрича́л:

— По та́нкам спра́ва... це́литься * в пе́рвый... Ого́нь!*

Со всего́ бе́рега загреме́ли сосе́дние ору́дия. В отве́т стреля́ли та́нки.

— Ого́нь! Ого́нь! — крича́л Кузнецо́в, но уже́ не на́до бы́ло торопи́ть люде́й. Он ви́дел, как мелька́ют над ору́диями ру́ки. Чуба́риков стоя́л на коле́нях во́зле ору́дия и повторя́л слова́ кома́нды * Евстигне́еву, не отрыва́вшемуся от ору́дия.

— Три снаря́да! Ого́нь! — крича́л Кузнецо́в.

В ту́ же мину́ту ему́ показа́лось, что пе́рвый танк вдруг столкну́лся с че́м-то и, шумя́ мото́ром, на́чал поворачиваться на ме́сте. Пото́м он загоре́лся *.

— Молоде́ц, Евстигне́ев! Так! Молоде́ц!

Кузнецо́в переста́л дава́ть кома́нду то́лько тогда́, когда́ уви́дел перед собо́й второ́й танк. Он появи́лся из-за пе́рвого и сде́лал поворо́т напра́во, уходя́ от при-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
це́ла ору́дия, но Кузнецо́в успе́л опереди́ть его́ пе́рвый вы́стрел.

— По второ́му та́нку, ого́нь!

В отве́т разда́лся вы́стрел та́нка. Кузнецо́в не мо́г дыша́ть от чёрного ды́ма, в голове́ появи́лась мысль: «Неуже́ли э́то коне́ц, смерть?» Но в ту́ же мину́ту он уви́дел и по́нял, что сле́ва по та́нку стреля́ет ору́дие Уха́нова, и что они́ спасены́.

— Та́нки спра́ва на батаре́е! — услы́шал он неожи́данно. Та́нки наступа́ли там, где бы́ло ору́дие Давлатя́на, но э́то ору́дие почему́-то молча́ло. Кузнецо́в по́нял, что он ничего́ не смо́жет сде́лать, е́сли сейча́с не начнёт стреля́ть ору́дие Давлатя́на. Он вскочи́л на́ ноги и кри́кнул:

— Я туда́, к Давлатя́ну! Чуба́риков бу́дет кома́ндовать вме́сто меня́!

Он бежа́л в те́сном око́пе и ещё не зна́л, что он смо́жет сде́лать.

А спра́ва шли пока́чиваясь три та́нка, в кото́рые никто́ не стреля́л.

То, что он уви́дел во́зле ору́дия Давлатя́на, бы́ло ужа́сно. Все бы́ли уби́ты кро́ме двои́х: ра́неного Каты́мова и медсестры́ * Зо́и, кото́рая перевя́зывала его́.

— Уйди́, сестра́, уйди́! Мне стреля́ть на́до! Живо́й я ещё, — говори́л Каты́мов Зо́е. Его́ си́льное те́ло бы́ло сло́вно перело́млено в по́ясе, по оде́жде текла́ кровь.

— Зо́я! — закрича́л Кузнецо́в. — Где Давлатя́н?

Зо́я подняла́ на него́ глаза́, по́лные про́сьбы о по́мощи, отве́тила что́-то, но он не услы́шал её из-за вы́стрелов. И оттого́, что Кузнецо́в не услы́шал её го́лоса, оттого́, что она́ не заме́тила та́нков, дви́гающихся пря́мо на ни́х, Кузнецо́в испыта́л стра́нное чу́вство нереа́льности. Как бу́дто на́до бы́ло потрясти́ голово́й, и ко́нчится э́тот стра́шный сон, и он уви́дит ко́мнату и со́лнце за окно́м.

Но э́то не́ было сном.

Он слы́шал шум приближа́ющихся та́нков и понима́л, что приближа́ется смерть.

— Зо́я! Зо́я! Сюда́! Заряжа́й *, я прошу́ тебя́! А я бу́ду стреля́ть! Я прошу́ тебя́, Зо́я!

— Да, да, лейтена́нт!

Она́ шагну́ла к откры́тому я́щику со снаря́дами, неуме́ло взяла́ оди́н из ни́х, дала́ его́ Кузнецо́ву и упа́ла на коле́ни ря́дом с ору́дием.

Кузнецо́в не ви́дел э́того. Огро́мный чёрный танк вырастал над ни́м, вокру́г дрожа́ла земля́.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Он вы́стрелил и не услы́шал та́нковых вы́стрелов в отве́т. Танк был уничто́жен.

### टिप्पणियाँ

мото́р — इंजन
самолёт — विमान, हवाई जहाज़
раке́та — हवाई
сигна́лить — संकेत करना
бомбёжка — बमबारी
ору́дие — तोप
Возду́шная трево́га! — हवाई ख़तरा!
око́п — ख़ंदक
прице́л — गन-साइट, दीदबान
связно́й — अरदली
полево́й телефо́н — मैदानी टेलीफ़ोन
К бо́ю! — तैयार रहो! (एक हुक्म)
це́литься — निशाना बाँधना
Ого́нь! — फ़ायर! (एक हुक्म)
кома́нда — आदेश, हुक्म
загоре́ться — आग लगना
медсестра́ — नर्स
заряжа́ть — [तोप में] गोला भरना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Анатолий Алексин
अनातोली अलेक्सिन
(जन्म १९२४)

अनातोली गेओर्गीयेविच अलेक्सिन ने छठे और सातवें दशकों में बाल-साहित्य के लेखक के रूप में ख्याति पायी। वह बाल-मनोविज्ञान के मर्मज्ञ हैं और जानते हैं कि मनुष्य में सब-कुछ बचपन से शुरू होता है और उसी समय उसमें अहंवाद, क्रूरता, दंभ का विरोध भी पैदा होना चाहिये। लेखक की कहानियाँ इन्ही बातों का विरोध करती हैं और वे स्कूली बच्चों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। इनमें «सातवीं मंज़िल बोल रही है» (१९५६), «स्येवा कोल्लोव के अद्भुत कारनामे» (१९५८), «मेरा बड़ा भाई» (१९६२), «कोल्या ओल्या को लिखता है, ओल्या कोल्या को लिखती है» (१९६३), «इतने में एक जगह» (१९६७), «मेरा भाई क्लेरिनेट बजाता है» (१९६८) उल्लेखनीय हैं।

अलेक्सिन की किताबें शैक्षिक, नैतिक, कलात्मक अवलोकन और आविष्कार का विश्व-कोश हैं। इनकी मुख्य विशेषता दयालुता, न्याय तथा सहानुभूति के भावों का जागरण है। «भलाई करने में विलंब नहीं होना चाहिये वरना वह अनुपयोगी रहेगी» – अलेक्सिन का एक नायक कहता है और ये शब्द अलेक्सिन का आदर्श-वाक्य समझे जा सकते हैं। उनकी किताबों में न केवल बच्चे बल्कि उनके माँ-बाप भी दिलचस्पी लेते हैं।

लेखक महान् बाल-साहित्यकार एंडरसन के अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार से विभूषित हैं, उनका नाम दो बार बाल-लेखकों की सम्मानित सूची में सम्मिलित हुआ है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

# МОЙ БРАТ ИГРАЕТ НА КЛАРНЕТЕ

(отры́вок из по́вести)

(Из дневника́ де́вочки)

*21 декабря́*

Почти́ все де́вочки из на́шего кла́сса веду́т дневники́ *. И пи́шут туда́ вся́кие глу́пости. Наприме́р: «Ва́ся попроси́л у меня́ сего́дня тетра́дку по геоме́трии. Та́йно и о́чень ти́хо, что́бы никто́ не услы́шал. Заче́м? И почему́ у меня́? Почему́ он так волнова́лся? Уже́ по́лночь. Но я ду́маю об э́том и не засну́ до утра́».

А Ва́ся про́сто реши́л списа́ть дома́шнее зада́ние * по геоме́трии. Именно у неё, потому́ что у меня́ он уже́ спи́сывал. Волнова́лся — потому́, что не зна́л, даст она́ ему́ сетра́дь и́ли нет. Вот и всё. Де́вочки ча́сто прида́ют посту́пкам мальчи́шек како́й-то осо́бенный смысл.

Я то́же де́вочка, но я понима́ю, что вести́ дневники́ должны́ то́лько вели́кие лю́ди. Нет, я не ду́маю, что я вели́кая, но у меня́ есть брат, кото́рый у́чится на второ́м ку́рсе Консервато́рии *. Он бу́дет вели́ким музыка́нтом, э́то то́чно. В э́том я не сомнева́юсь. И вот по моему́ дневнику́ лю́ди узна́ют, каки́м он был.

Мой брат игра́ет на кларне́те *. Он бу́дет выступа́ть в больши́х конце́ртных за́лах. Сейча́с он гото́вится к ко́нкурсу музыка́нтов-исполни́телей * на духовы́х инструме́нтах *. Мне жа́лко, что кларне́т называ́ют духовы́м инструме́нтом. Когда́ я ду́маю о духовы́х инструме́нтах, я вспомина́ю большу́ю трубу́ *. Мне ка́жется, кларне́т мо́жно бы́ло назва́ть ка́к-нибудь по-другому...

Я учу́сь не о́чень хорошо́. Но э́то не ва́жно. Я реши́ла отда́ть свою́ жизнь бра́ту. Так ча́сто быва́ет с сёстрами вели́ких люде́й. Они́ да́же не выхо́дят за́муж. Я то́же не бу́йду. Никогда́! Ни за что́! Лёва уже́ зна́ет о моём реше́нии. Снача́ла он спо́рил, а пото́м согласи́лся.

К несча́стью, мно́гие лю́ди не зна́ют, како́й э́то ва́жный инструме́нт, кларне́т. Немно́гие зна́ют, что он начина́ет Пя́тую симфо́нию Чайко́вского *. «Незаме́тный геро́й орке́стра» — так говори́т о кларне́те Лёва. Он да́же рад, что кларне́т незаме́тный. Лёва то́же хо́чет быть незаме́тным. У него́ тако́й хара́ктер. Но я э́того не допущу́!

Всем сосе́дям я уже́ рассказа́ла, что Лёва — музыка́нт, и что он гото́вится к ко́нкурсу. Но я реши́ла ве-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

сти́ дневни́к, начина́я с како́го-нибудь вся́кого дня. И вот э́тот день пришёл!

Сего́дня в шко́ле меня́ останови́л десятикла́ссник * Ро́берт. Он взял меня́ за́ руку и спроси́л:

— Организу́ешь выступле́ние своего́ бра́та у на́с на нового́днем ве́чере? В пе́рвом отделе́нии мы хоте́ли послу́шать му́зыку и стихи́, а во второ́м — та́нцы. Му́зыки для пе́рвого отделе́ния у на́с нет. Мы наде́емся на твоего́ бра́та.

Я сра́зу поняла́, что у меня́ никогда́ не бу́дет тако́го слу́чая стать вели́кой и знамени́той. Не могла́ же я ка́ждому шко́льнику говори́ть, что мой брат у́чится в Консервато́рии. А тут все сра́зу узна́ют! Но я реши́ла немно́го подожда́ть.

— Ви́дишь ли, — сказа́ла я Ро́берту. — Мой брат сейча́с гото́вится к ко́нкурсу...

— На нового́дний ве́чер приглаша́ют то́лько деся́тые кла́ссы. Ты у́чишься в седьмо́м. Но я даю́ тебе́ два биле́та — для тебя́ и для бра́та.

Что бу́дет с мои́ми подру́гами, когда́ они́ узна́ют, что я приглашена́ на нового́дний ве́чер для старшекла́ссников *!

Я взяла́ два биле́та.

*22 декабря́*

Я хочу́ написа́ть ещё о вчера́шнем дне. Когда́ я пришла́ домо́й, Лёва игра́л на кларне́те. Он всегда́ игра́ет. И у́тром и ве́чером. Я не могу́ поня́ть, как у него́ хвата́ет терпе́ния. Лёва не прекраща́ет игра́ть, когда́ кто́-нибудь вхо́дит в ко́мнату. Как бу́дто он не замеча́ет. А мы все хо́дим о́чень ти́хо. Но вчера́ я не вы́держала и сказа́ла:

— Прости́ меня́, Лёва. Но у меня́ ва́жное де́ло. Тебя́ про́сят вы́ступить у на́с на нового́днем ве́чере. — Лёва не́сколько секу́нд помолча́л. Когда́ его́ отрыва́ют от люби́мого де́ла, он всегда́ немно́го молчи́т, как бу́дто возвраща́ется к нам из како́го-нибудь друго́го ми́ра. Так мне ка́жется...

— Тебя́ про́сят вы́ступить у на́с в шко́ле! — повтори́ла я, потому́ что ду́мала, что Лёва меня́ не услы́шал: он был в друго́м ми́ре.

— Я гото́в, — сказа́л Лёва. — Но слу́шать выступле́ние одного́ кларнети́ста * на нового́днем ве́чере? Мо́жет быть, пригласи́ть весь наш студе́нческий орке́стр? Это бу́дет лу́чше!

Я э́того не хоте́ла. Потому́ что тогда́ на пе́рвом ме́сте бу́дут скрипачи́ *, а Лёва бу́дет сиде́ть в углу́ сце́-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ны* и опять превратится в «незаметного героя оркестра».

— Ваш оркестр не поместится на нашей сцене, — ответила я. — И потом его никто не приглашал. В нашей школе очень любят кларнет. Поэтому просили прийти только тебя. Вот два билета.

— Я готов, — сказал Лёва. — А как же мой аккомпанемент?

«Мой аккомпанемент» — так Лёва называл студентку Лилю, которая всегда аккомпанировала* ему на пианино. Лиля не только играла вместе с Лёвой. Она в него влюблена. Это всем ясно. И поэтому она не откажется выступать у нас на вечере. Я не мешаю Лиле смотреть на Лёву, потому что она толстая и некрасивая. Я доверяю некрасивым женщинам, — они не смогут отвлечь моего брата от музыки!

— Что ты будешь играть, Лёва?

— Надо сыграть что-нибудь понятное, лёгкое. Может быть, «Полёт шмеля»*?

— Нет, это слишком известное. Может быть, из «Франчески да Римини»*?

— Можно.

После «Франчески да Римини»* мой брат уйдёт со сцены. Ему будут аплодировать. Он снова выйдет, но только для того, чтобы поклониться. Но тут я встану и скажу:

«Сыграй ещё, Лёва. Я прошу тебя!»

И назову такое произведение, которое никто из старшеклассников никогда в жизни не слышал. Лёва сыграет. А потом он придёт в зал и сядет рядом со мной. А потом будут танцы...*

— Ты будешь танцевать только со мной! — сказала я брату.

— Я готов... Но ты знаешь, я плохо танцую, старомодно*...

— Вот поэтому ты и будешь танцевать только со мной! Клянись.

— Хорошо, клянусь!

*27 декабря*

Да, у Наташи Ростовой* первый бал был намного счастливее, чем у меня! Намного счастливее!

Когда я составляю какие-нибудь планы, то вначале, когда я всё придумываю, всё идёт просто и хорошо, потому что участники будущих событий делают так, как мне хочется. И в этом, я думаю, главный недоста-

CC-0. Agamdigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ток мои́х пла́нов. Потому́ что в жи́зни уча́стники собы́тий начина́ют де́лать совсе́м по-другому́, как им сами́м хо́чется. И тогда́ ничего́ не получа́ется.

Вчера́ так и получи́лось. Об э́том не хо́чется писа́ть. Но я всё-таки напишу́, раз уж я веду́ дневни́к. А то у бу́дущих иссле́дователей жи́зни моего́ бра́та бу́дут вся́кие неясности.

Неприя́тности начали́сь с са́мого нача́ла.

Я была́ уве́рена, что встре́чу у шко́лы свои́х подру́г — шестикла́ссниц и семикла́ссниц, кото́рые попро́буют пройти́ на ве́чер. Но их не пропу́стят, а Лёва возьмёт меня́ по́д руку, и мы го́рдо пройдём к дверя́м шко́лы. Там бу́дут стоя́ть два старшекла́ссника с кра́сными повя́зками на руке́. Они́ закрича́т:

— Вы из Консервато́рии? К нам на конце́рт? Мы вас ждём!

Что́бы они́ так закрича́ли, я привела́ Лёву к шко́ле в после́днюю мину́ту. Но никого́ из мои́х подру́г о́коло шко́лы не́ было. Они́ не пришли́.

Десятикла́ссник с кра́сной повя́зкой побежа́л нам навстре́чу.

— Вы из рестора́на «Звёздное не́бо»? — спроси́л он у Лёвы.

— Он из Моско́вской консервато́рии — отве́тила я. — Это мой брат. Он бу́дет игра́ть у на́с на конце́рте.

— Проходи́те! — махну́л руко́й десятикла́ссник.

И мы вошли́ в шко́лу. Мы до́лго стоя́ли в о́череди в раздева́лку *. Вокру́г нас ходи́ли краси́вые, повзросле́вшие от пра́здничных пла́тьев десятикла́ссницы * и говори́ли о то́м, что та́нцы бу́дут до двена́дцати часо́в но́чи, что наш шко́льный джаз подгото́вил но́вую програ́мму, и что, мо́жет быть, прие́дет певе́ц из рестора́на «Звёздное не́бо».

Никто́ не обраща́л на на́с внима́ния. Наконе́ц, одна́ десятикла́ссница посмотре́ла на меня́ и спроси́ла:

— А ты что тут де́лаешь?

— Я с бра́том, — отве́тила я. О кларне́те и о Консервато́рии я ничего́ не смогла́ сказа́ть.

Де́вушка поверну́лась и посмотре́ла на Лёву так, как бу́дто ду́мала: выходи́ть за него́ за́муж и́ли нет? Эти десятикла́ссницы ча́сто так смо́трят на незнако́мых мужчи́н.

Мой брат не понра́вился ей, и она́ отверну́лась...

Но са́мое ужа́сное бы́ло ещё впереди́!

Лёва вы́шел на сце́ну. Он вы́глядел совсе́м не ка́к

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

арти́ст! Его́ костю́м был отглаженным*, а наши́ся мя́тым, и не Лёвиным, а чужи́м.

«Я сама́ бу́ду ходи́ть с Лёвой к портны́м! И сама́ бу́ду зака́зывать ему́ костю́мы!» — поду́мала я.

А пока́ с Лёвой к портны́м ходи́ла ма́ма. У неё был старомо́дный вкус. И на́ши мо́дные* мальчи́шки, наве́рное, смотре́ли на Лёву из пе́рвого ря́да и смея́лись.

Пото́м вы́шла Ли́ля с но́тами*. Ли́ля вела́ себя́ как на настоя́щем конце́рте: вы́шла уве́ренным ша́гом, с высоко́ по́днятой голово́й, стро́го поклони́лась. И на́ши мо́дные мальчи́шки захло́пали*. Ли́ля се́ла к пиани́но и смотре́ла на Лёву. Это то́же бы́ло как на настоя́щем конце́рте.

Лёва заигра́л отры́вок из «Франче́ски да Ри́мини». Я не слы́шала, как он игра́л, потому́ что волнова́лась. И смотре́ла на свои́х сосе́дей. Не́которые закры́ли глаза́ и слу́шали. Так слу́шают хоро́шую му́зыку. Пото́м захло́пали, но хло́пали не о́чень до́лго. Мо́жет быть, Лёве ну́жно бы́ло уйти́ со сце́ны, тогда́ бы хло́пали бо́льше. А так все по́няли, что он бу́дет игра́ть ещё.

Лёва улыбну́лся так, как бу́дто он был до́ма, махну́л руко́й и заигра́л «Полёт шмеля́». Ему́ сно́ва хло́пали, но ме́ньше, чем в пе́рвый раз.

Неожи́данно на сце́ну вы́шел Ро́берт. Он что́-то ти́хо сказа́л Лёве, и Лёва заигра́л ещё...

Когда́ он зако́нчил, он опя́ть по-дома́шнему улыбну́лся, как бу́дто в за́ле сиде́ли его́ ро́дственники. И э́то бы́ло совсе́м не ка́к на настоя́щем конце́рте!

Но са́мое ужа́сное бы́ло ещё впереди́. Но об э́том я напишу́ за́втра, потому́ что ма́ма уже́ два ра́за говори́ла, что мне пора́ спать.

— Если бы ты так до́лго де́лала уро́ки, — сказа́ла ма́ма. — Ты совсе́м не ду́маешь о своём бу́дущем!

Но я ду́маю о своём бу́дущем, поэ́тому и веду́ дневни́к.

*28 декабря́*

Перед вторы́м отделе́нием ве́чера все сту́лья вы́несли в коридо́р. И сра́зу коридо́р стал у́зким, а зал больши́м. Все девчо́нки бы́ли в хоро́шем настрое́нии. Все они́ прекра́сно вы́глядели! Внизу́, в раздева́лке э́то не́ было заме́тно, потому́ что мно́гие бы́ли ещё в пальто́, а тепе́рь бы́ли видны́ их пла́тья. А на мне́ бы́ло совсе́м де́тское пла́тье с воротнико́м, и я была́ ря́дом с ни́ми совсе́м некраси́вая. Но зато́ со мно́й ря́дом стоя́л мой

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

брат Лёва, будущий великий музыкант! Я спрятал под руку, и все на меня смотрели.

— Что тебе сказал Роберт на сцене? — спросила я.

— Должен был приехать певец из ресторана, но не приехал. И он просил меня ещё поиграть. Мне не было трудно ему помочь...

Это любимое Лёвино дело — кому-нибудь помогать. Его приятели всегда приходят к нему перед экзаменами, и он им помогает. Я боюсь, что на это уйдут все его силы.

Роберт на сцене сказал:

— Певец из ресторана не приехал, но наша Алина с нами!

— Ура! — закричали мальчишки. А девочки совсем немного похлопали. Они не любили Алину. Они завидовали ей потому, что она была очень красивая.

Так иногда женщины выходят грустные из кино, когда главную роль в фильме играет красавица. Они даже некоторое время не смотрят на своих мужей. Нет, я никогда не выйду замуж!

Мне хотелось, чтобы Лёве понравился наш школьный вечер, и я тихо сказала:

— Алина прекрасно знает польский язык! Как русский! И очень хорошо поёт!

Алина не только пела по-польски, но и выглядела, как полька. У неё были белые волосы, закрывающие один глаз.

Алина пела тихо, и все в зале просто не дышали, чтобы её хорошо слышать. Мальчишки хлопали ей изо всех сил и даже свистели, чем выражали свою радость и восторг. А Лёва начал хлопать так, как будто он был на концерте мировой знаменитости!

Когда Алина кончила петь, она решила прыгнуть в зал прямо со сцены. Все мальчишки бросились ей помогать и протянули руки. И тут произошло что-то совсем неожиданное: Лёва тоже подбежал к сцене и протянул Алине руку!

Мне было обидно, что Лёвина рука потерялась среди других рук, но Алина со сцены разглядела Лёвину руку и взяла именно её! Лёва стал красным, Алина прыгнула в зал, и он поблагодарил её. За что? Помоему, это она должна была сказать ему «спасибо»!

Наш школьный оркестр заиграл танго. И я подумала, что сейчас я буду в первый раз танцевать на вечере старшеклассников. Лёва подбежал ко мне, протянул мне кларнет и сказал:

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Подержи́, пожа́луйста!

Пото́м он опя́ть побежа́л к сце́не и протяну́л Али́не ру́ку, приглаша́я её танцева́ть.

Как я ненави́дела Али́ну в э́ту мину́ту! Я ненави́дела да́же её и́мя — оно́ бы́ло тако́е ре́дкое, необы́чное. Она́ заста́вила Лёву бро́сить свою́ сестру́, кото́рая хоте́ла посвяти́ть ему́ всю́ жизнь *!

По́сле та́нго Лёва подошёл ко мне́ кра́сный и взволно́ванный.

— Ты́ же обеща́л танцева́ть то́лько со мно́й! — закрича́ла я.

— Да, — отве́тил Лёва, — но я уме́ю танцева́ть то́лько та́нго. Ты́ же зна́ешь, что друго́й та́нец я танцева́л бы смешно́.

Орке́стр заигра́л твист. И я не успе́ла спасти́ своего́ бе́дного бра́та! Али́на сама́ подошла́ к Лёве и пригласи́ла его́ танцева́ть. И Лёва пошёл танцева́ть твист, кото́рый танцева́ть не уме́л...

Когда́ ве́чер ко́нчился, мы пошли́ провожа́ть Али́ну домо́й, а её дом находи́лся совсе́м в другу́ю сто́рону от на́шего.

Я всю доро́гу молча́ла. А Али́на про́сто не закрыва́ла рот. И говори́ла она́ в свой мехово́й воротни́к:

— Берегу́ го́рло! — объясни́ла она́.

Вы слы́шали? Она́ бережёт го́рло! Она́, наве́рное, ду́мает, что она́ вели́кая певи́ца!

— Сра́зу по́сле Но́вого го́да, — сказа́л Лёва, — у на́с бу́дет конце́рт студе́нтов второ́го ку́рса в ма́лом за́ле Консервато́рии... Для меня́ бу́дет больши́м пода́рком, е́сли вы придёте.

— Да́йте мне ваш телефо́н, я вам позвоню́, — отве́тила Али́на.

— Нет, вы мо́жете не дозвони́ться. Мо́жет быть, мы сра́зу договори́мся?

Наконе́ц, Али́на согласи́лась прийти́.

— Мы бу́дем ждать вас у вхо́да! — сказа́л Лёва.

У меня́ не оста́лось сомне́ний — он влюби́лся!

*29 декабря́*

Вся моя́ жизнь под смерте́льной угро́зой! Вся моя́ жизнь! Но я ду́маю, коне́чно, не о себе́, а о Лёве! Ра́ди него́ я пойду́ на всё!* Настоя́щие сёстры ча́сто вме́шиваются в жизнь свои́х бра́тьев! Я то́же вмеша́юсь! Лёва забу́дет Али́ну и хорошо́ подгото́вится к ко́нкурсу! Я должна́ де́йствовать, и я бу́ду...

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

*30 декабря́*

Сего́дня после́дний день перед кани́кулами. Я о́чень люблю́ кани́кулы! Учителя́ отдохну́т от на́с, мы отдохнём от ни́х. И поэ́тому у все́х хоро́шее настрое́ние. Старшекла́ссники бе́гают по шко́льному коридо́ру и договарива́ются, кто с кем бу́дет встреча́ть Но́вый год.

Но у меня́ на душе́ тяжело́. Я ду́маю об Али́не!

Перед после́дним уро́ком Али́на подошла́ ко мне́ сама́. Но я да́же одного́ ша́га не сде́лала ей навстре́чу. Она́ улыбну́лась мне одни́м гла́зом, потому́ что второ́й у неё всегда́ был закры́т све́тлыми волоса́ми.

— Каки́е у тебя́ отме́тки? Роди́тели бу́дут дово́льны?

Я зна́ю, что обы́чно неве́сты хотя́т подружи́ться с роди́телями свои́х женихо́в. Али́на ещё не была́ знако́ма с ма́мой и па́пой, она́ реши́ла нача́ть с меня́. Но у неё ничего́ не полу́чится!

— Поздравля́ю тебя́ с Но́вым го́дом, — продолжа́ла Али́на. — И всех на́ших о́бщих знако́мых.

Я поняла́, что она́ говори́т о Лёве.

— Уви́димся в но́вом году́, — сказа́ла Али́на. — Ме́сто встре́чи всё то́ же?

Тут я сде́лала реши́тельный шаг.

— Вы зна́ете, — сказа́ла я ти́хо, — Лёва о́чень проси́л меня́ извини́ться перед ва́ми, но на́ша встре́ча не состои́тся. У него́ есть неве́ста *, и ей бы́ло бы неприя́тно, е́сли бы...

— Кака́я неве́ста?

— Его́ аккомпаниа́торша *. Она́ некраси́вая, но у них о́бщее де́ло — они́ о́чень лю́бят му́зыку. И о́чень лю́бят друг дру́га.

Это была́ ложь для спасе́ния бра́та. Смо́жет ли он оцени́ть э́то в бу́дущем?

*3 января́*

Вчера́ был конце́рт студе́нтов Консервато́рии... Он начина́лся в семь три́дцать ве́чера, но мы с Лёвой пришли́ на ча́с ра́ньше. Лёва боя́лся, что Али́на перепу́тает вре́мя и придёт на ча́с ра́ньше, потому́ что не́которые конце́рты начина́ются в шесть три́дцать.

Мы бы, наве́рное, совсе́м замёрзли, е́сли бы не бе́гали навстре́чу ка́ждой краси́вой де́вочке, кото́рая появля́лась на у́лице, потому́ что Лёве ка́ждый раз каза́лось, что э́то Али́на.

Наконе́ц Лёва сказа́л:

— С ней что́-то случи́лось? Как ты ду́маешь?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

— Ничего́ с ней не случи́лось! Про́сто она́ не лю́бит му́зыку. А осо́бенно не лю́бит кларне́т!

В э́ту мину́ту появи́лись ма́ма и па́па. Они́ шли торже́ственные и наря́дные* и го́рдо смотре́ли по сторона́м, как бу́дто все вокру́г должны́ бы́ли знать, что их сын выступа́ет сего́дня в Консервато́рии. А их Лёва, кото́рым они́ так горди́лись, пры́гал от хо́лода как воробе́й.

Лёве пора́ бы́ло идти́ внутрь, а я оста́лась на у́лице и обеща́ла ждать ещё мину́т де́сять, хотя́ и зна́ла, что Али́на не придёт.

Наконе́ц, начался́ конце́рт. Седо́й мужчи́на произнёс на́шу фами́лию, и на сце́ну вы́шел Лёва. Он нашёл меня́ глаза́ми, уви́дел ря́дом со мно́й пусто́е ме́сто и о́чень расстро́ился.

Я не слы́шала, как он игра́л, потому́ что смотре́ла вокру́г себя́ на зри́телей. Пото́м ему́ хло́пали, но не о́чень си́льно.

Пото́м я услы́шала го́лос, кото́рый сказа́л:

— У него́ сего́дня не получа́ется.

Друго́й го́лос отве́тил:

— Да, сего́дня он игра́ет пло́хо.

Я зна́ла, что сза́ди меня́ сиде́ли Лёвины преподава́тели. Мне захоте́лось поверну́ться к ним и закрича́ть:

— Это я во всём винова́та!

Но́чью я слы́шала, как Лёва перевора́чивается в посте́ли и да́же что́-то говори́т. Пото́м он встал и пошёл на ку́хню. Когда́ он верну́лся, я спроси́ла:

— Что с тобо́й? Ты пло́хо себя́ чу́вствуешь?

— Нет... Про́сто хо́чется пить. Как ты ду́маешь, почему́ она́ не пришла́?

Я не смогла́ молча́ть.

— Это я винова́та, Лёва!

Я рассказа́ла всё. Я не ви́дела Лёвиного лица́. Так мне бы́ло ле́гче говори́ть.

— Ты поступи́ла пло́хо, — сказа́л Лёва.

Когда́ таки́е слова́ произно́сят гро́мко, э́то зна́чит, что челове́к про́сто се́рдится. А Лёва сказа́л их ти́хо и споко́йно. Зна́чит, он был в э́том уве́рен. Мне ста́ло хо́лодно под одея́лом.

— Никто́ не име́ет пра́ва вме́шиваться в дела́ други́х люде́й! — сказа́л Лёва.

Я се́ла к нему́ на посте́ль.

— А всё-таки хорошо́, что она́ не пришла́ из-за меня́. А не сама́. Хорошо́?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
Было темно, но я увидела, что Лёва улыбну́лся. И я пошла́ к себе́ в ко́мнату.

Я не бу́ду бо́льше вести́ дневни́к. А то в кни́ге о моём бра́те мо́гут не помести́ть мой портре́т со слова́ми «Сестра́ музыка́нта».

### टिप्पणियाँ

вести́ дневни́к — डायरी लिखना

списа́ть дома́шнее зада́ние — होम वर्क (घर के काम) की नक़ल करना

консервато́рия — संगीत-महाविद्यालय

кларне́т — क्लैरिनेट (छोटा सुषिर वाद्य)

ко́нкурс музыка́нтов-исполни́телей — वादकों की प्रतियोगिता

духово́й инструме́нт — सुषिर वाद्य (फूँककर बजाया जानेवाला बाजा)

труба́ — तुरही, ट्रैम्पिट

Чайко́вский П. И. (1840–1893) — महान् रूसी संगीतकार

десятикла́ссник — दसवीं कक्षा का छात्र

старшекла́ссник — बड़ी कक्षाओं (आठवीं-दवसीं) का छात्र

кларнети́ст — क्लैरिनेट-वादक

скрипа́ч — वायलिन-वादक

сце́на — [रंग-]मंच

аккомпани́ровать — संगत (संगति) करना

«Полёт шмеля́» — «भौंरे की उड़ान» (रूसी संगीतकार न० अ० रीम्स्की-कोर्साकोव (१८४४-१९०८) के «ज़ार सल्तान की कथा» नामक ओपेरा का संगीत-खंड)

«Франче́ска да Ри́мини» — «फ़्रांचेस्का दा रीमिनी» (आर्केस्ट्रा के लिए प० इ० चाइकोव्स्की की फ़ैन्टेसी-रचना)

А пото́м бу́дут та́нцы... — और फिर सब नाचेंगे...

старомо́дно — पुराने ढंग से

Ната́ша Ростова — नताशा रोस्तोवा (लेव तोल्स्तोय (१८२८-१९१०) के सुप्रसिद्ध उपन्यास «युद्ध और शांति» की प्रमुख नायिका)

раздева́лка — क्लोक-रूम

десятикла́сница — दसवीं कक्षा की छात्रा

отгла́женный — इस्त्री किया हुआ

мо́дный — फ़ैशनदार

но́ты — स्वर-लिपि-पुस्तिका

хло́пать — तालियाँ बजाना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.
посвятить ему всю жизнь — उसके लिए जीवन अर्पित करना
Ра́ди него́ я пойду́ на всё! — उसके लिए मैं सब-कुछ करने को तैयार हूँ!
неве́ста — मंगेतर, दुलहन
аккомпани́аторша — संगत (संगति) करनेवाली
наря́дный — बना-ठना, सजा-धजा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

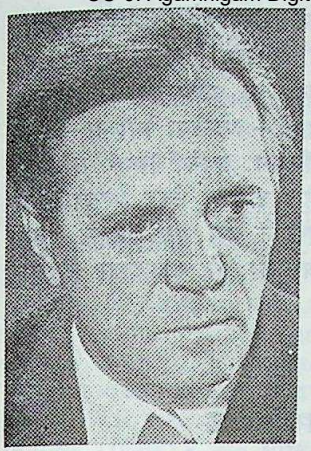

Виктор Астафьев
वीक्तोर अस्ताफ़्येव
( जन्म १९२४ )

वीक्तोर पेत्रोविच अस्ताफ़्येव हमारे समकालीन हैं। उनका जन्म साइबेरिया के क्रास्नोयार्स्क इलाक़े के ओव्स्यान्का गाँव में हुआ। उनकी कृतियों में सोवियत वास्तविकता और साइबेरिया के गाँव की महत्वपूर्ण समस्याएँ प्रस्तुत की जाती हैं। साथ ही वह ऐसे कलाकार हैं जिनके सृजन में १९वीं सदी के रूसी क्लासिकीय साहित्य की श्रेष्ठ परंपराएँ जारी हैं।

अस्ताफ़्येव जन-जीवन की गहराइयों से वे नैतिक मूल्य लेते हैं जो सदियों से रूसी चरित्र में प्रविष्ट होते आये हैं – उदारता, आत्मिक शुद्धता, असीम दयालुता, उद्यमशीलता और शांतिप्रियता। उनकी सब कृतियाँ सजीव प्रकृति की महत्ता के भाव से ओत-प्रोत हैं। अस्ताफ़्येव प्रकृति के सौंदर्य, मातृभूमि, लोगों के पारस्परिक संबंधों और व्यक्तित्व के निर्माण के बारे में लिखते हैं।

अपनी रचनाओं में अस्ताफ़्येव उस पूरी पीढ़ी के लोगों की जीवनी प्रस्तुत करते हैं जो तीसरे दशक के मध्य में पैदा हुए थे और जिनके भाग्य में कठिन बचपन, युद्धरत युवा-काल और कठोर युद्धोत्तर दशक लिखे थे। लेकिन सारे जीवन के दौरान इस पीढ़ी के लोगों ने उदात्तता से प्रेम करने की योग्यता बनाये रखी है और जो युद्ध से न लौट पाये उनकी स्मृति में इस धरती को सुंदर तथा सुखी बनाये रखने के लिए वे प्रयत्नशील हैं।

अस्ताफ़्येव ने अनेक कहानियाँ और उपन्यासिकाएँ लिखी हैं। इनमें «अगले वसंत तक» (१९५३), «बर्फ़ पिघलनी है» (१९५६), «स्तारोदूब» (१९५९), «उतारा» (१९५९), «चोरी» (१९६६), «नीली शाम» (१९६८), «ग्वाला और ग्वालिन» (१९७४), «कहीं युद्ध गरजता है» (१९७५), «मछली-रानी» (१९७६), «स्मृति की छड़ी» (१९८०)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
во́нтий кому-нибудь из своих детей. И пока он неохо́тно уступа́л мне своё ме́сто, объясня́л де́тям:

— Он сирота́, а у тебя́ есть роди́тели.

И, посмотре́в на меня́, спра́шивал:

— Ты ма́му по́мнишь?

Я говори́л, что по́мню, и тогда́ дя́дя Лево́нтий начина́л пла́кать и вспомина́ть:

— Мы с ней вме́сте рабо́тали...

Тут тётя Васе́ня, де́ти дя́ди Лево́нтия и я вме́сте с ни́ми то́же начина́ли пла́кать, и тако́е чу́вство доброты́ появля́лось у все́х, что меня́ угоща́ли всем, что бы́ло в до́ме.

Вот с детьми́ дя́ди Лево́нтия я и собра́лся за земляни́кой, что́бы трудо́м зарабо́тать свой пря́ник. Де́ти несли́ туески́, сде́ланные из коры́ берёзы, броса́ли их друг в дру́га, драли́сь, пла́кали.

Ско́ро мы пришли́ в лес. Тут все переста́ли игра́ть и дра́ться и на́чали собира́ть земляни́ку.

Я собира́л стара́тельно и ско́ро уже́ не́ было ви́дно дно моего́ туеска́. Ба́бушка мне всегда́ говори́ла:

— Са́мое тру́дное — закры́ть дно, а пото́м бу́дет ле́гче собира́ть.

Я вздохну́л с облегче́нием и на́чал собира́ть я́годы ещё быстре́е.

Снача́ла лево́нтьевские де́ти собира́ли я́годы мо́лча. То́лько звене́ла кры́шка от ча́йника, кото́рая была́ у ста́ршего. Эта кры́шка звене́ла для того́, что́бы мы слы́шали, что ста́рший здесь, и не ну́жно боя́ться.

Вдруг кры́шка зазвене́ла гро́мко и я услы́шал:

— Почему́ ты ешь я́годы? Что ты принесёшь домо́й? — спра́шивал ста́рший у кого́-то. Пото́м запла́кала Та́нька * и сказа́ла:

— Са́нька * то́же ест!

Ста́рший на́чал руга́ть и Са́ньку. Са́нька рассерди́лся, бро́сил свой туесо́к в траву́ и лёг ря́дом. Ста́ршему ста́ло оби́дно. Он собира́л я́годы, стара́лся, а его́ бра́тья и сёстры едя́т их и́ли про́сто лежа́т в траве́. Он подошёл к Са́ньке и уда́рил его́. Са́нька на́чал дра́ться со ста́ршим. Они́ урони́ли ча́йник и я́годы упа́ли на траву́. Де́ти упа́ли на я́годы и раздави́ли их.

По́сле дра́ки ста́рший на́чал собира́ть разда́вленные я́годы пря́мо в рот.

— Вам мо́жно есть я́годы, зна́чит, мне то́же мо́жно. — И съел всё, что смог подня́ть из травы́.

Ско́ро бра́тья переста́ли дра́ться и реши́ли сходи́ть на ре́чку искупа́ться.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Мне то́же хоте́лось искупа́ться*, но я не уходи́л, потому́ что ещё не собра́л по́лный туесо́к.

— Он ба́бушку бои́тся! — закрича́л Са́нька.

— Мне ба́бушка за я́годы пря́ник ку́пит! — отве́тил я.

— Ты её бои́шься. И ещё ты жа́дный!

— Я?

— Ты!

— Жа́дный?

— Жа́дный!

— А хо́чешь я все я́годы съем? — Я сказа́л э́то и сра́зу пожале́л о ска́занном.

— Не смо́жешь, — сказа́л Са́нька.

— Смогу́! — сказа́л я, и что́бы не показа́ться жа́дным, вы́сыпал все я́годы в траву́.

— Ешьте все вме́сте со мно́й!

Я́годы бы́стро исче́зли. Жа́лко я́год. Гру́стно. Но я стара́лся показа́ть всем, что я весёлый. Тепе́рь уже́ бы́ло всё равно́. Я побежа́л вме́сте с лево́нтьевскими детьми́ к ре́чке.

Мы ходи́ли по воде́ и лови́ли ры́бу рука́ми. Пото́м кида́ли ка́мни в пролета́ющих птиц.

Мы провели́ день так интере́сно и ве́село, что я совсе́м забы́л про я́годы. Но пришло́ вре́мя возвраща́ться домо́й. Мы взя́ли свои́ туески́, спря́танные под де́ревом.

— Бу́дет тебя́ ба́бушка руга́ть! — засмея́лся Са́нька. — Я́годы-то съе́ли! Нам ничего́ не ска́жут, а тебя́ бу́дут руга́ть!

Я и сам знал, что бу́дут руга́ть. Моя́ ба́бушка — э́то не тётя Васе́ня.

Я ти́хо шёл из ле́са за лево́нтьевскими ребя́тами.

— Зна́ешь что? — сказа́л мне Са́нька, поговори́в с бра́том, — возьми́ траву́ и положи́ её в туесо́к. А све́рху положи́ немно́го я́год.

Са́нька убежа́л, а я оста́лся в лесу́. Мне ста́ло стра́шно. Дере́вня была́ недалеко́, но мне всё равно́ бы́ло стра́шно.

Я запла́кал и стал собира́ть траву́. Положи́л её вниз в туесо́к, пото́м собра́л я́годы и положи́л их све́рху. Получи́лось мно́го.

— Хоро́ший ты мой! — сказа́ла ба́бушка, когда́ я о́тдал ей туесо́к. — Я куплю́ тебе́ са́мый большо́й пря́ник! Так и повезу́ я́годы в твоём туеске́!

Я ду́мал, что ба́бушка сра́зу уви́дит, что я её обману́л. И сра́зу пригото́вился к наказа́нию. Но ба́бушка

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

унесла́ туесо́к в холо́дное ме́сто, ещё раз появали́ла меня́, покорми́ла у́жином, и я поду́мал, что боя́ться мне пока́ не́чего, и жизнь совсе́м не плоха́я.

Но́чью я не мо́г засну́ть.

— Ба́бушку обману́л, — ду́мал я. — Что тепе́рь со мно́й бу́дет?

— Ты почему́ не спи́шь? — спроси́ла ба́бушка из темноты́. — Ты простуди́лся?

— Нет, — отве́тил я. — Про́сто я сон уви́дел.

«Мо́жет быть, ну́жно разбуди́ть ба́бушку и рассказа́ть ей обо всём?» — ду́мал я.

Но ба́бушка спала́. Жа́лко её буди́ть. Она́ уста́ла. Ей за́втра ну́жно ра́но встава́ть. Нет. Я лу́чше бу́ду спать до утра́, а у́тром расскажу́ ей всё: и как мы провели́ день, и про я́годы.

От э́того реше́ния мне ста́ло ле́гче, и я не заме́тил, как закры́лись мои́ глаза́.

Де́душка жил в лесно́м до́мике киломе́трах в пяти́ от дере́вни, у реки́. Там у на́с росла́ карто́шка *.

О колхо́зах * тогда́ ещё то́лько начина́ли говори́ть, и лю́ди из на́шей дере́вни жи́ли единоли́чно* . У де́душки я люби́л быва́ть, там у него́ бы́ло о́чень споко́йно. Мо́жет быть, оттого́, что де́душка никогда́ не шуме́л и рабо́тал не торопя́сь.

Если бы де́душкин до́мик был бли́же, я бы ушёл туда́, спря́тался. Но пять киломе́тров тогда́ бы́ли для меня́ огро́мным расстоя́нием.

Я до́лго ходи́л по избе́, а пото́м опя́ть пошёл к де́тям дя́ди Лево́нтия.

— Уе́хала ба́бушка! — засмея́лся Са́нька и плю́нул в ды́рку ме́жду пере́дних зубо́в. Эта ды́рка была́ така́я больша́я, что в ней мог вы́расти ещё оди́н зуб, и мы все о́чень хоте́ли, что́бы у на́с была́ така́я же. Он так хорошо́ в неё плева́л!

Са́нька собира́лся на ры́бную ло́влю.

— У меня́ крючка́ * нет, — сказа́л он. — А у тебя́ мно́го крючко́в, дай мне оди́н. Я тебя́ с собо́й возьму́.

Я обра́довался и побежа́л домо́й. Взял у́дочки, хлеб, и мы пошли́ к Енисе́ю *.

Ста́ршего сы́на дя́ди Лево́нтия сего́дня не́ было, потому́ что оте́ц взял его́ с собо́й на рабо́ту. Сего́дня ста́ршим был Са́нька. Он чу́вствовал себя́ гла́вным и не разреша́л мла́дшим дра́ться.

Са́нька поста́вил у́дочки и мы замолча́ли. Ры́бы

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
до́лго не́ было, мы устали ждать, и Са́нька предложил нас собира́ть траву́, кото́рую мо́жно бы́ло есть.

Де́ти дя́ди Лево́нтия зна́ли, каку́ю траву́ мо́жно есть, е́ли её и поэ́тому бы́ли си́льные и здоро́вые.

Пока́ мы собира́ли траву́, Са́нька пойма́л не́сколько ма́леньких ры́бок. Мы зажгли́ на берегу́ ого́нь, Са́нька наде́л ры́бок на па́лочки и на́чал их жа́рить.

Мы съе́ли ры́бу почти́ сыру́ю, без со́ли. А пото́м на́чали игра́ть. Броса́ли ка́мни в во́ду, хоте́ли искупа́ться, но бы́ло хо́лодно, поэ́тому мы бы́стро вы́шли из реки́, лежа́ли у огня́, игра́ли в траве́.

День был со́лнечный, ле́тний. Вокру́г цвели́ цветы́. Ли́стья берёзы блесте́ли. Лес стоя́л неподви́жно, и далеко́ был ви́ден железнодоро́жный мост, а его́ бы́ло ви́дно то́лько в хоро́шую пого́ду. Отту́да, из-за моста́ должна́ была́ прие́хать ба́бушка. Что тогда́ со мно́й бу́дет?

Как хорошо́ бы́ло жить ра́ньше. Мо́жно бы́ло ходи́ть, бе́гать, ни о чём не ду́мать. Мо́жет быть, ло́дка перевернётся и ба́бушка уто́нет? Нет, пуска́й она́ бу́дет лу́чше жива́. Моя́ ма́ма утону́ла. В э́том нет ничего́ хоро́шего. Я тепе́рь сирота́, несча́стный челове́к. Меня́ никто́ не жале́ет. То́лько дя́дя Лево́нтий. А ба́бушка ча́сто на меня́ кричи́т. И де́душки нет. Он далеко́, в лесу́. Он бы не позво́лил меня́ оби́деть. Но его́ нет. Я запла́кал.

— Ты чего́ пла́чешь? — спроси́л меня́ Са́нька.

— Ничего́-о-о! — го́лосом я пока́зывал Са́ньке, что он во всём винова́т.

— Не ходи́ домо́й! — сказа́л Са́нька. — Не ходи́ домо́й и всё. Твоя́ ба́бушка бои́тся, что ты то́же уто́нешь. Как то́лько она́ испуга́ется, что тебя́ до́лго нет, начнёт пла́кать, так ты и придёшь.

— Не бу́ду я так де́лать! И слу́шать тебя́ не бу́ду!

Вдруг на реке́ появи́лась ло́дка. В ней бы́ло тро́е мужчи́н. Она́ была́ бли́же, бли́же... И вдруг я уви́дел ещё одного́ челове́ка. У него́ на голове́ был плато́к. Под платко́м — кра́сная ко́фта. Эту ко́фту ба́бушка всегда́ надева́ла, когда́ е́здила в го́род.

Это была́ ба́бушка!

Я побежа́л от реки́, упа́л. Встал и опя́ть побежа́л вдоль бе́рега.

— Ты куда́? — закрича́ла ба́бушка. — Стой! Стой, говорю́!

Но я бежа́л изо все́х сил.

Наступа́л ве́чер. На́до бы́ло возвраща́ться до́мой. Но я не хоте́л домо́й и пошёл к своему́ ро́дственнику Ке́ше,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
жи́вшему на друго́м краю́ дере́вни. Во́зле его́ до́ма игра́ли де́ти. Пришла́ тётя Фе́ня, Ке́шина ма́ма, и спроси́ла меня́:

— Ты почему́ не идёшь домо́й? Ба́бушка бу́дет волнова́ться.

— Не бу́дет, — отве́тил я. — Она́ уе́хала в го́род и, наве́рное, оста́нется там ночева́ть.

Тётя Фе́ня покорми́ла меня́, и я с ра́достью съел всё, что она́ мне дала́. Я уже́ поду́мал, что она́ оста́вит меня́ ночева́ть, но она́ взяла́ меня́ за́ руку и отвела́ домо́й.

В до́ме бы́ло уже́ темно́. Тётя Фе́ня постуча́ла в окно́. Ба́бушка кри́кнула, что дверь не запертá. Мы вошли́ в ти́хий тёмный дом. Тётя Фе́ня отвела́ меня́ в ма́ленькую ко́мнату. Бы́ло ти́хо. У моста́ игра́ли на гармо́шке *. На мосту́ у на́с собира́ется молодёжь, танцу́ет и поёт. Я услы́шал, как ушла́ тётя Фе́ня, закры́в за собо́й дверь. Ста́ло совсе́м темно́, одино́ко и хо́лодно. Пото́м я засну́л.

Я просну́лся от со́лнечного луча́, проходи́вшего сквозь окно́. Я посмотре́л вокру́г и обра́довался: на мне́ лежа́ла ста́рая де́душкина шу́ба. Зна́чит, но́чью прие́хал де́душка.

На ку́хне ба́бушка расска́зывала:

— Подхо́дит ко мне́ же́нщина в шля́пе и говори́т: «Я у ва́с куплю́ все э́ти я́годы!»

Тут я переста́л слы́шать, потому́ что накры́л го́лову шу́бой. Мне хоте́лось умере́ть.

В мою́ ко́мнату вошла́ ба́бушка. Я закры́л глаза́.

— Ты не спи́шь, не спи́шь! Я всё ви́жу! — сказа́ла ба́бушка.

Но я не встава́л с посте́ли. Пришла́ ба́бушкина подру́га, спроси́ла, как ба́бушка съе́здила в го́род. Ба́бушка отве́тила, что хорошо́, и сра́зу начала́ про меня́ расска́зывать.

В э́то у́тро к ней приходи́ло мно́го люде́й и она́ всем расска́зывала про меня́. Ка́ждый раз, когда́ она́ проходи́ла ми́мо меня́, она́ говори́ла:

— Ты не спи́шь, не спи́шь! Я всё ви́жу!

Я знал, что она́ ско́ро уйдёт. Всё равно́ уйдёт, что́бы рассказа́ть всем городски́е но́вости, узна́ть, что без неё произошло́ в дере́вне. И ка́ждому, кого́ встре́тит, она́ бу́дет расска́зывать про меня́.

В ко́мнату вошёл де́душка. Он погла́дил меня́ по голове́, и все слёзы, кото́рые бы́ли у меня́ внутри́, потекли́ из мои́х глаз.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Де́душка успокаивал меня́.

— Иди́, попроси́ проще́ния. Что ты тут голо́дный лежи́шь?

Я встал, пошёл к ба́бушке и запла́кал ещё сильне́е.

— Я бо́льше... Я бо́льше... Я бо́льше не бу́ду... — И ничего́ бо́льше сказа́ть не мо́г.

— Иди́ умыва́йся и сади́сь есть, — всё ещё серди́-то сказа́ла ба́бушка.

Я умы́лся. До́лго вытира́лся полоте́нцем. Сел к столу́. Взял со стола́ кусо́к хле́ба и на́чал его́ есть. Ба́бушка налила́ мне молока́ и поста́вила на сто́л.

Я молча́л. Я знал, что сейча́с ничего́ нельзя́ говори́ть ба́бушке. Она́ должна́ была́ сама́ сказа́ть мне, что она́ ду́мает. Ба́бушка до́лго руга́ла меня́. Я ещё раз запла́кал. Она́ закрича́ла на меня́.

Но вот зако́нчила говори́ть ба́бушка. Ушёл куда́-то де́душка. Я сиде́л, опусти́в глаза́, и смотре́л вниз. А когда́ по́днял глаза́, уви́дел перед собо́й...

Я закры́л глаза́ и сно́ва откры́л их. Ещё раз закры́л и ещё раз откры́л. По столу́, как по огро́мной земле́, бежа́л бе́лый конь с ро́зовой гри́вой.

— Бери́, бери́! — сказа́ла ба́бушка. — Но не обма́нывай меня́ бо́льше...

Ско́лько лет прошло́! Ско́лько собы́тий! А я не могу́ забы́ть ба́бушкиного пря́ника — бе́лого коня́ с ро́зовой гри́вой.

### टिप्पणियाँ

земляни́ка — वन्य स्ट्राबेरी

туесо́к — छाल की बनी टोकरी

я́года — बेरी

пря́ник — हनी केक

конь — घोड़ा

руби́ть лес — लकड़ी काटना

бе́лый свет — ( यहाँ ) चारों ओर का नज़ारा

ру́сская пе́чка — बेकारी की भट्ठी जैसा अलाव-घर जिसमें खाना पकाया जाता है और जो घर को गरम भी रखता है। इसके ऊपर और इसकी बग़ल में पटरों पर सोया भी जा सकता है।

угости́ть — खिलाना

Та́нька — तान्य्का ( तत्याना नाम का बोल-चाल का रूप )

Са́нька — सान्य्का ( अलेक्सान्द्र नाम का बोल-चाल का रूप )

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

искупа́ться — नहाना

карто́шка — आलू

колхо́з — सामूहिक फ़ार्म

единоли́чно — निजी खेती करके

крючо́к — काँटा

Енисе́й — येनिसेई (सोवियत संघ के पूर्व में एक बहुत बड़ी नदी जो पश्चिम और पूर्वी साइबेरिया की सीमा पर बहती है)

гармо́шка — रूसी अकार्डियन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

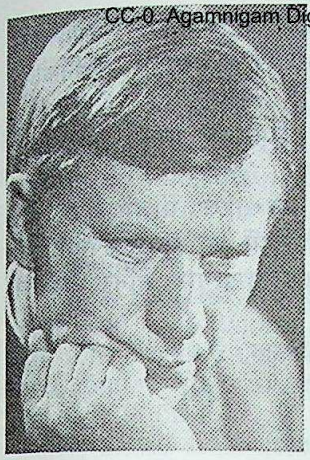

Василь Быков
वसील बीकोव
(जन्म १९२९)

वसील व्लादीमिरोविच बीकोव सुप्रसिद्ध समसामयिक लेखक हैं। वह बेलोरूसी हैं। उनकी रचनाओं में रूसी तथा बेलोरूसी साहित्य की श्रेष्ठ परंपराएँ बनी हुई हैं। बीकोव स्वयं महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध में लड़े और इस युद्ध के बारे में ही लिखते हैं।

परंतु वह युद्ध की गति में और लड़ाई के तौर-तरीक़ों में नहीं, बल्कि आत्मा की ऊँचाई और युद्ध में मनुष्य के नैतिक जगत् में रुचि लेते हैं। वह आम जनता से निकले नायकों को चित्रित करते हैं जिन्होंने यातनाएँ झेलीं, कष्ट पर कष्ट उठाया, जिन्होंने अपना ख़ून बहाया और अपने प्राणों की आहुति दी।

बीकोव ऐसी परिस्थितियाँ चुनते हैं जब आदमी के सम्मुख अनिवार्य रूप से एक ही नैतिक चयन होता है—मरना या ग़द्दारी करके ज़िंदा बच रहना। इस चयन पर किसी सैनिक कार्रवाई की सफलता निर्भर नहीं होती, लेकिन आदमी और उसके कार्य सबसे ऊँची अदालत के सामने खड़े हो जाते हैं जो है लोक-स्मृति तथा अपने अंतःकरण की अदालत। बीकोव चाहते हैं कि हम युद्ध के मानवता-विरोधी पहलू पर विचार करें। वह यह दिखाते हैं कि युद्ध विनाशकारी शक्ति है जबकि प्रेम सृजनकारी, रचनात्मक शक्ति है जो युद्ध को पराजित करती है। न केवल दूसरे व्यक्ति से प्रेम, बल्कि अपने चारों ओर के संसार से, प्रकृति से, जन्म-भूमि से प्रेम।

अपनी कृतियों में बीकोव अनेक विविध समस्याओं का समाधान करते हैं, लेकिन उनमें से एक सबसे प्रमुख समस्या है सोवियत आदमी की नैतिक वीरता, उसकी देखने में साधारण, अदृश्य वीरता का चित्रण। यह बात उनकी पहली उपन्यासिकाओं—«सारस की पुकार» (१९६०), «तीसरा राकेट» (१९६२), «आल्प्स पर्वतों का गाथा-गीत» (१९६४),

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
«फँदा» (१९६६) – में देखने को मिलती है। यही समस्या छापामारों के बारे में उनकी रचनाओं «क्रुग्ल्यान्स्की पुल» (१९६९), «सोतनिकोव» (१९७०), «प्रातः तक जीना है» (१९७२), «सूची-स्तंभ» (१९७३), «भेड़ियों का झुंड» (१९७४), «जाना और वापस न आना» (१९७८) में प्रस्तुत हैं।

बीकोव की कृतियों के कथानक देखने में सरल मालूम होते हैं, लेकिन उनमें भावनात्मक तनाव होता है। «भेड़ियों का झुंड» उपन्यासिका का कथानक ऐसा ही है। इसमें एक साधारण छापामार सैनिक के एक दिन का वर्णन है।

यहाँ इस उपन्यासिका का एक अंश प्रस्तुत है।

## ВОЛЧЬЯ СТАЯ

Левчу́к вы́бежал из горя́щего до́ма и побежа́л в ту сто́рону, где должны́ бы́ли пря́таться Кла́ва * с ребёнком *. У доро́ги стреля́ли, и он побежа́л через по́ле к ле́су. Неожи́данно в темноте́ он уви́дел бе́лое пятно́. С чу́вством удивле́ния и наде́жды он подбежа́л к нему́ и уви́дел, что не оши́бся. Это был ребёнок. Левчу́к поду́мал, что где́-то ря́дом должна́ быть и Кла́ва, но её нигде́ не́ было. Зна́чит она́ поняла́, что не смо́жет спасти́сь и бро́сила в сто́рону ребёнка, наде́ясь, что кто́-нибудь найдёт его́...

Соба́ки фаши́стов ла́яли совсе́м бли́зко, вре́мени не́ было, и Левчу́к, прижима́я к себе́ ребёнка, побежа́л к ле́су.

Пе́рвые лучи́ со́лнца он уви́дел на краю́ болота *. Наступа́л но́вый день. Левчу́к не зна́л, где он нахо́дится. Он уста́ло бежа́л, держа́ на рука́х ребёнка, и ду́мал о том, что ему́ ну́жно найти́ каку́ю-нибудь дере́вню и́ли про́сто ме́стного челове́ка, что́бы оста́вить ему́ ребёнка. Сам он не наде́ялся спасти́ ему́ жизнь.

Фаши́стов, кото́рые пресле́довали его́, станови́лось всё бо́льше. У них бы́ли соба́ки и пулемёты, и бы́ло я́сно, что они́ его́ не оста́вят в поко́е *.

Ребёнок молча́л, но на́чал беспоко́йно дви́гаться в мо́крой пелёнке *, и Левчу́к со стра́хом ждал, когда́ он запла́чет. Он продолжа́л наде́яться, что встре́тит како́го-нибудь челове́ка и отда́ст ему́ ребёнка.

И он шёл, бежа́л и опя́ть шёл по кра́ю огро́много боло́та.

Сил у него́ остава́лось всё ме́ньше, он понима́л э́то, но ему́ о́чень хоте́лось спасти́ ребёнка. Он держа́л в

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
рука́х э́ту челове́ческую жизнь и не хоте́л с ней расста́ться. Все, кто был с ним за после́дние дни, поги́бли, оста́лся то́лько э́тот ребёнок. Его́ мо́жно бы́ло бро́сить и ни перед ке́м не отвеча́ть за э́то, но и́менно поэ́тому Левчу́к не мо́г э́того сде́лать. Этот ребёнок свя́зывал его́ со все́ми, кого́ он люби́л, и кто поги́б, — с Кла́вой, её му́жем Ви́ктором, други́ми партиза́нами*. Если он не спасёт э́того ребёнка, заче́м тогда́ вся э́та борьба́ за жи́знь?

Мо́жет быть, э́то бы́ло хорошо́, фаши́сты пресле́довали его́ с соба́ками, потому́ что он слы́шал далеко́ они́ и́ли бли́зко. Сейча́с они́ бы́ли совсе́м бли́зко, и Левчу́к по́нял, что ему́ придётся лезть в боло́то. Друго́го вы́хода не́ было.

Там, где боло́тная трава́ подходи́ла совсе́м бли́зко к бе́регу, Левчу́к пры́гнул в сто́рону и, стара́ясь не оставля́ть следо́в на траве́, пошёл в во́ду. Снача́ла бы́ло неглубоко́, вода́ доходи́ла то́лько до коле́н, но пото́м глубина́ увели́чилась. Левчу́к по́нял, что боло́то о́чень глубо́кое и он мо́жет поги́бнуть здесь.

Держа́ ребёнка на груди́, он бы́стро шёл в воде́. Ме́тров через пятьдеся́т от бе́рега вода́ доходи́ла ему́ уже́ до по́яса, и он боя́лся, что бу́дет ещё глу́бже, потому́ что непоня́тно бы́ло, что тогда́ де́лать с ребёнком. Левчу́к ви́дел боло́тные цветы́, знал, что они́ лю́бят глубо́кие места́, и обходи́л их, стара́ясь идти́ бли́же к куста́м. Он спеши́л, но стара́лся дви́гаться ти́хо, что́бы его́ не услы́шали на берегу́.

Одна́жды ему́ показа́лось, что он услы́шал го́лос. Но на берегу́ ещё никого́ не́ было, и он по́нял, что есть ещё немно́го вре́мени. Он уже́ намочи́л пиджа́к и со стра́хом ду́мал, что, е́сли вся его́ оде́жда бу́дет мо́крой, он не смо́жет ниче́м согре́ть ребёнка.

Он снял пиджа́к и заверну́л в него́ ребёнка. Тот задви́гал нога́ми, но не запла́кал.

— Вот и хорошо́! — сказа́л ему́ Левчу́к. — Лежи́ и молчи́! Гла́вное — молчи́, что́бы они́ нас не услы́шали, тогда́, мо́жет быть, мы суме́ем спасти́сь.

Неожи́данно Левчу́к услы́шал соба́чий лай. Он испу́ганно поверну́лся, поня́в, что фаши́сты уже́ подошли́ к боло́ту. Он посмотре́л на бе́рег и удиви́лся, как недалеко́ он от него́ отошёл. С шу́мом раздвига́я во́ду, он бро́сился к ближа́йшей ко́чке*. Ко́чка была́ ма́ленькая, ря́дом бы́ло глубоко́: вода́ доходи́ла Левчуку́ до груди́. Но идти́ да́льше бы́ло нельзя́, его́ могли́ уви́деть. Левчу́к положи́л ребёнка на кра́й ко́чки и держа́л его́

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
одно́й руко́й, а друго́й доста́л пистоле́т. Он ду́мал о то́м, что, е́сли они́ то́же пойду́т в боло́то, он уви́дит их пе́рвым и бу́дет стреля́ть.

То́лько бы не запла́кал ребёнок!

Пе́рвой у боло́та появи́лась больша́я кори́чневая соба́ка. Сза́ди бежа́л фаши́ст. За ни́м шёл ещё оди́н то́же с соба́кой. Они́ пробежа́ли ми́мо, а за ни́ми из ле́са вы́шли ещё челове́к де́сять в одина́ковой оде́жде с автома́тами.

Левчу́к по́нял, что, е́сли они́ случа́йно не пройду́т ми́мо того́ ме́ста, где он вошёл в во́ду, он не смо́жет спасти́сь.

Не́сколько мину́т он не ви́дел никого́, слы́шал то́лько, как лома́ются ве́тки в лесу́, и ду́мал, что сейча́с всё реши́тся. Пройду́т они́ ми́мо и́ли верну́тся? Но ско́ро он опя́ть услы́шал соба́чий лай и гро́мкие голоса́. Это зна́чило, что соба́ки потеря́ли след *. Он по пле́чи опусти́лся в во́ду, что́бы совсе́м спря́таться за ко́чкой. Пото́м он посмотре́л наза́д и уви́дел большо́й куст. Снача́ла он хоте́л перейти́ за него́, но пото́м реши́л, что, е́сли он бу́дет дви́гаться, его́ сра́зу заме́тят.

Он сно́ва уви́дел фаши́стов.

Ребёнок, спря́танный под пиджако́м, недово́льно дви́гался, и когда́ Левчу́к посмотре́л на его́ лицо́, он по́нял, что тот сейча́с запла́чет. Тогда́ он вы́дернул из боло́та то́лстый сте́бель травы́ и дал его́ ребёнку в рот. Тот на́чал соса́ть и зати́х.

Левчуку́ опя́ть захоте́лось спря́таться за большо́й куст, но неожи́данно он уви́дел фаши́ста, кото́рый без сапо́г входи́л в боло́то по следа́м Левчука́. Левчу́к взял пистоле́т и реши́л, что бу́дет стреля́ть, когда́ фаши́ст дойдёт до ближа́йшей ко́чки. Этого он убьёт. Но тогда́ остальны́е убью́т его́.

Ну вот и всё! А ско́лько бы́ло стра́ха и пережива́ний, в то вре́мя как всё конча́ется так обыкнове́нно и глу́по.

Как всегда́ в са́мые стра́шные мину́ты, от него́ ушёл страх. Он знал, что голова́ бу́дет рабо́тать то́чно, что е́сли он вы́стрелит, то обяза́тельно убьёт э́того фаши́ста.

Фаши́ст как бу́дто чу́вствовал, что его́ смерть ря́дом. Он не спеши́л идти́ в боло́то, осторо́жно обходи́л глубо́кие места́. Неожи́данно он упа́л в во́ду, хоте́л встать, но не смо́г, потеря́л фура́жку *, и она́ бы́стро поплыла́ от него́ в сто́рону, опуска́ясь в во́ду. Фаши́ст бро́сился обра́тно к бе́регу, к своему́ това́рищу, кото́рый гро́мко смея́лся, гля́дя на него́.

CC-0. Agamnidam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

«Что они теперь будут делать?» — думал Левчу́к.

В э́тот раз ждать не на́до бы́ло до́лго. Левчу́к услы́шал вы́стрелы и снача́ла не по́нял, куда́ они́ стреля́ют. Неуже́ли здесь есть ещё кто́-нибудь? Левчу́к всё-таки реши́л отойти́ пода́льше в боло́то, но как то́лько он взял ребёнка на́ руки, о́чередь из автома́та подняла́ вверх во́ду совсе́м ря́дом с ним. Ско́ро он по́нял, что стреля́ли в боло́то, наде́ясь, уби́ть его́, е́сли он ещё жив.

«Хорошо́ бу́дет, е́сли вме́сте со мно́й убью́т и ребёнка, — поду́мал Левчу́к. — А е́сли он оста́нется жив?»

Фаши́сты не жале́ли патро́нов* и расстре́ливали ка́ждый метр боло́та. Ого́нь был тако́й, како́го Левчу́к не слы́шал с са́мого нача́ла войны́. Оста́ться здесь живы́м бы́ло невозмо́жно. Левчу́к спусти́лся в во́ду. Жа́лко, что ребёнка нельзя́ бы́ло то́же спусти́ть в во́ду. Ребёнок, как бу́дто чу́вствуя ско́рую смерть, гро́мко крича́л, но в шу́ме вы́стрелов* его́ кри́ка слы́шно не́ было.

Левчу́к прижа́л ребёнка как мо́жно ни́же и опя́ть пригото́вил пистоле́т. Он реши́л вы́стрелить и уби́ть хотя́ бы одного́ фаши́ста. Неожи́данно он заме́тил, что пу́ли летя́т у него́ над голово́й. Он поверну́лся и уви́дел, что все стреля́ют в тот са́мый куст, за кото́рым он хоте́л спря́таться. Фаши́сты ви́дели там са́мое удо́бное для него́ ме́сто.

У Левчука́ опя́ть появи́лась наде́жда...

Вы́стрелы постепе́нно уходи́ли в сто́рону. Ста́ло немно́го ти́ше. Фаши́сты уходи́ли в сто́рону. Левчу́к взял ребёнка и удивлённо поду́мал, что он ещё жив, и что е́сли бы он спря́тался за те́м кустом, то бы́л бы уже́ уби́т.

Через ча́с боло́то оста́лось позади́. Левчу́к бежа́л, прижима́я к себе́ ребёнка, всё ещё слы́ша, как где́-то далеко́ стреля́ют по боло́ту фаши́сты. Он бежа́л. Он боя́лся за жи́знь ребёнка, поэ́тому реши́л не суши́ть оде́жду и не отдыха́ть.

Неожи́данно он уви́дел люде́й. Это бы́ли партиза́ны. Они́ посмотре́ли на гря́зного и мо́крого Левчука́ и спроси́ли:

— Ты был в боло́те?

— Да, — отве́тил Левчу́к, поднима́я с земли́ ребёнка.

— А э́то кто?

— Это? Челове́к. Ну́жно найти́ же́нщину с ма́леньким ребёнком, он це́лые су́тки ничего́ не е́л.

— Это твой ребёнок?

— Нет, не мо́й. Моего́ дру́га.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
— Понятно. Только что родился, а уже у него нет ни отца, ни матери...

Левчук отдал ребёнка партизану, тот осторожно поднял его к себе на лошадь. Партизан повернулся:

— А как его зовут?

— Зовут? — удивился Левчук.

Только что он понял, что, может быть, его убьют и он больше никогда не увидит этого ребёнка, а имя ему не успели дать.

— Виктор! — крикнул он, называя имя отца. — Виктор Платонов!

И побежал вместе с партизанами дальше, в бой.

* * *

А теперь, когда прошло тридцать лет, он стоял возле современного многоэтажного дома и боялся в него войти. Он стоял рядом с домом, где жил Виктор Платонов, которого он не видел ровно тридцать лет...

Наверное, всё, что думал Левчук о жизни Виктора за все эти годы, могло быть неправильным, придуманным. Наверное, всё совсем по-другому, чем представлял себе Левчук. Но в любом случае, он должен знать, как живёт Виктор.

Медленно, чувствуя тяжесть в ногах, он поднялся по лестнице на третий этаж. Дверь была закрыта, он позвонил и ждал, что ему кто-нибудь откроет, но вместо этого услышал низкий мужской голос:

— Входите, дверь не закрыта!

И он, забыв снять кепку*, повернул ручку двери.

### टिप्पणियाँ

Клава — क्लावा (क्लाव्दिया नाम का संक्षिप्त रूप)

ребёнок — शिशु

болото — दलदल

они не оставят его в покое — (यहाँ) वे उनका पीछा नहीं छोड़ेंगे

пелёнка — पोतड़ा

партизан — छापामार (छापेमार दस्तों का सैनिक जो फ़ासिस्ट हमलावरों द्वारा अधिकृत क्षेत्रों में कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में गठित होते थे)

кочка — दलदल के बीच छोटा-सा ढूह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
собáки потеря́ли след — कुत्ते अब उसकी गंध नहीं पकड़ पा रहे थे

фура́жка — फ़ौजी कैप (छज्जेदार टोपी)

патро́н — कारतूस

вы́стрел — गोली चलने की आवाज़

ке́пка — कैप, छज्जेदार टोपी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

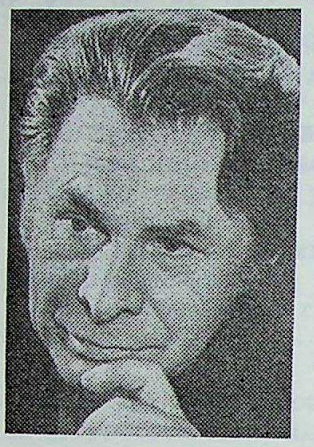

Евгений Носов
येव्गेनी नोसोव
(जन्म १९२५)

येव्गेनी इवानोविच नोसोव के लिए समय की भावना और जनता के जीवन में हुए परिवर्त्तनों को देखने और समझने की योग्यता लाक्षणिक है। वह जीवन पर रंग चढ़ाये बिना उसे दिखाने का प्रयत्न करते हैं तथा साथ ही साथ उसकी सुंदरता और काव्यमयता, विशेषकर अपनी हृदयप्रिय जन्म-भूमि – कूर्स्क प्रदेश – का सौंदर्य और काव्यत्व व्यक्त करते हैं।

नोसोव जीवन में व्यक्ति के स्थान पर, दैनिक जीवन की ख़ुशी पर, मनुष्य की सामाजिक उपयोगिता पर विचार करते हैं। साधारण मनुष्य के श्रम को, शांति और सृष्टि के प्रति उसके प्रयास को वह काव्य-रस से भरते हैं। नोसोव वर्त्तमान काल के बारे में लिखते हैं, पर महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध में भाग लेने के कारण वह देश के जीवन में इस कठोर और दुःखमय काल – फ़ासिस्ट हमलावरों के ख़िलाफ़ लड़ाई के काल – की उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। उनके विचार में युद्ध ऐसा मर्माघात है जिसके बाद लोग जैसे के तैसे नहीं रह सकते हैं क्योंकि सारे रूस में «... हर चीज़ की रीढ़ व नींव – मर्द – बहुत बड़ी संख्या में युद्ध के विशाल और अनजाने मैदानों में ही सदा के लिए रह गये हैं।»

नोसोव की कहानियों में प्रकृति तथा जीव-जगत् के प्रति मनुष्य का रवैया उसके सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के एक साधन तथा नैतिक उद्गम के मापदंड के रूप में सामने आता है।

उनके प्राकृतिक दृश्य विलक्षण हैं। अपने सहप्रदेशियों – सुप्रसिद्ध रूसी लेखकों इवान तुर्गेनेव, लेव तोल्स्तोय, इवान बूनिन – की परंपराओं को जारी रखते हुए नोसोव चारों ओर की प्रकृति के रंग, गंध, स्वाद का भौतिक अनुभव प्रदान करना चाहते हैं। अपनी कृतियों में वह अपने ही रंग चुन लेते हैं, संसार के प्रति अपना रवैया व्यक्त करते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
नोसोव का पहला कहानी-संग्रह १९५९ में प्रकाशित हुआ। उसी साल «कहानियाँ» नाम से दूसरी किताब, १९६१ में «तीस दाने», १९६३ में «विजय-तोरण के पीछे का मकान», १९६५ में «जहाँ सूरज जागता है», १९६७ में «जंगलों, झीलों के पार», १९७१ में «किनारे» और «विजय का जाम», १९७४ में «पुल», १९७५ में «और जहाज़ चले जाते हैं» और १९७७ में «लहलहाती चरागाहें» संग्रह छापे।

«उस्व्यात गाँव के शिरस्त्राणधारी» उपन्यासिका (१९७७) के लिए लेखक सोवियत संघ के राजकीय पुरस्कार से विभूषित है।

## БЕЛЫЙ ГУСЬ *

Если бы пти́цам дава́ли во́инские чины́ *, то э́тот гусь был бы адмира́лом *. У него́ всё бы́ло адмира́льское: то, как он ходи́л, поднима́л го́лову, разгова́ривал с други́ми гуся́ми.

Ходи́л он ме́дленно, обду́мывая ка́ждый шаг. Перед те́м, как переста́вить ла́пу *, гусь поднима́л её вверх, и, подержа́в её вверху́ не́которое вре́мя, не торопя́сь опуска́л её в грязь *. Так он проходи́л по са́мой гря́зной доро́ге, но остава́лся бе́лый как снег.

Этот гусь никогда́ не бежа́л, да́же е́сли за ни́м бежа́ла соба́ка. Он всегда́ высоко́ поднима́л го́лову.

Когда́ о́коло воды́ гусь поднима́лся в по́лный рост и маха́л дли́нными, по полтора́ ме́тра кры́льями, то на воде́ появля́лись ма́ленькие во́лны и шуме́ла трава́. Если он крича́л, то все слы́шали его́ крик.

Бе́лый гусь был са́мой больша́й пти́цей в дере́вне. Поэ́тому он жил свобо́дно и хорошо́. На него́ смотре́ли са́мые краси́вые гусы́ни * в дере́вне. Ему́ принадлежа́ли берега́ реки́, где бы́ло мно́го травы́. Са́мый чи́стый песо́к у воды́ то́же принадлежа́л ему́.

Но са́мое гла́вное — то, что ме́сто, на кото́ром я лови́л ры́бу, Бе́лый Гусь то́же счита́л свои́м. Из-за э́того мы ссо́рились. Он меня́ про́сто не замеча́л. Иногда́ он шёл с други́ми гуся́ми пря́мо на мои́ у́дочки и́ли начина́л купа́ться на друго́м берегу́ реки́, крича́л, маха́л кры́льями, пря́тался под водо́й. А иногда́ начина́л дра́ться с други́ми гуся́ми, по́сле чего́ по реке́ пры́ли пе́рья и бы́ло так шу́мно, что о ры́бе не́чего бы́ло и ду́мать.

Мно́го раз он съеда́л то, что я гото́вил для ры́бной ло́вли, иногда́ ворова́л * ры́бу. Де́лал он э́то не ка́к вор *, а не торопя́сь, ду́мая, что он хозя́ин на реке́. На-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ве́рное, Бе́лый Гусь счита́л, что всё в э́том ми́ре принадлежи́т ему́, и о́чень бы удиви́лся, е́сли бы узна́л, что он сам принадлежи́т дереве́нскому ма́льчику Стёпке, кото́рый, е́сли захо́чет, пойма́ет его́, а Стёпкина * мать сва́рит из него́ суп.

Этой весно́й, когда́ вы́сохли доро́ги, я взял свой велосипе́д, привяза́л к нему́ у́дочки и пое́хал в пе́рвый раз в э́том году́ на ры́бную ло́влю. По доро́ге я зае́хал к Стёпке, попроси́л его́ мне помо́чь и пришёл к реке́.

Бе́лый Гусь был уже́ там. Я забы́л о то́м, что мы ссо́рились, тако́й он был краси́вый. Он стоя́л над водо́й, освещённый со́лнцем, и бы́ло похо́же, что он весь сде́лан из грома́дного куска́ бе́лого са́хара.

Уви́дев меня́, гусь наклони́л го́лову, зашипе́л * и пошёл мне навстре́чу. Я успе́л поста́вить велосипе́д ме́жду собо́й и гу́сем. А он уда́рил кры́льями по велосипе́ду, отпры́гнул и сно́ва уда́рил.

— Кыш!*

Это крича́л Стёпка. Он бежа́л к нам по доро́ге.

— Кыш, кыш!

Стёпка схвати́л гу́ся за́ голову и уводи́л его́ в сто́рону. Гусь не хоте́л идти́, он бил ма́льчика кры́льями.

— У него́ сейча́с гуся́та *, — объясни́л Стёпка, когда́ увёл гу́ся в сто́рону. — Вот он и се́рдится. Никому́ не разреша́ет подойти́ бли́же, чем на сто́ шаго́в.

— А мать их, гусы́ня, где? — спроси́л я Стёпку.

— Нет у ни́х ма́тери...

— Почему́?

— Гусы́ню перее́хала маши́на.

Пока́ я гото́вил ме́сто для ры́бной ло́вли, Бе́лый Гусь успе́л не́сколько раз подра́ться с сосе́дями. Пото́м отку́да-то прибежа́л ма́ленький быче́к *. Гусь на́чал дра́ться с ним.

Быче́к убега́л, а гусь бежа́л за ни́м, наступа́л ла́пами на коне́ц верёвки, кото́рый висе́л у быка́ на ше́е, па́дал, перевора́чивался через го́лову, но встава́л. Он до́лго бежа́л за быко́м и куса́л его́ за́ ноги. Иногда́ быче́к начина́л сопротивля́ться, но тогда́ гусь откры́вал свой полутораметро́вые кры́лья, и быче́к опя́ть убега́л. Пото́м он спря́тался в кусты́.

Из-за всего́ э́того на берегу́ не прекраща́лся шум, дра́ки, и ма́ленькие гуся́та боя́лись и прижима́лись друг к дру́гу, не ви́дя своего́ отца́.

— Ты совсе́м забы́л про дете́й! — говори́л я Бе́лому Гу́сю. — Ты так себя́ ведёшь, что тебя́ ну́жно отвести́ в мили́цию.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Га-га-га! — отвечал мне гусь.

Разговаривая с гусём, я не заметил, как из-за леса появилась туча *. Она росла, поднималась как серая стена и закрывала синее небо. Берег реки потемнел как вечером. Прилетел ветер, поднял гусиные перья, лежавшие на земле, и унёс их вверх.

Гуси перестали есть траву, подняли голову.

Первые капли дождя застучали по воде.

Я с трудом успел надеть плащ. Начался сильный ливень *. Гуси раскрыли крылья и легли в траву. Под крыльями спрятались гусята. По всему берегу были видны только тревожно поднятые головы.

Вдруг к моим ногам упал кусочек льда. Я посмотрел из-под плаща. Шёл град *. Он был таким сильным, что не было видно деревни и леса.

Гуси лежали на траве не двигаясь и тревожно кричали.

Белый Гусь сидел, высоко подняв голову. Град бил его по голове, он вздрагивал и закрывал глаза. Когда большой кусок льда падал на него, он сгибал шею и качал головой. Потом он снова выпрямлялся и смотрел на тучу. Под его широко открытыми крыльями сидели гусята.

Град становился сильнее.

Гуси не выдержали. Они не могли больше сидеть и побежали. Град стучал по их спинам. То здесь, то там в траве был слышен писк гусят. Потом писк кончался, и мёртвые гусята падали в траву.

А гуси всё бежали, наклоняясь к земле, прыгали в воду и прятались под кусты. Я накрыл голову плащом. К моим ногам падали уже большие куски льда. Плащ плохо помогал, и лёд больно бил меня по спине.

Туча улетела так же быстро, как прилетела. На другой стороне реки стала видна деревня, выглянуло солнце.

Я снял плащ.

Под солнечными лучами белый, покрытый снегом и льдом луг постепенно темнел, таял. В мокрой траве лежали гусята *. Они погибли почти все, не успев добежать до воды.

Трава стала снова зелёной. И только в середине лежало что-то белое. Я подошёл ближе. Это был Белый Гусь.

Он лежал, раскрыв сильные крылья и вытянув в траве шею. У него на носу была кровь. Он был мёртв, а все двенадцать гусят, целые и живые, вышли из-под

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.
него, толкаясь и наступая друг на друга. Они ве́село крича́ли и поднима́ли с земли́ кусо́чки льда. Оди́н гусёнок с тёмной поло́ской на спине́ хоте́л подня́ться на крыло́ Бе́лого Гу́ся. Но ка́ждый раз па́дал в траву́.

Малы́ш * серди́лся, поднима́лся из травы́ и сно́ва лез на крыло́. Наконе́ц, гусёнок подня́лся на́ спину своего́ отца́ и останови́лся. Он никогда́ не поднима́лся так высоко́.

Перед ни́м лежа́л удиви́тельный мир, по́лный свер-ка́ющей травы́ и со́лнца.

**टिप्पणियाँ**

гусь — हंस
во́инский чин — सैनिक पद
адмира́л — एडमिरल
ла́па — पंजा
грязь — कीचड़
гусы́ня — हंसिनी
ворова́ть — चोरी करना, चुराना
Стёпка — स्त्योप्का (स्तेपान नाम का बोल-चाल का रूप)
зашипе́ть — फुफकारने लगना
Кыш! — धुत-धुत !
гуся́та — हंस के बच्चे
бычо́к — बछड़ा
ту́ча — बादल
ли́вень — मूसलधार बारिश
град — ओले
гусёнок — हंस का बच्चा
малы́ш — नन्हा मुन्ना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

## Юрий Трифонов
## यूरी त्रीफ़ोनोव
## (१९२५-१९८१)

यूरी वलेन्तीनोविच त्रीफ़ोनोव का साहित्यिक कार्य-कलाप बहुत ही सफलतापूर्वक शुरू हुआ। गोर्की साहित्यिक संस्थान से स्नातक होने के एकदम बाद उन्होंने «विद्यार्थी» उपन्यास (१९५०) लिखा जिसके लिए उन्हें सोवियत संघ का राजकीय पुरस्कार मिला। परंतु यह समझते हुए कि जीवन का उन्हें अच्छा ज्ञान नहीं है त्रीफ़ोनोव तुर्कमान नहर के निर्माण-स्थल पर चले गये। यहाँ वह समाचार-पत्र में काम करने लगे, अनेक लोगों से मिले, बहुत से स्थानों पर गये। इन प्रेक्षणों और जीवन-अनुभव के आधार पर उन्होंने एक नया उपन्यास «बुझी प्यास» (१९६३) छपा जिसमें लेखक ने सृजनात्मक श्रम के अर्थ और मानव-जीवन के प्रयोजन के प्रश्न उठाये। उपन्यास के एक नायक के शब्दों में «मुख्य बात यह है कि बड़े कार्यों की ख़ातिर, ध्येय की ख़ातिर जीना चाहिये, न कि स्वार्थपूर्ण तुच्छ कामों के लिए। ध्येय आदमी से बड़ा है, उसके जीवन से लंबा है।»

उच्चतम नैतिकता का स्रोत लेखक क्रांतिकारी अतीत में देखता है। यह विचार उनके ऐतिहासिक उपन्यास «असहिष्णुता» (१९७३) में स्पष्ट रूप से सामने आता है।

सातवें दशक के अंत में त्रीफ़ोनोव नगर के जीवन और बुद्धिजीवी वर्ग से संबंधित समस्याओं की ओर उन्मुख होते हैं। वह नगर के दृश्य, जीवन की गति और लोगों की मनोवृत्ति का विस्तार से और अपने ढंग से काव्यमय चित्रण करते हैं। इसी विषय पर उन्होंने «अदला-बदली» (१९६९), «प्रारंभिक नतीजे» (१९७०) और «लंबी विदाई» (१९७१) लघु-उपन्यास लिखे हैं।

त्रीफ़ोनोव टुटपुँजियापन, समय-सेवा की प्रवृत्ति और पद-लालसा का निर्ममता से पर्दाफ़ाश करते हैं। वह नैतिक मूल्यों पर भी विचार करते हैं। १९७५ में उन्होंने «दूसरा जीवन», १९७६ में «तट-बंध पर का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
मकान», १९७८ में «बूढ़ा», १९८१-१९८२ में «स्थान व काल» लघु-
-उपन्यास लिखे।

त्रीफ़ोनोव की चेष्टा यही होती है कि पाठक घटनाओं पर स्वयं विचार करे, वह उस पर अपनी राय थोपते नहीं। उनकी कृतियों की कथा-वस्तुएँ बहु-अर्थी हैं, लेकिन हर-एक पुस्तक में लेखक का दृष्टिकोण सदा स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

## ОБМЕН

(отры́вок из по́вести)

В ию́ле мать Дми́триева Ксе́ния Фёдоровна тяжело́ заболе́ла, и её отвезли́ в больни́цу, где она́ пролежа́ла двена́дцать дней. В сентябре́ ей сде́лали опера́цию *, и все са́мые стра́шные диа́гнозы * подтверди́лись *. Но Ксе́ния Фёдоровна чу́вствовала себя́ хорошо́, начала́ ходи́ть, и в октябре́ верну́лась из больни́цы домо́й, ду́мая, что ско́ро она́ совсе́м вы́здоровеет.

Вот и́менно тогда́, когда́ Ксе́ния Фёдоровна верну́лась из больни́цы, жена́ Дми́триева захоте́ла сде́лать обме́н: поменя́ть их ко́мнату и ко́мнату Ксе́нии Фёдоровны на двухко́мнатную кварти́ру.

Разгово́ры о то́м, что́бы жить вме́сте с ма́терью, Дми́триев начина́л давно́. Но э́то бы́ло ещё тогда́, когда отноше́ния Ле́ны * и Ксе́нии Фёдоровны не́ были таки́ми вражде́бными. Он всегда́ выслу́шивал твёрдое «нет» жены́, го́ды проходи́ли, и мысль о то́м, что мо́жно бы́ло бы жить вме́сте с ма́терью, приходи́ли всё ре́же.

Почему́ Ле́на не дружи́ла с Ксе́нией Фёдоровной? Почему́ две у́мные, образо́ванные, все́ми уважа́емые же́нщины, так си́льно люби́вшие его́, Дми́триева, и его́ дочь Ната́шку *, не люби́ли друг дру́га? Дми́триев не понима́л э́того, но ра́ньше ду́мал об э́том ча́сто.

Поэ́тому, когда́ Ле́на заговори́ла об обме́не, он уди́вился, а пото́м по́нял та́йную мысль Ле́ны, от э́того понима́ния он испуга́лся, побледне́л, опусти́л глаза́ и не смотре́л бо́льше на жену́.

— Ви́тя *, я всё понима́ю. Прости́ меня́, — говори́ла Ле́на. — Но... (Он ви́дел, что ей о́чень тру́дно говори́ть, но она́ договори́т до конца́.) Ты уже́ начина́л разгово́р об э́том, пра́вда? Мно́го раз начина́л. А сейча́с э́то ну́жно нам всем и твое́й ма́ме...

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Она́ обняла́ его́. Он знал: Ле́на лю́бит его́. Но почу́вствовал, что сейча́с не хо́чет э́той любви́ и отодви́нул Ле́ну руко́й.

— Ты не должна́ была́ сейча́с начина́ть говори́ть! — сказа́л он.

— Извини́ меня́, но я ду́маю не о себе́...

— Замолчи́!

— Ви́тя, я действи́тельно ду́маю не о себе́, а о Ната́шке, о её бу́дущем, о на́с всех...

— Как ты мо́жешь говори́ть об э́том сейча́с?

— Ти́хо! — она́ махну́ла руко́й.

Оба замолча́ли. Но всё в ко́мнате бы́ло ти́хо... Ната́шка спала́ и не слы́шала их разгово́ра.

Ле́на посмотре́ла на спя́щую дочь и сказа́ла:

— Опя́ть она́ учи́ла фи́зику до оди́ннадцати часо́в ве́чера...

То, что она́ начала́ говори́ть о шко́льных дела́х до́чери, зна́чило, что она́ не хо́чет ссо́риться с му́жем, но доведёт де́ло до конца́*. Дми́триев знал э́то.

Но ему́ не хоте́лось дружелю́бно разгова́ривать с жено́й, потому́ что он я́сно по́нял оши́бку Ле́ны: она́ говори́ла так, как бу́дто всё уже́ решено́, как бу́дто он, Дми́триев, хорошо́ зна́ет, что всё уже́ решено́, что наде́жды на спасе́ние Ксе́нии Фёдоровны нет. Ле́на говори́ла так, что не остава́лось никако́й наде́жды. Нет, она́ не име́ла пра́ва так говори́ть!

На сле́дующее у́тро Ле́на о́чень ти́хо и ми́рно сказа́ла:

— Ви́тя, я о́чень прошу́ тебя́, поговори́ сего́дня с Ксе́нией Фёдоровной. Предупреди́ её, что мо́гут прийти́ лю́ди и посмотре́ть её ко́мнату, обяза́тельно возьми́ у неё ключ! До свида́ния! Я бегу́ на рабо́ту!

Ле́на ушла́ на рабо́ту. Дми́триеву захоте́лось побежа́ть за не́й, что́-то сказа́ть, но он забы́л что, сде́лал не́сколько шаго́в за Ле́ной, но да́льше не пошёл.

Когда́ Дми́триев вы́шел к тролле́йбусной остано́вке, шёл дождь, и бы́ло хо́лодно. Дми́триев поду́мал, что, мо́жет быть, ещё всё хорошо́, и мать бу́дет жить ещё до́лго. Они́ полу́чат большу́ю хоро́шую кварти́ру, бу́дут жить вме́сте. И чем скоре́е они́ обменя́ются, тем бу́дет лу́чше. Бу́дет лу́чше для здоро́вья ма́тери. Она́ мечта́ла о то́м, что́бы жить вме́сте с сы́ном. Нет, наве́рное, Ле́на права́. Этот обме́н бу́дет лека́рством для ма́тери, ведь когда́ врачи́ бесси́льны, у челове́ка появля́ются си́лы от друго́го. И ни оди́н врач не смо́жет сде́лать для ма́тери того́, что мо́жет он, Дми́триев...

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Сидя в своём кабинете *, Дмитриев подумал о том, что он не сможет сказать матери об обмене. Он вышел в коридор, где стоял телефон, и позвонил Лене на работу. Дмитриев рассказал ей о своих сомнениях *.

Лена говорила громко и энергично *:

— Ты не хочешь говорить с матерью об обмене?

— Я не могу, — ответил Дмитриев. — Я боюсь, что она поймёт, что смертельно больна *, и не знаю, как сказать ей...

— Скажи так: ты очень хочешь обменяться, а я была против этого, но потом, после долгих разговоров, согласилась с тобой. Это будет очень естественно, и твоя мама ни о чём не подумает. Понял? Делай так, как я сказала.

То, что говорила Лена, было, конечно, правильно, но Дмитриев даже не смог вернуться в свой кабинет и несколько минут ходил по коридору. Он думал о Лене.

Ему очень нравилось, как она легко знакомилась с людьми. Он этого совсем не умел. Особенно легко Лена знакомилась с теми, которые были ей нужны. Скоро он понял, что нет женщины красивее, умнее, энергичнее Лены. Никто не мог так легко решить трудную ситуацию, никто не умел так легко и интересно читать вслух английские книги, тут же переводя их на русский язык, никто не любил его так, как Лена.

Но однажды вечером, в конце того лета, когда они все вместе жили за городом, его родная сестра Лора * сказала:

— Витя, я хочу с тобой поговорить.

Они молча шли по тёмному саду, а потом Лора сказала:

— Витя, я хочу поговорить с тобой о Лене. Можно? Ничего не случилось, не бойся. Я очень хорошо к ней отношусь, она мне нравится, я знаю, что ты любишь её... Меня просто удивляют некоторые вещи. Наша мама никогда ничего не скажет, но я всё вижу... Это всё не важно, но Лена забрала себе все наши чашки, а свои вещи она ставит у маминой двери, и они ей мешают...

«Какие мелочи *! Как об этом может говорить Лора?» — подумал Дмитриев, а сестра продолжала:

— Но это всё не важно. Нужно просто сказать, что нам нужны чашки, а вещи можно ставить и в другое место. Важно другое: Лена почему-то сняла со стены портрет нашего папы и повесила его в коридоре. Мама

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

о́чень удиви́лась, но ничего́ не сказа́ла. А мне ка́жется, что э́то уже́ что́-то ва́жное...

— Я скажу́ Ле́не о портре́те, — отве́тил Дми́триев, — но поду́май, Ло́ра, е́сли бы ты жила́ в чужо́м для тебя́ до́ме, неуже́ли ты ду́маешь, ты смогла́ бы де́лать всё пра́вильно, так, как привы́кли де́лать в э́том до́ме?

— Коне́чно ты прав! — сказа́ла Ло́ра. — Но па́пин портре́т...

Дми́триев сказа́л жене́ о портре́те на сле́дующее у́тро. Ле́на была́ о́чень удивлена́. Она́ объясни́ла, что ей про́сто ну́жен был гвоздь, на кото́ром висе́л портре́т, и поэ́тому она́ его́ переве́сила. Ле́ну удиви́ло, что Ксе́ния Фёдоровна и Ло́ра ничего́ не сказа́ли ей об э́том, а попроси́ли Дми́триева.

Когда́ в э́тот день Дми́триев прие́хал из го́рода, в до́ме бы́ло необы́чно ти́хо. Ле́на не вы́шла его́ встреча́ть. Ло́ра уе́хала в Москву́, Ксе́ния Фёдоровна не выходи́ла из свое́й ко́мнаты. Портре́т отца́ висе́л на ста́ром ме́сте *.

Ве́чером Ксе́ния Фёдоровна сказа́ла Дми́триеву, что она́ не мо́жет засну́ть из-за э́того слу́чая.

— Како́го слу́чая? — удиви́лся Дми́триев.

Ксе́ния Фёдоровна рассказа́ла о разгово́ре с Ле́ной сего́дня днём, когда́ Дми́триева не́ было...

Наве́рное, с э́того дня уже́ не́ было дру́жбы ме́жду Ле́ной и Ксе́нией Фёдоровной.

* * *

По́сле рабо́ты Дми́триев пое́хал за́ город к ма́тери, где она́ сейча́с жила́ с Ло́рой и её му́жем. Он стоя́л перед освещённым окно́м, смотре́л на Ло́ру, кото́рая что́-то де́лала на столе́ и ду́мал, что от э́того обме́на не бу́дет ничего́ хоро́шего, что он принесёт всем им но́вые бе́ды и страда́ния.

Когда́ он поднима́лся к две́ри, се́рдце его́ си́льно би́лось.

Ло́ра сказа́ла, что сего́дня в шесть часо́в ве́чера у ма́тери начали́сь бо́ли, они́ хоте́ли вы́звать врача́, но Ксе́ния Фёдоровна приняла́ лека́рство и засну́ла.

Разгова́ривали они́ ти́хо, всё вре́мя смотре́ли на закры́тую дверь матери́нской ко́мнаты. Пото́м се́ли пить чай.

Дми́триев не хоте́л ни о чём говори́ть, но э́то получи́лось само́. Он объясни́л Ло́ре, что они́ мо́гут обменя́ть две ко́мнаты на большу́ю двухко́мнатную кварти́ру и жить все вме́сте.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

— Это идея Лены? — спросила Лора.

— Нет. Это моя старая идея, — ответил Дмитриев.

— Но маме это совершенно не нужно! — сказала Лора. — Я же знаю: сначала всё будет очень хорошо, а потом...

В комнате Ксении Фёдоровны послышался шум. Они пошли туда.

— Как ты чувствуешь себя, мама?

— Спасибо, кажется, лучше.

Дмитриев сказал, что хочет с ней поговорить. Когда он остался с матерью вдвоём, он сказал ей, что хочет обменять комнаты на одну квартиру, чтобы Лора могла жить отдельно. Так ей будет удобнее.

— Я понимаю, — ответила Ксения Фёдоровна. — Я всегда хотела жить с тобой и Наташенькой. Но теперь не хочу.

— Почему?

— Не знаю. Но у меня давно нет такого желания.

Дмитриев молчал. Он не ожидал такого ответа.

Ксения Фёдоровна смотрела на него спокойно, потом закрыла глаза и сказала:

— Ты уже обменялся*, Витя. И обмен произошёл давно...

Снова наступило молчание.

Утром Дмитриев уехал рано, когда Ксения Фёдоровна ещё спала.

Она позвонила через два дня Дмитриеву на работу и сказала, что согласна на обмен. Они обменялись. Мать чувствовала себя хорошо, они даже пригласили гостей на новоселье*, но в конце ноября ей опять сделалось хуже и её увезли в ту больницу, где она уже лежала.

После смерти Ксении Фёдоровны Дмитриев заболел и пролежал три недели дома.

Что я мог сказать Дмитриеву, когда мы встретились с ним у общих знакомых и он рассказал мне всю эту историю? Он плохо выглядел, казался старше своих лет, а я ведь помню его ещё мальчишкой.

### टिप्पणियाँ

операция — ऑपरेशन, शल्योपचार
диагноз — निदान
подтвердиться — सही निकलना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Ле́на — लेना ( येलेना नाम का संक्षिप्त रूप )
Ната́шка — नताश्का ( नताल्या नाम का बोल-चाल का रूप )
Ви́тя — वीत्या ( वीक्तोर नाम का संक्षिप्त रूप )
доведёт де́ло до конца́ — काम पूरा करके रहेगी
кабине́т — अध्ययन-कक्ष
сомне́ние — संदेह, शंका
энерги́чно — ( यहाँ ) ज़ोर-शोर से
смерте́льно больна́ — उसे घातक रोग है
Ло́ра — लोरा ( लरीसा नाम का संक्षिप्त रूप )
ме́лочи — छोटी ( तुच्छ ) बातें
ста́рое ме́сто — पुरानी जगह
обменя́ться — [ फ़्लैट की ] अदला-बदली करना
новосе́лье — गृह-प्रवेश-उत्सव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

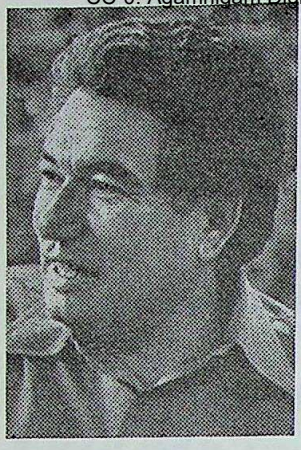

## Чингиз Айтматов
## चेंगीज़ आइत्मातोव
## ( जन्म १९२८ )

बहुराष्ट्रीय सोवियत साहित्य में ऐसे कलाकार हैं जिनके नाम देश से बाहर भी दूर-दूर तक प्रसिद्ध हैं। किर्गीज़ लेखक चेंगीज़ आइत्मातोव ऐसे ही एक लेखक हैं। उनका जन्म तालास नदी के तट पर शेकेर गाँव में हुआ था। बचपन से ही उन्होंने किसानों का जीवन देखा, वह उनकी ज़रूरतों, ख़ुशियों और परेशानियों से परिचित थे। यही लोग आइत्मातोव की कृतियों के नायक हो गये।

ललित साहित्य ने और सर्वप्रथम रूसी साहित्य ने तथा किर्गीज़ लोक-साहित्य ने आइत्मातोव को एक व्यक्ति और लेखक के रूप में गठित किया।

पिछले दो दशकों में आइत्मातोव ने «मैदानों और पहाड़ियों की कहानियाँ» लिखीं जिनमें «पहला अध्यापक», «जमीला» (१९५८), «वह मेरे दिल की रानी», «ऊँट की आँख», «माँ का मैदान» (१९६३) कहानियाँ हैं, बाद में «अलविदा, गुलसारी» (१९६६), «सफ़ेद जहाज़» (१९७०), «पहले सारस» (१९७७), «सागर के किनारे-किनारे दौड़ता अबलक़ कुत्ता» (१९७७) उपन्यासिकाएँ और «सदियों से लंबा एक दिन» उपन्यास (१९८०) प्रकाशित हुए।

सार-तत्व की दृष्टि से ये कृतियाँ गंभीर तथा प्रगीतात्मक हैं और यथार्थ जीवन से भरी हैं। लोक-कथाएँ तथा दंतकथाएँ इन कृतियों में जुड़कर इनका अभिन्न अंश हो गयी हैं। कृतियों के नाम भी काफ़ी काव्यमय हैं। अपनी जनता के जीवन, उसके रस्म-रिवाज और उन परिवर्त्तनों का चित्रण करते हुए जो महान् अक्तूबर क्रांति के बाद किर्गीज़िस्तान में हुए आइत्मातोव साथ ही मानवीय और दार्शनिक समस्याएँ भी उठाते हैं। शांति और सभी जनगण की परस्पर समझ, भलाई और बुराई, न्याय और प्रतिकार, सुख और प्रेम की समस्याएँ उनके मनोमस्तिष्क को उद्वेलित

करती हैं। वह ऐसे सक्रिय लोगों में, जो जीवन के जोश-खरोश से भरे हैं, जो अन्याय के प्रति उदासीन नहीं होते, जो संसार और मानवीय भावों के सौंदर्य को समझते है, ख़ास तौर पर रुचि लेते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आइत्मातोव की किताबें ७० से ज़्यादा देशों में प्रकाशित हुई हैं। १९६३ में उन्हें लेनिन पुरस्कार मिला और १९६८ तथा १९७७ में उन्हें सोवियत संघ के राजकीय पुरस्कार से विभूषित किया गया।

«जमीला» कहानी में लेखक सुख के लिए किर्गीज़ औरत के संघर्ष का चित्रण करते हैं। वह संसार के सौंदर्य, मनुष्य की प्रतिभा और मातृभूमि से प्रेम के गीत गाते हैं। «जमीला» गीतों का गीत है, असीम प्रेम की कहानी है, जीवन जैसे सुंदर प्रेम की कहानी।

## ДЖАМИЛЯ

(отры́вок из по́вести)

Мы по́здно возвраща́лись со ста́нции. Дания́р е́хал пе́рвым.

Хорошо́ бы́ло е́хать, смотре́ть на спи́ны лошаде́й, слу́шать ночны́е зву́ки. Джамиля́ е́хала впереди́ меня́. Она́ смотре́ла по сторона́м и что́-то ти́хо пе́ла. В таку́ю ночь невозмо́жно молча́ть, в таку́ю ночь хо́чется петь!

И она́ запе́ла. Го́лос у неё был зво́нкий, она́ зна́ла мно́го пе́сен, пе́ла их про́сто и краси́во, та́к что её прия́тно бы́ло слу́шать.

Вдруг она́ зако́нчила пе́сню и кри́кнула Дания́ру:

— Дания́р, спой что́-нибудь! Уме́ешь?

— Пой ты, Джамиля́, пой, — отве́тил Дания́р. — Я слу́шаю тебя́ о́чень внима́тельно!

А Джамиля́ сно́ва запе́ла.

Заче́м она́ попроси́ла его́ петь? Наве́рное, она́ хоте́ла поговори́ть с ним, потому́ что через не́которое вре́мя она́ сно́ва кри́кнула:

— А скажи́, Дания́р, ты люби́л когда́-нибудь? — И засмея́лась.

Дания́р ничего́ не отве́тил.

У ма́ленькой ре́чки, пересека́вшей доро́гу, ло́шади пошли́ ти́ше. Когда́ мы прое́хали через неё, Дания́р неуве́ренно запе́л:

«Го́ры мои́, си́не-бе́лые го́ры!
Земля́ мои́х де́дов, мои́х отцо́в!»

Неожи́данно он зака́шлял, но сле́дующие две стро́чки пропе́л глубо́ким си́льным го́лосом:

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

«Го́ры мои́, бе́ло-си́ние го́ры!
Колыбе́ль моя́!»

Тут он сно́ва замолча́л, как бу́дто испуга́лся чего́-то. Но да́же в э́том неуве́ренном пе́нии бы́ло что́-то необыкнове́нно взволно́ванное, и го́лос у него́ был хоро́ший.

— Почему́ же ты не пе́л ра́ньше? Пой, пой ещё! — закрича́ла Джамиля́.

Мы выезжа́ли из го́р в доли́ну *. Отту́да дул ве́тер. Данияр сно́ва запе́л. На́чал он та́к же неуве́ренно, несме́ло, но пото́м его́ го́лос стал си́льным, напо́лнил собо́й го́ры, его́ пе́сне отве́тило э́хо.

Бо́льше всего́ меня́ удиви́ло, кака́я страсть была́ в его́ пе́сне. Если бы я мог повтори́ть пе́сню Данияра! В ней почти́ не́ было слов, но и без сло́в она́ раскрыва́ла большу́ю челове́ческую ду́шу. Ни до, ни по́сле я не слы́шал тако́й пе́сни. Она́ не была́ похо́жа ни на кирги́зские*, ни на каза́хские *, но в ней бы́ло и то и друго́е. Му́зыка Данияра состоя́ла из лу́чших мело́дий двух родны́х наро́дов, и получи́лась прекра́сная, неповтори́мая пе́сня. Это была́ пе́сня гор и степе́й.

Я слу́шал и удивля́лся: «Так вот он како́й, Данияр! Кто́ бы мог поду́мать!*»

Я по́нял, почему́ он люби́л одино́чество, почему́ прислу́шивался к неинтере́сным для други́х зву́кам, почему́ иногда́ вдруг загора́лись его́ глаза́. Это был глубоко́ вклюблённый челове́к. И он был влюблён не про́сто в друго́го челове́ка. Это была́ кака́я-то друга́я, огро́мная любо́вь к жи́зни, к земле́. Да, он храни́л э́ту любо́вь в себе́, в свое́й му́зыке, он жил ей. Равноду́шный челове́к не смо́г бы так петь, да́же е́сли бы у него́ был хоро́ший го́лос.

До́лго пел Данияр. Ти́хо слу́шала его́ а́вгустовская ночь. И да́же ло́шади давно́ уже́ шли совсе́м ме́дленно, как бу́дто боя́лись, что он замолчи́т.

И вдруг Данияр замолча́л и бы́стро пое́хал вперёд. Я ду́мал, что Джамиля́ пое́дет за ни́м, и то́же пригото́вился. Но она́ продолжа́ла сиде́ть, как бу́дто ещё слу́шала пе́сню Данияра. Данияр уе́хал, а мы до са́мого ай́ла * е́хали мо́лча. Да и на́до ли бы́ло говори́ть. Ведь слова́ми не всегда́ и не всё мо́жно сказа́ть...

С э́того вре́мени в на́шей жи́зни, каза́лось, что́-то измени́лось. Я тепе́рь всё вре́мя ждал чего́-то хоро́шего. С утра́ мы грузи́ли зерно́ и везли́ его́ на ста́нцию,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

а потóм спешúли вы́ехать, чтóбы на обрáтном пути́ слу́шать пéсни Данияра.

Вéчером, когдá мы éхали по горáм, мне кáждый раз казáлось, что я живу́ в другóм мúре. Этот мир красоты́ и тревóг раскрывáл передо мнóй Данияр в своéй пéсне. Где он э́тому научúлся, от когó он всё э́то слы́шал? Я понимáл, что так мог любúть свою́ зéмлю тóлько тот, кто всем сéрдцем принадлежúт ей.

Слу́шая Данияра, я хотéл обня́ть зéмлю тóлько за тó, что человéк мóжет её так любúть. Я впервы́е почу́вствовал тогдá, как проснýлось во мнé что́-то нóвое. Это бы́ло желáние рассказáть лю́дям о красоте́ землú так же прекрáсно, как э́то умéл дéлать Данияр. Но я тогдá ещё не понимáл, что хочу́ стать худóжником *...

Прóсто пéсни Данияра сдéлали неспокóйной мою́ ду́шу. Я смотрéл на мúр удивлёнными глазáми, как бу́дто вúдел егó впервы́е.

А как изменúлась вдруг Джамиля́! Весéнняя свéтлая грусть былá в её глазáх. В дорóге онá о чём-то всё врéмя ду́мала и тúхо рáдовалась чему́-то. К Данияру онá не подходúла, не смотрéла ему́ в глазá.

Мне ещё не всё бы́ло я́сно в их отношéниях, и я бо́ялся ду́мать об э́том. Но почему́-то мне бы́ло нехорошó, когдá я замечáл, что Джамиля́ станóвится гру́стной оттогó, что самá не подхóдит к Данияру. Лу́чше бы онá по-прéжнему смея́лась и шути́ла над ни́м. Но в тó же врéмя меня́ охвáтывала рáдость за ни́х, когдá мы возвращáлись в аúл и слу́шали пéсни Данияра.

По горáм Джамиля́ éхала на телéге, а в степú * слезáла с неё и шла пешкóм. Так бы́ло удóбнее слу́шать. Снача́ла мы шли кáждый óколо своéй телéги, а потóм, шаг за шáгом подходúли к Данияру. Нам хотéлось увúдеть егó лицó и глазá. Неужéли ж то поёт всегдá гру́стный Данияр?

И кáждый раз я замечáл, как Джамиля́ мéдленно протя́гивала к нему́ ру́ку, но он не вúдел э́того, он смотрéл кудá-то вверх, далекó, и покáчивался из стороны́ в сто́рону. Тогдá рукá Джамилú опускáлась.

Чáсто онá останáвливалась, стоя́ла посредú дорóги, дóлго-дóлго смотрéла ему́ вслед, а потóм снóва шла.

Я всегдá ждал, что онá скáжет мне что́-то вáжное, объяснúт, что тревóжит её. Но онá ничегó не говорúла. Онá мучúтельно хотéла и в тó же врéмя боя́лась призна́ться себé, что полюбúла Данияра. Так же мучúтельно, как я хотéл и не хотéл э́того. Ведь онá былá женóй моегó бráта!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Я не хотел думать об этом. Как хороша, как краси́ва она́ была́, когда́ слу́шала пе́ние Дания́ра! Како́й красото́й и стра́стью дыша́ло её лицо́! Тогда́ я ви́дел э́то, но не всё понима́л. Да и тепе́рь я ча́сто задаю́ себе́ вопро́с: мо́жет быть любо́вь — э́то тако́е же вдохнове́ние, как вдохнове́ние худо́жника и́ли поэ́та? Гля́дя на Джамилю́, мне хоте́лось убежа́ть в степь и спроси́ть не́бо и зе́млю: как найти́ в себе́ э́ту трево́гу и э́ту ра́дость?

И одна́жды я нашёл отве́т.

Мы е́хали со ста́нции. Уже́ была́ ночь, свети́ли звёзды в не́бе, бы́ло ти́хо, то́лько звуча́ла пе́сня Дания́ра. Мы с Джамилёй шли за ни́м.

Но что случи́лось в э́тот день с Дания́ром? В его́ пе́сне бы́ло сто́лько гру́сти и одино́чества, что слёзы появи́лись у на́с на глаза́х.

Джамиля́ шла, наклони́в го́лову, и когда́ го́лос Дания́ра на́чал набира́ть высоту́, Джамиля́ пры́гнула на ходу́ в теле́гу и се́ла ря́дом с ним. Я шёл ря́дом и смотре́л на ни́х. Дания́р пел и, каза́лось, не замеча́л во́зле себя́ Джамили́. Я уви́дел, как опусти́лись её ру́ки, и она́ положи́ла го́лову ему́ на плечо́. То́лько на секу́нду дро́гнул его́ го́лос, а пото́м зазвуча́л с но́вой си́лой. Дания́р пел о любви́.

Я был потрясён. Степь как бу́дто посветле́ла, расцвела́, и я уви́дел в э́той широ́кой степи́ двух влюблённых. А они́ не замеча́ли меня́. Я шёл и смотре́л, как они́, забы́в обо всём на све́те, вме́сте пока́чивались в такт пе́сне. И я не узнава́л их. Это был всё то́т же Дания́р, но глаза́ его́ горе́ли в темноте́. Это была́ всё та́ же Джамиля́, но така́я несме́лая и ти́хая, со слеза́ми на глаза́х. Ра́зве э́то не́ было сча́стьем? Всю свою́ прекра́сную му́зыку Дания́р о́тдал ей, он пел для неё, он пел о не́й.

Мной овладе́ло непоня́тное волне́ние, кото́рое всегда́ приходи́ло с пе́снями Дания́ра. И вдруг мне ста́ло я́сно, чего́ я хочу́. Я хочу́ нарисова́ть их.

Я испуга́лся со́бственных мы́слей. Но жела́ние бы́ло сильне́е стра́ха. Я нарису́ю их вот таки́ми счастли́выми! Да, вот таки́ми, каки́е они́ сейча́с. Но смогу́ ли я? Я был сча́стлив, потому́ что ещё не зна́л, ско́лько тру́дностей принесёт мне в бу́дущем э́то жела́ние... Но я хоте́л быть худо́жником!

Я говори́л себе́, что на́до ви́деть зе́млю так, как ви́дит её Дания́р. Я хоте́л нарисова́ть кра́сками пе́сню Дания́ра. У меня́ то́же бу́дут го́ры, степь, лю́ди, трава́, облака́, ре́ки...

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Ско́ро я уе́хал учи́ться.

В акаде́мию*, куда́ меня́ посла́ли по́сле худо́жественного учи́лища*, я привёз свою́ дипло́мную рабо́ту* — э́то была́ карти́на*, о кото́рой я так давно́ мечта́л.

Нетру́дно дога́даться, что на э́той карти́не изображены́ Данияр и Джамиля́. Они́ иду́т по широ́кой степно́й доро́ге. Перед ни́ми све́тлая степь.

Пусть моя́ карти́на не была́ о́чень хоро́шей! Мастерство́* не прихо́дит сра́зу. Но она́ была́ мои́м пе́рвым тво́рческим жела́нием.

И сейча́с у меня́ быва́ют неуда́чи. Быва́ют и тяжёлые мину́ты, когда́ я теря́ю ве́ру в себя́. И тогда́ я подхожу́ к э́той родно́й мне карти́не, к Дания́ру и Джамиле́. Я до́лго смотрю́ на ни́х и разгова́риваю с ни́ми.

Где вы сейча́с? По каки́м доро́гам идёте? Тепе́рь у на́с в степи́ мно́го но́вых доро́г — по всему́ Казахста́ну до Алта́я* и Сиби́ри* бегу́т они́. Мно́го сме́лых люде́й рабо́тает там. Мо́жет быть, и вы рабо́таете там? Если ты уста́ла, Джамиля́, и́ли потеря́ла ве́ру в себя́, положи́ го́лову на плечо́ к Дания́ру. Пусть он споёт тебе́ свою́ пе́сню о любви́, о земле́, о жи́зни. Вспо́мни ту а́вгустовскую ночь! Иди́ вперёд, Джамиля́, ты нашла́ своё сча́стье!

Я смотрю́ на карти́ну и слы́шу го́лос Дания́ра. Он зовёт меня́ в путь. Зна́чит, мне то́же пора́ идти́. Я пойду́ по степи́ в свой а́йл, я найду́ там но́вые кра́ски для свои́х карти́н!

Пусть в ка́ждой мое́й карти́не звучи́т пе́сня Дания́ра!

Пусть в ка́ждой мое́й карти́не бьётся се́рдце Джамили́!

### टिप्पणियाँ

доли́на — घाटी

Киргизия — किर्गीज़िया, किर्गीज़ सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र

Казахста́н — कज़ाख़स्तान, कज़ाख़ सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र

Кто бы мог поду́мать! — कोई सोच भी नहीं सकता था!

а́йл — किर्गीज़िया और कज़ाख़स्तान में गाँव का नाम

худо́жник — चित्रकार

степь — स्टेपी, स्तेप

акаде́мия — कला-अकादमी (उच्च शिक्षालय)

худо́жественное учи́лище — कला-विद्यालय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

дипло́мная рабо́та — डिप्लोमा-निबंध, दीक्षांत-निबंध

карти́на — चित्र, तसवीर

мастерство́ — निपुणता, दक्षता

Алта́й — अल्ताई महाप्रदेश (रूसी सोवियत संघीय समाजवादी प्रजातंत्र का दक्षिण-पूर्व में स्थित भाग)

Сиби́рь — साइबेरिया (सोवियत संघ के एशियाई भाग का खंड जो यूराल पर्वतों और सुदूर पूर्व के बीच स्थित है)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

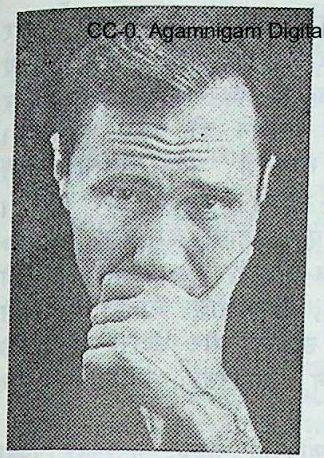

Василий Шукшин
वसीली शुक्शिन
(१९२९-१९७४)

प्रकृति ने वसीली मकारोविच शुक्शिन को बहुमुखी प्रतिभा दी। वह बहुत अच्छे अभिनेता, निर्देशक, पटकथा-लेखक थे। शुक्शिन की लिखी पट-कथाओं पर अनेक फ़िल्में जिनमें वह निर्देशक और अभिनेता भी थे बनीं, जो देश-विदेश में बहुत लोकप्रिय हुईं। इनमें «है एक ऐसा जवान» (१९६४ में वेनिस के १५वें अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म-उत्सव में «सेंट मार्क के स्वर्ण-केसरी» से पुरस्कृत), «ल्युबाविनों का अंत», «आपका बेटा और भाई», «अजीब लोग», «अंगारों का पेड़» फ़िल्में उल्लेखनीय हैं। १९७४ में «मैं आपको आज़ादी देने को आया हूँ» नाम का एक बड़ा उपन्यास प्रकाशित हुआ जिसका नायक १६७०-१६७१ के किसान-विद्रोह का नेता स्तेपान राज़िन है। लेखन-कार्य ही शुक्शिन को सबसे अधिक प्रिय था और जीवन के अंतिम वर्षों में वह यही सोच रहे थे कि दूसरे सब काम छोड़कर पूरी तरह इसी कार्य में लग जायें। शुक्शिन ने कुछ उपन्यासिकाएँ लिखीं जिनमें «अंगारों का पेड़» (१९७३), «दृष्टिकोण» (१९७४), «कारोबारी लोग» (१९७४), «और सुबह को वे लोग जाग उठे» (१९७५) प्रमुख हैं। उन्होंने दो-तीन दर्जन कहानियाँ भी लिखीं। उनके दो कहानी-संग्रह «देहाती लोग» (१९६३) और «वहाँ, दूर...» (१९६८) प्रकाशित हुए।

उनकी अधिकांश कहानियों के नायक ट्रैक्टर-चालक, मोटर-चालक, लकड़हारे, सामूहिक किसान और अन्य ऐसे लोग हैं जिनका काम ज़मीन या खेतीबारी से संबंधित है। परंतु शुक्शिन ज़्यादातर आदमी के पेशे में नहीं बल्कि उसकी मौलिकता में, उसकी कर्त्तव्य-निष्ठा में और उसकी आत्म-सम्मान की हृदयस्पर्शी भावना में रुचि लेते हैं। शुक्शिन जीवन को सजा-सँवारकर नहीं दिखाते, लेकिन इसमें वह कुछ ऐसी काव्यमय, उज्ज्वल और निर्मल बात देखने की कोशिश अवश्य करते हैं जो सच्चे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
मनुष्य का आधार होती है। साथ ही शुक्शिन समझते हैं कि यह संसार आदर्शमूलक नहीं है, कि इसमें भलाई और बुराई का अनवरत संघर्ष चलता है। इसी कारण से उनके पात्र जीवन के शाश्वत प्रश्नों का उत्तर खोजते हैं, सच्चे मानवीय सुख का रहस्य समझने की चेष्टा करते हैं। शुक्शिन के नायक अपने ढंग से विलक्षण लोग हैं, अपने आत्मिक गुणों की दृष्टि से बड़े प्रतिभाशाली लोग हैं—सहृदय, हमदर्द और दयालु। यह संयोग की बात नहीं है कि उनकी एक कहानी का नाम «सनकी» है। इस कहानी का नायक सनकी, अजीब आदमी है। लेकिन साथ ही वह बेहद नेक, विश्वासप्रवण, ईमानदार, विनयशील आदमी है जिसे ठेस पहुँचाना इतना आसान है। शुक्शिन उत्कृष्ट और उदात्त मनुष्य के लिए आवाज़ उठाते हैं और टुटपुँजियापन, कायरता, कमीनापन और अनाड़ीपन की भर्त्सना करते हैं।

१९७६ में वसीली शुक्शिन को मरणोपरांत लेनिन पुरस्कार दिया गया था।

## ОСЕНЬЮ

Паро́мщик* Фили́пп Тю́рин дослу́шал после́дние изве́стия по ра́дио, ещё посиде́л за столо́м, помолча́л...

— Ника́к не мо́гут успоко́иться! — сказа́л он серди́то.

— Кого́ ты опя́ть руга́ешь? — спроси́ла жена́ Фили́ппа, высо́кая ста́рая же́нщина с мужски́ми рука́ми и мужски́м го́лосом.

— Бомбя́т! — Фили́пп показа́л на радиоприёмник.

— Кого́ бомбя́т?

— Вьетна́мцев.

Жене́ Фили́ппа не нра́вилось, что он увлека́ется поли́тикой*. Быва́ло, что они́ руга́лись* из-за поли́тики, но сейча́с ей не хоте́лось руга́ться. Она́ собира́лась на база́р, и у неё не́ было вре́мени.

Фили́пп оде́лся потепле́е и пошёл к паро́му*.

Паро́мщиком он был давно́. Во вре́мя войны́ его́ ра́нило в го́лову, рабо́тать пло́тником он бо́льше не смо́г и пошёл паро́мщиком.

Был коне́ц сентября́, дул холо́дный ве́тер, бы́ло хо́лодно. Лю́ди здоро́вались с Фили́ппом и спеши́ли да́льше — к магази́ну за хле́бом, к авто́бусу, что́бы пое́хать на база́р.

Фили́пп привы́к ходи́ть пешко́м от до́ма до паро́ма. Обы́чно он шёл и ничего́ не ду́мал, а сейча́с он ду́мал, как останови́ть войну́ во Вьетна́ме.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Фили́пп в мо́лодости был о́чень акти́вным. Акти́вно уча́ствовал в но́вой жи́зни, спо́рил, крича́л, убежда́л, волнова́лся. Чле́ном па́ртии* он никогда́ не́ был, но без Фили́ппа ничего́ не де́лали, а он с удово́льствием помога́л.

Проходи́ли го́ды, и акти́вность Фили́ппа слабе́ла, а тут начала́сь война́, и его́ ра́нило в го́лову. По́сле э́того у Фили́ппа не́ было сил так рабо́тать и волнова́ться. Но он по-пре́жнему принима́л бли́зко к се́рдцу все обще́ственные вопро́сы и беспоко́ился.

На реке́ дул си́льный ве́тер. Изредка выгля́дывало осе́ннее со́лнце.

Фили́пп спла́вал на друго́й бе́рег и обра́тно, перевёз тех, кто бо́льше всего́ спеши́л. Да́льше он рабо́тал уже́ споко́йнее и ме́дленнее. Тут Фили́пп на́чал ду́мать про америка́нцев...

Подъе́хала сва́дьба*. Така́я совре́менная, на легковы́х маши́нах, укра́шенных ле́нтами и цвета́ми. Ра́ньше в деревня́х жениха́ и неве́сту вози́ли на лошадя́х, а тепе́рь, как в го́роде, — на маши́нах.

Фили́пп с интере́сом смотре́л на сва́дьбу. Люде́й он э́тих не зна́л. Они́ бы́ли незде́шние* и е́хали куда́-то в го́сти. Оди́н из госте́й попроси́л гармони́ста* сыгра́ть и на́чал танцева́ть пря́мо на паро́ме.

Паро́м переплы́л ре́ку, маши́ны съе́хали с него́, и сва́дьба пое́хала да́льше.

А Фили́пп на́чал ду́мать про свою́ жизнь. Про то́, как у него́ в мо́лодости получи́лось с жени́тьбой. У ни́х в дере́вне была́ де́вушка Ма́рья Ерми́лова. Краса́вица, круглоли́цая, румя́ная, весёлая. Загляде́нье*. О тако́й неве́сте мо́жно бы́ло то́лько мечта́ть. Фили́пп о́чень люби́л её, и Ма́рья то́же его́ люби́ла. Они́ хоте́ли пожени́ться. Но Фили́пп на́чал рабо́тать с комсомо́льцами. Фили́ппу нра́вилось, что комсомо́льцы боро́лись про́тив ста́рых дереве́нских обы́чаев. А Ма́рья не хоте́ла про́тив них боро́ться, потому́ что её роди́тели бы́ли бога́тыми крестья́нами.

Из-за э́того Фили́пп с Ма́рьей расста́лись. Фили́пп не измени́лся пото́м, никогда́ не жале́л, что уча́ствовал в строи́тельстве но́вой жи́зни, а Ма́рью жале́л. Не́ было ни одного́ дня, что́бы он не вспомина́л Ма́рью. Снача́ла ему́ бы́ло так тяжело́, что не хоте́лось жить. И с года́ми боль не ушла́. У него́ уже́ была́ семья́, де́ти... А боле́ло и боле́ло из-за Ма́рьи се́рдце. Жена́ его́, Фёкла Кузо́вкина, узна́ла об э́той постоя́нной печа́ли и начала́ его́ ненави́деть. Эта ти́хая глубо́кая не́нависть

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
то́же жила́ в ней постоя́нно. Фили́пп не оби́жался на Фёклу, нет... Но на войне́, когда́ говори́ли: «Вы защища́ете ва́ших матере́й и жён...» — Фили́пп вме́сто Фёклы ви́дел Ма́рью. И е́сли бы он поги́б, то с мы́слью о Ма́рье.

Боль не ушла́ с года́ми, но, коне́чно, чу́вствовалась не та́к си́льно, как в пе́рвые го́ды по́сле жени́тьбы. Он тогда́ да́же говори́ть стал ме́ньше.

А Ма́рья тогда́... Ма́рью тогда́ увезли́ из дере́вни. Её о́тдали за́муж за бога́того па́рня из дере́вни Краю́шкино.

При встре́чах с Фили́ппом муж Ма́рьи, Па́вел, смотре́л на него́ с како́й-то зло́стью, с бо́лью. Лю́ди говори́ли, что живу́т они́ с Ма́рьей не о́чень хорошо́, что Ма́рья хо́дит печа́льная. От э́тих разгово́ров ещё ху́же ста́ло Фили́ппу...

Таки́е невесёлые мы́сли вы́звала у него́ э́та сва́дьба на маши́нах.

С э́тими мы́слями Фили́пп ещё раз спла́вал на друго́й бе́рег и обра́тно, а на душе́ у него́ ста́ло трево́жно.

«Ещё два ра́за спла́ваю, — реши́л Фили́пп, — пойду́ обе́дать».

Подплыва́я к чужо́му бе́регу (у Фили́ппа был свой бе́рег, где была́ его́ родна́я дере́вня, и чужо́й), он уви́дел маши́ну и люде́й во́зле неё. Фили́пп сра́зу по́нял, что э́то за маши́на, и кого́ она́ везёт. Поко́йника *. Лю́ди вози́ли поко́йников через ре́ку одина́ково: у паро́ма они́ выходи́ли из маши́ны, смотре́ли на́ реку и молча́ли так, что всё бы́ло я́сно.

«Кто́ же у́мер? — ду́мал Фили́пп. — Наве́рное, из како́й-нибудь далёкой дере́вни, потому́ что я ничего́ не слы́шал. То́лько почему́ же отту́да-то везу́т? Наве́рное, челове́к у́мер не до́ма, и его́ везу́т хорони́ть в родну́ю дере́вню».

Паро́м подплы́л бли́же к бе́регу, и Фили́пп узна́л Па́вла, Ма́рьиного му́жа. И вдруг Фили́пп по́нял, кого́ везу́т. Ма́рью везу́т. Вспо́мнил, что в нача́ле ле́та Ма́рья е́хала в го́род к до́чери. Они́ разгова́ривали с Фили́ппом, пока́ плы́ли. Ма́рья сказа́ла, что у до́чери в го́роде роди́лся ребёнок, на́до бы́ло ей помо́чь. Поговори́ли они́ тогда́ хорошо́. Ма́рья рассказа́ла, что живу́т они́ хорошо́, тро́е дете́й уже́ вы́росли, сама́ она́ получа́ет пе́нсию. Па́вел то́же получа́ет пе́нсию, но ещё рабо́тает. Скота́ у них немно́го, но всё в до́ме есть. Фили́пп то́же рассказа́л, что живёт хорошо́, пе́нсию * то́же получа́ет, на

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

здоро́вье не жа́луется. А Ма́рья сказа́ла, что у неё больно́е се́рдце. И вот умерла Марья...

Паро́м останови́лся, маши́на начала́ въезжа́ть на него́.

Фили́пп стоя́л и смотре́л на маши́ну.

Ма́рью везу́т, Ма́рью...

Фили́ппу ну́жно бы́ло показа́ть шофёру, как ста́вить на паро́ме маши́ну, потому́ что сза́ди стоя́ли ещё две, но он не мо́г, потому́ что смотре́л на маши́ну, везу́щую Ма́рью.

— Где маши́ну ста́вить? — кри́кнул шофёр.

— Тут ставь... — Фили́пп неопределённо махну́л руко́й. Он ника́к не мо́г осозна́ть, что везу́т мёртвую Ма́рью. Он вспомина́л, как она́ расска́зывала ему́ вот тут, на паро́ме, что живу́т они́ хорошо́. Пото́м вспо́мнил её молодо́й...

Фили́пп с трудо́м подошёл к Па́влу. Жизнь измени́ла Па́вла. Лицо́ у него́ бы́ло ещё молодо́е, глаза́ у́мные, но в глаза́х больша́я, споко́йная грусть.

— Что, Па́вел? — спроси́л Фили́пп.

Па́вел посмотре́л на него́, не по́нял, о чём его́ спроси́ли, опя́ть посмотре́л на́ реку. Фили́пп подошёл к маши́не и загляну́л в неё. И заболе́ло се́рдце: да, э́то Ма́рья.

Поплы́ли. Фили́пп вёл паро́м и ду́мал: «Ма́рьюшка, Ма́рья». Са́мый дорого́й для него́ челове́к плывёт с ним в после́дний раз...

Все э́ти три́дцать лет, пока́ он рабо́тал паро́мщиком, он знал, ско́лько раз Ма́рья переплыва́ла на паро́ме. Она́ е́здила к де́тям в го́род. Снача́ла они́ там учи́лись, пото́м на́чали рабо́тать, пото́м у них рожда́лись свои́ де́ти... И вот — не́ту Ма́рьи.

Паро́м переплы́л ре́ку. Фили́пп смотре́л на маши́ну... Никогда́ в свое́й жи́зни он не ду́мал о то́м, что бу́дет, е́сли Ма́рья умрёт. Ни ра́зу не ду́мал. Он не́ был гото́в к её сме́рти.

Когда́ маши́на начала́ съезжа́ть с паро́ма, Фили́пп поду́мал, что он что́-то до́лжен сде́лать. Ведь её сейча́с увезу́т. Совсе́м. Навсегда́.

«Ну́жно попроща́ться, — по́нял он. — Ну́жно посмотре́ть на неё в после́дний раз». Ведь э́то его́ го́ре! Его́ Ма́рья!

Вся до́лгая жизнь стоя́ла перед ни́м. Всё са́мое гла́вное, са́мое ну́жное, чем он жил... Фили́пп не замеча́л, что он пла́чет...

Маши́на уе́хала. Вот тепе́рь его́ жизнь бу́дет дру-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
го́й: он привык, что на земле́ есть Ма́рья. Е́сли бы́ло тру́дно, он вспомина́л её. Ка́к же он бу́дет жить тепе́рь?

Фили́пп бы́стро сошёл с паро́ма. Ря́дом стоя́ла задержа́вшаяся маши́на. Фили́пп подошёл к шофёру.

— Догони́ вон ту маши́ну!

— Заче́м?

— На́до!

Шофёр посмотре́л на Фили́ппа, ничего́ бо́льше не спроси́л, и они́ пое́хали. Пока́ они́ е́хали по дере́вне, шофёр не́сколько раз смотре́л на Фили́ппа.

— Это твои́ ро́дственники? — спроси́л он.

Фили́пп ничего́ не отве́тил. Он смотре́л на маши́ну. Отсю́да ви́ден Ма́рьин гроб *. Лю́ди, кото́рые сиде́ли вокру́г, вдруг показа́лись Фили́ппу чужи́ми.

— Обогна́ть *? — спроси́л шофёр.

— Обгони́... И я сойду́.

Обогна́ли пе́рвую маши́ну. Останови́лись. Фили́пп вы́шел на доро́гу и по́днял ру́ку. Он не зна́л, что ска́жет, когда́ маши́на останови́тся. Ему́ хоте́лось ещё раз посмотре́ть на Ма́рью. Это бы́ло ну́жно, ва́жно. Нельзя́ бы́ло, что́бы её про́сто увезли́, и всё ко́нчилось...

Маши́на останови́лась.

Фили́пп зале́з в неё.

— Па́вел... — сказа́л он и не узна́л своего́ го́лоса. — Разреши́ мне попроща́ться с Ма́рьей.

Па́вел встал и шагну́л к нему́. Фили́пп уви́дел его́ лицо́. Глаза́, кото́рые бы́ли гру́стными, тепе́рь вдруг ста́ли злы́ми.

— Иди́ отсю́да! — негро́мко сказа́л Па́вел. И толкну́л Фили́ппа в грудь.

Фили́пп смотре́л на Па́вла и ничего́ не понима́л.

— Пусть ухо́дит! — совсе́м зло говори́л Па́вел. — Пусть он ухо́дит отсю́да! Уходи́!

Фили́пп слез с маши́ны. Тепе́рь он то́же зло смотре́л на Па́вла.

— Нельзя́ стро́ить свою́ жизнь на чужо́м несча́стье, — сказа́л Фили́пп. — Ты ду́мал, что бу́дешь жить с ней хорошо́? Заче́м ты жени́лся, когда́ знал, что она́ лю́бит меня́?

— Переста́ньте! — рассерди́лся молодо́й мужчи́на в маши́не. — Сейча́с нельзя́ ссо́риться!

Маши́на уе́хала. Фили́пп ме́дленно пошёл наза́д.

«Ма́рья, — ду́мал он, — Ма́рья! Вот как всё в жи́зни быва́ет. Не зна́л Па́вел с тобо́й ра́дости. Не люби́ла она́ тебя́, Па́вел...»

CC-0. Jangamwadi Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

«Как жить тепе́рь? — ду́мал он. — Тепе́рь на́до дожива́ть свою́ жизнь и собира́ться вслед за Ма́рьей. Ничего́ уже́ нельзя́ верну́ть...»

Ве́тер ко́нчился. Не́бо ста́ло совсе́м чи́стым. Свети́ло со́лнце, но бы́ло хо́лодно. Осень. Осенью тепло́ не быва́ет.

### टिप्पणियाँ

паро́мщик — फ़ेरीमैन
увлека́ться поли́тикой — राजनीति में रुचि लेना
руга́ться — झगड़ना, झगड़ा करना
паро́м — फ़ेरी-बोट
член па́ртии — सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य
спла́вать — फेरा लगाना (फ़ेरी-बोट पर)
Подъе́хала сва́дьба. — बरात की मोटरें आ रुकीं।
незде́шние — परदेसी लोग
гармони́ст — रूसी अकार्डियन-वादक
загляде́нье — सौंदर्य की मूर्त्ति
поко́йник — मुर्दा, मृतक
пе́нсия — पेंशन
гроб — ताबूत
обогна́ть — आगे निकलना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Василий Белов
वसीली बेलोव
(जन्म १९३२)

वसीली इवानोविच बेलोव की रचनाएँ सोवियत साहित्य की उस धारा में आती हैं जिसे आलोचकों ने «देहाती गद्य-साहित्य» का नाम दिया है। बेलोव आज-काल के गाँव की समस्याओं पर विचार करनेवाले तथा देहाती जीवन का चित्रण करनेवाले पहले लेखकों में हैं। किसान का बेटा होने के नाते वह उन सब बातों में सक्रिय रुचि लेते हैं जो उनकी जन्म-भूमि – वोलोग्दा प्रदेश में – हो रही हैं।

वह अपनी जन्म-भूमि के बारे में कविताएँ लिखते हैं। १९६१ में उनका काव्य-संग्रह «जंगल से घिरी मेरी गँवई» प्रकाशित हुआ था। लेकिन बेलोव के गद्य-साहित्य ने उन्हें अधिक लोकप्रिय बनाया है। इसमें उन्होंने आज-कल के गाँव और उसके दैनिक जीवन की गहरी जानकारी और बड़ी साहित्यिक दक्षता दिखायी है।

बेलोव पहली नज़र में सरल चीज़ों से काव्य-रस निकालना जानते हैं। नायकों की रोज़ाना ज़रूरतें और इनका दैनिक जीवन लेखक का ध्यान आकर्षित करता है। उनकी कृतियों «रोज़ का काम» (१९६६) और «बढ़ई की कहानियाँ» (१९६८) में ऐसी समस्याएँ प्रस्तुत की गयी हैं।

अपने उपन्यास «पूर्ववेला» (१९७२-१९७६) में बेलोव ने ऐतिहासिक घटनाओं को विषय-वस्तु बनाया है। लेखक पारिवारिक समस्याओं में भी रुचि लेता है। इनको लेकर उन्होंने «डाक्टर स्पॉक के अनुसार पालन--पोषण» लघु-उपन्यास लिखा। १९७९ में बेलोव ने «सामंजस्य। लोक--सौंदर्य-बोध के निबंध» शीर्षक से संग्रह लिखा जिनमें उन्होंने रूसी लोक--संस्कृति का अनुशीलन किया।

बेलोव के लघु-उपन्यास और लोक-सौंदर्य-बोध-संबंधी निबंधों का एक ही उद्देश्य है रूसी राष्ट्रीय स्वभाव के विशिष्ट लक्षणों को और स्वभाव

के उद्गम के स्रोतों को दिखाना। १९८१ में लेखक को सोवियत संघ के राजकीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

## ЛАД *

(из расска́зов о наро́дной эсте́тике *)

### О ЧЁМ ПОЁТ САМОВАР

Ещё в семна́дцатом ве́ке в до́ме купца́ * Стро́ганова гостёй * угоща́ли «трово́й», зава́ренной * горя́чей водо́й и говори́ли, что тако́й напи́ток не ка́ждый день быва́ет на столе́ у царя́. Это был чай, кото́рый привози́ли в Росси́ю с восто́ка.

По́зже чай стал люби́мым напи́тком ка́ждого ру́сского челове́ка и его́ пи́ли ча́ще, чем напи́тки * из фру́ктов и́ли я́год. Чай пи́ли та́к же ча́сто, как квас *. Но оди́н хоро́ший напи́ток никогда́ не меша́ет друго́му, та́к же как оди́н хоро́ший национа́льный обы́чай * не меша́ет друго́му. Они́ то́лько дополня́ют друг дру́га и ка́ждый вы́игрывает ря́дом с други́м.

Вре́мя, ме́сто и настрое́ние подска́зывали хозя́ину и́ли хозя́йке, чем напои́ть го́стя, рабо́тника и́ли ро́дственника. В одно́м слу́чае э́то был чай, в друго́м квас, в тре́тьем — берёзовый сок *. К ка́ждому напи́тку дава́ли определённую посу́ду, и пи́ли их то́же по-ра́зному.

За коро́ткое вре́мя чаепи́тие * ста́ло таки́м популя́рным в Росси́и, что самова́р стал обы́чным в ка́ждом до́ме. Фо́рмы самова́ров бы́ли о́чень ра́зными, но ка́ждая из ни́х была́ выраже́нием наро́дной эсте́тики. Самова́р дополня́л в до́ме печь, и без самова́ра изба́ вы́глядела некраси́вой. Ру́сская печь шуме́ла та́к же, как самова́р, и под э́ти зву́ки лю́ди с удово́льствием слу́шали пе́сни холо́дного зи́мнего ве́тра на у́лице.

В каки́х же слу́чаях ста́вили самова́р? Почти́ во все́х!

Если в дом приходи́л знако́мый и́ли незнако́мый челове́к, перед обе́дом, в жа́ркий ле́тний день, когда́ всё вре́мя хо́чется пить, провожа́я го́стя и́ли ро́дственника, по́сле ба́ни *, на пра́здниках, что́бы согре́ться в холо́дный день, в ра́достный день и в гру́стный, и́ли про́сто для того́, что́бы нагре́ть во́ду...

Лу́чшей водо́й для ча́я счита́лась вода́ из реки́. Её и налива́ли в самова́р. Но е́сли хозя́йка забыва́ла нали́ть в самова́р во́ду и то́лько накла́дывала туда́ дрова́

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
и зажига́ла его́, то самова́р сначала молча́л, а пото́м начина́л гро́мко шуме́ть и вдруг начина́л ме́дленно па́дать. Не ка́ждый ма́стер мог по́сле э́того почини́ть самова́р, поэ́тому в бога́тых дома́х ча́сто бы́ло два самова́ра.

Ожи́вший, кипя́щий и шумя́щий самова́р на са́мом де́ле каза́лся живы́м. Бли́зость воды́ и огня́, бли́зость челове́ка к воде́ и огню́ сде́лало чаепи́тие одни́м из са́мых прия́тных заня́тий, сближа́ющих люде́й, собира́ющих к столу́ всю семью́.

Вот хозя́йка принесла́ во́ду, вот она́ вы́лила её в самова́р, пото́м мы почу́вствовали за́пах горя́щих берёзовых дров*. Через три́ мину́ты самова́р начина́ет немно́го шуме́ть, а че́рез пя́ть — уже́ молчи́т. Он начина́ет петь* сно́ва, когда́ закипа́ет* вода́, из-под кры́шки поднима́ется вверх горя́чий пар*, самова́р ста́вят на стол, а све́рху на него́ ста́вят ма́ленький ча́йник* с ча́ем.

На столе́ стоя́т ча́шки. Их сто́лько, ско́лько чле́нов семьи́. Ря́дом с ча́шками — молоко́.

Тепло́ от самова́ра, его́ пе́ние, пар, за́пах ча́я, сверка́ющие бока́ самова́ра, куда́ мо́жно смотре́ть как в зе́ркало, большо́й кусо́к пирога́*, са́хар... Вот так все мы вспомина́ем чай из самова́ра в де́тстве. Взро́слые пьют из ча́шек, де́тям чай налива́ют в блю́дце, и начина́ются дли́нные, бесконе́чные разгово́ры обо всём на све́те, а на столе́ продолжа́ет петь самова́р.

В да́вние времена́ нельзя́ бы́ло меня́ть своё ме́сто за столо́м, а свою́ ча́шку ну́жно бы́ло класть на́ бок, е́сли ты бо́льше не хо́чешь ча́я, и́ли опроки́дывать вверх дном, что́бы показа́ть, что ча́шка пуста́я, а ты хо́чешь ещё.

Сейча́с э́ти обы́чаи не сохрани́лись. Во мно́гих дома́х ме́сто самова́ра занима́ет са́мый обы́чный ча́йник. Это и хорошо́ и пло́хо, но во вся́ком слу́чае не та́к интере́сно.

### टिप्पणियाँ

лад — सामंजस्य, मेल
эсте́тика — सौंदर्य-बोध
купе́ц — व्यापारी
гость — अतिथि, मेहमान
зава́ренный — जिसमें खौलता पानी डाला हुआ है

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
напи́ток — पेय
квас — क्वास ( रूसी राष्ट्रीय पेय )
сбы́чай — रिवाज , प्रथा
берёзовый сок — भोज-वृक्ष का रस
чаепи́тие — चायपान , चायबाज़ी
по́сле ба́ни — स्नान करने के बाद
дрова́ — लकड़ी , लकड़ियाँ
петь — ( यहाँ ) सूं-सूं करना
закипа́ть — खौलना
пар — भाप
ча́йник — केतली
пиро́г — पाइ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

## СОДЕРЖАНИЕ

Предисловие . . . . . 5

Макси́м Го́рький . . . . . 12
Мать (отры́вки из рома́на) . . . . . 13
В. И. Ле́нин (отры́вок) . . . . . 20

Алекса́ндр Блок . . . . . 26
Двена́дцать (отры́вки из поэ́мы) . . . . . 27

Алекса́ндр Грин . . . . . 30
Алые паруса́ . . . . . 31

Алексе́й Толсто́й . . . . . 44
Де́тство Ники́ты (гла́вы из по́вести) . . . . . 45

Михаи́л Булга́ков . . . . . 52
Полоте́нце с петухо́м . . . . . 53

Константи́н Паусто́вский . . . . . 62
Во глубине́ Росси́и . . . . . 63

Влади́мир Маяко́вский . . . . . 69
Разгово́р с това́рищем Ле́ниным . . . . . 70
Я сам . . . . . 72
Хорошо́! (отры́вок из поэ́мы) . . . . . 77

Серге́й Есе́нин . . . . . 83
Не жале́ю. не зову́, не пла́чу... . . . . 84

Михаи́л Зо́щенко . . . . . 86
Расска́з о письме́ и негра́мотной же́нщине . . . . 87

Валенти́н Ката́ев . . . . . 91
Беле́ет па́рус одино́кий (отры́вки из по́вести) . . 92

Юрий Оле́ша . . . . . 103
Три Толстяка́ (отры́вки из рома́на-ска́зки) . . . 104

Андре́й Плато́нов . . . . . 111
Коро́ва . . . . . 112

Алекса́ндр Фаде́ев . . . . . 119
Разгро́м (отры́вок из рома́на) . . . . . 120

Никола́й Остро́вский . . . . . 125
Как закаля́лась сталь (отры́вки из рома́на) . . . 126

Арка́дий Гайда́р . . . . . 134
Чук и Гек (отры́вок) . . . . . 135

Михаи́л Шо́лохов . . . . . 144
По́диятая целина́ (отры́вки из рома́на) . . . . 145

Ве́ра Пано́ва . . . . . 155
Кружи́лиха (отры́вок из рома́на) . . . . . 156

Алекса́ндр Твардо́вский . . . . . 158
Васи́лий Тёркин (отры́вки из поэ́мы) . . . . . 159

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
Жди меня́ . . . . . 165
Живы́е и мёртвые (отры́вок из рома́на) . . . . 166
Юрий Бо́ндарев . . . . . 167
Горя́чий снег (отры́вок из рома́на) . . . . . 173
Анато́лий Але́ксин . . . . . 174
Мой брат игра́ет на кларне́те (отры́вок из по́вести) 179
Ви́ктор Аста́фьев . . . . . 180
Конь с ро́зовой гри́вой . . . . . 191
Васи́ль Бы́ков . . . . . 192
Во́лчья ста́я . . . . . 201
Евге́ний Но́сов . . . . . 202
Бе́лый Гусь . . . . . 208
Юрий Три́фонов . . . . . 209
Обме́н (отры́вок из по́вести) . . . . . 213
Чинги́з Айтма́тов . . . . . 214
Джамиля́ (отры́вок из по́вести) . . . . . 220
Васи́лий Шукши́н . . . . . 221
Осенью . . . . . 227
Васи́лий Бело́в . . . . . 228
Лад . . . . . 234
235

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ХРЕСТОМАТИЯ ПО СОВЕТСКОЙ ЛИТЕРАТУРЕ

Составители:
Алла Александровна Кубарева,
Елена Владимировна Нечаева

Зав. редакцией *Е. Г. Никитина*
Редактор *А. А. Васильева*
Мл. редактор *И. Н. Кордюкова*
Редактор перевода *В. П. Павлов*
Художественный редактор *Б. С. Казаков*
Технический редактор *М. Н. Курочкина*
Корректор О. Н. Николаева
**ИБ 4846**

№ 11-25

Сдано в набор 27.05.85. Подписано в печать 06.01.86. Формат 84×108/32. Бумага тип. № 1. Гарнитура литературная. Печать высокая. Усл. печ. л. 12,6. Усл. кр.-отт. 12,7. Уч.-изд. л. 12,86. Тираж 16 000 экз. Заказ № 1045 Цена 72 коп.

Издательство «Русский язык». 103012, Москва, Старопанский пер., 1/5.

Ордена Трудового Красного Знамени Московская типография № 7 «Искра революции» «Союзполиграфпрома» Государственного комитета СССР по делам издательств, полиграфии и книжной торговли. Москва, 121019, пер. Аксакова, 13.

55

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

72 коп.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

# Хрестоматия по советской литературе

## सोवियत साहित्य-संकलनिका हिन्दी-टिप्पणियों सहित प्रवेशिका

«Русский язык»